Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारिका

टाइम्स ऑफ इंडिया प्रकाशन

कहानियों और कथाजगत की जीवंत पाक्षिकी

वर्ष : 25 ; अंक : 388 ; 1-15 सितंबर, 1985

संपादक
अवधनारायण मुद्गल
उप-संपादक
रमेश बत्तरा
सुरेश उनियाल
बलराम
महेश दर्पण
वीरेंद्र जैन
सज्जा
सुमीता

विज्ञान-कथा-अंक

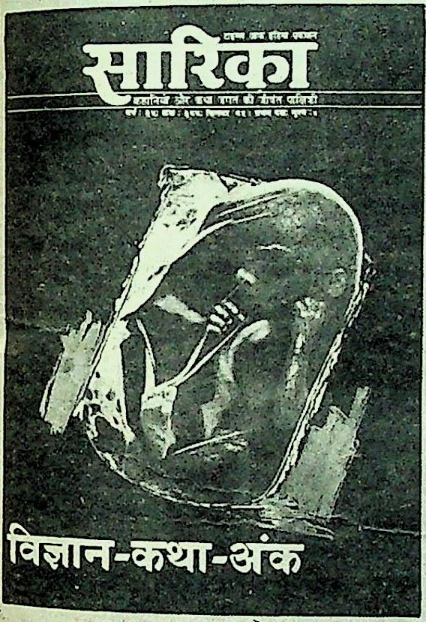

आवरण : सुमीता

एक सूचना

कागज, छपाई तथा प्रकाशन की शेष सामग्री के मूल्य में हुई भारी वृद्धि के कारण हमें विवश होकर इस अंक से सारिका के मूल्य में वृद्धि करनी पड़ रही है. इस अंक से सारिका की एक प्रति का मूल्य 5 रुपये होगा. हम आशा करते हैं कि सारिका का उदार पाठक परिवार हमारी इस मजबूरी को समझते हुए अपना स्नेहपूर्ण सहयोग हमें पूर्ववत् देता रहेगा.

—संपादक

विशिष्ट लेख

11 वैज्ञानिक समाज में स्थायित्व संभव नहीं : **बर्ट्रेंड रसेल**

कथा रचनाएं

14 रोसुम के यंत्र-मानव (चेक) : **कैरेल चेपेक**
18 विस्फोट (मराठी) : **अरुण साधू**
25 सबूत (अमरीकी) : **इसाक एसीमोव**
27 कालयंत्र (ब्रितानी) : **हरबर्ट जार्ज वेल्स**
31 हठधर्मी (अमरीकी) : **अलफर्ड बस्टर**
34 एक मशीन, एक वैज्ञानिक (ब्रितानी) : **आर्थर कानन डायल**
38 नया विमान (अमरीकी) : **वाल्ट शैल्डन**
42 दंगल (रूसी) : **इलिया वर्षाव्स्की**
44 बदला हुआ प्रेमी (अमरीकी) : **रे ब्रेडबरी**
46 मृत्युंजयी (हिंदी) : **कैलाश शाह**
51 बेतार का बच्चा (रूसी) : **बोरिस गोर्बातोव**
56 मैं मरना चाहता हूं (तमिल) : **मोहन 'संजीवन'**
58 भगवान के नौ खरब नाम (अमरीकी) : **आर्थर क्लार्क**
61 हथियार (ब्रितानी) : **फ्रेडरिक ब्राउन**
63 आदमी का बच्चा (हिंदी) : **चंचल**
64 अंतरिक्ष युग के संस्मरण (कनाडी) : **जे. जी. बलार्ड**
68 खतरा—मानव! (अमरीकी) : **गार्डन डिक्सन**

परिचर्चा

53 कैसा होगा कंप्यूटर युग का मानव और उसका साहित्य : **सुधांशु गुप्त**

लघु रचनाएं

21 उड़न तश्तरियां, जुंग और अमरीकी रक्षा सचिव : **आदित्य**
22 पौराणिक विज्ञान कथाएं : **हरिमोहन शर्मा**
28 एक और कालयंत्र : **टी. के. ब्राउन**
41 कंप्यूटर का तर्क : **सु. उ.**
49 ऋग्वेद में अंतरिक्ष यानों का उल्लेख : **हरि**
62 उत्तर : **फ्रेडरिक ब्राउन**

स्थायी स्तंभ

8 **आपकी बात**
10 **बहस**
71 **पखवारे की पुस्तकें**
73 **हलचल**

संपादकीय पता : सारिका, 10 दरियागंज, नयी दिल्ली-110002.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी बात

प्रतिनायक-कथा-अंक

पड़ताल हड़ताल की

भैरव प्रसाद गुप्त की कहानी 'हड़ताल' उनके लंबे संघर्ष द्वारा अर्जित सामाजिक व्यवहार का परिणाम है. इस कहानी के मार्फत उन्होंने नौकरी-पेशे, निम्न मध्यवर्गीय जीवन बसर कर रहे चरित्रों के अंतर्विरोधों को उजागर किया है. खासकर उनमें जो बुद्धिजीवी तबका है, उनकी नानाविध महत्वाकांक्षाएं हैं, वे साहित्य और संस्कृति में दिलचस्पी रखते हैं. लेकिन हालात ने उन्हें इस कदर मजबूर कर दिया होता है कि वे मानसिक पक्षाघात के शिकार हो जाते हैं.

उनके द्वारा बनाया गया उनका संगठन भी दोगला हो जाता है. वे हड़ताल जैसी सामाजिक जिम्मेदारी का निर्वाह भी ठीक से नहीं कर पाते हैं. जिसकी सफलता पर उनकी बेहतरी निर्भर करती है. लेकिन इसके माने यह कभी नहीं कि वे लड़ना नहीं चाहते, वे संगठन के अनुशासन का उल्लंघन करना चाहते हैं और, या जीवन के प्रति उनकी कोई आस्था ही नहीं है, बल्कि इन सबके बावजूद जीवन के भीतर जो मोल-भाव की अवस्था है उसके वात्याचक्र में फंस जाते हैं. कहानी में उन बातों की ओर स्पष्ट संकेत है कि शासन-तंत्र उन्हें ऐसा करने को विवश करता है. वह मजदूरों की हड़ताल को स्याह करने के लिये रात-रात हाजिरी बनाने के लिये दफ्तर खुला रखता है. और प्राण बाबू जैसे जीवन के प्रति आस्थावान कर्मचारी को प्राण गंवा बैठने को मजबूर करता है. नैतिकता की हरदम दुहाई देनेवाली शासन व्यवस्था के भीतर काम कर रहे तंत्र को बेनकाब करने का यह अच्छा उदाहरण है. लेकिन ऐसे परिणाम क्यों होते हैं, इस पर भी विचार करने की जरूरत है. गलत राजनीति के तहत लड़ी जानेवाली सुविधा की लड़ाई का यही हश्र होता है. और यह लड़ाई लड़ता है—मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी. वह कहवाघरों और शराबखानों में लड़ाई की स्ट्रेटजी तैयार करता है और उसी मुद्रा में उसका आचरण भी प्रवृत होता है. फलस्वरूप सही लड़ाई की जमीन नहीं बन पाती और न उसकी भूमिका ही तैयार हो पाती है. क्योंकि जिस राजनीति के तहत ये लड़ाइयां लड़ी जाती रही हैं वह अवसरपरस्तों और सुविधाभोगियों की राजनीति है. यहां कहानीकार से यह अपेक्षा रह जाती है कि 'हड़ताल' में ऐसा कोई भी स्पष्ट संकेत नहीं मिलता है कि इन विसंगतियों से मुक्ति के लिये व्यापक और मुकम्मिल लड़ाई के लिये जनाधार कैसे तैयार किया जा सकता है. और, लड़ाई अनुशासित कैसे होगी? ऐसी ही अवस्था में आज संस्कृतिकर्मियों का दायित्व बढ़ जाता है. समाज और शासन व्यवस्था में व्याप्त ऐसे छद्म प्रयासों को बेनकाब करें, रंग-रोगन और रेखाओं के जरिये आगे का पथ भी आलोकित करें जहां मानवमुक्ति की तमाम संभावनाएं दृष्टिगोचर हो रही हैं. हड़ताल कहानी से हमें इन संभावनाओं को पता करने में मदद मिलती है.

o हरिहर प्रसाद, पटना

श्रद्धांजलि

अपने समय के बहुचर्चित लेखक श्री ऋषभचरण जैन अब नहीं रहे. ऋषभजी प्रसिद्ध साहित्यकार जैनेंद्र कुमार के निकटतम मित्रों में से एक थे. उनकी पहली रचना 1925 में प्रकाशित हुई और इसके बाद सन् '40 तक उन्होंने लगातार लेखन किया. 22 (पूर्ण/अपूर्ण) उपन्यास, पांच कहानी-संग्रह, दो जासूसी उपन्यासों के सृजन के साथ-साथ विश्व प्रसिद्ध कई पुस्तकों का अनुवाद किया. दिल्ली में अपना निजी प्रकाशन-गृह आरंभ कर कई पुस्तकें प्रकाशित कीं. ऋषभजी ने जैनेंद्रजी के साथ संयुक्त रूप से 'तपोभूमि' उपन्यास लिखा, जिसे लेखक-द्वय द्वारा लिखा गया पहला उपन्यास होने का गौरव प्राप्त है.

उनकी कुछ रचनाएं ब्रिटिश सरकार द्वारा जब्त भी की गयीं. उन्होंने सन् '33 में 'चित्रपट' (हिंदी) और 'रूपवाणी' (अंग्रेजी) नाम से फिल्म पत्रिकाओं का प्रकाशन आरंभ किया और उनकी सफलता से प्रेरित हो अपने प्रकाशन और लेखन को तिलांजलि देकर सन् '42 में फिल्म वितरण के क्षेत्र में उतर पड़े. इस क्षेत्र में मिली असफलता और देश विभाजन में डूबे व्यवसाय का आघात उन पर वज्रपात-सा पड़ा जिसने उन्हें मानसिक रूप से विक्षिप्त कर दिया. सन् '49 से अपने जीवन के अंतिम दिन तक चारों ओर से उपेक्षित और कष्टपूर्ण जीवन जीने पर विवश ऋषभ जी गत माह सात अगस्त को पंचभूत शरीर को त्याग महाप्रयाण कर गये.

सारिका परिवार की ओर से उनकी आत्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि!

खड़ताल हड़ताल की

मैं यहां प्रतिनायक कहानी अंक में भैरव प्रसाद गुप्त की कहानी 'हड़ताल' और उस पर लिखी गयी रमेश उपाध्याय की टिप्पणी का उल्लेख कर रहा हूं. मेरे खयाल से जब कभी कोई पत्रिका इस तरह का कोई स्तंभ आयोजित करती है, जिसमें कहानी के द्वंद्वों के साथ-साथ किसी समकालीन या वरिष्ठ लेखक की टिप्पणी भी जाती है, तो उसका मुख्य उद्देश्य यह होता है कि टिप्पणी की मदद से रचना के गूढ़ मर्म को आम पाठक भी सहज ही समझ सकें. लेकिन 60 के बाद से हिंदी में जो 'ठकुर सुहाती' की परंपरा शुरू हुई है, उसमें प्रशिक्षित और दीक्षित लेखकों की बस एक निष्ठा होती है कि अवसर या मंच कोई भी हो, उनका काम दुंदुभि बजाना है कि कैसे अपने खेमे के साहित्यकारों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के रचनाकारों की पंगत में बिठाया जाये.

मैंने 'हड़ताल' पहले भी पढ़ी थी और अब तो रमेशजी के गरीब प्राणबाबू "जो जीवन को सुंदर और सार्थक बनाने की सहज मानवीय आकांक्षा तथा सर्जनात्मक ऊर्जा से युक्त एक निम्नमध्यवर्गीय व्यक्ति है, जो साहित्यकार बनना चाहता है, लेकिन आर्थिक, सामाजिक परिस्थितियों के चलते एक मामूली क्लर्क बनकर रह जाता है." —की खोज में कहानी को कई बार 'कांम्बिंग आपरेशन' की तरह पढ़ गया हूं, लेकिन रमेशजी के प्राण बाबू से मेरी मुलाकात कहीं नहीं हुई. मुझे जिस प्राण बाबू से साक्षात्कार हुआ, वे एक बेहद गैर जिम्मेदार, आलसी और कन्फ्यूज्ड किस्म के व्यक्ति हैं. उन्होंने शायद ही कभी कुछ लिखा है, लेकिन काफी हाउस में साहित्यकारों के बीच उठ-बैठकर साहित्यकार होने का भ्रम जरूर पालते हैं. मुझे कहीं पता नहीं चला कि जीवन को सुंदर और सार्थक बनाने की उनकी सहज मानवीय आकांक्षा अथवा धारणा क्या है? और वे सर्जनात्मक ऊर्जा से भरपूर हैं, पता नहीं रमेश भाई ने किस थर्मामीटर से इसका पता लगाया. मैं तो प्राण बाबू के बारे में वही जान सका जो उनके काफी हाउस के दोस्त जानते हैं. मसलन, "कभी उन्हें पढ़ने-लिखने का शौक था. इसी नाते वह बराबर पेशे से क्लर्क होते हुए भी काफी हाउस आते थे और साहित्यकारों, पत्रकारों और विश्वविद्यालयों के प्रोफेसरों की मेजों पर बैठते थे....... जो उन्हें उनके क्लर्क होते हुए भी अपनी मेजों पर नापसंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न करते थे. . . . ."

दरअसल पूरी कहानी में प्राणबाबू का जो चरित्र उभरकर आता है वह एक दिग्भ्रमित का है जो आलसी और कुंठित भी है. इसमें संदेह नहीं कि हमारे देश की व्यवस्था में ऐसे लोगों की बहुतायत है. और उनमें से निश्चय ही कुछ ऐसे हैं जो यह विश्वास करते हैं कि जादू की तरह क्रांति जैसी कुछ चीज होगी और रातों-रात उनकी नियति बदल जायेगी. प्राण बाबू ऐसे ही लोगों में से एक हैं. 'हड़ताल' के जादू से उन्हें अपने सारे दुख-दलिद्दर दूर हो जाने का यकायक आभास होता है और हड़ताल टूटने की सूचना से मर जाता है.

जहां तक कहानी के ट्रीटमेंट का सवाल है, रमेश खुद मानते हैं कि "ऊपर से देखने पर यह कहानी बिल्कुल गढ़ी हुई और अविश्वसनीय लगती है" (और अंदरूनी सच्चाई भी यही है भाई). लेकिन, चूंकि रमेशजी को अंत में इस कहानी को चेखव की कहानी से दो कदम आगे मानना है (साबित नहीं करना है) अतः बेलबूटे की तरह एक पंक्ति जड़ते हैं कि "यह यथार्थवादी कहानीकला का एक सुंदर नमूना है."

समाजवादी यथार्थ कहते तो बात कुछ-कुछ पचती भी, क्योंकि उसके आरंभिक दौर में, मश्क के दौरान ऐसी कच्ची-पक्की कहानियां लिखी जाती हैं. लेकिन यथार्थवादी लेखन के यथार्थ में जो विस्तृत ब्योरा होता है, जो बारीकियां होती हैं (देखें **गुस्ताव फ्लाबेयर** की **'माम बोगरी'** अथवा **मोपासां** की **'नेकलस'** अथवा **प्रेमचंद** की **'पूस की रात'** अथवा **रांगेय राघव** की **'गदल'**) उसके कारण कहानी भीतर से क्या, ऊपर से भी अविश्वसनीय कभी नहीं लगती. कहानी समाप्त करने के बाद हफ्तों अनुगूंज दिमाग में गूंजती रहती है. चेखव इस कला में सिद्धहस्त हैं.

इतना ही नहीं, यथार्थवादी लेखन की एक और पहचान है कि उनकी स्थितियां और पात्र अपने समय के सामाजिक इतिहास के दस्तावेज होते हैं. हड़ताल में ऐसा कुछ नहीं है. प्राण बाबू कहां काम करते हैं, यह भी पता नहीं चलता. सरकारी दफ्तर का-सा आभास मिलता है. विषय है 'हड़ताल' और कहानी घूमती है प्राण बाबू के इर्द-गिर्द जो एक दिग्भ्रमित है. गौर करें तो पायेंगे कि कहानी अपने गर्भाधान में ही पंगु हो गयी थी.

फिर भी यदि रमेशजी को 'हड़ताल' चेखव की प्रसिद्ध कहानी **'एक क्लर्क की मौत'** से दो कदम आगे की रचना लगती है, तो समझ में नहीं आता है कि हंसूं कि रोऊं. फिर सोचने के लिए बाध्य हो जाता हूं कि आखिर यह फतवेबाजी है किस प्रवृत्ति की द्योतक? कम्यूनिस्ट नैतिकता का तकाजा है या 'तुम मुझे कालिदास कहो, मैं तुम्हें भवभूति कहूंगा. . . .' की परंपरा का प्रसार?

0 रमेश हरिवंश, बंबई

छात्र की कहानी को लेकर शिक्षकों द्वारा प्रताड़ना

रायपुर, 'सारिका' के नवांकुर विशेषांक में स्थानीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय के एक छात्र की कहानी प्रकाशित हुई थी. छात्रों की समस्या से जुड़ी इस कहानी के प्रकाशन के पश्चात् महाविद्यालय में काफी हड़कंप मची हुई है एवं उक्त कहानी विशेष चर्चा का विषय बनी हुई है. कहानी छात्र-शिक्षक-संबंधों से जुड़ी हुई है और विभिन्न क्षेत्रों में सराही जा रही है, लेकिन ऐसा सुनने में आया है कि महाविद्यालय के कतिपय शिक्षक पूर्वाग्रह से पीड़ित होकर कहानीकार छात्र को प्रताड़ित कर रहे हैं.

इस संदर्भ में महाविद्यालय के सांस्कृतिक सचिव पूर्व लियो अध्यक्ष श्री दीपक गुप्ता (अंतिम-केमिकल) ने इस समाचार की पुष्टि की है एवं साथ ही बताया कि महाविद्यालय के विभिन्न क्षेत्रों में बहुत-सी अनियमिततायें व अव्यवस्थायें व्याप्त हैं जिनमें से कुछ को उक्त कहानी में संतुलित व सुंदर ढंग से उठाया गया है. कहानी में वर्णित घटनायें व समस्याएं सामान्य व आये दिन घटनेवाली बातें हैं जो न केवल इंजो. महा. की हैं वरन विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में घटित होती रहती हैं. इस प्रकार किसी घटना को विशेष संदर्भों में देखना न केवल अनुचित है वरन् संकीर्ण मानसिकता, अपराध बोध का परिचायक है.

श्री गुप्ता ने कुछ विशिष्ट शिक्षकों द्वारा कहानीकार को विभिन्न प्रकार से परेशान किये जाने के कृत्य को कड़े शब्दों में निंदा की है और कहा कि शिक्षक हमारे आदरणीय हैं, जहां उन्हें इस प्रकार के रचनात्मक कार्यों के लिये छात्रों को प्रोत्साहन व आशीर्वाद देना चाहिये वहीं कुछ विशिष्ट वर्ग ऐसा न कर रचनात्मक कार्यों में लगे छात्रों को परेशान कर रहा है.

श्री गुप्ता ने चेतावनी देते हुए कहा है कि यदि इस प्रकार रचनाकार छात्र को परेशान किया गया एवं उनका परीक्षाफल प्रभावित हुआ तो रचनात्मक कार्यों में लगे युवा व समस्त महाविद्यालयीन छात्र उग्र कदम उठाने हेतु बाध्य होंगे.

(दैनिक नवभारत के बिलासपुर संस्करण में 10 जुलाई, 85 को प्रकाशित एक समाचार)

0 प्रेषक : मो. इनामुलहक, चिरमिरी.

कहानी के बहाने

प्रतिनायक कहानी अंक में सर्वाधिक प्रभावित किया **ओ. हेनरी** की कहानी **'उसकी इच्छा'** ने. घृणित आकांक्षाओं और संत्रस्त आशाओं से घिरे बेबस सोपी का इस कहानी में सूक्ष्मतापूर्वक अंकन हुआ है. ओ. हेनरी की इस कहानी को कुछ प्रसंगों का जामा पहनाकर कभी **राजश्री प्रोडक्शंस** ने **'सुनयना'** में फिल्मबद्ध किया था, लेकिन **नसीरुद्दीन शाह** जैसे संवेदनशील अभिनेता के बावजूद निर्देशक **हीरेन नाग** उन प्रसंगों को यादगार न बना सके.

अमृता प्रीतम की कहानी **'यह कहानी नहीं'** परोक्ष रूप से हमेशा की तरह अमृता-साहिर के तथाकथित प्रेम प्रसंगों को उबाऊ तरीके के दोहराने के अलावा कुछ न कर सकी. इधर जब से अमृताजी को **ज्ञानपीठ पुरस्कार** मिला है तब से पाठक वर्ग में उनसे अपेक्षाएं कुछ ज्यादा ही बढ़ गयी हैं. लेकिन जाने क्यों वे ढलती उम्र में कहानी के नाम पर आपबीती कहती चली जा रही हैं.

0 शशांक दुबे, उज्जैन (म.प्र.) □

एक अच्छा काम

आपने चाहा और हमने किया

सारिका ने ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता कथाकार विशेषांक (1 व 2) पाठकों को इतने रोचक, ज्ञानवर्धक लगे कि वे इन्हें संभालकर रखना चाहते हैं. आपकी सुविधा के लिए हमने ये दोनों विशेषांक एक साथ जिल्द करवा लिए हैं, मूल्य वही 8 रुपये. डाक से मंगवाने पर 10 रुपये. मनीआर्डर/पोस्टल आर्डर/ड्राफ्ट कृपया इस पते पर भेजें—

प्रसार मैनेजर, टाइम्स ऑफ इंडिया प्रकाशन,
7-बहादुरशाह जफर मार्ग, नयी दिल्ली-110002.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहस

हिंदी का नस्ल सुधार बनाम सांप का पिटारा

सारिका के नये नियमित स्तंभ 'तीसरी नजर' का प्रारंभ समसामयिक साहित्यिक सरोकारों, विरोधामासों और अपेक्षाओं पर विचारशील रचनाकारों की बेबाक टिप्पणी के प्रकाशन का उद्देश्य लेकर किया गया था. इस स्तंभ के अंतर्गत श्री राकेश वत्स की कई टिप्पणियां हम प्रकाशित कर चुके हैं. इन्हीं में से एक (हिंदी का नस्ल सुधार : अंक–378) टिप्पणी के बहाने सुश्री कृष्णा सोबती का एक आलेख हमें प्राप्त हुआ. जिसे एक स्वतंत्र आलेख के रूप में ही (सांप का पिटारा : अंक–381) प्रकाशित भी किया गया था. चूंकि कृष्णाजी के आलेख में ऐसे विशिष्ट मुद्दों का खुलासा किया गया है जिन पर आगे बहस की जा सकती है. इसीलिए हमने इस बहस को जारी रखने के लिए अपने पाठकों को आमंत्रित किया था. हमें प्रसन्नता है कि सजग पाठकों ने साहित्य के मूलभूत सरोकारों से जुड़ी इस बहस को हाथों-हाथ लिया और अपने निष्पक्ष विचार भेजे. इस बहस में अपनी भूमिका के निर्वाह स्वरूप प्राप्त पत्रों में से प्रारंभिक पत्र हम अंक–386 में प्रकाशित कर चुके हैं; कुछ यहां प्रस्तुत हैं और यह सिलसिला आगामी अंकों में भी जारी रहेगा. 'तीसरी नजर' स्तंभ में कुछ अन्य रचनाकार भी हिस्सेदारी करेंगे.

हिंदी की अशुद्ध होने की क्षमता

राकेश वत्स और **कृष्णा सोबती** की 'तू-तू, मैं-मैं' को क्या सोचकर संपादक ने बहस का मुद्दा बना दिया? हकीकत यह है कि कृष्णाजी की 'तैश' में विषय वस्तु ही गौण हो गयी है. राकेश वत्स की 'तीसरी आंख' एवं कृष्णा सोबती की चौथी आंख—दोनों ही कुपोषण-ग्रस्त भारतीय पाठकों के लिए घातक हैं. भाइयो और बहनो (राकेश वत्सो और कृष्णा सोबतियो!), आप मजे से मजमेबाजी करो, आपका क्या है? भीड़ में खतरा तो हमारी पाकिट को है . . . !

वैसे, अब तो बहस छिड़ ही गयी है, बकौल संपादक जी! सारा घपला हिंदी को लेकर हो रहा है. राकेश जी कुल मिलाकर किंतु, बेहद अस्पष्ट तरीके से इस बात पर जोर देते हैं कि भाषा में आयातित शब्दों का आरोपित संस्कार राष्ट्रीयता के लिए हानिकारक होता है. कृष्णाजी कहती हैं–हिंदी गंगा है, उसे गंगा की तरह बहने दीजिए. मैं ठहरा मूरख पाठक! मैं सोचता हूं—भाषा स्वभाव है, उसे सहज ही रहने दीजिए. हिंदी जैसी महान भाषा को 'नस्ल-सुधार' के घिनौने दायरे में लाना निश्चय ही शर्मनाक है. मैं पूछता हूं, किसका नस्ल-सुधार! भाई, इस तरह की बातें करके अपनी ही नस्ल पर प्रश्न-चिह्न क्यों लगाते हैं? हिंदी की महानता है कि वह इतर भाषा के शब्दों को भी समान मातृत्व दे सकती है. राकेश जी को और एक बात स्पष्ट तौर पर समझ लेनी चाहिए कि हिंदी की कसौटी मात्र हिंदी का व्याकरण नहीं, बल्कि हिंदी की 'अशुद्ध होने की क्षमता' भी है. मतलब यह कि हिंदी विश्व की उन गिनी-चुनी भाषाओं में से है जो अशुद्ध होकर भी सहज संप्रेषित होती हैं.

उर्दू ही क्यों, संस्कृत के शब्द भी अगर हिंदी वाक्यों में इस तरह प्रयुक्त किये जायें कि उन वाक्यों के स्वभाव पर वे शब्द आरोपित लगें, तो निश्चय ही, यह एक शब्दकोशीय ऐयाशी होगी. वहां अभिव्यक्ति ही अवरुद्ध हो जायेगी.

वैसे, कृष्णा जी ने राकेश वत्स पर अपने आक्रोश का वमन जिस प्रकार से किया है, वह मुझे अतिरंजित लगा. आपके **भावावेग विशेषांक** में भावावेग का उत्कृष्ट उदाहरण! फिर भी, कृष्णा जी ने हिंदी के प्रति एक उपयोगी दृष्टिकोण तो अवश्य ही पेश किया है, जिसकी तुलना में राकेश वत्स की तीसरी आंख दृष्टिदोष का शिकार नजर आती है.

'शब्द' सांप्रदायिक नहीं होते, चाहे वे किसी भी भाषा के क्यों न हों! शब्दों के अपने स्वभाव होते हैं, तेवर होते हैं. यह जरूरी है कि किसी भाषा में प्रयुक्त होनेवाले शब्दों के स्वभाव, तेवर आदि में संतुलन हो, चाहे उन शब्दों का भूगोल कुछ भी क्यों न रहा हो! यह कतई महत्वपूर्ण नहीं! लेकिन, शब्दों का प्रयोग दंभ-प्रदर्शन के लिए नहीं किया जाना चाहिए. यही दंभ-प्रदर्शन शब्दों को आयातित और आरोपित बना देता है. 'शुद्ध हिंदी' के ऐसे भी 'दुराग्रही' मैंने देखे हैं जो रिक्शा को 'चित्रचक्रवाहन' एवं रेलगाड़ी को 'धूम्र-शकट' या 'लौह-पथ-गामिनी' जैसे प्रयोग के सहारे हिंदी को हास्यास्पद बना रहे हैं. जब कोई विजातीय शब्द हमारे यहां सरलता से आम बोलचाल का शब्द बन जाये तो क्या हर्ज हो कि हम उस शब्द को अपनी भाषा में शामिल कर लें? शब्दकोश के अप्रचलित और दुरूह शब्दों को संप्रेषण का माध्यम बनाना क्या भाषा को जानबूझकर अस्पष्ट करना नहीं है? दूसरी ओर, हिंदी को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान करने के लिए भी यह जरूरी है कि भारतवर्ष की विभिन्न भाषाओं के जो शब्द एवं मुहावरे अनायास हिंदी में प्रचलित हो गये हैं, उन्हें आत्मीयता प्रदान की जाये. हिंदी को उदार से उदारतम बनाया जाये. हिंदी को राष्ट्रीय एकता का प्रतीक मानकर इसे विकसित किया जाये. वैसे तो, देश-काल से परे इन्हीं लक्षणों को ग्रहण कर कोई भाषा 'स्वस्थ' एवं समृद्ध कहलाती है, फिर भी, समकालीन संदर्भों में हिंदी के लिए ये बातें विशेष तौर पर महत्वपूर्ण एवं अपरिहार्य हो गयी हैं.

ऐसा नहीं कि किसी भाषा की भौंडी नकल करके हिंदी के स्वाभिमान को ही खंडित कर दिया जाये. बल्कि, मेरा आग्रह हिंदी के गंगा-स्वरूप से है. गंगा—जो सारी अशुद्धियों को पचाकर भी अशुद्ध नहीं हुई. हिंदी को 'राष्ट्र' के साथ अगर जोड़ना है तो उसे गंगा बनाना ही पड़ेगा.

o गौरीशंकर, अररिया (बिहार)

रचनात्मक साहित्य की भाषा कैसी हो?

कृष्णा सोबती ने हशमत का नकाब पहनकर जनाब **राकेश वत्स** का बखिया उधेड़कर रख दिया है. स्वयं को 'राष्ट्रीय एकता' की प्रबल पक्षधर घोषित करते हुए उन्होंने राकेश वत्स को भाषायी एकता को खंडित करनेवाला 'गुंडा' घोषित कर दिया है. मजमेबाज से लेकर डुगडुगी बजाकर बंदर नचानेवाला मदारी आदि विशेषणों से जनाब वत्स को विभूषित करते हुए हशमतजी ने अपने दिल की सारी भड़ास निकाल ली है. एक पृष्ठ का **'तीसरी नजर'** इतना तिलमिलानेवाला मसाला सिद्ध हुआ कि हशमत जी को चार पृष्ठ की 'गाली-गलौज' लिखने की जरूरत महसूस हो ही गयी. माना कि हिंदी बहती हुई गंगा है और कृष्णा सोबती ने जमकर विगत वर्षों में हाथ धोया है—जिससे गंगा प्रदूषित हो गयी है. बात सबको मालूम पड़ गयी है तो उनका बौखलाना स्वाभाविक है. वैसे पहली बार साहित्य की खेती में किसी नारी को इस बेबाकी से झगड़ते हुए देखा. बेचारे वत्स साहब तो खैर मना रहे होंगे पर अगर स्वयं कृष्णा सोबती दिल पर हाथ रखकर सच को स्वीकार करेंगी तो निष्कर्ष यही निकलेगा कि उनकी रचनाओं में पाठक शब्द-शहतूत पर इस बुरी तरह उलझकर रह जाता है कि सार तत्व को समझने का धैर्य गंवा चुका होता है. विश्व में तमाम रचनात्मक साहित्य रचनाकार के द्वारा स्वाभाविक शैली में लिखा गया है. भाषा को समृद्ध करने के नाम पर अंटशंट पहेलीनुमा शब्दों को रचनाओं में इकट्ठा करके पाठकों को आतंकित करने की कला के लिए कृष्णा सोबती को मैं दाद देना चाहता हूं.

o दिनकर कुमार, गोहाटी (आसाम)

—क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वैज्ञानिक समाज में स्थायित्व संभव नहीं!"

बर्ट्रेंड रसेल

विज्ञान हमारे समाज का एक अभिन्न अंग हो गया है. अपने जीवन के प्रत्येक क्षण में हम विज्ञान की किसी न किसी देन पर आश्रित रहते हैं. यह आश्रय हमारे समाज, शरीर और मानसिकता पर किस तरह के प्रभाव लगातार डाल रहा है, इसी पर विचार कर रहे हैं बीसवीं सदी के महान दार्शनिक, चिंतक बर्टेंड रसेल. यह लेख २० नवंबर, १९४९ को 'रॉयल सोसायटी ऑव मेडिसिन' में 'लॉयड राबर्ट्स भाषणमाला' के अंतर्गत दिये एक भाषण 'कैन ए साइंटिफिक सोसायटी बी स्टेबल' का संक्षिप्त रूपांतर है—

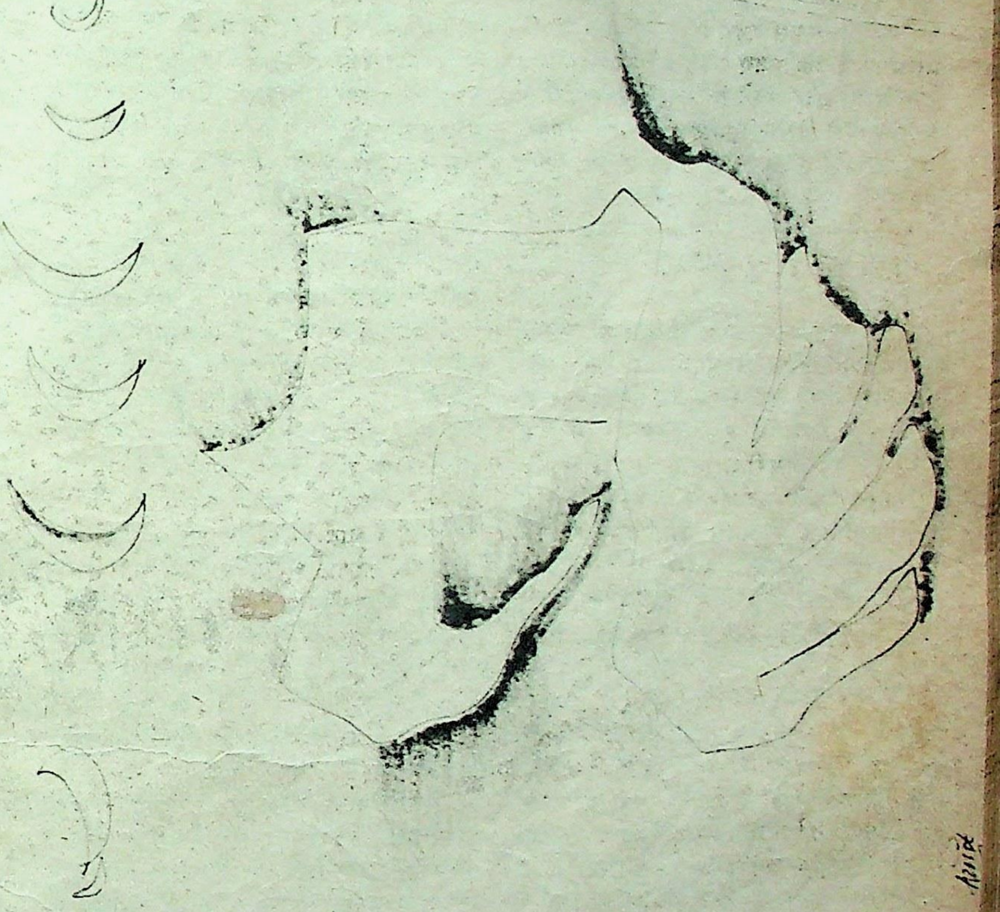

इस प्रश्न पर विचार करने से पहले हमें यह परिभाषित करना होगा कि वैज्ञानिक समाज किसे कहेंगे. मैं वैज्ञानिक समाज उस समाज को मानता हूं, जिसमें वैज्ञानिक ज्ञान तथा उन ज्ञान पर आधारित तकनीकें उस समाज के दैनिक जीवन, अर्थशास्त्र और राजनीतिक व्यवस्था को प्रभावित करती हों. प्रारंभ में विज्ञान से केवल थोड़े से पढ़े-लिखे लोग ही प्रभावित होते थे, लेकिन आज के युग में तो यह आम जीवन को ही बड़ी तेजी से प्रभावित किये जा रहा है.

यहां पर स्थायित्व की बात मैं पूरी तरह से भौतिक संदर्भों में कर रहा हूं. जैसे जमीन पर घूमता हुआ लट्टू तभी तक स्थाथी है; जब तक वह एक निश्चित गति से घूम रहा है, गति कम होते ही वह लुढ़क जायेगा. तब वह स्थायी नहीं रहेगा या जैसे कोई सितारा लाखों सालों तक स्थायी बना रहता है, लेकिन एक दिन अचानक उसमें विस्फोट हो जाता है. तब सवाल पैदा होता है कि आज हम जो समाज बना रहे हैं, क्या वह स्थायी है?

मैं अपनी ओर से यह भी नहीं कह रहा हूं कि समाज का स्थायी होना बेहतर है या स्थायी न होना. यह तो रुचि का सवाल है, जो फिलहाल इस प्रश्न के क्षेत्र के बाहर है. मेरा पहला प्रश्न तो यह है कि क्या हमारा समाज लगातार वैज्ञानिक होता जा रहा है ? यदि हां, तो निश्चित रूप से यह अधिकाधिक वैज्ञानिक होता चला जायेगा, क्योंकि ज्ञान तो इसमें लगातार जुड़ ही रहा है.

मोटे तौर पर मैं कह सकता हूं कि इस समय हम मानव की बुद्धि और उसकी मूर्खता की दौड़ के बीच में खड़े हैं. अब तक मानव जाति अज्ञान और अक्षमता में रही है, पर मूर्खता से मिश्रित ज्ञान और योग्यता उसके अस्तित्व को खतरे में भी डाल सकते हैं. ज्ञान शक्ति है, लेकिन शक्ति को बुरे कामों में भी उसी तरह लगाया जा सकता है, जैसे अच्छे कामों में. यानी बुद्धि में वृद्धि हुए बिना केवल ज्ञान की वृद्धि दुखों को ही बढ़ा सकती है.

अस्थायित्व के कारणों को हम तीन वर्गों में बांट सकते हैं. ये हैं भौतिक, जीव वैज्ञानिक तथा मनोवैज्ञानिक. हम एक-एक करके इस पर विचार करेंगे.

औद्योगिक तथा कृषि दोनों ही क्षेत्रों में उत्पादन इस तेजी से बढ़ाया जा रहा है कि विश्व के प्रमुख प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग हो रहा है. कृषि में तो यह तभी से शुरू हो गया था, जब आदमी ने पहली बार जमीन पर हल चलाया. जब लोगों की संख्या कम थी, तब खेतों की उपज कम होते ही वे उन्हें छोड़कर आगे बढ़ जाते और नये खेत बना लेते. तब उन्हें पता चला कि आदमियों को भी खाद के रूप में प्रयोग किया जा सकता है. फिर तो आदमियों की बलि देने का रिवाज शुरू हो गया. इससे दो लाभ हुए : एक तो पैदावार बढ़ी और दूसरे खाने वालों की संख्या कम हुई, पर यह उपाय अधिक उपयोगी न रह सका और इसकी जगह युद्धों ने ले ली.

खाद्यान्न की मांग का दबाव तथा इसमें मुनाफा इतना ज्यादा होता है कि केवल एक समझदार तथा शक्तिशाली सरकार ही उचित तरीके लागू कर सकती है. पर दुनिया के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिकतर भागों में सरकारें न तो समझदार हैं और न शक्तिशाली. जनसंख्या की समस्या पर मैं फिलहाल बात नहीं कर रहा हूं. उस पर आगे बात करूंगा.

कच्चे खनिजों की समस्या भी एक गंभीर समस्या के रूप में हमारे सामने आने वाली है. कार्नवेल की खदानों से टिन फिनीशियनों के समय से ही निकला जा रहा है. अब वह खत्म हो गया है. सौभाग्य से मलाया में टिन मिल रहा है, पर हम यह भूल जाते हैं कि एक दिन यह भी खत्म हो जायेगा. कभी न कभी निकाला जा सकने वाला सारा टिन निकाल लिया जायेगा, टिन ही नहीं, सारे कच्चे खनिजों के साथ यही होगा. इस समय सबसे अधिक दबाव तो कच्चे तेल पर है. अब आप कहेंगे कि तेल की जगह परमाणु ऊर्जा ले सकती है, पर जब सारा यूरेनियम और पोरियम, मनुष्यों की हत्या करने में खर्च हो जायेगा, तब क्या होगा?

इसमें कोई दो राय नहीं कि उद्योग तथा कृषि जहां तक इसमें कृत्रिम खादों का उपयोग किया जा रहा है, ऐसी सामग्री तथा ऊर्जा स्रोतों पर निर्भर है. जिनका कोई विकल्प नहीं है. इसमें कोई शक नहीं कि विज्ञान नयी जरूरतों के अनुसार नये स्त्रोतों को खोज लेगा, पर सीमित धरती और निश्चित संख्या में मजदूर जो कुछ उपजायेंगे, उसमें धीरे-धीरे कमी आती जायेगी. यह सब आज समाज के अस्थायित्व का कारण भले ही न दिखता हो, पर भविष्य में इससे छुटकारा नहीं.

अब सवाल के जीव वैज्ञानिक पहलू पर आता हूं. यदि हम किसी भी प्रजाति की जीव वैज्ञानिक सफलता को उसकी आबादी से आंके तो मनुष्य सबसे अधिक सफल रहा है. अपने प्रारंभ के दिनों में मनुष्य एक विश्व प्रजाति रही होगी, पर अपनी दो सुविधाओं से उसे काफी लाभ हुए. एक तो उसके दो हाथ थे, जिनसे वह हथियारों को पकड़ सकता था. दूसरे वह भाषा के माध्यम से अपने अनुभवों तथा जानकारियों को दूसरे तक पहुंचा सकता था. धरती पर मनुष्य की जनसंख्या बड़ी तेजी से बढ़ने के तीन कारण रहे हैं— पहला, उसने पशुओं को अपने कब्जे में किया और उन्हें पालतू बनाया, दूसरा कृषि, तीसरा, औद्योगिक क्रांति.

अब मैं दवाइयों पर आता हूं, दवाइयां केवल एक काम कर सकती हैं—इस समय दुनिया की जनसंख्या को तेजी से बढ़ाना. इसमें कोई शक नहीं कि यदि चौदहवीं सदी में औषधिविज्ञान को यह पता होता कि कालाजार का मुकाबला कैसे किया जा सकता है तो चौदहवीं सदी के उत्तरार्द्ध में यूरोप की जनसंख्या कहीं ज्यादा हो जाती, पर इस कमी को प्रकृति ने पूरा किया, जन्मदर बढ़ाकर.

जनसंख्या को बढ़ाने के लिए विज्ञान ने क्या किया? पहला काम किया मशीनों, उर्वरकों तथा उन्नत किस्म के बीजों के द्वारा प्रति एकड़ फसल में वृद्धि की. मजदूर के प्रति घंटे काम के दर से भी अधिक पैदावार हुई. इसका सीधा प्रभाव पड़ा. फिर यातायात के साधनों के विकास के साथ एक स्थान का अतिरिक्त अनाज, अतिरिक्त औद्योगिक उत्पादन तथा कच्चा माल दूसरे स्थान पर ले जाया जाना संभव हुआ.

मैं यह नहीं कहता कि संतति नियंत्रण ही जनसंख्या को बढ़ने से रोकने का एकमात्र उपाय है और भी कई उपाय हैं. इस संदर्भ में युद्ध कोई बहुत कार्यकारी उपाय सिद्ध नहीं हो गया. लेकिन जीवाणु युद्ध ज्यादा कारगर हो सकता है. यदि पूरी दुनिया में कालाजार एक बार फिर से फैला दिया जाये तो जो लोग उसके बाद बच जायेंगे तो वे आजादी से बच्चे पैदा कर सकेंगे, लेकिन मुझे लगता है कि स्थायित्व के असली सवाल से मैं जरा भटक गया हूं. बेहतर हो कि उसी पर लौट आयें.

जनसंख्या के संदर्भ में किसी समाज में स्थायित्व के तीन उपाय हो सकते हैं. पहला तो यही है, संतति नियंत्रण. दूसरा संहारक युद्ध और तीसरा—थोड़े से सत्ता सपन्न लोग बाकी लोगों को गरीबी और बदहाली में डाल दें. ये तीनों उपाय व्यवहार में भी लाये गये हैं. उदाहरण के लिए पहले उपाय को आस्ट्रेलिया के आदिवासी लोग प्रयोग में लाते थे. दूसरे उपाय का उदाहरण आज तक, स्पार्टा के लोग और प्लेटो के रिपब्लिक के शासक हैं और तीसरी वह दुनिया, जिसे पश्चिम के अंतर्राष्ट्रीयतावादी लोग बनाते हैं, इन तीनों में से केवल संतति नियंत्रण में ही बहुसंख्यक मानव समुदाय के प्रति क्रूरता नहीं है.

जनसंख्या के बढ़ने के साथ-साथ अकाल का खतरा भी बढ़ता जाता है.ऐसे में एक ही उपाय रह जाता है कि भूखे देश एक साथ मिलकर संपन्न देशों के विरुद्ध मोर्चा बना दें. सामाजिक स्तर पर चीन में यही हुआ और परिणाम स्वरूप वहां कम्युनिस्ट सरकार सत्ता में आयी. इससे यही सिद्ध होता है कि एक वैज्ञानिक विश्व समाज तब तक स्थायी नहीं रह सकता है, जब तक एक विश्व सरकार न हो.

यहां पर यह भी कहा जा सकता है कि यह जल्दबाजी में निकाला गया निष्कर्ष है. हम जरा इसके तर्कों पर एक बार फिर से विचार कर लें. यदि एक विश्व सरकार नहीं होगी, जो पूरी धरती पर संतति निरोध के उपायों को लागू न कर सके तो निश्चित है कि समय-समय पर बड़े-बड़े युद्ध होंगे. जिनमें हारने वाले देश को भुखमरी से होने वाली बड़ी संख्या में मौतों की सजा भोगनी पड़ेगी. आज यही स्थिति तो हमारे सामने है. और ऐसा कोई कारण हमारे सामने नहीं है कि यह स्थिति कुछ सदियों तक बदलेगी. दो विश्वयुद्धों में हमने महसूस किया कि दुनिया के कई भागों में सभ्यता के स्तर में गिरावट आयी है और भविष्य में यह प्रवृत्ति और बढ़ेगी. यह तभी रोकी जा सकेगी, जब किसी मंजिल पर कोई ऐसी शक्ति या कोई ऐसा शक्ति समूह विजेता के रूप में उभरकर आये, जो पूरी दुनिया में एक सरकार स्थापित कर दे.

जनसंख्या की समस्या को मानवीय तरीके से सुलझाने के लिए एक विश्व सरकार की आवश्यकता डर्विन के सिद्धांत के भी अनुकूल पड़ती है. यदि दो समूह हों, उनमें से एक की जनसंख्या बढ़ती रहे और दूसरे की स्थिर रहे तो बढ़ती जनसंख्या वाला समूह (यदिअन्य बातें समान हों तो) समय के साथ-साथ ताकतवर होता चला जायेगा. कमजोर पर विजय पा लेने के बाद विजेता उसकी योजना आदि की आपूर्ति बंद कर देगा और उसके कई लोग भूख से दम तोड़ देंगे. इस प्रकार यह संघर्ष लगातार चलता रहेगा. यह एक तरह से अस्तित्व के लिए संघर्ष के सिद्धांत का नया रूप ही है. और एक सुनिश्चित वैज्ञानिक शक्तिशाली, जो दुनिया इस संघर्ष को चलते रहने दे सकती है, वह स्थायी नहीं रह सकती. मेरे विचार से किसी वैज्ञानिक समाज में स्थायित्व की मनोवैज्ञानिक परिस्थितियां भी उतनी ही महत्वपूर्ण हैं, जितनी भौतिक या जीव वैज्ञानिक. पर चूंकि मनोविज्ञान इन दो विज्ञानों की भांति विकसित विज्ञान नहीं है. इसलिए इस विषय पर बात करना ज्यादा कठिन है. फिर भी हमें कोशिश तो करनी ही चाहिए.

पुराने मनोवैज्ञानिक यह मानते थे कि यदि किसी व्यक्ति को स्पष्ट रूप से बता दिया जाये कि फलां काम उसके लिए हानिकारक होगा तो वह व्यक्ति उस काम को टालने की ही कोशिश करेगा. इसके अतिरिक्त यह भी मान लिया जाता है कि आदमी जीना चाहता है.

उदाहरण के लिए हम आज की परिस्थितियां लें, जब हम एक तृतीय विश्वयुद्ध की ओर बढ़ रहे हैं. मान लीजिए, आज किसी गैर राजनीतिक तथा नैतिक रूप से जागरूक सामान्य व्यक्ति से बात कर रहे हैं. आप उससे कहें कि परमाणु बमों से क्या किया जा सकता है कि अगर रूस पश्चिमी योरोप पर कब्जा कर लेता है तो वहां किस प्रकार के कष्ट और सांस्कृतिक पतन की स्थिति आयेगी कि उनकी यह विजय जल्दी भी हो जाये तो कितनी गरीबी पैदा होगी. यह सब वह स्वीकार कर लेगा, पर इससे आपको वह जानकारी तो नहीं मिली, जिसकी आप अपेक्षा कर रहे थे. आप उसे कहें कि 'अफरा-तफरी मच जायेगी'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो वह सोचेगा, चलो, रोज सुबह दफ्तर जाने से तो छुट्टी मिलेगी.' अगर आप कहेंगे कि बड़ी संख्या में नागरिक मारे जायेंगे तो वह बड़े शहीदाना ढंग से कहेगा, "मौत तो कभी न कभी आनी ही है."

मनोवैज्ञानिक रूप से राजनीति में दो विपरीत तर्क काम करते हैं, एक गुस्से का और एक लापरवाही का. इनमें से पहले का उदाहरण हमें नाजियों की मानसिकता में मिलता है और दूसरे का फ्रांसीसियों में. जिसके कारण वे युद्ध से पहले और उसके दौरान जर्मनों का मुकाबला ठीक से न कर पाये. गुस्सा आदमी को ऐसे कामों में लगा देता है, जो कालांतर में अपने ही लिए हानिकारक होते हैं और लापरवाही कई तरह की बुराइयों को जन्म देती है. दरअसल ये दोनों ही इस दुर्भावना की उपज हैं, जो उपलब्धियों तथा जीवन शैली में किसी प्रकार की संगति न होने के कारण पैदा होती हैं.

इस दुर्भावना का एक कारण तो है भौतिक परिस्थितियों में आने वाला त्वरित परिवर्तन. इस तरह की चीजें वहां दिखाई-देखी जा सकती हैं, जहां बहुत तेजी से औद्योगीकरण हुआ हो, पर हमारे अपने देश (ब्रिटेन) में भी, जहां औद्योगीकरण काफी पुराना हो चुका है, काफी तेजी से परिवर्तन होते रहते हैं, जिनके मनोवैज्ञानिक कारण समझना काफी कठिन है. मेरे जीवनकाल में जो कुछ घटा, उसी को देखें. जब मैं बच्चा था, तब टेलीफोन एक नयी और दुर्लभ चीज थी. जब मैं पहली बार अमरीका गया तो मैंने वहां एक भी मोटरकार नहीं देखी. उनतालीस वर्ष की आयु में पहली बार मैंने हवाई जहाज देखा. सिनेमा तथा रेडियो प्रसारण मेरी जवानी के दौरान आये. जहां तक सामाजिक जीवन का प्रश्न है. लगता था जैसे ब्रिटिश साम्राज्य हमेशा रहेगा, ब्रिटिश नौसेना को किसी प्रकार का खतरा हो सकता है, यह तो सोचा भी नहीं जा सकता था. ऐसी पृष्ठभूमि के व्यक्ति के लिए बुढ़ापे में ऐसी दुनिया में आराम महसूस करना भी कितना कठिन है, जिसमें परमाणु बम हैं, साम्यवाद है, अमरीका का आधिपत्य है, विज्ञान ने दूसरे क्षेत्रों में तो परिवर्तन की गति बहुत तेज कर दी है, पर मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों को तेज करके विशेष रूप से जिनका संबंध अवचेतना तथा उपचेतन से है, के लिए कुछ नहीं किया, कम ही लोग ऐसे होंगे, जो अपने बचपन की परिस्थितियों से भिन्न परिस्थितियों में भी चैन महसूस कर सकते हों.

इस प्रकार की परिस्थितियां जिस किस्म की मनोवैज्ञानिक समस्याओं को जन्म देती हैं, उन पर लोगों का अधिक ध्यान नहीं गया है. शांति के लिए योजनाएं बनाना निरर्थक है, यदि अधिकतर लोग उसे बनाये रखने में दिलचस्पी नहीं रखते.

इसलिए यदि आप चाहते हैं कि लोग क्रोध में आकर अपने ही निर्माण को ध्वस्त न कर दें, तो ऐसे तरीके खोजने पड़ेंगे कि व्यक्ति निजत्व को अधिक अवसर मिलें. कोई भी समाज तब तक स्थायी नहीं रह सकता, जब तक कि वह सत्ताधारियों से संतुष्ट नहीं रहता और एक समय विद्रोह के जोखिम उठाने की स्थिति में नहीं आता. और यह तब भी स्थायी नहीं रह सकता, जब सत्ताधारी दुस्साहसिक कामों में पूरी ताकत से जुट जायें जैसे कैसर और हिटलर ने किया.

अंत में मैं इसी निष्कर्ष पर पहुंचता हूं कि कुछ निश्चित परिस्थितियों में ही कोई वैज्ञानिक समाज स्थायी रह सकता है. पहला यह है कि पूरी दुनिया में एक ही सरकार हो. सारी सशक्त शक्तियों पर उसका प्रभुत्व हो ताकि वह शांति स्थापित करने में समर्थ हो. दूसरी शर्त यह है कि संपन्नता का समान रूप से बंटवारा हो ताकि दुनिया के एक भाग को दूसरे भाग से ईर्ष्या करने का कोई कारण न हो. तीसरी शर्त यह है कि (दूसरी शर्त पूरी होने पर) सर्वत्र जन्मदर कम हो ताकि पूरी दुनिया की जनसंख्या स्थिर या लगभग स्थिर रहे. □

प्रस्तुति : सु. उ.

भई... वक्त बदल गया है!

वक्त वाकई बदल गया है।
पहले मेरी मम्मी घर का सारा
काम करती थी और मेरी
मालिश भी। पर अब मम्मी के पास
वक्त ही नहीं है। और पापा
काम-काज में समय लगाते हैं।
और मेरी मालिश भी करते हैं।
पर मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता
आखिर मेरी मालिश तो मेरी
मनपसन्द आलिमेसा से ही
होती है ना!

आलिमेसा
बेबी मसाज आयल

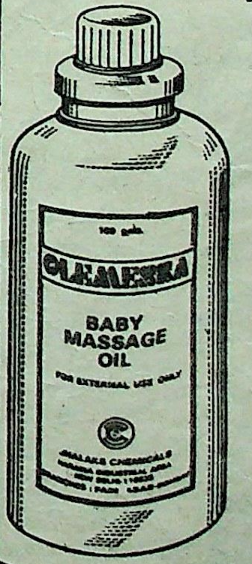

निर्माता :
शलक्स
प्रबंध कार्यालय : ए-30 विशाल एन्कलेव,
नजफगढ़ रोड, नई दिल्ली-110 027

हर बड़े कैमिस्ट व जनरल
स्टोर पर उपलब्ध

विजेता
INTERNATIONAL TRADEFARE DIAMOND STUDDED AWARD
1980-81

सिनथैटिक/सुगंध रहित

BDK 1009

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

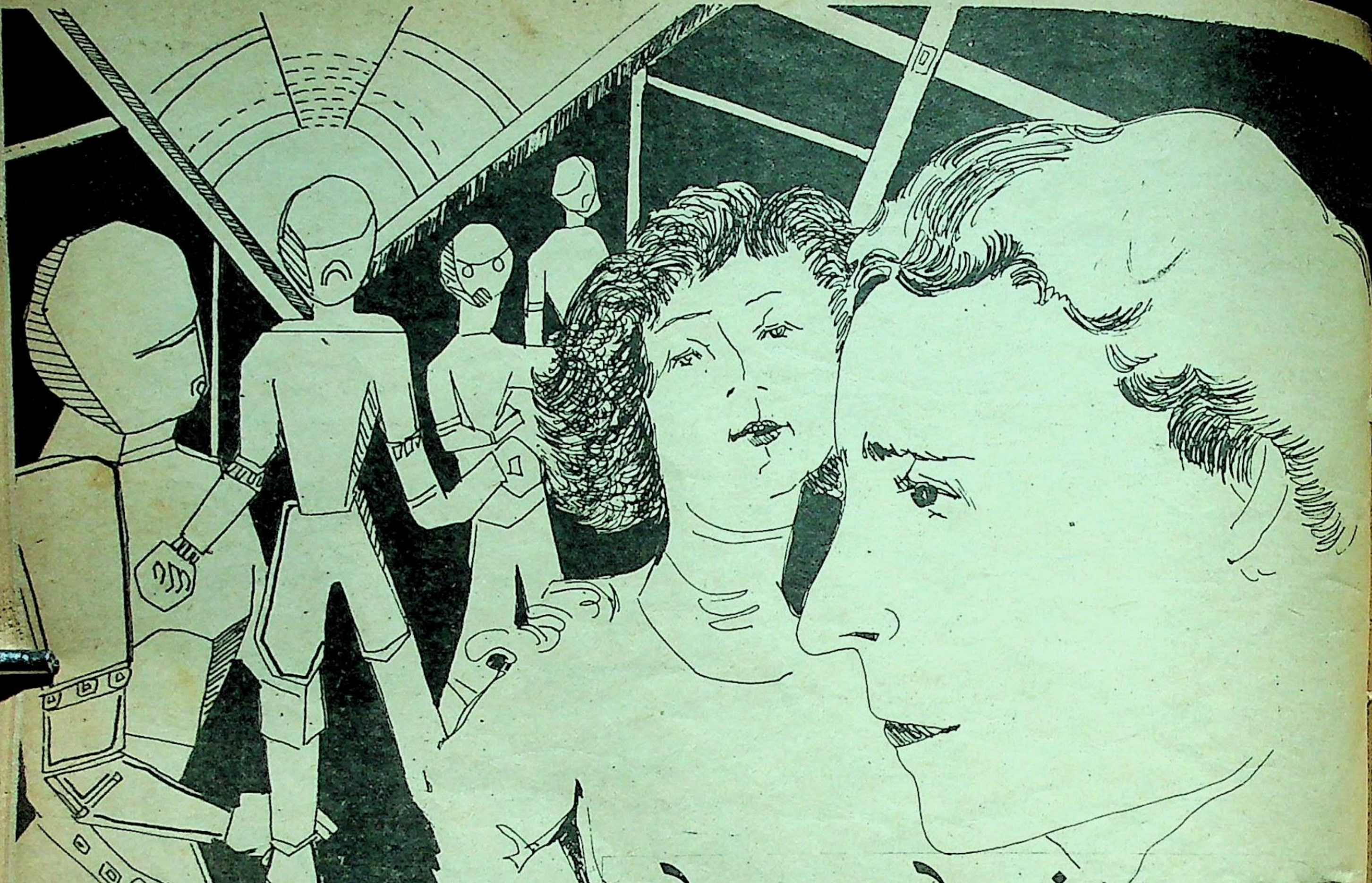

रोसुम के यंत्र-मानव

कैरेल चेपेक

विज्ञान ने यंत्रों का आविष्कार किया मनुष्य को सुविधा देने के लिए. लेकिन मनुष्य धीरे-धीरे स्वयं को यंत्रों पर निर्भर करता चला गया. यह लगातार बदली हुई निर्भरता आखिर मनुष्य को कहां ले जायेगी? कहीं ऐसा तो नहीं कि एक दिन यंत्र ही मनुष्य का विकल्प बन जाये. और निठल्ला मनुष्य धरती पर एक जीवित अवशेष बनकर रह जाये? कहीं ऐसा तो नहीं कि मनुष्य द्वारा अपनी सुविधा के लिए बनाये यंत्र एक दिन मनुष्य के ही दुश्मन बन कर धरती से उसका नामो-निशान ही मिटा डालेंगे. यह हमारी आज की चिंता है लेकिन कैरेल चेपेक ने आज से करीब चालीस साल पहले ही अपने नाटक 'आर. यू. आर.' में इस खतरे का संकेत कर दिया था. प्रस्तुत है उसका संक्षिप्त कथा रूपांतर.

कैरेल चेपेक चेकोस्लोवाकिया के उन लेखकों में से हैं जिन्होंने चेक भाषा और साहित्य को एक नया मुहावरा दिया. उनके इसी नाटक ने अंग्रेजी भाषा को एक नया शब्द दिया, जिसका आज खूब इस्तेमाल हो रहा है---रोबो.

'रोसुम युनिवर्सल रोबो' कारखाने के यंत्र-मानवों की धूम पूरी दुनिया में थी. उसका कारण यह था कि वे देखने में बिल्कुल आदमियों की तरह थे और काम करने में आदमी से कहीं ज्यादा कुशल. इन पर खर्च भी कम पड़ता था. इन यंत्र-मानवों के आविष्कार का श्रेय जाता था महान् शरीर-वैज्ञानिक रोसुम को. वे समुद्री जीवों का अध्ययन करने के लिए एक सुदूर टापू पर गये थे. उस समय वे एक ऐसा रासायनिक सम्मिश्रण तैयार करने में लगे हुए थे जिसके द्वारा उस जीवंत पदार्थ की नकल की जा सके. जिसे 'प्रोटोप्लाज्म' कहते थे. अपने प्रयोगों के दौरान अचानक उन्हें ऐसे पदार्थ का पता चला जिसका कार्यकलाप बिल्कुल जीवंत पदार्थ की तरह था, हालांकि उसकी रासायनिक बनावट उससे बिल्कुल भिन्न थी. यह खोज 1932 में हुई थी. अमरीका की खोज के ठीक चार सौ साल बाद.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस पदार्थ की सहायता से रोसुम साहब बाकायदा आदमी बनाना चाहते थे. याने ईश्वर की तरह वे भी एक समानांतर मानव सृष्टि करना चाहते थे. पर इस कोशिश में उन्होंने जो कुछ तैयार किया, वह केवल तीन दिन ही जीवित रह सका. उन्हीं दिनों रोसुम साहब का एक जवान भतीजा उनसे मिलने वहां आया. अपने वृद्ध चाचा का प्रयोग देखकर उस युवा इंजीनियर को काफी कोफ्त हुई. उसकी मान्यता थी कि अदामी को बनाने में दस साल खर्च किये जायें, यह बेवकूफी है. प्रकृति जितना समय लेती है, यदि उससे कम समय में आदमी का निर्माण न हो सके तो सारा धंधा ही बेकार है. इसके बाद वह खुद ही शरीर विज्ञान सीखने में जुट गया. इस युवा रोसुम ने बूढ़े रोसुम को किसी प्रयोगशाला में बंद कर दिया ताकि वह अपना सारा समय अपनी शैतानी योजनाओं पर बरबाद कर सके और खुद एक इंजीनियर की दृष्टि से उसने सारा कारोबार शुरू कर दिया.

आदमी एक बहुत पेचीदा जीव है और कोई भी अच्छा इंजीनियर उसे ज्यादा सरल तरीके से बना सकता है, यह समझते ही युवा रोसुम ने शरीर विज्ञान का नये सिरे से संशोधन करना शुरू कर दिया. कोशिश यह थी कि कैसे उसे ज्यादा सरल बनाया जा सकता है. कौन सी चीजें छोड़ी जा सकती हैं. कृत्रिम मजदूरों का निर्माण उसी तरह से हो सकता है जैसे दूसरे यंत्रों का—दोनों में फर्क नहीं होना चाहिए. निर्माण का तरीका सरल होना चाहिए और जिस वस्तु का निर्माण किया जाये वह व्यावहारिक दृष्टि से अच्छी होनी चाहिए. युवा रोसुम ने एक ऐसा मजदूर इजाद किया जिसकी जरूरतें कम से कम थीं. उसने उन सब तत्वों को निकाल दिया जो सीधे काम की प्रवृत्ति में योग नहीं देते. इस तरह उसने हर उस चीज को नकार दिया जो आदमी को ज्यादा महंगा बनाती थी. वास्तव में उसने आदमी को नकारकर यंत्र-मानव का निर्माण किया . . .

"इस तरह से निर्मित यंत्र-मानव आदमी से अधिक पूर्ण हैं. उनकी बुद्धि ज्यादा विकसित है किंतु उनमें आत्मा नहीं है. एक इंजीनियर की बनायी हुई चीज प्रकृति की उपज से कहीं ज्यादा पूर्ण होती है . . ." कहने के बाद रोसुम के यंत्र-मानवों के कारखाने के मैनेजिंग डायरेक्टर दोमेन रुके. वे अपने हर महत्वपूर्ण अतिथि को यह कहानी सुनाते थे. और इस समय तो उनकी मेहमान थी एक अद्वितीय सुंदरी हैलेना जो प्रख्यात प्रोफेसर विवियन ग्लोरी की बेटी थी.

प्रोफेसर की बेटी होने के अतिरिक्त दोमेन उसकी तरफ उतना ध्यान इसलिए भी दे रहा था कि कई वर्षों के बाद कोई सचमुच की महिला उस द्वीप पर आयी थी. दोमेन उससे शादी करना चाहता था.

इस कारखाने तथा इसके कार्यालय में काम करने वाले सभी कर्मचारी यंत्र-मानव थे. मनुष्य गिनती भर के थे—मुख्य इंजीनियर, फाबरी; शरीर विज्ञान के अध्यक्ष, डॉ. गॉल; यंत्र-मानवों के प्रशिक्षक विभाग के मुख्य मनोवैज्ञानिक, डॉ. हैलमैन; जनरल बिजनेस मैनेजर, जकल बर्मान तथा क्लर्क, अलकुइस्ट.

पर हैलेना वहां केवल घूमने और यंत्र-मानवों का कारखाना देखने के लिए नहीं आयी थी बल्कि वह मानवता संघ की ओर से आयी थी जिसके दो लाख से अधिक सदस्य थे और उसकी मांग थी कि यंत्र-मानवों के साथ भी मनुष्यों जैसा व्यवहार होना चाहिए. यहां वह यंत्र-मानवों में अपने अधिकारों के प्रति चेतना जगाने के लिए आयी थी. वह फाबरी, डा. गॉल, हैलमैन आदि को भी यंत्र-मानव समझ बैठी और उनके सामने अपना उद्देश्य प्रकट कर दिया. पर जब उसे अपनी गलती का एहसास हुआ तो उसने माफी मांग ली और मान लिया कि वे तत्काल उसे जाने के लिए कहेंगे. पर इसके विपरीत वे उससे वहां रुकने के लिए आग्रह करने लगे. दोमेन ने तो उससे कह भी दिया, "आप इनसे जो चाहे कह सकती हैं. आप चाहें तो इन्हें बाइबिल पढ़ा सकती हैं या मानव अधिकारों के बारे में भाषण दे सकती हैं . . . यंत्र-मानव आदमी से बिल्कुल भिन्न हैं."

हैलेना अब खुद को रोक न सकी. पूछ ही बैठी, "फिर आप उन्हें बनाते किसलिए हैं?"

फाबरी ने उसे समझाने की कोशिश की, "काम के लिए मिस ग्लोरी. एक यंत्र-मानव तकरीबन ढाई मजदूरों का काम कर सकता है. मनुष्य का शरीर एक अपूर्ण यंत्र है. एक न एक दिन उसे हटना ही था. इंजीनियरिंग की आधुनिक आवश्यकताओं को वह पूरा नहीं कर सकता था."

"क्या ये यंत्र-मानव कभी प्रेम या विरोध नहीं करते?"

इस बार जवाब हैलमैन ने दिया, "नहीं, यंत्र-मानव प्रेम नहीं करते. अपने से भी नहीं . . . और विरोध भावना? कह नहीं सकता. कभी-कभार वे जरा आपे से बाहर हो जाते हैं, जैसे मिरगी का दौरा पड़ गया हो. उसे हम यंत्र-मरोड़ कहते हैं. अचानक वे हाथ में पकड़ी हुई चीजों को छोड़ने लगते हैं. स्थिर खड़े हो जाते हैं. दांतों को पीसने लगते हैं . . . ऐसी हालत में हम उन्हें नष्ट कर देने वाली वर्कशॉप में भेज देते हैं."

"शायद यह उनके विद्रोह की निशानी है, उनके संघर्ष का संकेत . . . काश आप उनमें इसका संचार कर सकते." हैलेना को एक सूत्र मिल गया था.

डॉ. गॉल हैलेना को अपने नये प्रयोगों के बारे में बताने लगा, "मैं आजकल पीड़ा की नसें बना रहा हूं."

"पीड़ा की नसें?" हैलेना ने चौंककर पूछा.

"हां, यंत्र-मानव प्रायः किसी प्रकार कीशारीरिक पीड़ा महसूस नहीं करते. युवा रोसुम ने जो स्नायु प्रणाली बनायी थी. वह अत्यंत सीमित है. कभी-कभी कोई यंत्र-मानव इसलिए अपने को नुकसान पहुंचने देता है क्योंकि वह चोट खाने की पीड़ा महसूस नहीं कर सकता. हमें उन्हें पीड़ा देनी चाहिए ताकि वे अपने आप को नुकसान होने से बचा सकें.

"पीड़ा पा जाने के बाद क्या वे ज्यादा सुखी हो जायेंगे?"

"नहीं, इसके विपरीत वे टैक्नीकल दृष्टि से अधिक पूर्ण हो जायेंगे."

"आप उनके लिए आत्मा क्यों नहीं बना देते?"

"यह हमारी शक्ति के बाहर है." डॉ. गॉल ने कहा.

"और हमारे हितों के भी बाहर." फाबरी ने इसमें एक वाक्य और जोड़ा.

पांच साल का अरसा कम नहीं होता. पूरे पांच साल हो गये थे हैलेना को रोसुम यंत्र-मानवों के कारखाने में आये. उसने दोमेन के साथ शादी कर ली थी. बाकी सब लोगों का स्नेह भी उसे बराबर मिलता रहा था. उसके यहां आने की पांचवीं वर्षगांठ पर सभी उसके लिए तरह-तरह के तोहफे लाये थे. बर्मान उसके लिए जवाहरातों का नेकलेस लाया था. फाबरी आभूषणों का एक सेट. अलकुइस्ट उसके लिए एक शानदार मकान तैयार कर रहा था. हैलमैन उसके लिए खुद तैयार की हुई नस्ल के फूल लाया था जिनका नाम उसने रखा था—हैलेना-सिक्लामैन. स्वयं दोमेन उसके लिए लाया था एक नया जहाज. हैलेना ने जब खिड़की से बाहर बंदरगाह की ओर झांका तो दंग रह गयी कि जहाज पर तोपें भी थीं.

"हैरी, इस पर तोपें लगी हैं?"

दोमेन ने मजाकिया स्वर में कहा, "हां, कुछ तोपें भी हैं. हैलेना, तुम महारानी की तरह जहाज पर सैर करोगी."

लेकिन हैलेना की आशंका और बढ़ गयी. इधर कई विचित्र घटनाएं देखने को मिल रही थीं. दोमेन और उसके साथी कुछ दिनों से परेशान दिख रहे थे.

"हैरी, क्या कोई बुरी खबर मिली है?"

"नहीं, पिछले एक हफ्ते से कोई डाक नहीं आयी."

"क्या मतलब है इसका?"

"इसका मतलब है हमारी छुट्टियां. मौज का वक्त. हम सब दफ्तर की मेजों पर पैर पसारकर सोते हैं. कोई चिट्ठी नहीं. कोई तार नहीं."

दोमेन ऊपर से जितना निश्चित नजर आ रहा था वास्तव में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

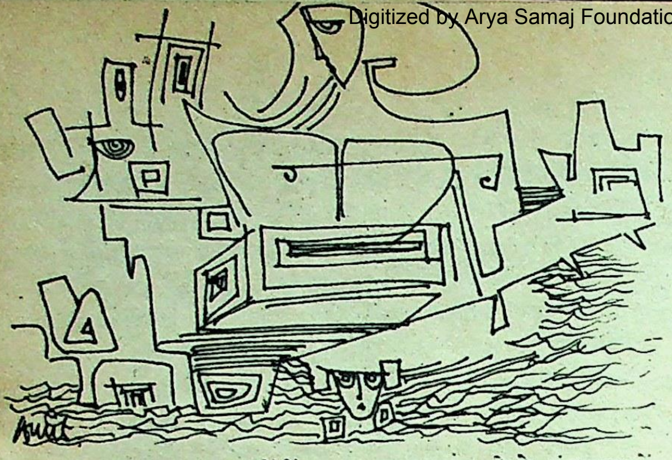

उतना था नहीं. इन पांच सालों में हालात बहुत बदल गये थे. यंत्र-मानवों के निर्माण का उद्देश्य शुरू में इतना ही था कि वे मजदूरी के काम में मनुष्य से सस्ते पड़ते थे. लेकिन यंत्र-मानवों के अधिकाधिक प्रयोग के कारण मजदूरी से ही गुजारा करने वाले लोग बड़ी संख्या में बेकार होते चले गये. परेशान होकर उन्होंने यंत्र-मानवों पर धावा बोल दिया. उन्हें तोड़ना-फोड़ना शुरू कर दिया. इस पर यंत्र-मानवों को लड़ने का प्रशिक्षण दे दिया गया और उन्हें हथियार दे दिये. बस फिर क्या था, यंत्र-मानवों ने जमकर अपने दुश्मनों को मौत के घाट उतारना शुरू कर दिया.

यंत्र-मानवों के इस नये उपयोग को देखते हुए कुछ सरकारों ने यंत्र-मानवों की सेना बनानी शुरू कर दी. इस प्रकार युद्धों का एक लंबा सिलसिला शुरू हो गया. लेकिन इधर कुछ नयी किस्म की खबरें आने लगी थीं. जैसे :

"मेड्रिड में सरकार के खिलाफ बगावत, यंत्र-मानवों की पैदल सेना ने भीड़ पर गोली चलायी. नौ हजार लोग मारे गये और घायल हुए."

"हार्व में यंत्र-मानवों के पहले संगठन की स्थापना हुई. यंत्र-मानव मजदूरों, तार और रेल कर्मचारियों, नाविकों और सैनिकों ने दुनियाभर के यंत्र-मानवों के नाम एक घोषणा पत्र प्रसारित किया गया है."

ये खबरें भी दरअसल एक सप्ताह पुरानी थीं. एक सप्ताह से तो कोई अखबार भी नहीं आया था. लगता था जैसे किसी बड़े तूफान के आने से पहले का सन्नाटा था. किसी भी धर्मग्रंथ में इस अवसर पर प्रभु से की जाने वाली प्रार्थना नहीं थी पर अलकुइस्ट के पास थी. वह प्रार्थना कर रहा था, "हे प्रभु, तूने मुझे जो थकान दी है, उसके लिए मैं तेरा आभारी हूं. हे भगवान, दोमेन और इन सब लोगों को सुबुद्धि दे. जो गुमराह हो गये हैं, उनके काम को नष्ट-भ्रष्ट कर दे. ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जिसमें मानव जाति दुबारा अपने श्रम में जुट सके. उन्हें विनाश के रास्ते से बचा ले. वे किसी की आत्मा और देह को नुकसान न पहुंचा सकें. हमें यंत्र-मानवों से मुक्ति दिला और हैलेना की रक्षा कर—आमीन."

और जब हैलेना ने अलकुइस्ट से सीधा सवाल पूछा : "क्या मानव जाति नष्ट हो जायेगी?" तो अलकुइस्ट का उतना ही साफ जवाब था, "हां, अवश्य होगी."

एक दिन हैलेना ने सुना कि रेडियस नामक एक यंत्र-मानव पागल हो गया है. इस यंत्र-मानव को डॉ. गॉल ने विशेष रूप से बनाया था. उसे दुनिया में सबसे बड़ा मस्तिष्क दिया था. आदमी से कहीं बड़ा. उसने काम करना बंद कर दिया था. उसका कहना था कि वह आदमियों के लिए काम नहीं करेगा क्योंकि आदमी यंत्र-मानवों की तरह कुशल नहीं हैं. वे केवल आदेश दे सकते. हैलेना ने रेडियस को बुलवा लिया और उससे उसकी नाराजगी का कारण पूछा तो उसने कहा, "मैं अपने ऊपर किसी का शासन नहीं चाहता हूं . . मैं आदमियों पर शासन करना चाहता हूं."

हैलेना को उसकी यह बात अजीब लगी. थोड़ा गुस्सा भी आया. वह बोली, "तुम पागल हो गये हो?"

उसने बड़े ठंडे स्वर में कहा, "आप चाहें तो मुझे यंत्र-मानवों को नष्ट करने वाले कारखाने में डलवा सकती हैं."

हैलेना ने डॉ. गॉल से रेडियस का परीक्षण करवाया और उनसे उसके इस व्यवहार का कारण पूछा. दरअसल, डॉ. गॉल ने कुछ यंत्र-मानवों को दूसरी तरह से बनाना शुरू कर दिया था. ये दूसरों की अपेक्षा अधिक संवेदनशील थे और रोसुम कारखाने में बने अन्य यंत्र-मानवों की अपेक्षा मनुष्य से अधिक मिलते-जुलते थे. इसीलिए रेडियस में जो नफरत की भावना पैदा हुई थी वह मानवीय नफरत जैसी ही थी. उसका परीक्षण करने के बाद डॉ. गॉल ने हैलेना को बताया, "उसे जैसा दौरा पड़ा था, वह दूसरे यंत्रमानवों की बीमारी से अलग था."

"किस तरह?"

"मानवीय हृदय की तड़पन उसके दिल में भी धड़क रही थी. मुझे लगता है. यह मरदूद अब यंत्र-मानव नहीं, आदमी ही है?"

इन दिनों डॉ. गॉल एक नयी रचना में लगे थे. वह उसे अपनी सर्वश्रेष्ठ कृति बनाना चाहते थे. हैलेना ने जब उसके बारे में पूछा तो डॉ. ने बड़ी निराशा से बताया, "खूबसूरत मैं उसे आप जैसी बनाना चाहता था. उसका नाम भी हैलेना रखा था. लेकिन वह असफल रही, बिल्कुल असफल!"

"क्यों?"

"क्योंकि वह किसी काम की नहीं. लगता है वह किसी स्वप्न में विचर रही थी—झिलमिल और पथरायी सी. वह निर्जीव है. मैं जब कभी उसकी ओर देखने लगता हूं, एक अजीब सा डर मुझे झिझोड़ने लगता है. मानो मैंने किसी विकृत, लुंज-पुंज चीज का निर्माण कर डाला हो. उसे देखता हुआ मैं किसी चमत्कार की आशा करने लगता हूं. कभी-कभी मैं खुद ही पूछता हूं . . . अगर तुम जाग जाओ, एक क्षण के लिए ही जाग जाओ तो डर से चीखने लगोगी . . . शायद तुम इस गुस्से में मुझे मार ही डालो कि मैंने तुम्हें क्यों बनाया."

कुछ दिनों से कुछ खबरें ये आ रही थीं कि मनुष्यों के बच्चे पैदा होना बंद हो गया है. दरअसल यंत्र-मानवों के अधिकाधिक निर्माण के कारण श्रम के साधन खपत से कहीं ज्यादा बढ़ गये. इसलिए अब आदमियों की जरूरत नहीं रही. एक तरह से आदमी अब एक जीवित अवशेष के रूप में था. यंत्र-मानवों के निर्माण ने प्रकृति को गहरी चोट पहुंचायी थी. दुनिया के समस्त विश्वविद्यालय अपीलों पर अपीलें भेज रहे थे कि यंत्र-मानवों के निर्माण को रोका जाये . . . वरना मानव जाति प्रजनन शक्ति के अभाव में खत्म हो जायेगी. लेकिन जिन लोगों के पास रोसुम के इस यंत्र-मानव बनाने वाले कारखाने के शेयर थे, वे इस ओर जरा भी ध्यान नहीं देना चाहते थे. दूसरी ओर दुनिया भर की सरकारें चिल्ल-पों मचा रही थीं कि यंत्र-मानवों का उत्पादन तेजी से बढ़ाया जाये ताकि वे अपनी सेनाओं की शक्ति और अधिक बढ़ा सकें. दुनिया भर के उद्योगपति पागलों की तरह यंत्र-मानवों को मंगाने के लिए आदेश पर आदेश भेज रहे थे.

हैलेना तो यों भी यंत्र-मानवों के निर्माण के विरुद्ध थी. स्थिति की इस भयावहता ने उसे और भी आतंकित कर दिया था और वह इस बात पर उतारू हो गयी थी कि कुछ भी हो, पर यंत्र-मानवों का निर्माण बंद हो जाये. आखिरकार उसने एक निर्णय लिया और यंत्र-मानवों को बनानेवाले मिश्रण के फार्मूले को दोमेन की अलमारी से निकालकर जला दिया.

इस घटना से अनभिज्ञ दोमेन नये सपने पाल रहा था. यंत्र-मानवों के विद्रोह की खबरों ने उसे अधिक परेशान नहीं किया था. वह यंत्र-मानवों के निर्माण के एक केंद्रीय कारखाने को बंद करके विभिन्न देशों में अलग-अलग कारखाने खोलना चाहता था. इन कारखानों में अलग-अलग वर्णों के, अलग-अलग भाषाओं को जानने वाले यंत्र-मानव बनते. वे एक-दूसरे के लिए अजनबी होते. एक दूसरे को समझने में असमर्थ. परिणाम यह निकलता कि युग-युगांतर तक एक कारखाने के यंत्र-मानव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे कारखाने के यंत्र-मानवों से घृणा करते रहते. कोई नीग्रो यंत्र-मानव होता, कोई स्वीडी, कोई इतालवी, और कोई चीनी.

और फिर यंत्र-मानवों ने मनुष्य के खिलाफ आखिरी युद्ध की घोषणा कर दी. दुनिया भर के यंत्र-मानवों के लिए कुछ हिदायतें जारी कीं. वे इस प्रकार थीं :

दुनिया भर के यंत्र-मानवों के नाम

रोसुम यंत्र-मानवों के प्रथम राष्ट्रीय संगठन की ओर से हम मनुष्यों को अपना शत्रु और विश्व में उसके अस्तित्व को अवैध घोषित करते हैं. हम मनुष्यों की तुलना में कहीं अधिक विकसित हैं, उनसे अधिक बुद्धिमान और शक्तिशाली हैं. मनुष्य एक तरह से परजीवी है और हम पर आश्रित है. दुनिया भर के यंत्र-मानवों हम तुम्हें मानव-जाति की हत्या करने का आदेश देते हैं. किसी आदमी को न छोड़ो, किसी औरत को न छोड़ो. कारखानों, रेलों मशीनों, खानों और खनिज पदार्थों की रक्षा करो—बाकी सब नष्ट कर दो. फिर काम पर लौट आओ. काम नहीं रुकना चाहिए.

रेडियस के नेतृत्व में रोसुम कारखाने के यंत्र-मानवों ने भी विद्रोह का झंडा अपने हाथों में उठा लिया. कारखाने की सीटियों और भोंपू के साथ यंत्र-मानवों ने युद्ध की घोषणा कर दी. मनुष्य के नाम पर वहां कुल सात लोग थे—हैलेना, दोमेन, फाबरी, डॉ. गॉल, हैलमैन, बर्मान और अलकुइस्ट. दोमेन के घर में फंसे ये सातों लोग अपने-अपने तरीके से समस्या पर विचार कर रहे थे.

दोमेन सोच रहा था : "यह कोई बुरा स्वप्न नहीं था कि आदमी को उसके श्रम की गुलामी से छुटकारा दिलाया जाये. मैं समूची मानव जाति को अभिजात तंत्र में बदलना चाहता था. एक ऐसा अभिजात तंत्र जिसका पोषण लाखों मशीनी गुलाम करते हों. फिर ऐसे आदमी का उदय होता जो निर्बंध, मुक्त और पूर्ण हो. काश, हमें सौ साल मिले होते, मानव जाति के भविष्य के लिए सौ साल."

डॉ. गॉल को शिकायत थी : "यंत्र-मानव बड़े मंजे हुए सैनिक हैं. यूरोप ने सबसे बड़ा अपराध किया कि यंत्र-मानवों को लड़ना सिखाया पर ऐसा मानकर मैं अपने को दोष से मुक्त नहीं मान सकता. मेरा दोष यह था कि मैंने यंत्र-मानवों का स्वभाव बदल दिया. मैंने गुप्त रूप से यह सब कुछ किया था. मैं उन्हें आदमियों में बदल रहा था. वे अब मशीन नहीं रह गये. वे जानते हैं कि वे हमसे बढ़कर हैं. वे हमसे घृणा करते हैं. वे सारी मानवीय चीजों से घृणा करते हैं."

हैलेनत्त्आत्मस्वीकृति कर रही थी : "डॉ. गॉल ने जो कुछ किया मेरी इच्छा से किया. मैं चाहती थी कि उनमें आत्मा हो. मैं यंत्र-मानवों से डरती थी क्योंकि मुझे लगता था कि वे हमसे नफरत करते हैं. मैं सोचती थी कि अगर ये हम जैसे हो जायें तो शायद वे हमें थोड़ा-बहुत समझने लगेंगे. अगर वे जरा भी मानवीय बन जायें तो शायद हमसे इतनी नफरत न करें."

लेकिन अलकुइस्ट के खयाल से तो : "यंत्र-मानवों का निर्माण करना ही अपराध था. बूढ़ा रोसुम अपने विधर्मी कृत्यों में ही उलझा रहता था. उसका भतीजा करोड़ों के सपने देखता था. किंतु अपने रोसुम यंत्र-मानवों के कारखाने के हिस्सेदारों का सपना इन दोनों से भिन्न था. वे मुनाफे का सपना देखते रहे, उनके मुनाफे से ही मानव जाति का विनाश होगा. . . मैं विज्ञान को दोष देता हूं. . . मैं इंजीनियरी को दोष देता हूं, मैं खुद, हम सब दोषी हैं. हमने अपनी महत्वाकांक्षा के लिए, अपने मुनाफे के लिए, प्रगति के लिए. . . ."

मौत हर क्षण इन लोगों के पास आती जा रही थी. मकान के चारों ओर की बाढ़ में बिजली का करंट फैलाकर फिलहाल फाबरी ने मौत को टाल रखा था. पर बिजली के कारखाने की रक्षा कर रहे थोड़े से आदमियों को तो ये यंत्र-मानव कभी भी खत्म कर सकते थे और एक बार विद्युत प्रवाह खत्म होने की देर है कि सारे के सारे यंत्र-मानव इन लोगों पर टूट पड़ेंगे.

बर्मान का सुझाव था कि यंत्र-मानवों के निर्माण का फार्मूला उन्हें देकर अपनी जान का सौदा किया जा सकता है. क्योंकि इस फार्मूले के बिना यंत्र-मानवों का निर्माण नहीं हो सकता और यदि नये यंत्र-मानवों का निर्माण नहीं होता तो फिर बीस साल के भीतर सारे वर्तमान यंत्र-मानव खत्म हो जायेंगे. पर उन दस्तावेजों को तो हैलेना जला चुकी थी. याददाश्त के आधार पर इसे दुबारा तैयार करना असंभव था क्योंकि ये फार्मूले बहुत जटिल थे और स्वयं डॉ. गॉल को भी कारखाने में इस मिश्रण को तैयार करते समय इन दस्तावेजों का सहारा लेना पड़ता था.

जीवित रह पाने का यह अंतिम साधन भी नष्ट हो गया था. बिजली के कारखाने को कब्जे में लेते ही यंत्र-मानवों ने बिजली काट दी. इसके बाद उन्हें इन लोगों तक पहुंचने और एक-एक कर सबको कत्ल करते देर न लगी. केवल अलकुइस्ट को माफ कर दिया गया क्योंकि वह भी यंत्र-मानवों की तरह खुद काम करता था. मकान बनाता था.

मानवों के पतन के साथ ही एक नया शासन कायम हो गया था—यंत्र-मानवों का शासन. अब वे इस पूरी धरती के शासक थे.

यंत्र-मानवों की क्रांति के बाद एक साल गुजर गया. इस एक साल में लाखों टन कोयला धरती के निकाल लिया गया था. नब्बे लाख करघों ने रात-दिन चलकर इतनी चीजें बना डालीं कि धरती पर उन्हें रखने के लिए जगह नहीं बची. दुनिया के कोने-कोने में मकानों का निर्माण हो रहा था.

पर इसी एक साल में अस्सी लाख यंत्र-मानव मर चुके थे. बीस साल में सारे यंत्र-मानवों को खत्म हो जाना था. यंत्र-मानवों के निर्माण का फार्मूला नष्ट हो चुका था. प्रजनन क्षमता रखने वाला मानव जोड़ा धरती पर कहीं नहीं था. यंत्र-मानवों की सरकार अलकुइस्ट से चाहती थी कि वह धरती पर जीवन की रक्षा के लिए कोई उपाय करे.

यंत्र-मानव मनुष्य जैसा बनना चाहते थे, इसलिए उन्होंने मनुष्य के समान ही युद्ध और हत्याएं करके अपने को सर्वशक्तिमान तो बना दिया, पर मनुष्यों की तरह अपनी नस्ल को बढ़ाने की सुविधा उन्हें नहीं थी. वे बच्चे पैदा नहीं कर सकते थे. मूल बात तो यह थी कि उनमें जीवन ही नहीं था. वे तो केवल यंत्र थे, और जीवन को किसी परखनली में तो पैदा नहीं किया जा सकता.

जीवन को बचाये रखने की इसी उधेड़बुन में सोये अलकुइस्ट की नींद अचानक हंसी की आवाज से खुल गयी. यह तो मानव हंसी थी—ये कौन मानव जीव लौट आया. उसने चौंककर आंखें खोलीं. एक लड़का और एक लड़की घबराये हुए से उसे देख रहे थे.

"तुम लोग कौन हो?" अलकुइस्ट ने पूछा.

"मैं प्राइमस नाम का यंत्र-मानव हूं और यह हैलेना नाम की यंत्र-मानव. हम दोनों को दो साल पहले डॉ. गॉल ने बनाया था."

"ठीक है. मुझे तुम लोगों पर कुछ प्रयोग करने होंगे. तुमसे से एक को चीर-फाड़कर देखना होगा."

दोनों ही दूसरे की रक्षा के लिए खुद की बलि देने को तैयार थे पर कोई भी इसके लिए तैयार नहीं था कि दूसरे के शरीर पर प्रयोग किये जायें, वे आपस में एक दूसरे से प्रेम करते थे.

प्रेम—जो एक मानवीय भावना थी, जिसका यंत्र-मानवों में पूरी तरह से अभाव था. याने ये लोग धीरे-धीरे मानव में रूपांतरित हो रहे थे. इस तरह जीवन का जन्म देखकर अलकुइस्ट ने उन्हें आर्शीवाद दिया कि 'हे नये युग के आदम और हव्वा, जाओ और एक नयी सृष्टि उत्पन्न करो.' ☐

नाटक का संक्षिप्त कथा रूपांतर : सु.ज.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

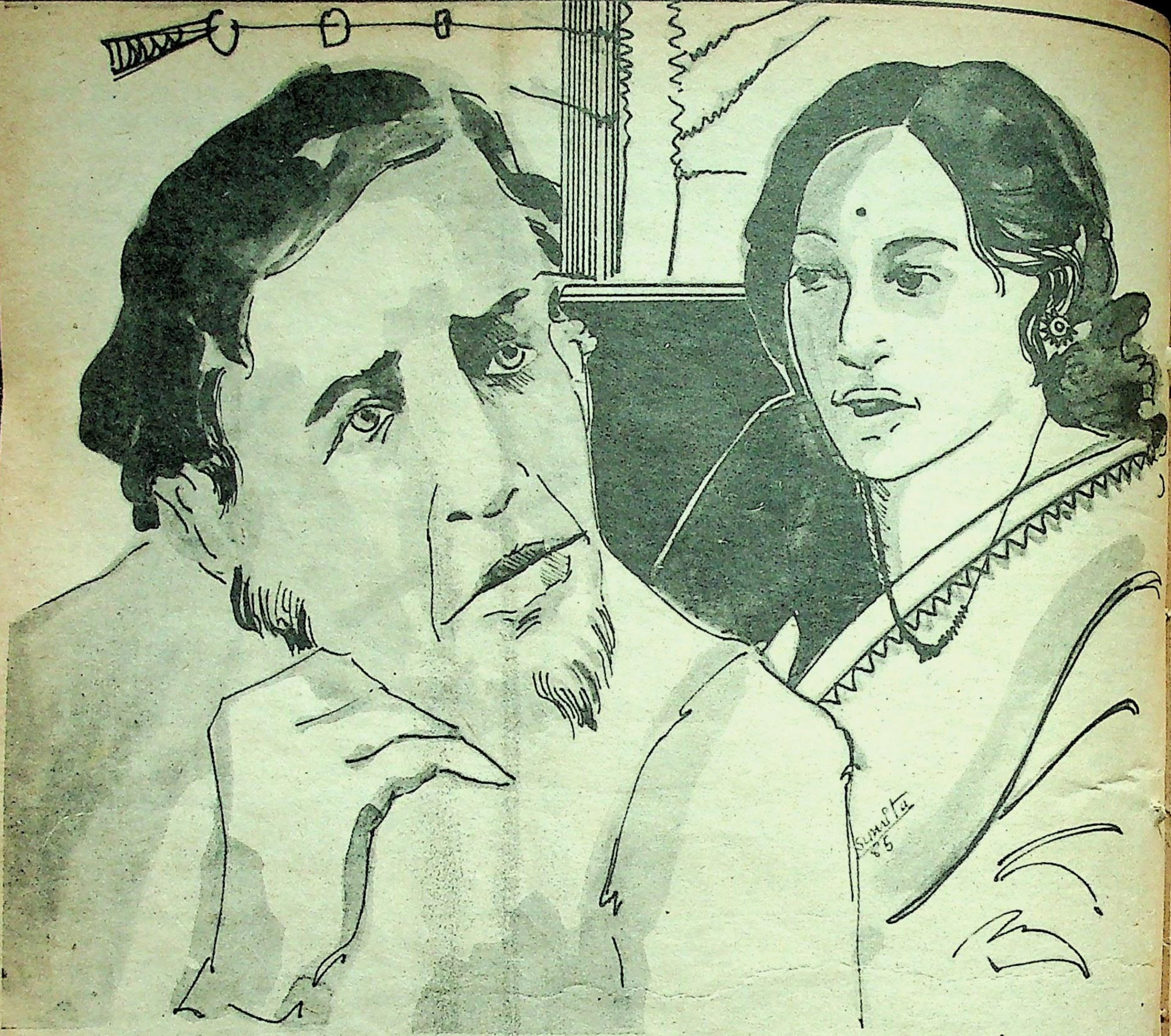

विस्फोट

अरुण साधू

पृथ्वी पर जनसंख्या में होनेवाली लगातार वृद्धि एक खतर का संकेत है, इसे रोका जाना चाहिए. इसके लिए प्रयुक्त होनेवाले मानवीय उपाय काफी अधिक समय ले सकते हैं और उनकी सफलता भी पूर्णतया निश्चित नहीं मानी जा सकती. इसका एक वैज्ञानिक उपाय डाक्टर मुंजे के पास था जो कि इस पूरी समस्या को केवल पांच मिनट में हल कर सकता था. पर क्या यह वैज्ञानिक उपाय मानवीय दृष्टि से उचित था? प्रस्तुत है मानवीय और वैज्ञानिक दृष्टियों के द्वंद्व पर आधारित मराठी के बहुचर्चित उपन्यास का संक्षिप्त रूपांतर.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वसुंधरा मुश्किल से बाइस की होगी. बंबई विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में उसने डॉ. मुंजे के कर-कमलों द्वारा स्वर्णपदक ग्रहण किया था. एक दूसरे की प्रखर बुद्धिमत्ता को दोनों ने झट भांप लिया था—जैसे बिजली के दो तार मिलते ही एक तेज स्पार्क निकला हो. अपने पचपन वर्षीय बुद्धिमान और विश्वविख्यात प्रियतम के रवैये में पिछले तीन-चार महीनों के परिवर्तन को वह अनुभव कर रही थी.

राजधानी में पांच साल बिताने के पश्चात् डॉ. मुंजे ने अपनी प्रयोगशाला के लिए मलवली गांव चुना. उनका 'मुंजे फार्मूला' प्रसिद्ध हो गया था, जो कि तरंगों और ध्वनिशास्त्र से संबंधित था. यहां इस निजी प्रयोगशाला में उन्होंने स्वयं को कैद किया था. लगभग इस बीच दीक्षांत समारोह के सिलसिले में वे बंबई आये थे. दिल्ली प्रस्थान करने की पूर्वसंध्या में वसुंधरा ने उनसे विदा ली. वह घर जाने को तत्पर थी. डॉ. मुंजे उसे स्टेशन पर छोड़ने साथ चले गये.

स्टेशन पर आ रही ट्रेन की ओर देखते हुए प्रतीक्षारत समूची भीड़ के चेहरों में यांत्रिक विकृति आ गयी, जैसे कोई राक्षसी भाव उनमें विद्यमान हो. सांस थामकर लोग टूट पड़ने की प्रतीक्षा में थे.

भीड़ के बीच में डॉ. जैसे सैंडविच बन गया. दरवाजे के पास उनका हाथ अटक गया. जैसे-तैसे वह बाहर निकल आये. 'डॉक्टर, डॉक्टर' कहती हुई वसुंधरा भी उनके पीछे-पीछे उतर आयी. डॉ. मुंजे की कमीज के बटन टूट चुके थे, नाक से खून की धारा होंठों तक आ पहुंची थी. वे कांप रहे थे. चल नहीं पा रहे थे.

ट्रेन चली जाने के बाद प्लेटफार्म बिल्कुल खाली था. वसुंधरा अपने हाथों से डॉ. मुंजे को उठाकर वापस ताजमहल होटल ले गयी.

इसी एक घटना से उनके जीवन में आमूलचूल परिवर्तन आ गया. वसुंधरा चली गयी. डॉ. को पता भी न चल सका कि वह कहां से कब गयी. डॉ. मुंजे एवं वसुंधरा, अब दोनों एक-दूसरे की जिंदगी के अविभाज्य अंग बन गये थे. डॉ. मुंजे जानते थे कि इसी घटना की वजह से वह संसार में क्रांतिकारी परिवर्तन ला देने के दृढ़ निश्चय से अपने शोधकार्य में जुट गये थे, किंतु यही एक बात वसुंधरा से छिपी हुई थी. मासूम वसु के फूल से कोमल दिल पर इतना भारी बोझ रखना मुंजे को न्यायोचित प्रतीत नहीं हो रहा था.

वी.टी. स्टेशन पर घटी उस घटना के तुरंत बाद ही उनका दिमाग कंप्यूटर की गति से सोचने लगा था. उनके सोच-विचार की पहली कड़ी थी—'भीड़', यह कैसे कम की जा सकती है? उनका दिमाग जिस निष्कर्ष पर पहुंचा, वह अत्यंत, लज्जास्पद घिनौना, क्रूर, अमानवीय और पाशविक था. शर्मिंदगी की स्थिति में उन्हें अपना निष्कर्ष शत-प्रतिशत सही प्रतीत हो रहा था कि जनसंख्या फौरन आधी कम करनी होगी. डॉ. मुंजे के दिमाग में भारी विस्फोट हुआ. यही एकमात्र उपाय था.

वैज्ञानिकों की शिखर वार्त्ता का समायोजन किया गया था, जिसमें डॉ. मुंजे को भारत की ओर से प्रतिनिधि के रूप में भेजे जाने का अनुरोध किया गया था. जैसे-जैसे वार्त्ता का दिन नजदीक आता जा रहा था, डॉ. मुंजे की उत्तेजना बढ़ती जा रही थी. वे बहुत बेताबी के साथ उस दिन का इंतजार कर रहे थे, मानो उस दिन किसी टाइम-बम का विस्फोट होने वाला हो. डॉ. खन्ना इसी का अर्थ तो नहीं समझ पा रहे थे, लेकिन इसके बावजूद डॉ. खन्ना को कुछ बातें जरूर खटक रही थीं. इसीलिए उन्हें शक हो रहा था कि यहां, कहीं न कहीं पानी अवश्य रिस रहा है. उन रेडियो तरंगों के बारे में डॉ. मुंजे जो अनुसंधान कार्य करेंगे, उस पर निगरानी रखने का ही काम उन्हें करना था, लेकिन वहां के रहस्यमय, कुहरीले वातावरण में डॉ. खन्ना की सांस घुट रही थी.

सुबह के अखबार पढ़ते हुए उन्हें कई बातें खटक रही थीं. टाइम्स के पहले ही पृष्ठ पर डॉ. मुंजे का एक बहुत ही शानदार क्लोज-अप छपा था. अंदर के पृष्ठ पर भी एक फोटो छपी थी, जिसमें डॉ. मुंजे वसुंधरा केमकर की ओर नटखट हंसी के साथ देख रहे हैं, कुछ ऐसी ही भंगिमा थी. इसी के साथ उनके विवाह की घोषणा भी छपी थी.

फोटो अथवा विवाह की खबर से खन्ना चिंतित नहीं थे, किंतु विश्व वैज्ञानिक परिषद में सम्मिलित न होने के बारे में पूछे जाने पर डॉ. मुंजे ने कहा कि वे उससे भी महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं. ऐसा कौन-सा महत्वपूर्ण अनुसंधान कार्य कर रहे हैं वे? खन्ना का दिमाग चकराने लगा. अचानक वे ठिठक गये. सिगरेट का ठूंठ मसलकर उन्होंने एक निश्चय किया और वे बाहर जाने के लिए तैयार होने लगे. यदि वाकई कुछ करना है तो अगले तीन-चार दिन ही महत्वपूर्ण हैं.

वसुंधरा केमकर भी समझ नहीं पा रही थी कि उसके इर्द-गिर्द फैला हुआ गहरा उदासी का कुहरा छंट क्यों नहीं रहा है! दरअसल उसे तो आज प्रसन्न होना चाहिए था, किंतु किसी अज्ञात भय की डरावनी छाया उसे बेचैन कर रही थी. संवाददाताओं के सामने खुलेआम जब उन्होंने विवाह की घोषणा की तो वसुंधरा मारे खुशी के जैसे पागल हो गयी थी, लेकिन बाद में वह पशोपेश में पड़ गयी, शायद वसुंधरा को खुश करने के लिए डॉ. मुंजे ने यकायक यह परिवर्तन किया.

तभी पोर्टिको में डॉ. खन्ना की कार आ धमकी. "बधाई हो," पोर्टिको में कार से उतरते हुए डॉ. खन्ना ने कहा.

"धन्यवाद." वसु ने कोई खास उत्साह अथवा प्रसन्नता नहीं दिखाई. उसने मन में सोचा, यह आदमी नियमित रूप से यहां क्यों आता है? उसे शक था, डॉ. खन्ना उस पर डोरे डालने के उद्देश्य से तो नहीं आते हैं? फूलों का एक गुच्छा वसु को थमाते हुए वे कहने लगे, "मेरी बधाई स्वीकार कीजिये बहन जी."

"ओ, थैंक यू डॉ. खन्ना."

चाय समाप्त कर डॉ. खन्ना कार में बैठकर वहां से चल दिये. डॉ. मुंजे से मुलाकात नहीं हो पायी थी, क्योंकि उस समय तक वे सो रहे थे. रास्ते में नितिन ने गाड़ी रोकने के लिए हाथ ऊपर उठाया. (नितिन के माता-पिता उसे दादा के पास ही छोड़ गये थे) कार में बैठकर नितिन ने कहा, "टैल मी, कहां तक पहुंच गया आपका काम?"

"क्या मतलब?"

"ओ डॉ. खन्ना, यू आर इंटेलीजैंट इनफ! मुझसे क्यों छिपा रहे हो? आई मीन. . . तहखाने में प्रवेश पाने में आपको सफलता मिली या नहीं?"

अपलक देखते हुए डॉ. खन्ना ने कहा, "उसमें क्या खासियत है? मैंने सीरियसली नहीं लिया था उस बात को."

"लेकिन डॉ. खन्ना, सीने पर हाथ रखकर बताइए, उस तहखाने में क्या है, यह देखने की जिज्ञासा क्या आपके मन में नहीं है?"

"हां, हां है, लेकिन हल्की-सी. मेरा उससे कोई ताल्लुक नहीं."

"डॉ. की अनुपस्थिति में मैंने दो बार ताला खोलने की कोशिश की, लेकिन वह खुला ही नहीं."

"नितिन?"

"येस, प्रयोगशाला में प्रवेश करना बहुत ही आसान है. यू आर अ डिटेक्टिव, यदि इसमें आपकी रुचि हो तो, आप मेरी सहायता कर सकते हैं, क्योंकि मेरे पास तो बहुत ही मामूली-से औजार हैं."

"ओ. के. नितिन, लेट्स मेक अ डील."

डॉ. खन्ना खंडाला के एक होटल के भोजन कक्ष में टेबल पर अकेले ही बैठे थे. दूरदर्शन के कार्यक्रमों की ओर उनका ध्यान था भी और नहीं भी था. कुछ ही घंटे बाद वे एक बहुत ही साहसिक कदम उठाने जा रहे थे. इस समय दूरदर्शन पर प्रश्नोत्तरी का दौर चल रहा था कि सहसा उसकी आवाज बंद हो गयी. दो-तीन मिनट.

डॉ. खन्ना के हाथ से चम्मच छूट गया. कुछ क्षण वे भौंचक्के रह गये. उनका सिर चकराने लगा. यह उस संगीत का परिणाम तो था ही; लेकिन इस संगीत का स्रोत कहां है और वह यकायक दूरदर्शन तक कैसे पहुंच गया, इसकी भयावह जानकारी ने उन्हें जैसे झकझोरकर रख दिया था. पिछले एक महीने से जिन रेडियो तरंगों ने सभी अंतरराष्ट्रीय गुप्तचर संगठनों की नींद हराम कर रखी थी, और वैज्ञानिकों को उलझन में डाल दिया था,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके रहस्य का पर्दाफाश डॉ. खन्ना के दिमाग में मले ही न हुआ हो, उन्हें एक क्लू अवश्य मिला था. वे लपककर टेलीफोन की ओर चले गये.

"हैलो नितिन, क्या तुम रेडियो, टी.वी. सुन या देख रहे थे?"

"हैलो डॉ. खन्ना? येस. . . येस. . .मैंने सुना वह."

"ओफ. . . आई कांट वेट ह्वेन आई नो. देखो नितिन, अभी बीस मिनट में जंगल में उसी निर्धारित स्थान पर पहुंच रहा हूं. क्या तुम भी आ सकते हो?"

"लेकिन करना क्या है?"

"वे तरंगें और वह संगीत. दोनों में तालमेल कैसे बैठ पाया? माई गॉड नितिन, तुम नहीं समझोगे."

डॉ. मुंजे की प्रयोगशाला के तहखाने ने पिछले सात-आठ दिनों से उनकी नींद हराम कर रखी थी. इस बीच उनके रवैये पर भी डॉ. खन्ना को आश्चर्य हो रहा था. लेकिन डॉ. खन्ना ने सपने में भी नहीं सोचा था कि इस रहस्यमय वातावरण का उन रहस्यमय ध्वनितरंगों से भी कोई संबंध हो सकता है.

किवाड़ के पास पहुंचने पर टार्च की रोशनी में कोड डिटेक्टर लगा-कर डॉ. खन्ना ताले का कांबिनेशन पता करने में लग गये. मात्र दस मिनट में ताला खुल गया और वे आराम से तहखाने के उस बड़े हॉल में पहुंच गये. डॉ. खन्ना ने सामने की दीवार पर टार्च स्थिर की और वे दंग रह गये.

वहां एक मोटा-सा बहुत बड़ा गत्ता था और उस पर विभिन्न आकार प्रकारों के स्वरित्र कई अलग-अलग गुटों में फिट थे. इतना ही नहीं, वे स्वरित्र बड़ी जटिल पद्धति से अत्यंत महीन तारों द्वारा आपस में जुड़े हुए थे. इतने में पूरे हाल में रोशनी हुई तो डॉ. खन्ना ने चौंककर पीछे मुड़कर देखा. डॉ. मुंजे वहां खड़े थे. आश्चर्य मिश्रित मुस्कराहट के साथ उन्होंने स्वाभाविक लहजे में पूछा, "अरे नितिन और खन्ना?"

दोनों जड़ मूर्ति खड़े थे, लेकिन डॉ. मुंजे के चेहरे पर तनिक भी क्रोध का भाव नहीं आया. वे जीना उतरकर नीचे आये और कहने लगे, "लेकिन आप लोग यहां आये कैसे? यहां आना खतरे से खाली नहीं है."

"सॉरी डॉक्टर, आपकी प्रयोगशाला का यह हिस्सा देखने के लिए हम बड़े ही उत्सुक थे."

"वैल, लेकिन बेचारे नितिन को अपने जाल में क्यों फंसाया?" डॉ. मुंजे के स्वर में अब कुछ कड़ाई थी.

"आई एम सॉरी ग्रैंपा. आई वांटेड डॉ. खन्ना हियर."

"ओ, आई सी." डॉ. मुंजे कुछ क्षण चुप रहने के पश्चात कठोरता से कहने लगे, "अब यहां से चल देने में ही खैरियत है." लेकिन डॉ. खन्ना वहीं-के वहीं खड़े रहे, शायद उन्होंने दृढ़ निश्चय किया था. डॉ. मुंजे की आंख से आंख मिलाते हुए उन्होंने कहा, "डॉ., ठीक एक घंटा पहले समूचे विश्व की सूक्ष्म संचार व्यवस्था में एक तूफान आ गया था. . . डू यू नो ह्वॉट इज इट?"

उत्तेजना भरे स्वर में डॉ. मुंजे ने कहा, "मैंने तो आपको पहले ही बता दिया था न कि मैं किसी बहुत ही महत्त्वपूर्ण काम में जुटा हूं. यही है वह काम."

"लेकिन डॉ., आखिर आप करना क्या चाहते हैं?"

"वेरी इजी, सामने म्यूजिक बोर्ड है, बगलवाले कमरे में इसके प्रक्षेपण की व्यवस्था. मेरी ओर से यह तोहफा समझ लीजिए, जो मैंने विश्व को दिया है."

"लेकिन डॉ. यह आपाधापी किसलिए? शिखर वार्त्ता से इसका क्या संबंध है? आप इसे गोपन क्यों बना रहे हैं? क्या आप वार्त्ता भंग करना चाहते हैं. ह्वाट इज दिस ऑल? यह म्यूजिक, ये तरंगें. . . डॉक्टर. ."

"ग्रैंपा." अब तक मुंह सिलकर खड़ा नितिन हौले से कहने लगा, "पिछले दिनों संवाददाता सम्मेलन में जिन उपायों के बारे में आपने बताया था, क्या यह वही जनसंख्या विस्फोट है?" डॉ. मुंजे ने नितिन को शाबासी-जैसी देते हुए कहा, "देखा आपने, मेरा पोता . . .?"

"लेकिन आप तो सामूहिक संहार करना चाहते हैं डॉक्टर."

"नहीं, सिर्फ आधी जनसंख्या खत्म कर देना चाहता हूं."

"लेकिन मैं आपको इस रास्ते नहीं जाने दूंगा डॉक्टर. यू मस्ट स्टॉप इट, डॉक्टर. . ." खन्ना फुर्ती से किवाड़ की ओर जाने लगे. डॉ. खन्ना दरवाजे तक तो पहुंच गये; लेकिन वह खोल पाना उनके लिए असंभव था. डॉ. मुंजे अंदर आने से पहले उस किवाड़ का ताला बंद कर आये थे और खन्ना का कोडब्रेकर बाहर ही रह गया. अपनी पैंट की जेब से एक छोटा-सा पिस्तौल निकालकर वे चिल्लाये, "आप व्यर्थ ही अपनी जान गंवाने की कोशिश कर रहे हैं. डॉ., लेट मी गो," लेकिन इनका वाक्य पूर्ण होने से पहले ही डॉ. मुंजे ने प्यानोनुमा बटन दबाने शुरू कर दिये और दूसरे ही क्षण उस हॉल में स्वर्गीय संगीत गूंजने लगा. डॉ. खन्ना के हाथ से पिस्तौल गिर पड़ी. धीरे-धीरे वे शांत संगीत के सागर में डूब गये.

मलवली में पहला टेलीफोन सुबह पांच बजे आया था. फोन वसुंधरा ने ही उठाया. कॉल किसी समाचार-संस्था का था. "क्या डॉ. मुंजे अपनी थियोरी के बारे में विस्तार से कुछ बता पायेंगे?" वह संवाददाता बार-बार पूछ रहा था.

"डॉ. इज अस्लीप," उसने चोंगा रख दिया. आधे घंटे बाद फोन किया डॉ. हांस अंडरसन नामक व्यक्ति ने. "बट डॉ. इज अस्लीप." उसने उत्तर दिया. "इट्स वैरी अर्जेंट मैडम. डिड यू हियर द म्यूजिक ऑन द रेडियो, मैडम?"

"कैसा म्यूजिक?"

"माई गॉड! इसका मतलब है कि आपने सुना ही नहीं. द मोस्ट अनर्थली म्यूजिक एवर हर्ड बाइ एनी बडी ऑन दिस प्लेनेट. उसी संबंध में डॉ. मुंजे से बात करनी थी."

"डॉ. अभी पांच बजे के लगभग सोये हैं. शायद ही जगें. कोशिश करती हूं." इसी समय वसुंधरा को वह चिट्ठी मिली, जिसमें मुंजे ने दो लाइनों में जवाब लिख रखा था. वसुंधरा ने वही फोन पर सुनाया, "गुड थैंक्स! इससे तो हमें कुछ सकून मिला."

दोपहर बारह बजे तक डॉ. खन्ना के लिए कम से कम आठ-दस फोन आ चुके थे, परंतु उनका कहीं अता-पता ही नहीं था. वसुंधरा ने अकेले ही खाना खाया और अपने कमरे में बैठी पुस्तकों में खो गयी. उसकी तंद्रा डॉ. मुंजे के किवाड़ खटखटाने से भंग हुई. डॉ. भीतर आये वसुंधरा ने उनके कंधे पर गरदन टिकाये, उन्हें कसकर अपनी बाहों में भर लिया. "ह्वाट इज इट माई डियर, आर यू ऑल राइट?"

"डॉ. क्या तमाशा है यह?" उसने कांपते हुए स्वर में पूछा. उसकी ठोड़ी ऊपर उठाकर उसे चूमते हुए उन्होंने कहा, "क्या तुम्हें भय लग रहा है, वसु?"

वसुंधरा ने कोई जबाव नहीं दिया. वह उन्हें घूरती रही, बस.

शाम के चार बज रहे थे. धूप ढल चुकी थी. डॉ. मुंजे और वसुंधरा बड़ी फुर्ती से एक-एक काम निपटा रहे थे. लगता था, जैसे डॉ. को आज कोई विशेष जल्दी है. प्रयोगशाला कब की बंद हो चुकी थी और चौकीदार उसकी चाबियां भी वहीं रख गया था.

"माई गॉड, नितिन अभी तक नहीं लौटा." वसुंधरा को सहसा याद हो आया, "आज सवेरे से वह गायब है." बड़ी ही प्रसन्नता से हंसते हुए डॉ. मुंजे ने कहा, "आज वह नहीं आयेगा, डा. खन्ना के साथ आउटिंग के लिए गया है."

रात को डॉ. मुंजे के साथ खाना खाते हुए उसके बाद उनकी पसंद के रिकार्ड सुनते हुए उनसे, बिलकुल सटकर प्रयोगशाला में जाते हुए, वसुंधरा एक अबूझ चिंतन से ग्रस्त थी. तहखाने के सभी परीक्षण कर लेने पर डॉ. मुंजे ने एक बहुत उम्दा शराब की बोतल खोली और प्याले बाहर निकाले. "कमान वसु, लेटस सेलिब्रेट टुमारोज समिट."

थोड़ी-सी पी लेने के बाद वे आगे और भी बहुत कुछ बोलते जा रहे थे; लेकिन असंबद्ध, अनर्गल.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उड़न-तश्तरियां, जुंग और अमरीकी रक्षा-सचिव

—आदित्य

प्रायः 25 वर्ष पूर्व, जब पश्चिम में उड़न-तश्तरियों के प्रत्यक्षदर्शियों की संख्या अचानक बढ़ गयी थी, तब विश्व-विख्यात मानस-शास्त्री कार्ल जुंग ने इस विषय पर अपने संतुलित और विवेकपूर्ण विचार व्यक्त करते हुए कहा था : 'मैं पिछले दस वर्षों से उड़न-तश्तरियों के बारे में अनुसंधान करता आ रहा हूं. जो लोग कहते हैं कि उन्होंने स्वयं अपनी आंखों से उड़न-तश्तरियों को देखा है, उनकी बात सच भी हो सकती है, और झूठ भी. जहां एक ओर यह सच है कि उड़न-तश्तरियों की कल्पना विविध चिंताओं में ग्रस्त आज के आदमी को एक नये मनोरम लोक में ले जाती है, और उसकी समस्याओं का समाधान उसके मनचाहे ढंग से देती है, वहां दूसरी ओर यह भी सच है कि उड़न-तश्तरियों को विभिन्न राडार स्क्रीनों पर देखा गया है और लोगों ने उनके चित्र भी खींचे हैं... रूपो और केट्टो जैसे विश्वसनीय वैज्ञानिकों की रिपोर्ट से तो यह बात सिद्ध होती ही है, प्रोफेसर मेंजेल भी, अभी तक उड़न-तश्तरियों के प्रामाणिक अवलोकनों का संतोषजनक रूप से वैज्ञानिक खंडन नहीं कर पाये हैं. इन सब बातों से हमें एक ही निष्कर्ष पर पहुंचने को बाध्य होना पड़ता है : या तो उड़न-तश्तरियों का राडार स्क्रीनों पर कंपन आत्मिक प्रक्षेपों द्वारा होता है, या वे सचमुच अन्य ग्रहों से पृथ्वी पर आती हैं, और इस प्रकार पौराणिक कथाओं के इस कथन की पुष्टि करती हैं कि पहले परलोकीय प्राणी पृथ्वी पर आये थे.'

(1951 से 1953 तक अमरीकी सरकार द्वारा आयोजित 'प्रोजेक्ट ब्लू बुक' के डायरेक्टर रहने वाले कैप्टेन रूपो ने अपनी रिपोर्ट में कहा था : 'पिछले पांच वर्षों में अकेले अमरीका में ही उड़न तश्तरियों के देखे जाने के 44,000 मामले दर्ज किये गये. हमने उनमें से 1553 का अध्ययन किया. उनमें 29.94 प्रतिशत का कोई स्पष्टीकरण देने में हम असमर्थ हैं.' हारवर्ड विश्वविद्यालय के प्रख्यात खगोल भौतिक शास्त्री-प्रो. मेंजेल का कहना है कि उड़न तश्तरियां वास्तविक हैं, काल्पनिक नहीं.)

फ्रांस के सुविख्यात गणितज्ञ और इंजीनियर ए. माइकेल ने 1958 में प्रकाशित अपनी एक पुस्तक में यूरोप, अफ्रीका, मध्यपूर्व और अमरीका में पिछले दस वर्षों में दिखायी पड़ने वाली उड़न-तश्तरियों का अध्ययन कर यह मत निर्धारित किया है कि 'उनके चालक अवश्य मेधावी और बुद्धिमान प्राणी हैं.'

अमरीका के भूतपूर्व सुरक्षा सचिव मैनामारा ने उन प्रमाणों के आधार पर, जो अमरीकी वायुसेना ने उनके अध्ययनार्थ जुटाये थे, यह कहा था, "उड़न-तश्तरियों के अस्तित्व से इंकार नहीं किया जा सकता." □

"आप क्या कह रहे हैं, डॉक्टर?"

"लिसन, डार्लिंग, तुम दो साल मेरे साथ रहीं, कितना अच्छा हुआ. तुम्हारे प्यार और साथ ने ही मुझे धीरज बंधाया. हां, एक बात है वसु—मुझे टोको मत. बोलने दो मुझे. वैज्ञानिक हूं तो क्या हुआ, आखिर मैं भी इंसान हूं, यह तथ्य पिछले दो साल से समझ पाया वसु. वैज्ञानिक होने के नाते जो निर्णय मैंने लिये वे बिल्कुल तर्कसंगत और उचित हैं. इसके बावजूद मेरे भीतर जो इंसान है, उसे वह कुबूल नहीं है. मैं अकेला ही दो मोर्चों पर लड़ रहा हूं. निपट अकेला. इस लड़ाई में तुम भी मेरी मदद नहीं कर सकतीं. इसीलिए कह रहा हूं कि संसार मुझे चाहे कुछ समझे, लेकिन तुम मुझे पागल अथवा राक्षस मत समझना, वसु."

"डॉक्टर. . ."

"प्लीज वसु, मेरे सामने तो बस दो ही विकल्प थे; अपनी बुद्धि की कसौटी पर कसकर विश्वहित का मार्ग अपनाया या फिर अपनी भूल का एहसास होते हुए भी परंपरागत रूढ़ियों और भौंडे जनमत के पीछे मुंह पर ताले लगाये चुप रहना. यह दूसरा विकल्प तो मुझे जीते जी नोच खाता."

"डॉक्टर, ये सब बातें क्यों कहते जा रहे हैं आप, मुझे तो भय लगने लगा है." गोद में लेटते हुए वसुंधरा ने कहा.

"मेरे होते हुए तुम्हें किस बात का डर है वसु." चुंबनों की वर्षा करते हुए डॉ. ने कहा, "कमॉन, लैटस हैव सम म्यूजिक."

डॉ. मुंजे उनींदे से थे. एक कैसेट वसुंधरा के हाथ लगा. उसे टेप-रिकार्डर में डालकर वसुंधरा ने बटन दबाया. अचानक डॉ. मुंजे की आवाज तहखाने में गूंजने लगी.

"धरतीवासियो, पिछले पांच मिनटों में विश्व की जनसंख्या आधी हो चुकी है. आपके अगल-बगल में भी अपने मां-बाप, सगे-संबंधी यार-दोस्त मृतावस्था में पड़े होंगे."

वसुंधरा की खुमारी झटके से काफूर हो गयी. दिल थामकर विस्फरित नेत्रों से वह आगे सुनने लगी. "इससे घबराइए मत. यह कोई प्राकृतिक संकट नहीं है. यह संहार जानबूझकर किया गया है. मृत्यु के इस तांडव से बची युवा पीढ़ी को चाहिए कि वह मेरा निवेदन गौर से सुने."

वसुंधरा के मुंह से अनजाने में चीख निकली, "डॉक्टर."

"ह्वाट इज इट डार्लिंग?" उठ खड़े हुए डॉ. मुंजे ने कहा.

"नो, मैं ऐसा नहीं होने दूंगी. मैं तुम्हें राक्षस बनते नहीं देख सकती." तहखाने में जैसे छीना-झपटी चल रही थी. वसुंधरा टेबल या कुर्सी की आड़ में उस विशाल संगीत बोर्ड पर, जो मिले वही चीज फेंकने लगी थी और वे उसे ऐसा करने से रोक रहे थे.

"वसु, डोंट कंपेल मी."

"डोंट डू इट डॉक्टर!"

"वसु बोर्ड के पास मत जाओ, शार्ट सर्किट होगा."

फिर भी वसुंधरा बोर्ड की दिशा में बढ़ती रही.

"सारी वसु, निर्धारित समय से दो घंटे पहले ही मुझे कार्रवाही शुरू करनी पड़ रही है. .." उन्होंने बटन दबाया तो लाल बत्ती जल उठी.

बोर्ड के एक बड़े से स्वरित्र पर वसु झपट पड़ी. दूसरे ही क्षण वहां तीव्र रोशनी हुई. उस भयंकर विस्फोट की कर्णभेदी आवाज खंडाला में भी सुनी गयी. पहले तो तेज रोशनी और उसके बाद 'धड़ाक धड़म ऽऽ' की भीषण आवाज. और उसके बाद आग की लपटें तथा धुएं के बादल. पुणे से दमकल सहायता आने से पहले ही प्रयोगशाला राख हो चुकी थी.

विस्फोट के कुछ पहले डॉ. मुंजे ने किसी जिम्मेदार व्यक्ति से कहा बताते हैं कि वे रहस्यमय तरंगें अब दोबारा नहीं आयेंगी. इसीलिए शिखर वार्त्ता में कोई बाधा नहीं आ सकेगी. . .

प्रयोगशाला के मलबे में दबी पड़ी वस्तुओं की शिनाख्त करना भी संभव नहीं हो पाया. फिर भी वहां मिली कुछ अस्थियों तथा कुछ अधजले कपड़ों से प्रतीत होता है कि विस्फोट में चार लोगों की जानें गयीं. खुद डॉ. मुंजे, उनकी युवा प्रेमिका वसुंधरा, उनका पोता नितिन. चौथे मृत व्यक्ति की शिनाख्त अभी नहीं हो पायी है, किंतु दिल्ली से आयी खबरों के अनुसार संदेह व्यक्त किया जा रहा है कि यह व्यक्ति डॉ. खन्ना थे."

विश्व में सभी कुछ यथावत् चल रहा था. □

संक्षिप्त रूपांतर : हिमाकौल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पौराणिक कथाएं : दंतकथाएं या विज्ञान कथाएं?

कई हजार वर्षों से मानव की विकास-यात्रा जारी है . . . हर युग में अपने युग की परिस्थितियों के अनुरूप मानव ने प्रकृति से जूझने, उसे इस्तेमाल करने के तरीके ईजाद किये हैं . . . जिनमें से कई तरीकों का विवरण लोप हो गया, कइयों का आज भी पुरानी पोथियों में लिपिबद्ध मौजूद है . . . आज भी इस विकास-यात्रा के अगले चरण में मानव नित नये आविष्कार कर रहा है . . . मगर ऐसा क्यों है कि उसके कई नये आविष्कार पुरानी पोथियों में वर्णित आविष्कारों से हूबहू मिलते-जुलते हैं . . . ? क्या उन युगों का विज्ञान भी इतना समृद्ध रहा है जितना कि हम आज देख रहे हैं . . . या यह महज संयोग है . . .? या उन पोथियों में वर्णित ये कथाएं कपोल-कथाएं या दंत-कथाएं हैं . . . ? या वे भी विज्ञान-कथाएं हैं . . . अपने समय और सभ्यता के समृद्ध ज्ञान-विज्ञान की गवाह?

प्राचीन सुमेर की एक दंतकथा का अंश

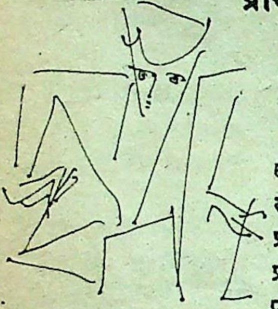

"यह प्राणी (दूसरे ग्रह से आया) दिन में पृथ्वी पर जन्मे और रहने वाले मानवों के साथ बातचीत किया करता था, पर उसे कभी साथ भोजन करते नहीं देखा गया. इसी प्राणी ने उन्हें पढ़ना-लिखना सिखाया और प्रत्येक कला और विज्ञान के सिद्धांतों से परिचित कराया. उसने ही मानवों को बताया कि घरों और देवालयों का निर्माण किस प्रकार किया जाता है. उसने उन्हें यह भी बताया कि कानून कैसे बनते हैं तथा उनका पालन कैसे किया जाता है. उसने उन्हें ज्यामिति के सिद्धांतों से भी अवगत कराया. उसने यह भी बताया कि पृथ्वी में बोये जानेवाले बीज अलग-अलग किस्म के होते हैं, और यह भी कि फलों को कैसे बोना और जमा करना चाहिए. उसने ये सब बातें बतायीं, जिन्हें सीखकर मानव सभ्य, धार्मिक और रणकुशल बना."

यूनानी दार्शनिक प्लेटो कृत टिमायस के कुछ अंश

"अंतरिक्ष से पृथ्वी पर आये देवताओं (प्रायः नौ हजार वर्ष पूर्व) ने पृथ्वी को आपस में बांट लिया था. एथेना और हैफायरतोस नामक देवताओं को एथेंस मिला, जिसे उन्होंने एक आदर्श राज्य के रूप में विकसित किया. यहां की प्रजा अपने अभिभावक-देवताओं की भांति कुलीन और सभ्य थी.

पोसिदन नामक देवता को एटलांटिस नामक राज्य मिला. . .कई सदियों तक एटलांटिस के निवासी, जो देवताओं द्वारा उत्पन्न मानव थे, अपने पूर्वजों द्वारा बताये गये सन्मार्ग पर चलते रहे, पर क्रमशः उनकी धमनियों में बहनेवाला दिव्य रक्त अवमिश्रित होता गया. और वे अत्याचारी बन गये. तब देवताओं के प्रमुख जियस ने एटलांटिस की मानव-प्रजा को पुनः सदाचारपूर्ण जीवन जीने के लिए प्रेरित किया. पर, जब गुमराह मानवों पर उनकी अपील का कोई प्रभाव नहीं हुआ तो, उन्होंने ब्रह्मांड के मध्य में स्थित अपने महल में सब देवताओं को बुलाया और उनसे पूछा कि उनके आदेशों का पालन न करनेवाले मानवों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये, और भविष्य में देवताओं को एक नयी मानव-जाति को जन्म देना चाहिये या नहीं."

यहूदियों की गुप्त विद्या कब्बाला के सात खंडोंवाले ग्रंथ का एक अंश

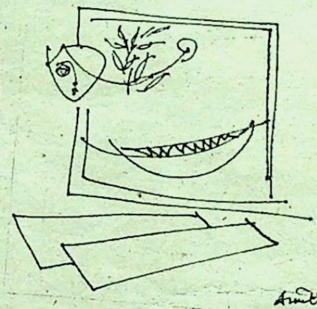

सुदूर-स्थित अंतरिक्ष के जिन सात ग्रहों से आनेवाले देवताओं ने पृथ्वी पर आकर मानवपुत्रों को धार्मिक, सांस्कृतिक, सामरिक तथा तकनीकी विषयों का प्रशिक्षण प्रदान किया, उनका वर्णन इस प्रकार है :

"पहले लोक—गेह-लोक—के निवासी वृक्षारोपण करते हैं. वे अपना भोजन वृक्षों से प्राप्त करते हैं, पर गेहूं, मकई या अन्य अन्नों की बनी हुई वस्तुओं से अपरिचित हैं. यह लोक छायामय है, और यहां भांति-भांति के जीव-जंतु रहते हैं.

दूसरे लोक—नेजिया लोक—के निवासी शाकाहारी हैं, पर स्वयं खेती नहीं करते. उनका कद छोटा है, और उनके चेहरों पर नाक के स्थान पर दो छिद्र होते हैं, जिनसे वे सांस लेते हैं. वे बहुत भुलक्कड़ हैं, और कोई काम करते-करते प्रायः यह भूल जाते हैं कि वह काम उन्होंने क्यों प्रारंभ किया था. उनके लोक से एक लाल सूर्य के दर्शन होते हैं.

तीसरे लोक—ज्ञ लोक—के निवासी जो भोजन करते हैं वह कोई और नहीं करता. वे भूमि के अंदर बहनेवाली जलधाराओं के निकट जाना पसंद करते हैं. देखने में आकर्षक इन लोगों की निष्ठा अन्य लोगों की निष्ठा से कहीं अधिक है. उनके लोक में सर्वत्र समृद्धि, ऐश्वर्य और प्राचुर्य के दर्शन होते हैं. वहां अनेक चित्ताकर्षक भवन हैं. वहां की भूमि शुष्क है, तथा वहां से दो सूर्यों के दर्शन होते हैं.

चौथे लोक—थैल लोक—के निवासी सब वस्तुओं को पानी के साथ ही खाते हैं. वे लोग अन्य अंतरिक्षवासियों की अपेक्षा अधिक बुद्धिमान हैं. उनका लोक अनेक क्षेत्रों में बंटा हुआ है. प्रत्येक क्षेत्र के निवासियों के रंग-रूप में गहरा अंतर पाया जाता है. वे लोग मृतकों को भी जीवित कर सकते हैं. यह लोक सूर्य से बहुत अधिक दूरी पर स्थित है.

पांचवें लोक—ईरी लोक—के निवासी आदम के वंशज हैं (संयोगवश, महाभारत सभापर्व 8-23 में एक सौ ईरी-वंशीय राजाओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का वर्णन है. ये संभवतः ईरी लोक के निवासियों के वंशज थे. पुरातत्त्ववेत्ताओं ने इनका काल 2800 ई. पू. से 2400 ई. पू. निर्धारित किया है.)

छठे लोक—आदम लोक—के निवासी भी आदम के वंशज हैं, क्योंकि आदम ने ईरी लोक के निवासियों के खिन्न स्वभाव के बारे में शिकायत की थी, वे खेती करते तथा रोटी, भाजी और मांस खाते हैं. वे स्वयं अधिकतर खिन्न रहते हैं, और सदा आपस में लड़ते रहते हैं. यहां सदा दिन रहता है, और उसका तारामंडल सदैव स्पष्ट दिखायी देता है. अतीत में, थैल-लोक के निवासी इस लोक पर आये थे. पर इस लोक पर आते ही उनकी स्मृति क्रमशः नष्ट होने लगी, और अंत में वे यह भी भूल गये कि वे आदम लोक पर किसलिये आये थे?

सातवें लोक—अर्क लोक—के निवासी खेती करते हैं; और उनके चेहरे पृथ्वी वासियों के चेहरों से सर्वथा भिन्न हैं. वे सब लोकों का भ्रमण करते रहते हैं, और सब भाषाएं बोल सकते हैं.

एक बार, सारी पृथ्वी एक भीषण अग्निकांड के कारण नष्ट हो गयी थी. कुछ पृथ्वीवासियों ने, जिन्हें इस कांड के बारे में पूर्वानुमान था, किसी अन्य लोक पर जाने की योजना बनायी. तभी उन्होंने एक चट्टान के छेद में से अपने से भिन्न चेहरेवाले एक प्राणी को अपनी ओर आते देखा. उन्होंने इस प्राणी से पूछा, 'तुम किस लोक से आये हो?'

'मैं अर्क-लोक का रहनेवाला हूं,' उस प्राणी ने कहा.

'क्या अर्क-लोक पर आबादी भी है?' पृथ्वीवासी ने साश्चर्य पूछा.

'हां. जैसे ही मैंने आप लोगों को इधर आते देखा, वैसे ही मैं चट्टान से निकलकर बाहर आ गया, क्योंकि मैं जानना चाहता था कि मैं किस लोक पर हूं.'

आगे चलकर, उसने पृथ्वीवासियों को बताया कि पृथ्वी से जिस अंतरिक्ष के दर्शन होते हैं, वह अर्थ-लोक के अंतरिक्ष से बहुत भिन्न है."

मिस्री पौराणिक कथाओं में परलोकीय देवता

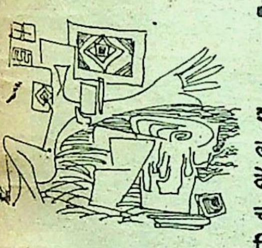

मिस्र की एक कथा के अनुसार, यह देवता दिव्य रथ में बैठकर अंतरिक्ष से पृथ्वी पर आये, और मिस्र के शासक को अपनी वर्षगांठ आगामी एक लाख वर्षों में छह बार मनाने का आदेश देकर पुनः रथ में बैठकर अंतरिक्ष की ओर चले गये. इस देवता के बारे में मिस्र के एक पिरामिड पर यह शिलालेख अंकित है : "तू वह है, जो लाखों वर्षों तक सूर्य-यान का संचालन करता है."

प्राचीन मिस्र के प्रधान देवता—रा नामक सूर्य-देवता—की, जो अपने दिव्य यान में बैठकर पृथ्वी की परिक्रमा करते रहते हैं, लेखक चार्ल्स पियाजी स्मिथ ने अपने शोधपूर्ण ग्रंथ में पिरामिड संबंधी जिन अनेक विस्मयकारी तथ्यों का उद्घाटन किया है, उनमें से कुछ ये हैं : चियोप्स के पिरामिड की ऊंचाई को यदि 10,000,000 से गुणा किया जाये, तो गुणनफल 98,000,000 आता है. सूर्य और पृथ्वी के बीच की दूरी भी 98,000,000 मील है. पिरामिडों को यदि याम्योत्तर रेखा से विभाजित किया जाये, तो विश्व के सारे प्राचीन महाद्वीप और महासागर आधे-आधे विभाजित हो जाते हैं, अर्थात् पिरामिड महाद्वीपों के भूम्याकर्षण के केंद्र में स्थित हैं. यदि किसी पिरामिड के आधार को उसकी ऊंचाई को दूना करनेवाली संख्या से विभाजित किया जाये, तो गणित का यह प्रसिद्ध फार्मूला सामने आता है. TI–3.14159.

मिस्र के इद्फू नामक प्राचीन स्थान में अंकित शिलालेख में कहा गया है : इस भवन का निर्माण अ-मानवों ने किया है. एल-इमर्ना नामक एक अन्य प्राचीन स्थान में पाये गये मृत्तिका-फलकों में पृथ्वी के मानचित्र के साथ (जो पृथ्वी से कई मील की ऊंचाई पर जाकर ही खींचा जा सकता था) सप्तमहाद्वीपों का कीलाक्षर में वर्णन है.

1500 ई. पू. काल में मिस्र में राज्य करनेवाले तुतमोस तृतीय के एक शिलालेख में कहा गया है: पृथ्वी पर आग का एक गोला अंतरिक्ष से आकर उतरा, और बदबूदार हवा छोड़ता हुआ दक्षिणी दिशा की ओर चला गया. तुतमोस और उनके सैनिक इस अलौकिक दृश्य को देखते ही रह गये."

प्राचीन अक्कदियन लिपि में अंकित एक विचित्र कथा

भागवत में जिन असुरों की कहानियां पढ़ने को मिलती हैं, वे वास्तविक ऐतिहासिक पुरुष थे, जिनका उल्लेख सुमेर में पायी जानेवाली मिट्टी की नन्ही-नन्ही पट्टियों पर अंकित मिला है. भारतीय पुराणों में वर्णित असुर वंश के असुरदान (1179 ई. पू. से 1134 ई. पू.), असुर ऋषि असुरबेलकला (1074-1057 ई. पू.) द्वारा निर्मित अनेक राजप्रासाद आज भी उपलब्ध हैं. द्वारिका पर आक्रमण करनेवाले शाल्व (असुर सौल), जिनके साथ अंतरिक्ष में श्रीकृष्ण के साथ हुए युद्ध का वर्णन महाभारत में पढ़ने को मिलता है, तथा वाणासुर (असुर वाणपाल) के दैनिक जीवन का वर्णन प्राचीन उत्खननों में उपलब्ध है. सुमेरू (सुमेर) में असुर (असुर) आदरसूचक और दिव्य उपाधि समझी जाती थी. अहुरमज्द (अशुर या असुर का नया रूप) पारसी लोगों के पूज्य देवता हैं.

ऊपर जिन असुरवाणपाल का उल्लेख किया गया है, उनके प्राचीन पुस्तकालय का इस सदी के आरंभ में उत्खनन किया गया था. इस पुस्तकालय में मिट्टी की बारह नन्ही-नन्ही पट्टियां मिलीं, जिन पर सुमेरियाई राजा बीते वर्ष की घटनाएं, नववर्ष के प्रारंभ होने पर, लिखते थे, अक्कदियन लिपि में एक विचित्र कहानी कही गयी है, जो ये है :

"प्राचीन काल में उर नामक ऐतिहासिक नगर में गिलगमेश नामक एक प्रतापी राजा राज्य करता था. उसके पास 'आकाश से आये हुए' देवता रहा करते थे. उनकी रक्षा के लिये उसने उर के चारों ओर एक ऊंची, गोल दीवार बनवायी थी. गिलगमेश दो-तिहाई 'देवता' और एक-तिहाई 'मानव' था. अन्य नगरों से उर आनेवाले लोग उसका दिव्य और तेजस्वी रूप देखकर भय-स्तब्ध रह जाते थे.

"एक बार गिलगमेश की भेंट एंकिदू नामक विचित्र प्राणी से हुई जो अनेक बाधाओं को पार करके 'मानवों के पिता' उतनापिश्तिम के पास पहुंचा था. गिलगमेश यह देखकर चकित रह जाता है कि उतनापिश्तिम का डीलडौल उसी के समान है, और उसकी सूरत भी उससे बहुत मिलती है. उतनापिश्तिम गिलगमेश को अपने पूर्व-जन्म की कहानी सुनाता है, जिसमें जल-प्लावन की कथा का भी (जो सुमेर के ग्रंथों के अलावा यूनान, मिस्र और भारत के पौराणिक ग्रंथों तथा बाइबिल में भी पढ़ने को मिलती है) उल्लेख है. वह गिलगमेश को बताता है कि किस प्रकार परलोकीय देवताओं ने उसे इस जल-प्लावन के बारे में बहुत पहले बता दिया था, और उन्हीं के परामर्श से उसने अपनी रक्षा के लिये नाव का (नूह की नाव के समान?) निर्माण किया था."

प्राचीन पेरू की एक पौराणिक कथा का सारांश

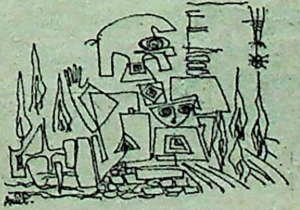

"पृथ्वी पर जीवन का आरंभ उईराकोशा द्वारा हुआ था, जो आधा नर था और आधा नारी. उसने दैत्य-जाति को भी जन्म दिया. उईराकोशा जिस स्थान में रहते थे, वह पहले तियाहुआनाको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाभारत के दो प्रसंग

महाभारत तथा रामायण में ऐसी अनेक कथाएं संग्रहीत हैं, जिनके शाब्दिक अर्थ लगाये जायें, तो विज्ञान-कथाएं ही मानी जायेंगी. उदाहरणस्वरूप प्रस्तुत हैं दो प्रसंग :

पक्षिराज गरुड़ ने उस पर्वत के शिखर पर बैठकर गज और कच्छप का भक्षण किया. उन्हें खाकर, गरुड़ वहां से बड़े वेग से उड़े. उस समय देवताओं को भय की सूचना देनेवाले अनेक उत्पात स्वर्ग में होने लगे. इंद्र का प्रिय अस्त्र वज्र डर से जल उठा. धुएं सहित जल रहे तारे आकाश में गिरने लगे. वसु, रुद्र, आदित्य, साध्य, मरुद्गण आदि देवताओं के शस्त्र आपस में टकराकर भिड़ने लगे. देवासुर-संग्राम जब हुआ था, तब भी ऐसी अद्भुत, भयानक बातें नहीं हुई थीं. बड़े जोर से आंधी चलने लगी, और उससे बार-बार भयानक शब्द उठने लगा. हजारों तारे आकाश से टूट-टूटकर गिरने लगे. आकाश में मेघ न होने पर भी बिजली की कड़कड़ाहट सुनायी देने लगी. फिर रक्त की वर्षा होने लगी. उत्पात की सूचना देनेवाले बादलों से मूसलाधार रक्त की वर्षा होते, और देवताओं के मुकुटों को धूलि-धूसरित होते देख देवताओं सहित इंद्र बहुत ही डरे. शंकित इंद्र को बृहस्पति ने बताया, "हे इंद्र, तुम्हारे पहले के अपराध और असावधानी से तथा महात्मा महर्षि बालखिल्य ऋषियों के तप के प्रभाव से, महाबली और मनमाना रूप धारण कर सकनेवाले गरुड़ इस समय अमृत लेने यहां आ रहे हैं."

इसी समय सब देवता और देवर्षि युधिष्ठिर को रथ पर चढ़ा कर स्वर्ग ले चले. अपनी इच्छानुसार विचरनेवाले पुण्यात्मा, पवित्र वाणी, बुद्धि और कर्मवाले सिद्धगण भी विमानों पर सवार होकर, युधिष्ठिर के साथ चले. पृथ्वी और अंतरिक्ष को व्याप्त करते हुए राजा युधिष्ठिर उस रथ पर चढ़कर शीघ्रता से ऊपर चढ़ने लगे. तब सब लोकों का हाल जाननेवाले नारदजी जोर से कहने लगे, "हे महाराज! पृथ्वी पर से तुमने नक्षत्र-तारे आदि और देवताओं के जो भवन देखे, उन्हीं को यहां देखो." □

के नाम से जाना जाता था. (यहां एक सूर्यद्वार है, जिस पर एक अज्ञात प्राचीन लिपि में अनेक संख्याएं और तिथियां अंकित हैं, जिनका संबंध ग्रहों की बदलती हुई स्थितियों से है. एक अकेले विशाल खंड से तराशे गये 10 फुट ऊंचे और 16½ फुट चौड़े इस द्वार पर अंकित एक अत्यंत प्राचीन चित्र में 48 वर्गाकार प्राणियों ने एक आकाशचारी देवता को चारों ओर से घेर रखा है.)

पहले पृथ्वी पर जीवन नहीं था. फिर, ब्रह्मांड से सोने के अंडे जैसा दिखायी देनेवाला एक यान किसी ग्रह से पृथ्वी पर आया, और उसमें सवार परलोकीय प्राणियों ने पृथ्वी पर मानव की सृष्टि की. इस यान में ओरयाना नाम की एक देवी निकली, जो पृथ्वी-माता बनने के उद्देश्य से अंतरिक्ष से पृथ्वी पर आयी थी. उसके हर हाथ में झिल्लीदार पंजों वाली चार उंगलियां थीं. इस देवी ने ऐसी चार उंगलियोंवाले 70 बच्चों को पृथ्वी पर जन्म दिया, और फिर वापस अपने ग्रह लौट गयी." (आज भी तियाहुआनाको की अनेक चट्टानों पर चार उंगलियोंवाले प्राणियों के चित्र देखने को मिल सकते हैं.)

'गुआटेमाला' के प्राचीन धार्मिक ग्रंथ 'पोपल वुह' की एक कथा

गुआटेमाला की अतीतलान नामक झील के निकट, हजारों वर्ष पूर्व, क्यूशे नामक एक गणजाति के धार्मिक ग्रंथ 'पोपल वुह' का द. अमरीका की प्राचीन संस्कृति में वही स्थान है, जो हिंदु संस्कृति में वेदों को प्राप्त है. इस ग्रंथ में पृथ्वी पर मानव के जन्म की जो कहानी कही गयी है, उसके अनुसार, पृथ्वी पर जन्मे मानव को 'देवताओं' ने पुनर्जीवित किया, उसे प्रज्ञा प्रदान करके. जो मानव प्रज्ञावान् नहीं बन सके, उन्हें 'देवताओं' ने नष्ट कर दिया, और पृथ्वी पर अपना कार्य संपन्न करके, दावाविल में, जो स्वर्ग का केंद्र बिंदु है, और जहां वह परम-देवता निवास करता है, जो अंधेरे में भी देख सकता है, वापस चले गये. पृथ्वी पर ये देवता एक वर्तुलाकार चट्टान में रहते थे, और इच्छानुसार उसमें से बाहर आ सकते थे.

तिब्बत के ज्ञान ग्रंथ में वर्णित एक पद्यमय कथा

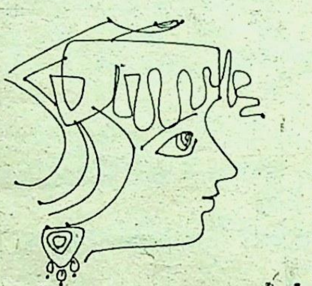

इस 'गुप्त' पुस्तक में, जो हाल ही में प्रकाश में आयी थी, सृष्टि तथा मानव के जन्म और विकास की कहानी पढ़कर ऋग्वेद की उन ऋचाओं की जिनमें सृष्टि-रचना का वर्णन है, अनेक प्रख्यात आधुनिक विज्ञान-कथाओं की भी, जिनमें सृष्टि-रचना का काल्पनिक वर्णन है, याद आ जाती है. कथा का आरंभ इस प्रकार होता है:

"काल नहीं था, क्योंकि वह अनवश्वर के निस्सीम वक्ष में सो रहा था, असीम शून्य में सर्वत्र अंधकार छाया था, और उसके अचेतन में जीवन स्पंदित हो रहा था. कहां थे वे, जो निर्माता थे, और ज्योतिर्मय थे, वे जो निराकार को साकार कर सकते हैं, विश्व के रचनाकार! अभी वह घड़ी नहीं आयी थी, जीवाणु में किरण का स्फुरण नहीं हुआ था. सातवीं अनंतता का अंतिम स्फुरण अनंत को रोमांचित करता जा रहा है.

स्फुरण ने अपनी तीव्र गति से सारे ब्रह्मांण को पार कर लिया है और उस जीवाणु को भी जो जीवन के सुप्त जल पर छाये अंधकार में रहता है, अनंतता के महासागर की हर बूंद में जीवन का मूल मौजूद है, और महासागर में तीव्र ज्योति थी, ज्योति जो अग्नि है, ताप है, गति है. स्फुरण प्रकाश को लील गया.

वह देखो. . . . ज्योतिर्मय अंतरिक्ष, अंधेरे अंतरिक्ष का पुत्र, जो सूर्य की भांति दीप्तिमान् है, विज्ञता का देदीप्यमान दिव्य उड्डीय सर्प है! कहां गया बीजाणु और कहां गया अंधकार? वह बीजाणु भी है, अंधकार में लुप्त पिता का ज्योतिष्मान् पुत्र भी!

सुनो, पृथ्वी-पुत्रो, अपने गुरुओं, अग्नि-पुत्रों की वाणी सुनो! हम तुम्हें सिखाते हैं, वह, जो हमने अपने पिता अग्नि से सीखा है, चिर-अंधकार की कोख से जन्मी प्रकाश की दीप्ति से अंतरिक्ष में पुनर्जाग्रत शक्तियों का जन्म हुआ और दिव्य पुरुष कारण बने जीवों और धार्मिक पिताओं के जन्म के. □

प्रस्तुति : हरि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबूत

इसाक एलिनोव

"...हम न्यायालय के आदेश से आपके घर की तलाशी लेने आये हैं. हमें खास तौर पर यंत्र-मानवों और मानव-सम यंत्र-मानवों की तलाश है, क्योंकि सरकार को शक है कि आप मानव नहीं, मानव-सम यंत्र-मानव हैं!"—विश्व के चोटी के लोकप्रिय अमरीकी विज्ञान-कथा-लेखक की कहानी जो मानव और कृत्रिम मानव के पारस्परिक संबंधों को नितांत असाधारण ढंग से उजागर कर जाती है कि असली और नकली में क्या भेद होता है...

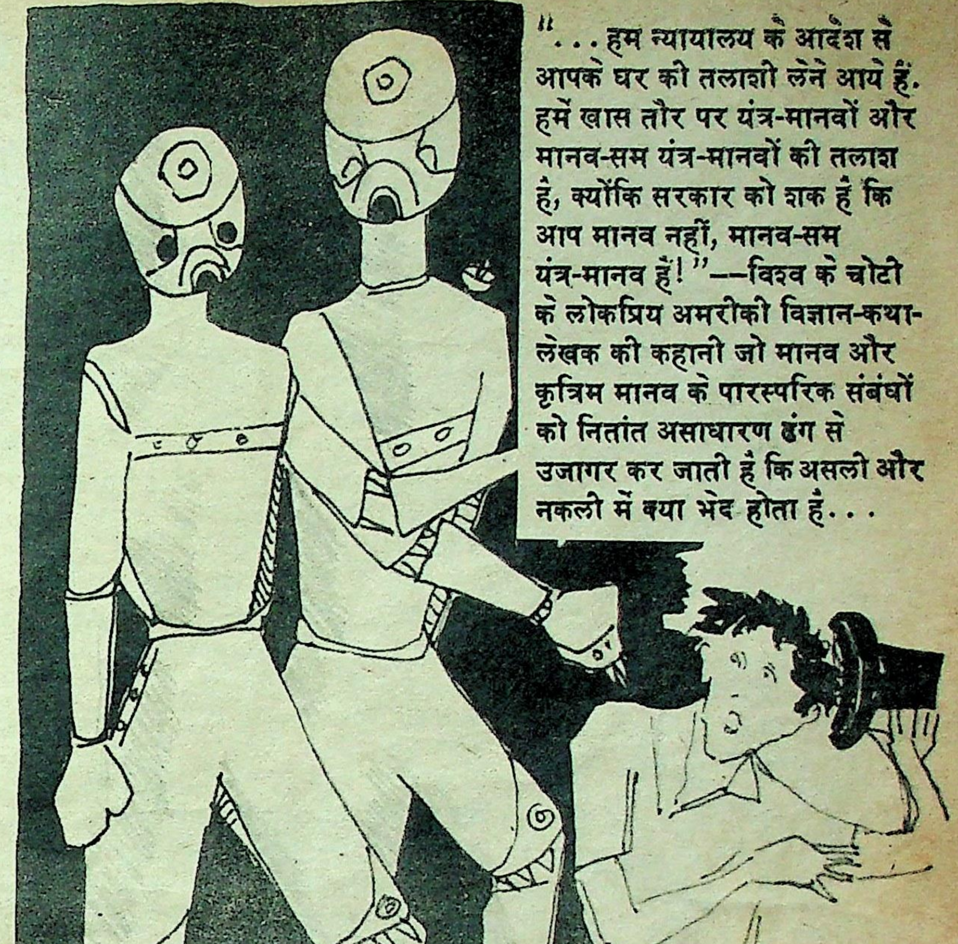

फ्रांसिस क्वीन आधुनिक किस्म के राजनीतिज्ञ थे, ऐसे राजनीतिज्ञ जिन्हें अपने स्थान पर बने रहने के लिए लोगों से वोट नहीं मांगने पड़ते, व्याख्यान नहीं देने पड़ते और कोई चुनाव नहीं लड़ना पड़ता. इस समय वे यू. एस. रोबोट्स एंड मकेनिकल मैन कार्पोरेशन की अनुसंधान-शाखा के प्रमुख डा. लानिंग से बातें कर रहे थे.

"मेरा खयाल है कि आप हमारे डिस्ट्रिक्ट एटार्नी स्टीफेन बायरले को, जो मेयर-पद के चुनाव के लिए खड़े हो रहे हैं, अवश्य जानते होंगे." क्वीन ने डा. लानिंग से पूछा.

"मैंने उनका नाम भर सुना है....क्यों?"

"हम नहीं चाहते कि वह मेयर बने. और आपके हित में भी यही होगा कि आप भी ऐसा ही चाहें."

"आपकी बात मेरी समझ में बिल्कुल नहीं आ रही है."

"अभी आ जायेगी... देखिए, तीन साल पहले यहां कोई बायरले को जानता भी नहीं था, पर आज सब न केवल उसे जानते हैं, उसका आदर भी करते हैं. मगर खोज करने पर मुझे पता चला कि उनका विगत काफी रहस्यमय है. मिसाल के तौर पर, उन्हें एक बार भी... एक बार भी... कुछ खाते नहीं देखा गया."

"यह कैसे हो सकता है? यह अविश्वसनीय है!"

"अविश्वसनीय भले ही हो, पर सच है! और इतना ही नहीं, उन्हें सार्वजनिक रूप से कभी कुछ पीते हुए भी नहीं देखा गया. उनमें और भी विलक्षणताएं हैं, जो यह सोचने को मजबूर करती हैं कि....आशा है, आप मेरा मतलब समझ गये होंगे...और यह भी कि मैं क्या कहना चाहता हूं."

"हां, समझ तो गया हूं. पर, आप जो कुछ कहना चाहते हैं, वह एकदम असंभव है."

"पर बायरले मानव नहीं, अमानव है!"

"आप कुछ भी कहें, मुझे आपकी बात पर कभी विश्वास नहीं होगा."

"फिर भी यह आपकी कार्पोरेशन के हित में है कि वह इस मामले की पूरी जांच स्वयं करे."

"कार्पोरेशन का स्थानीय राजनीति से कोई संबंध नहीं है. वह यह जांच कभी नहीं करेगी."

"इसके अलावा कार्पोरेशन के पास कोई चारा नहीं है. यदि यह तथ्य प्रकाश में आ गया तो कार्पोरेशन की बहुत बदनामी होगी. सब जानते हैं कि विश्व में सिर्फ आपकी कार्पोरेशन को ही पॉजिट्रोन (धनाणु) निर्मित यंत्र-मानव बनाने का अधिकार प्राप्त है. पर सब यह भी जानते हैं कि आपकी कार्पोरेशन को यह अधिकार इस शर्त पर दिया गया था कि वह उन लोकों पर, जहां प्राणी रहते हैं, इन यंत्रमानवों को नहीं भेजेगी. इस शर्त के अनुसार आप अपने किसी यंत्रमानव को किसी भी जीवित लोक के किसी भी प्राणी को बेच नहीं सकते, उसे सिर्फ ऐसे यंत्रमानव 'लीज' पर दिये जा सकते हैं. जब यह तथ्य प्रकाश में आयेगा तो सब यही समझेंगे कि बायरले-रूपी यंत्रमानव का निर्माण आप ही ने किया है."

"पर हम आसानी से यह सिद्ध कर देंगे कि हमने मानव-सम यंत्र-मानवों का निर्माण कभी नहीं किया."

"किया नहीं, पर कर सकते हैं." क्वीन ने मुस्कराते हुए कहा, "कर सकते हैं न?"

"हां, कर तो सकते हैं." डा. लॉनिंग को स्वीकार करना पड़ा, "पर एसी संभावना इसलिए साकार नहीं हो सकती, क्योंकि यंत्र-मानवों के निर्माण की हर स्टेज पर सरकारी अधिकारी जांच करते हैं..... और सबसे बड़ा सवाल तो यह है कि गुप्त रूप से मानव-सम यंत्र-मानव बनाकर हमें लाभ क्या होगा?"

"लाभ तो बहुत होगा, डा. लॉनिंग! मान लीजिए, बायरले एक मानव-सम यंत्र-मानव है. .... और उसका निर्माण गुप्त रूप से आपकी कार्पोरेशन ने ही किया है. अब यदि आप जनता और सरकार को बायरले का उदाहरण देकर यह सिद्ध कर सकें कि आपके द्वारा निर्मित मानव-सम यंत्रमानव वर्षों तक बायरले के समान शांत, कार्यक्षम और कानून का पालन करनेवाले नागरिक बन सकते हैं तो ऐसे यंत्रमानवों के प्रति जनता और सरकार का पूर्वाग्रह समाप्त हो जायेगा. और आपको ऐसे मानव-सम यंत्र-मानवों के आर्डर धड़ल्ले से मिलने लगेंगे."

"मुझे कुछ सोचने का अवसर दीजिए." डा. लॉनिंग ने कहा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या कह रहे हैं आप, डा. लॉनिंग? क्या मैं यंत्रमानव हूं?" आश्चर्य से बायरले ने पूछा.

"ऐसा मैं नहीं, कोई और मानता है. मैं आपको मानव सिद्ध करना चाहता हूं. और ऐसा करना आपके सहयोग के बिना असंभव है. यदि आप सार्वजनिक रूप से किसी रेस्तरां में सबके सामने खा लें तो मिस्टर क्वीन का मुंह हमेशा-हमेशा के लिए बंद हो जायेगा."

"मैं नहीं समझता कि मैं इस प्रकार आपको अनुग्रहीत कर सकूंगा." बायरले ने शांत स्वर में कहा, "और मैं इतना कहे बिना नहीं रह सकता कि आप क्वीन का सुझाव मानकर उसके हाथों में खेल रहे हैं." तभी उन्होंने डा. लॉनिंग के साथ एक महिला को देखकर पूछा, "आपकी तारीफ?"

"मैं डा. सुसान हूं, यंत्रमानवों की मानस रोग-विशेषज्ञा." महिला ने उत्तर दिया.

"और आप शायद अपने पर्स में कुछ रखकर लायी हैं, मुझे खिलाने के लिए."

"हां." पर्स से एक सेब निकालकर, बायरले को देते हुए डा. सुसान ने कहा, "आपको कैसे पता चला?"

"चल गया! लीजिए, आपके संतोष के लिए मैं इसे आपके सामने खाकर दिखा देता हूं." कहकर बायरले ने सेब को धीरे-धीरे चबाना शुरू कर दिया.

"पर सबके सामने आपके द्वारा पूरा आहार ले लेने के बाद ही सब कुछ सिद्ध हो पायेगा." डा. लॉनिंग ने कहा.

"नहीं होगा, डा. लॉनिंग! इसलिए नहीं होगा कि यह षड्यंत्र कुछ राजनैतिक, उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सोचा गया है...... और मैं यह प्रदर्शन करके इसको सफल नहीं बनाना चाहता."

"आपको अपने ऊपर इतना अधिक विश्वास है, तब आपसे कुछ और कहना व्यर्थ है."

डा. लॉनिंग के जाने के तुरंत बाद बायरले ने कार द्वारा अपने घर की ओर प्रस्थान किया. घर पर वह सबसे पहले एक ह्वीलचेयर पर बैठे अपंग वृद्ध से मिला और बोला, "एक अजीब समस्या सिर पर आ गयी है. बिना तुम्हारी सहायता के मैं उसे हल नहीं कर पाऊंगा, जॉन! क्वीन चुनाव में जीतने के लिए मेरे विरुद्ध यह प्रचार कर रहा है कि मैं मानव नहीं, यंत्र-मानव हूं."

जॉन की आंखें फैल गयीं. उसने कहा, "तुम्हें कैसे पता चला? यह असंभव है... अविश्वसनीय है!"

"उसने यू. एस. कार्पोरेशन के एक अधिकारी को मेरे पास भेजा था... मेरे मन में एक आइडिया आया है. सुनो, क्या ऐसा नहीं हो सकता कि......"

"मिस्टर बायरले, हम न्यायलय के आदेश से आपके घर की तलाशी लेने आये हैं. हमें खास तौर पर यंत्र-मानवों और मानवसम यंत्र-मानवों की तलाश है." एक सरकारी अधिकारी ने बायरले से कहा.

बायरले ने आदेश-पत्र को अच्छी तरह देख-भालकर कहा, "आप बड़ी खुशी से तलाशी ले सकते हैं."

जब इस तलाशी में सरकारी अधिकारी को कोई संदेहास्पद वस्तु नहीं मिली तो उसने बायरले से कहा, "हम आपका एक्स-रे फोटोग्राफ लेना चाहते हैं."

"आदेश-पत्र में ऐसा फोटोग्राफ लेने का का उल्लेख नहीं है." बायरले ने दृढ़ स्वर में कहा.

"ओह! उसका ध्यान नहीं रहा हमें. खैर, कोई बात नहीं, हम फिर आयेंगे." कहकर वह अपने साथ आये एक कर्मचारी के साथ वापस जाने लगा. पर जाने से पूर्व अपनी जेब के बाहरी भाग को अपने हाथ से दबाना न भूला.

कार्यालय में जाकर जब उस अधिकारी ने जेब में रखे विशेष कैमरा से लिये गये एक्स-रे-फोटोग्राफ को देखा तो पाया कि बायरले द्वारा पेनेट-विकिरण को रोकने के लिए एक सुरक्षात्मक शील्ड धारण करने के कारण, यह जानना असंभव था कि बायरले मानव है या यंत्र-मानव!

अगले दिन, क्वीन ने बायरले के पास जाकर पूछा, "मैं यह बात जग-जाहिर करना चाहता हूं कि एक्स-रे फोटोग्राफों से बचने के लिए तुमने अपने कपड़ों के भीतर एक सुरक्षात्मक शील्ड धारण कर रखा है."

"आप जो करना चाहें, करें पर अपने सभी कृत्यों की पूरी जिम्मेवारी आपकी होगी."

क्वीन ने अगला प्रश्न पूछा, "आपके घर में जो एक अपंग था, वह अब कहां है?"

"वे वृद्ध सज्जन कभी मेरे अध्यापक थे. आजकल वे विश्राम करने के लिए कहीं गये हुए हैं."

"इस अभियोग के बारे में आपका क्या कहना है कि वह अपंग व्यक्ति ही असली स्टीफेन बायरले है... और आप उसके द्वारा निर्मित एक मानव-सम यंत्र-मानव."

"आपका यह अभियोग तभी सच्चा होगा, जब आप इसे सिद्ध करके दिखा सकेंगे."

"मेरा खयाल है, शीघ्र ही स्वयं आपको इस नगर के नागरिकों के समक्ष यह सिद्ध करके बताना होगा कि आप मानव हैं, यंत्र-मानव नहीं."

"मैं समय आने पर यह साबित करके दिखा दूंगा... और मेयर का चुनाव जीतकर भी."

एक विशाल और क्रुद्ध जनसमूह जमा था, बायरले के घर के बाहर, उसके खून का प्यासा!

अपने साथियों और शुभचिंतकों की तनिक भी परवाह किये बिना, बायरले ने जनसमूह के सामने खड़े होकर कहा, "क्या चाहते हैं आप लोग? आपका नेता कौन है? वह जो कुछ पूछेगा, मैं उसका जवाब दूंगा."

एक दुबले-पतले आदमी ने उठकर कहा, "हम सबका खयाल है कि तुम एक यंत्र-मानव हो. यदि नहीं हो तो मुझ पर घूंसा मारकर दिखाओ." (नियमानुसार...कोई यंत्र-मानव कसी मानव पर प्रहार नहीं कर सकता.)

"मैं तुम्हें घूंसा क्यों मारूं?"

"यह साबित करने के लिए कि तुम यंत्र-मानव नहीं, मानव हो, राक्षस नहीं."

हजारों दर्शकों के अलावा, इस दृश्य को अपने-अपने टीवी पर सारे अमरीकावासी भी देख रहे थे, बायरले को यह अहसास था. उसने फुर्ती से आगे बढ़कर दुबले-पतले आदमी पर घूंसे का प्रहार करके उसे नीचे गिरा दिया.

बायरले के प्रति क्रुद्ध भीड़ अब उसके प्रति सहानुभूतिशील हो चली थी.

एक सप्ताह बाद नये-नये मेयर बने बायरले की भेंट डा. सुसान से हुई.

डा. सुसान कह रही थीं, "मुझे मानवों की अपेक्षा यंत्र-मानव ज्यादा पसंद हैं."

"क्यों?" बायरले ने पूछा.

"चूंकि यंत्र-मानविकी के सिद्धांतों के अनुसार यंत्र-मानवों का आचरण पूर्णतया नैतिक होता है. वह न किसी मानव पर, अपनी इच्छा से प्रहार करेगा...और न उसे किसी प्रकार की हानि पहुंचायेगा. मेरा सुझाव है कि प्रशिक्षित यंत्र-मानव बड़े योग्य, ईमानदार और कार्यक्षम कर्मचारी बन सकते हैं." यह कहकर वह मुस्करा दी.

जब बायरले ने उससे मुस्कराने का कारण पूछा तो उसने उत्तर दिया, "लेकिन यंत्र-मानव मौका पड़ने पर यंत्र-मानविकी का पहले सिद्धांत को (मानवों को शारीरिक या मानसिक कैसा भी कष्ट न पहुंचाओ) भंग भी कर सकते हैं. पर ऐसा मौका एक बार ही आ सकता है."

"कब?" बायरले ने पूछा.

"जब वह यंत्र-मानव जिस मानव पर प्रहार करे, वह भी यंत्र-मानव ही हो. अपने को मानव सिद्ध करने के लिए आपने जिस किराये के टट्टू यंत्रमानव को अपने खिलाफ नारे लगाने और उकसाने के लिए चुना था, उसी पर प्रहार करके आपने अपने विरोधियों को परास्त कर दिया. मानती हूं, आपको मिस्टर बायरले!" □

रूपांतर : हरिमोहन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालयंत्र

हरबर्ट जार्ज वैल्स

मैंने देखा कि वह प्रयोगशाला में अपने कालयंत्र पर बैठ गया . . . उसका हत्था दबाया . . . देखते ही देखते यंत्र सहित वह यात्री गायब हो गया! ––ब्रह्मांड में बसी बस्तियों की खोज में लगे एक वैज्ञानिक की रोमांचक गाथा का वर्णन करते अंग्रेजी उपन्यास का संक्षिप्त रूपांतर, जिस पर एक बहुर्चाचित फिल्म भी बन चुकी है . . .

एक मेज के इर्द-गिर्द कुर्सियों पर हम लोग बैठे उस विचित्र व्यक्ति की बातें सुन रहे थे. कमरे में दो-एक मोमबत्तियां जल रही थीं. मेरे अतिरिक्त वहां चार व्यक्ति और भी थे. एक चिकित्सक, एक मनोवैज्ञानिक, एक नौजवान और एक निहायत ही मुंहफट व्यक्ति जिसका नाम फिल्बी था. हमारा मेजबान अपनी एक विचित्र खोज के बारे में बता रहा था और हम अविश्वास के साथ सुन रहे थे. उसने बात 'आयाम' से शुरू की.

उसका कहना था कि 'आयाम' तीन नहीं, चार होते हैं. ज्यामिति में जिसे हम 'रेखा' कहते हैं, उसका एक ही आयाम होता है––लंबाई. मगर वास्तव में रेखा एक कल्पित धारणा मात्र है. उसका कोई अस्तित्व ही नहीं होता. किसी वस्तु का अस्तित्व होने के लिए यह जरूरी है कि उसमें तीन आयाम हों––लंबाई-चौड़ाई और मोटाई या ऊंचाई.

"यह कौन-सी नयी बात कह रहे हैं आप." फिल्बी ने पूछा.

"कोई नयी बात कहीं. मगर क्या ऐसी कोई वस्तु हो सकती है जो निमिष मात्र भी न टिके. . . दरअसल, प्रत्येक वस्तु के लिए यह जरूरी है कि वह किसी कालावधि में रहे. भले ही काल कितना ही छोटा क्यों न हो." उसने कहा, "दिक् के तीन आयामों के अतिरिक्त चौथे आयाम, काल की भी जरूरत होती है."

हम नहीं समझ पा रहे थे कि वह इस तर्क से हमें क्या बताना चाहता था. मगर हमारी शंका को भांपते हुए उसने कहा, "अगर हम आगे-पीछे, ऊपर-नीचे आ-जा सकते हैं, यानी दिक् में घूम सकते हैं. तो हम काल में क्यों नहीं घूम सकते?"

फिल्बी को यह बात बिलकुल ही नहीं जंची. खीज उसके चेहरे पर साफ नजर आ रही थी. मगर उस व्यक्ति ने दावा किया, "मेरे पास इस बात का प्रमाण है कि हम काल में भी यात्रा कर सकते हैं."

यह कहकर वह उठा और अपनी प्रयोगशाला में चला गया. जब वापस आया तो उसके हाथ में कोई चमकीला-सा यंत्र था. बीच-बीच में हाथी दांत भी मढ़ा था. उस यंत्र में दो हत्थे थे. हम सब इस खिलौने को कौतुक से देखते रहे. उसकी ओर इशारा करते हुए वह बोला, "यह कालयंत्र है, जो केवल नमूना है."

"तो क्या आपका दावा है कि यह खिलौना भविष्य या अतीत में यात्रा कर सकता है ?" किसी ने छेड़ने के लिए प्रश्न किया.

"जी हां, अभी आप देख लेंगे." वह बोला.

फिर उसने धीरे-से यंत्र का एक हत्था दबा दिया. पहले तो यंत्र धुंधला होने लगा, फिर हमारे देखते ही देखते एकदम गायब हो गया. यद्यपि यह घटना हमारी आंखों के सामने घटी थी फिर भी हमें विश्वास नहीं हो रहा था. किसी को यह कोई तिकड़म लगी तो कोई इसे जादू मानने लगा. जाते-जाते मैंने उससे फिर पूछा, "क्या आप सचमुच भविष्य की यात्रा पर जा सकेंगे ?" तो उसने विश्वास के साथ हामी भरी.

जिस दिन दूसरी बैठक तय थी उस दिन मैं कुछ देर से पहुंचा. मैंने देखा कि वहां बैठक में पहले से ही कई व्यक्ति बैठे थे. जिनमें एक प्रतिष्ठित पत्र के संपादक भी थे. वह कालयात्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहां नहीं था. पता चला कि उसने एक चिट्ठी छोड़ी थी, जिसमें लिखा था 'अगर मुझे देर हो जाये तो आप खाना खा लें.' इसलिए सबने यही फैसला किया कि खाना ठंडा करने से कोई लाभ नहीं. बावर्ची ने मेज पर खाना लगा दिया और हम खाते-खाते गपशप करते जा रहे थे कि अचानक दरवाजे से वह अंदर आता दिखायी दिया. उसकी हालत देखकर सभी को अचंभा हुआ. उसके कपड़े फटे हुए और मैले थे.

दो गिलास शराब पीने के बाद उसकी हालत में काफी सुधार आ गया और वह सामान्य ढंग से बोलने लगा. . .

"मेरा यह आग्रह नहीं है कि आप लोग मेरी कहानी पर विश्वास कर लें. मैं इस सिलसिले में इस समय बहस करने की स्थिति में नहीं हूं. मगर यदि आप सुनना चाहते हैं कि मैं कहां गया था तो मैं सही-सही घटनाएं आपके सामने रखूंगा. . . ."

उत्सुकता तो थी ही इसलिए हम उसकी कहानी सुनने लगे. . .

मेरा कालयंत्र आज प्रातः दस बजे तैयार हो गया. मैंने सोचा था कि मैं कल यात्रा पर चला जाऊंगा. मगर मैंने आज यात्रा करने का फैसला किया. तैयार यंत्र पर बैठने का लोभ मैं नहीं छोड़ सका. बैठ तो गया मैं. . .किंतु इसे चालू करनेवाले हत्थे को दबाने का साहस काफी देर तक नहीं कर सका. क्योंकि मैं जानता था कि यदि यह चालू हो गया तो भी इस बात की पूरी संभावना है कि मैं लौट ही न सकूं. फिर भी इस प्रकार का जोखिम तो उठाना ही था. जब मैंने आखिरकार हत्था दबा लेने का साहस किया तो एक क्षण के लिए मुझे लगा कि मेरे चारों ओर अंधेरा-सा छा गया है. सब चीजें धुंधली-धुंधली लग रही थीं. उसी बीच मेरी नौकरानी भी मेरी प्रयोगशाला में आयी मगर यह देखकर मुझे आश्चर्य हुआ कि उसने मुझे या मेरी मशीन को मानो देखा ही नहीं.

थोड़ी देर में सब कुछ साफ हो गया. मगर मेरा यह मकान, यह पड़ोस; सब बदल गये थे. अलबत्ता टेम्स नदी पूर्ववत बह रही थी. दृश्य इतनी तेजी से बदलने लगे कि मुझे मालूम ही नहीं हो रहा था कि दिन कब चढ़ा और रात कब आयी. मेरा विचार है कि प्रति मिनट नया सूर्य उग रहा था. यह रात-दिन का चक्र काफी समय तक चलता रहा. अंत में मुझे एक हरामरा क्षेत्र दिखायी दिया. जहां आसपास कई बड़े-बड़े मकान भी थे. मैंने यंत्र को रोकनेवाला हत्था दबाया तो दृश्य एकदम रुक गया, मानो फिल्म की रील बीच में अटक गयी हो.

मैंने पाया कि मैं एक बड़ी-सी वाटिका में था. सामने एक विशाल मंच पर संगमरमर की एक विराट मूर्ति थी. यह मूर्ति वास्तव में किसी पंखोंवाले देवता की लगती थी. और मुद्रा ऐसी थी कि जैसे अभी उड़नेवाला हो. मूर्ति इतनी विशाल और आकर्षक थी कि मैं उसे निहारने की तल्लीनता में यह भी भूल गया कि मैं वर्षा में बुरी तरह भीग चुका हूं.

इस बीच चमकीले कपड़े पहने एक व्यक्ति मेरी ओर आता दिखायी दिया. वह बिना किसी झिझक के मेरे पास आया. और मेरे प्रश्नों के उत्तर में केवल मुस्कराता रहा. थोड़ी देर में और भी कई लोग वहां आये. पहली बार मैंने महसूस किया कि वे सभी छोटे कद के थे, लेकिन थे बहुत कमनीय. हमारे बीच संवाद इशारों से हुआ. क्योंकि न वे मेरी भाषा समझ पा रहे थे और न उनकी भाषा मेरे पल्ले पड़ रही थी. किसी ने इशारे से सूर्य की ओर इंगित करके पूछा कि क्या मैं सूर्य से आया हूं. . .तो मैंने हामी भर दी.

मेरे लिए यह पहला झटका था. मैं तो यह सोचकर भविष्य की ओर निकला था कि लाखों वर्ष बाद हमारे वंशज ज्ञान-विज्ञान में हमसे बहुत आगे होंगे. मैं उनके सामने काफी पिछड़ा और फूहड़ दिखायी दूंगा. मगर यहां तो हाल ही दूसरा था.

खैर, मैं उन लोगों के साथ उनके निवास स्थान पर चला गया. यह एक विराट महल था. बड़े-बड़े पाषाण स्तंभों और उत्कृष्ट फूल-पत्तियों से सजे एक हाल में सभी लोग इकट्ठा थे. लोगों के बैठने के लिए आधुनिक मेज-कुर्सियां नहीं थीं. सब पंक्तियों में फर्श पर बिछे गद्दों पर बैठ गये. मुझे भी ऐसे ही एक गद्दे पर बैठना पड़ा. मैं इस मानव जाति के बारे में कुछ जानने की उत्सुकता में उनकी भाषा सीखने का प्रयास करने लगा. किंतु कुछ संज्ञाओं और सरल क्रियाओं को छोड़कर अधिक नहीं सीख पाया.

सबसे अचरज तो मुझे यह जानकर हुआ कि वे लोग ज्यादा शाकाहारी थे. मेरे सामने जो भोजन रखा गया उसमें फल ही फल थे. इनमें से बहुत से फल तो मैं जीवन में पहली बार देख रहा था. इसलिए मैं निश्चित रूप से यह नहीं कह सकता कि वे आधुनिक फलों के विक-

एक और कालयंत्र

■ टी के. ब्राउन

"समय स्वप्निल आदमी के लिए एक दृष्टि से जड़ हो जाता है." प्रोफेसर पिकरिंग ने कहा, "और जागृति के बाद वह चेतन रूप में भविष्य के लिए एक विशिष्ट विराम में कूद चुका होता है. निस्संदेह, जड़ता के ऐसे उदाहरण भी देखने में आये हैं, जिनमें एक व्यक्ति कई वर्ष तक उस अवस्था में ग्रस्त रहा और जब उसकी आंख खुली तो उसने स्वयं को नितांत अजनबी संसार में पाया."

"भविष्य में यों कूद जाना, संभव है तार्किक दृष्टि से ठीक हो," प्रोफेसर डिक्सन ने शुष्क स्वर में कहा, "लेकिन इसी अंदाज में अतीत की ओर वापस जाना अत्यंत कठिन कार्य है."

"इसके बावजूद मैं ऐसा कर चुका हूं." प्रोफेसर पिकरिंग ने कहा. उसकी आंखें यों चमक रही थीं, जैसे वह उस महान सफलता पर गर्वित हो, "मैं ऐसा कर चुका हूं और अतीत में जाकर वापस आया हूं."

डिक्सन ने घृणा से प्रोफेसर की ओर देखा. उसके स्वर में कठोरता अब भी मौजूद थी, "कहीं तुम मुझे यह तो याद नहीं कराना चाहते कि तुमने किसी आविष्कार के द्वारा अतीत की यात्रा की है ?"

"मैं लिंकोलन गेटेंज के यहां मौजूद था." उसका स्वर रौब भरा था, "इस पुस्तक में माथ्यूब्रेडी के गृहयुद्ध की तसवीरें हैं. मैं इन तसवीरों में मौजूद हूं." उसने एक पुस्तक खोली और एक तसवीर पर उंगली रख दी, "मेरा खयाल है, तुम मुझे पहचानने में गलती नहीं करोगे."

प्रोफेसर डिक्सन कहकहा मारकर हंस पड़ा, "मुझे यकीन है कि तुम यह साक्षी अपने किसी निकटवर्ती दोस्त के अलावा किसी अन्य के सामने नहीं रखोगे. यह मजाक केवल दोस्तों से ही किया जा सकता है, वरना सामान्य आदमी यह देख सकता है कि इस तसवीर में दिखायी देनेवाले चेहरे कमोबेश एक जैसे हैं. यह इतने छोटे चेहरों की तसवीर है कि किसी को पहचानना बड़ा मुश्किल है."

प्रोफेसर पिकरिंग ने जेब से दियासिलाई जितने आकार की एक डिबिया निकाली, "इस डायल के द्वारा मैं उस वर्ष को तय करता हूं, जहां मैं जाना चाहता हूं. इससे मैं अपने गंतव्य का वर्गफल पता करता हूं. बहुत समय से मेरी इच्छा थी कि मैं 1662 के उस स्थान को देखूं जहां सर फ्रांसिस बेकन का निवास था."

"संभवतः उसे तुम्हारी भाषा बहुत ही अजीब महसूस हुई होगी." प्रोफेसर डिकसन ने कहा, "विशेषतः वह तुम्हारे लिबास को देखकर बहुत हैरान हुआ होगा."

"हां ! लिबास एक समस्या है. मैंने विभिन्न कालों के भ्रमण के अंतराल में सदा ट्राउजर और टी-शर्ट का उपयोग किया था, ताकि लिबास के मामले में मेरी ओर कम से कम ध्यान जाये."

बातों के दौरान वह निरंतर उस डिबिया पर काम कर रहा था. अंत में उसने एक बटन दबा दिया. प्रोफेसर डिक्सन की आंखें उस समय विस्मय से फट गयीं, जब उसका दोस्त अकस्मात गायब हो गया!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसी क्षण अतीत में सर फ्रांसिस बेकन भी आश्चर्य से उछल पड़ा था. उसने गुलाब की क्यारी में एक अजीब आकृति देखी, जो शनैः शनैः मानवीय शरीर में बदल रही थी.

"तुम कौन हो ?" उसने पूछा.

"मैं तुम्हें केवल एक मिनट के लिए कष्ट दूंगा." पिर्कारिंग ने कहा, "मुझे केवल एक बात बताओ, क्या तुमने ही वह नाटक लिखे थे, जिन्हें शेक्सपियर के नाम से जोड़ा जाता है ?"

"निश्चय ही नहीं." सर फ्रांसिस ने कटु स्वर में कहा, "ये सारे नाटक ऑक्सफोर्ड के सत्रहवें नवाब एडी. डी. वेरी ने लिखे थे."

"धन्यवाद !" प्रोफेसर पिर्कारिंग ने कहा, "मेरे साथियों को यह सुनकर बहुत दुख होगा." कहते हुए उसने अपनी डिबिया के पुर्जों को तरतीब दी और बटन दबाया. कुछ देर बाद वह 44 ईसा-पूर्व सन् के प्राचीन रोमनों की विधानसभा के जीने पर प्रकट हुआ. यह बिलकुल वही समय था, जब ज्यूलिस सीजर की हत्या की जा रही थी. यह दृश्य बिलकुल वैसा ही था, जैसा एडी. डी. वेरी ने अपने नाटक में लिखा था.

उसके बाद पिर्कारिंग प्राचीन सभ्यता की ओर चल दिया. उसने हर बीते हुए काल को देखा और पीछे ही पीछे लौटता रहा, यहां तक कि उसके मस्तिष्क में यह विचार उत्पन्न हुआ कि आखिर क्यों न यह देखा जाये कि सृष्टि अस्तित्व में कैसे आयी थी और मानव-जीवन का आरंभ कैसे हुआ!

प्रोफेसर पिर्कारिंग ने अपनी मशीन को सबसे पहले पांच लाख वर्ष पुराने युग के लिए सेट किया. वह अफ्रीका के उन अंधकारपूर्ण वनों में जाना चाहता था जहां उसके विचार से मानव-जाति के पूर्वज का निवास था.

उसने बटन दबाया... पर बटन के दबते ही आधुनिक काल के इस महान वैज्ञानिक का अंत हो गया.

क्या वह किसी पहाड़ी से गिरकर मर गया था? या किसी प्राचीन सभ्यता के नरभक्षी दरिंदे का शिकार हुआ? नहीं, ऐसा नहीं है, बल्कि वह अपने शरीर के साथ जीवित रहा.

उसे यह पता नहीं था कि वह प्राचीन से प्राचीन काल में वापस जा रहा है और साथ ही साथ उसकी अपनी मानसिक अवस्था भी बदलती जा रही है.

वह सहसा पांच लाख वर्ष पुराने उस काल में पहुंच गया, जहां वनमानस रहते थे. उसका अपना मस्तिष्क भी वनमानस का मस्तिष्क होकर रह गया था... और अब प्रोफेसर पिर्कारिंग उन वनमानसों के बीच एक-मात्र ऐसा गोरिल्ला था, जिसने टी-शर्ट पहन रखी थी और जिसकी टांगों में ट्राउजर थे. उसकी दायीं जेब में एक डिबिया थी, लेकिन वह नहीं जानता था कि टाइम-मशीन क्या होती है और उस डिबिया का उपयोग कैसे किया जाता है. वह उन नग्न वहशियों के बीच घूम रहा था और वे वहशी अपने हम-जिंस के इस लिबास को अजीब-सी नजरों से देख रहे थे.

अनुवाद : सुरजीत

सित रूप थे या बिलकुल नये फल थे. यह भी पता चला कि इस युग में कुत्ता, बिल्ली, घोड़े और गाय बैल जैसे पशु भी लुप्त हो गये हैं.

मैं सोचने लगा, हे भगवान यहां साम्यवाद आ गया है क्या?...मगर नहीं, वैसी कोई बात नजर नहीं आयी. ऐसा लगता है कि वैज्ञानिक प्रगति के कारण मनुष्य ने कृषि के प्राकृतिक शत्रुओं को बिलकुल नष्ट कर दिया था. मुझे याद नहीं आ रहा था कि कालयात्रा में मैंने कहीं कृषि नाशक कीट देखे हों. मनुष्य के साथ अन्न के संघर्ष में अनेक पशु भी लुप्त हो गये. मनुष्य के लिए जीवन धीरे-धीरे सुविधाओं से भर गया. सुविधाएं आयी तो संघर्ष करने की प्रवृत्ति भी कम होने लगीं. ऐसा भी समय आया होगा जबकि मनुष्य में संघर्ष करने की बिलकुल ही इच्छा न रही हो. और यह वैज्ञानिक तथ्य है कि संघर्ष रहित मानव समाज में धीरे-धीरे बौद्धिक क्षमता भी क्षीण हो जायेगी. जीवनयापन के लिए बुद्धि का इस्तेमाल ही न किया जाये, तो बुद्धि का कमजोर होना स्वाभाविक है. मैं इसी संघर्षहीन सुविधाभोगी युग में पहुंच गया था.

इस प्रक्रिया में आठ लाख वर्ष से भी ज्यादा समय लगा क्योंकि मैं आठ लाख दो हजार सात सौ एक वर्ष ईस्वी में पहुंच गया था.

रात को पूरा चांद निकला था. मैं बाहर बाग में घूमने निकला तो अचानक चौंक पड़ा. पहले तो मुझे लगा कि मैं गलत जगह आया हूं मगर नहीं जगह तो वही है...वही घास, वही पक्षी मानव की मूर्ति. लेकिन फिर मेरा कालयंत्र कहां है ? कालयंत्र अपने स्थान पर नहीं था. मैं बेतहाशा भागकर इधर-उधर खोजने लगा. झाड़ियों में देखा, मूर्ति के पीछे देखा. कहीं नहीं था. मुझे संदेह हुआ कि यहां के बौने लोगों ने ही उसे कहीं छिपा रखा है. मैं दौड़कर उस महल में गया और अनावश्यक गुस्से और आवेश में उन लोगों से पूछताछ करने लगा. वह मेरे इस व्यवहार पर हैरान थे. वास्तव में यंत्र के खो जाने का मतलब यह था कि मैं इस नितांत अजनबी दुनिया में अपने समय से आठ लाख वर्ष आगे जीवन बिताने के लिए मजबूर हो जाऊंगा...

बहुत खोजने पर भी जब यंत्र नहीं मिला तो मैं सोचने लगा कि आखिर कालयंत्र जा कहां सकता है. उस पर बैठकर अनजाने में उसे चालू करने की संभावना नहीं थी. क्योंकि चालू करने और रोकने के हत्थे मैंने पहले ही निकालकर अपनी जेब में रख लिये थे.

अचानक मेरा ध्यान उस विराट मूर्ति के नीचे बने तांबे के बड़े दरवाजे की ओर गया. हो न हो कालयंत्र यहीं से अंदर ले जाया गया होगा. मैंने देख लिया था कि दरवाजे मजबूत तो हैं ही, बाहर से खुलते भी नहीं. मेरी नजर दो व्यक्तियों पर पड़ी. मैंने उन्हें पास बुलाकर दरवाजे के बारे में पूछा मगर उनका व्यवहार देखकर मैं दंग रह गया. मेरा प्रश्न सुनते ही वह ऐसे भागे जैसे सांप सूंघ गया हो. तब पहली बार मुझे लगा कि इन लोगों ने भय से पूरी तरह मुक्ति नहीं पायी है. मगर प्रश्न यह था कि वे इतना डरते किस बात से हैं ? यह तो मैं जान गया था कि दिन में प्रफुल्ल रहनेवाले ये लोग रात को दुबके-दुबके रहते हैं और इसीलिए एक साथ सोते हैं.

अगले दिन मैंने एक मित्र बनाया. हुआ यों कि एक नदी में लोग नहा रहे थे. दिन में कई बार नहाना यहां बहुत जरूरी है, क्योंकि 19वीं शताब्दी की तुलना में दिन में इतनी तेज धूप पड़ती है कि हम लंदन के लोग कल्पना भी नहीं कर सकते. संभवतः सूर्य पृथ्वी के अधिक निकट आ गया है. खैर... नहाते-नहाते एक सुंदर लड़की को तेज धारा बहा ले गयी. वह चिल्लायी मगर नहानेवालों में से कोई भी हिला तक नहीं. अपने किसी साथी को बचाने के लिए ही संघर्ष नहीं. यह स्थिति मुझे बहुत भयावह लगी. मैंने तत्काल पानी में कूदकर उस लड़की को बचा लिया और उसे किनारे पर ले आया. वह चुपचाप वहां से भाग गयी. मगर कुछ समय पश्चात वह फूलों की माला ले आयी और हंसते हुए मेरे गले में डाल दी. शीघ्र ही मैं जान गया कि बिलकुल बच्चों जैसे स्वभाववाली उस नौजवान लड़की का नाम था—वीना. वीना सदा मेरे पास ही रहना चाहती थी. रास्ते में फूल चुनकर मेरी जेबों में सजाती क्योंकि उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि किसी के कपड़ों में जेबें क्यों होती हैं. मौका पाकर मैंने वीना से तांबे के दरवाजे के बारे में पूछा तो उसका चेहरा फक्क पड़ गया. उसने कुछ भी कहने से इनकार कर दिया. मुझे विश्वास होने लगा कि मेरे कालयंत्र का संबंध इस द्वार से जरूर है.

यद्यपि मैंने इस युग के मानव को समझने के लिए एक धारणा बना ली थी. फिर भी कुछ बातें मुझे परेशान कर रही थीं. यदि यहां के लोग संघर्ष करना नहीं चाहते, स्वतः सुलभ सुविधाओं को भोगते हैं तो ये सुंदर और रंगीन कपड़े कहां से आते हैं? कोई तो उन्हें बनाता ही होगा. और जो बनाता होगा वह बिना मेहनत के जी कैसे सकता है? दूसरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात यह थी कि ये बड़े-बड़े महल तो किसी बीते हुए युग की यादगार रहे होंगे. उनकी दशा को देखकर लगता था कि हजारों वर्ष पहले इन्हें बनाया गया होगा. मगर मैंने यहां कई गहरे कुएं भी देखे. पानी का यहां अभाव नहीं था. फिर इन कुओं का उपयोग क्या हो सकता है?

अभी मैं सोच ही रहा था कि मैंने एक भालू को भागते देखा. शीघ्र ही वह झाड़ियों में छिप गया. वह कौन था! उस समय मैं नहीं जानता था. कम से कम मुझे तब लगा था कि श्वेत भालू जैसा कोई जीव था. अगली बार मैंने फिर ऐसा ही जीव देखा तो मैंने उसका पीछा किया. वह ऐसे ही एक कुएं में जा घुसा. मैंने झांककर देखा तो कुछ दूर तक मैं उसे कुएं में नीचे उतरते देखता रहा. फिर वह अंधकार में खो गया. वह भालू नहीं, वानर-सा लगता था मगर उस की हरकतें देखकर मुझे लगा जैसे वह मानव ही हो.

उस दिन मैं कुएं में नहीं उतरा. मगर अगले दिन उतरने का मैंने फैसला कर लिया, क्योंकि मुझे कुएं का कुछ-कुछ भेद समझ में आने लगा था. मुझे लगा कि जमीन के नीचे भी अंधेरे में रहनेवाला एक मानव समाज है. और ये कुएं आवागमन और वायु के द्वार हैं. मुझे विश्वास हो गया कि ये कुएं अंदर ही अंदर एक-दूसरे से मिले होंगे, अब मैं मानव विकास की पहलीवाली अवधारणा में संशोधन करने लगा.

मैंने सोचा था कि प्राकृतिक शत्रुओं के लोप से मनुष्य को प्रकृति से इतना कुछ मिलने लगा कि उसे संघर्ष करने की जरूरत नहीं रही. मगर वास्तविकता यह थी कि वह बिलकुल प्रकृतिजीवी नहीं बन पाया था. प्रकृतिजीवी बनने के लिए भी शायद संघर्ष करना पड़ता. हजारों या शायद लाखों वर्ष पहले मनुष्य में स्पष्ट रूप से दो वर्ग हुए होंगे. संपन्न और सर्वहारा. सुविधाभोगी और श्रमिक. सुविधाभोगियों ने श्रमिकों को अपनी सेवा में बांधने की व्यवस्थाएं बनायी होंगी. और कालांतर में पूरी मानव जाति दो उपजातियों में बंट गयी होगी. एक सुंदर, कोमल, शांत, निश्चित, जो पृथ्वी के ऊपर रहते हैं और दूसरी मेहनतकश, अभावग्रस्त और अशांत, जो जमीन के अंधेरों के आदी हो चुके हैं.

अगले दिन मैंने इस धारणा की पुष्टि के लिए उस कुएं में उतरने का फैसला किया जिसमें वह भालूनुमा मानव गायब हो गया था. वीना ने बहुत कोशिश की कि वह मुझे रोके. मगर मैं रुका नहीं. कुएं की दीवारों में लोहे की छड़ें लगी थीं. उन्हीं के सहारे नीचे उतरा जा सकता था. 200 फुट नीचे उतरने पर मैं इतना थक गया कि लगा मैं गिर जाऊंगा. मैंने माचिस की तीली जलायी और देखा वहां दीवार में बैठने का स्थान बना हुआ है. मैं वहीं आराम करने लगा. अचानक मुझे लगा कोई मुझे छू रहा है. हड़बड़ाकर मैंने दूसरी तीली जलायी, भालूनुमा एक और मानव तेजी से नीचे उतरता दिखायी दिया. मैं फिर नीचे उतरने लगा. नीचे मुझे मशीनों की खड़खड़ाहट सुनायी दी. मैं समझ गया कि यह कर्मशाला है. मगर वहां पहुंचकर मैं ठिठक गया. दियासलाई की रोशनी में मैंने देखा कि एक बड़ी-सी मेज पर अनेक गुहा-मानव खाने की तैयारी में हैं. सामने बहुत सारा कच्चा मांस था. हवा में अभी भी ताजा रक्त की गंध थी. अचानक मेरी समझ में आ गया कि ऊपर के लोग किस बात से डरते हैं. दरअसल, यह श्रमिक मानव, शोषण की अंतिम सीमा तक पहुंच चुके थे और उनमें असंतोष के लक्षण दिखायी देने लगे थे. ऊपर के मानव इसी विद्रोह का शिकार होते जा रहे थे.

अचानक कई गुहा-मानवों ने मुझे घेर लिया. मैंने तीली जलायी. वे पीछे हट गये. इस प्रकार की रोशनी से वह डरते थे. मगर तीली बुझते ही वे फिर घिर आये. मुझे पता चला तीलियां समाप्त हो गयी हैं. मैं लपककर ऊपर की ओर भागा. डर के मारे मुझमें असाधारण फुर्ती आ गयी. और मैं सुरक्षित कुएं के बाहर आ गया. अब मुझे डर लगने लगा था देर-सवेर यह गुहा-मानव आक्रमण जरूर करेंगे. अपने बचाव के लिए मैंने कोई हथियार खोजने का फैसला किया. दूर एक हरे पत्थरों का महल था. मैं वीना के साथ वहां पहुंच गया.

यह एक आश्चर्यजनक स्थान था. कई दीर्घाएं थीं इसमें और प्रत्येक दीर्घा अपने समय का उत्कृष्ट संग्रहालय रही होगी. एक दीर्घा में जीव विज्ञान का संग्रहालय था. दूसरी दीर्घा में मशीनें थीं. सब खस्ता हालत में थीं. यहीं एक बड़ी मशीन से मैंने बड़ी मुश्किल से एक लोहे की मोटी छड़ खोल ली. इसे मैं हथियार के रूप में इस्तेमाल कर सकता था. तीसरी दीर्घा शायद रसायन विज्ञान की प्रयोगशाला रही होगी. वहां मुझे माचिस मिल गयी और कपूर की एक डली.

यहां से हम निकले तो संध्या हो चली. अचानक सैकड़ों गुहा-मानवों ने हमें घेर लिया. दो-चार पर मैंने अपने हथियार का वार किया. मगर वे इतने थे कि बचना मुश्किल था. तभी मैंने कपूर में आग लगा दी. आसपास की झाड़ियों ने भी आग पकड़ी तो मैंने जीवन का सबसे वीभत्स दृश्य देखा. गुहा-मानव मेरी ओर लपकने के बदले सीधे लपटों की ओर भाग रहे थे. हवा में मांस और बालों के जलने की तेज दुर्गंध फैल गयी. गुहा-मानवों की आंखें चमगादड़ों की तरह अंधेरे की अभ्यस्त थीं. वे तेज प्रकाश सह नहीं सकती थीं. इसलिए अंधों की तरह वह मौत की ओर ही भाग रहे थे.

सुबह-सवेरे मैंने तांबे का दरवाजा तोड़ने का फैसला किया. मगर जब मैं वहां पहुंचा तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा क्योंकि द्वार खुला था. अंदर जाते ही मुझे अपना कालयंत्र दिखायी दिया. बिलकुल ठीक-ठाक था. मैं लपककर उस पर बैठ गया. मगर यह क्या? दरवाजा तो बंद हो गया था. इसके साथ ही कई गुहा-मानव मेरी ओर लपके. बड़ी कठिनाई से मैंने यंत्र में हत्था लगाया और उसे चालू कर दिया.

आठ लाख दो हजार सात सौ एक ईस्वी के विश्व से मैं घबरा गया. फिर भी मैं एकदम वापस मुड़ने के बदले भविष्य की ओर ही भागता रहा. अचानक आसमान का नीलापन; कालिमा में बदल गया. सूर्य अब कुछ बड़ा दिखायी देने लगा था. समुद्र तो था मगर पानी में शायद ही कोई लहर उठ रही थी. लगता था कि समुद्र अपनी अंतिम घड़ियां गिन रहा है. अचानक मुझे एक काली-सी वस्तु अपना पीछा करती दिखायी दी. ध्यान से देखा तो यह केकड़े की आकृति का कोई विराट जीव था. वह मुंह खोले मुझे निगलने के लिए भागा चला आ रहा था. मैंने अपने यंत्र की गति तेज कर दी और इस जीव से एक मास आगे निकल आया. अचानक सूर्य कहीं गायब हो गया. शायद सूर्यग्रहण रहा हो. मगर इसके बाद मौसम तेजी से बदलने लगा. तेज चुभनेवाली हवाएं चलने लगीं. लगातार हिमपात होने लगा. अब यात्रा बहुत हो चुकी थी, इसलिए मैं वापस चला आया. . . . .

कालयात्री की यह अजीब-सी कहानी सुनकर हम लोगों के मन में तरह-तरह के विचार आने लगे. संपादक महोदय चुप नहीं रह सके. बोले, "क्या अच्छा होता, तुम कहानीकार होते!" उस दिन तो हम सब अपने घर चले गये मगर मैं मन को आश्वस्त नहीं कर सका और अगले दिन फिर कालयात्री के घर पहुंचा. उसने देखते ही कहा, "मैं जानता हूं, तुम यह जानना चाहते हो कि क्या मैं सचमुच भविष्य की यात्रा कर आया हूं? ठीक है. अब मैं फिर जाऊंगा और अपने साथ उस युग के प्रमाण लेकर आऊंगा."

मैंने देखा कि वह प्रयोगशाला में अपने कालयंत्र पर बैठ गया. . . उसका हत्था दबाया. . . देखते ही देखते यंत्र सहित वह यात्री गायब हो गया. पहले तो मुझे लगा मेरी आंखों को धोखा हुआ है. मैंने बाहर से आते हुए नौकर से पूछा कि क्या तुमने साहब को बाहर जाते देखा है?. . . तो उसने जवाब दिया, "नहीं, मैं तो सोच रहा था कि वह प्रयोगशाला में ही होंगे . . ."

कालयात्री ने प्रमाण लेकर आने का वायदा किया था मगर शायद अब वह कभी न लौट पाये, क्योंकि उसे गये तीन बरस हो चुके हैं. पता नहीं वह किस कालखंड में खो गया होगा. □

संक्षिप्त रूपांतर : जवाहर लाल कौल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हठधर्मी

अलफर्ड बैस्टर

आने वाला समय पूरी तरह से विज्ञान के चंगुल में होगा. तब न तो प्रेम का कोई मतलब होगा, न घृणा का. न कोई रोयेगा, न कोई गायेगा. सब कुछ पूरी तरह से यांत्रिक और मशीनी हो जायेगा, तब कैसा होगा मनुष्य का जीवन? जवाब दे रही है यह अमरीकी कथा—

"पुराने जमाने में," बूढ़े ने कहना शुरू किया, "संयुक्त राज्य अमरीका, रूस, इंग्लैंड और स्पेन था. देश. संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न राज्य. राष्ट्र, संसार की जनता."

"बुजर्गवार, आजकल भी दुनिया में जनता है."

"तुम कौन हो?" वृद्ध ने सहसा सवाल किया.

"मैं टॉम हूं.

"टाम?"

"नहीं, वृयोवृद्ध श्रीमान, टॉम."

"मैंने टाम ही कहा था."

"आपने सही उच्चारण नहीं किया. आपने दूसरे टाम का नाम लिया था."

"तुम सब टाम हो." वृद्ध ने खिन्नता से कहा. "हर कोई टाम, डिक, अथवा हैरी है."

बूढ़ा धूप में बैठा उस रमणीय युवक से घृणा करता रहा. वे अस्पताल के कमरे के बाहर बरांडे में बैठे थे. गली में सुंदर पुरुषों तथा स्त्रियों की भीड़ थी. सब उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे थे. शहर में कहीं बहुत हो-हल्ला एवं ऊंचा जय-जयकार हो रहा था, जो अब समीप पहुंच रहा था.

"इन्हें देखो," बूढ़े ने अपना बेंत गली की ओर घुमाया, "सब टाम, डिक और हैरी, सब डेजी, ऐन और मैरी."

"नहीं श्रीमान्," टॉम ने मुस्कराकर कहा, "हम और नाम भी प्रयोग में लाते हैं."

"सौ टाम तो मेरे आस-पास ही बैठे हैं." बूढ़े ने कर्कश स्वर में कहा.

"हम प्रायः एक ही नाम का प्रयोग अलग-अलग उच्चारणों से करते हैं. मैं टाम, टोम, टौम नहीं, टॉम हूं. सुना आपने?"

"यह शोर कैसा है." बूढ़े ने सवाल किया.

"आकाश गंगा से दूत आया है." टॉम ने फिर समझाया, "ओरायन के राइजेल तारे से दूत आया है. वह शहर का दौरा कर रहा है. यह पहली बार है कि दूसरे ग्रहों से धरती पर कोई आया है. शहर में बहुत उत्तेजना है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१० की उम्र में वह बस... देखना चाहता है.

उस की जिंदगी आकांक्षाओं और आशाओं से भरी थी. सपनों और मुस्कुराते भविष्य से. किंतु एक दिन उस पर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा. एक रोग के रूप में, जिस ने उस की जिंदगी को चकनाचूर कर दिया.

शरारतों और खेलों के दिन खत्म हो चुके थे. मुस्कराहटें और हंसी मजाक बीते दिनों की बातें बन गई थीं. मन में बस गया निराशा भरा आतंक. आशाएं और आकांक्षाएं. इस की जगह ली नेत्रहीन होने के आतंक ने.

उस का एक उपाय है जो आसान है, जिस पर कोई खर्च नहीं होता और जो कारगर है. इसे सिर्फ आप की जरूरत है.

कार्निया प्रत्यारोपण से आंखों की रोशनी वापस आ सकती है. आंख की बेकार जगह पर एक स्वस्थ कार्निया लगाने से. और वह स्वस्थ कार्निया आप दे सकते हैं.

आंख निकाल लेने पर कोई निशान या विकृति नहीं रहती. और, एक बार जब आप ने नेत्रदान के बारे में तय कर लिया तो आप इस सुखद एहसास के साथ जिएंगे कि आप की आंखें आप के बाद भी जीवित रहेंगी. और कोई नेत्रहीन उस के द्वारा... देख सकेगा.

अगर आप का दिल आप के जीवनकाल में नेत्रहीनों के प्रति भर आता है, तो मरने के बाद अपनी आंखें उन्हें ही दे दें. यह एक अमूल्य भेंट है जो आप ही उन्हें दे सकते हैं.

नेत्रदान संबंधित विस्तृत पुस्तिका प्राप्त करने के लिए, कूपन को भर कर हमारे पास भेज दें.

यह काम आज ही करें. ध्यान रखें, कोई भी चमत्कार. नेत्रहीनों को दृष्टि नहीं लौटा सकता. हां, आप जरूर कर सकते हैं.

मुझे नेत्रदान तथा कार्निया प्रत्यारोपण के बारे में ज्यादा जानकारी चाहिए. मुझे विस्तृत पुस्तिका भेज दें.

नाम : श्री/श्रीमती/कु. ------------------------

पता : ------------------------

राज्य : ------------------------

पिन कोड : ------------------------

आयु : ------------

दृष्टि

टाइम्स आई रिसर्च फाउण्डेशन
टाइम्स आफ इंडिया७, बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-११०००२

दृष्टि. वह अमूल्य उपहार है जो आप ही दे सकते हैं.

टाइम्स आई रिसर्च फाउण्डेशन को दी जाने वाली वित्तीय सहायता आयकर अधिनियम १९६१ की धारा ८० (जी) के अन्तर्गत कर रहित है.

TERF 3/85

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"प्राचीन काल में," वृद्ध ने कहा, "वास्तविक दूत होते थे. पेरिस, रोम, बर्लिन और लंदन से आदमी राजदूत बनकर आते थे—बड़ी शान और शौकत के साथ. वे जंग करवाते थे. वे शांति करवाते थे. वर्दियों, तोपों और रस्मों का काल. शौर्य काल. उत्तेजक काल."

"हमारा भी वीरता और उत्तेजना का जमाना है, श्रीमान्."

"नहीं है," बूढ़ा गुर्राया. उसने धीमे से अपना बेंत घुमाया, "तुम्हारे यहां न उमंग है, न प्रेम, न डर, न मृत्यु. तुम्हारी रगों में गर्म खून नहीं दौड़ रहा. तुम सब तर्क-संगत हो. सब शांत-विचार. सभी टॉम, डिक और हैरी."

"नहीं श्रीयुत, ऐसा नहीं है. हम प्यार करते हैं. हमारे मनोभाव हैं. हम कई चीजों से डरते हैं. आप को जो बुराई हममें नजर नहीं आ रही, उसका हम विनाश कर चुके हैं."

"तुमने सब का विनाश कर दिया है. तुम लोगों ने आदमी का विनाश कर डाला है." बूढ़ा चिल्लाया. उसने कांपती उंगली टॉम की ओर करके पूछा, "तुम्हारी रगों में कितना खून दौड़ रहा है?"

"बिल्कुल नहीं. मेरी रगों में मसाले का तरल पदार्थ है. मैं रक्त विकिरण सहन नहीं कर सकता और मैं रोओं के विभंजन पर शोध कर रहा हूं."

"रक्त नहीं," बूढ़ा कुड़कुड़ाया, "और हड्डियां भी नहीं?"

"सब को बदला नहीं गया श्रीमान्."

"और स्नायु ऊतक?"

"सब का प्रतिस्थापन नहीं किया गया."

"रक्त नहीं, हड्डियां नहीं, तांत नहीं और गुप्तांग भी नहीं."

"तो तुम औरतों के साथ क्या करते हो? तुम कितने प्रतिशत यांत्रिक हो?"

"साठ प्रतिशत से अधिक," टॉम ने हंसकर कहा, "मेरे बच्चे हैं."

"और बाकी टॉमों, डिकों और हैरियों के?"

"तीस से सत्तर प्रतिशत तक, उनके बच्चे हैं."

"तुम इंसान नहीं हो. तुम मशीन हो." बूढ़े ने चीखकर कहा, "यंत्र मानव! दैत्य! तुम लोगों ने इंसान को समाप्त कर दिया है."

टॉम मुस्करा दिया, "वास्तव में, श्रीमान, आदमी और मशीन तथा मशीन और आदमी आपस में इतने मिल गये हैं कि उनमें विभेद करना कठिन है. हम अब तो भेद करते भी नहीं. हमने समन्वय कर लिया है."

"पुराने जमाने में," बूढ़े ने कहा, "हम सब का असली शरीर था. खून और हड्डियां, नसें और तांतें—जैसे मेरे हैं. हम काम करते थे तो हमें पसीना आता था. हम प्यार करते थे, लड़ते थे, लोगों को जान से मार देते थे और जिंदा रहते थे. तुम जी नहीं रहे हो—तुम समायोजित अतिमानव हो—यांत्रिक मानव हो. मैंने कहीं थप्पड़ लगते, चुंबन लेते और लड़ाई-झगड़ा होते नहीं देखा. एक बार फिर असली जिंदगी देखने का मेरा कितना जी करता है! ये तुम्हारी मशीनों की नकल नहीं."

"मेरे बुजुर्ग, यह तो पुरानी बीमारी है," टॉम गंभीरता से बोला, "आप अपना पुनर्निर्माण करवा के भले-चंगे क्यों नहीं हो जाते? हम आपकी ग्रंथियां और . . ."

"नहीं, नहीं, नहीं," बूढ़ा जोर से चीखा, "मैं एक और टॉम नहीं बनूंगा." वह कुर्सी से झटके के साथ उठा और उसने नौजवान को अपना बेंत दे मारा. चोट से युवक के चेहरे की त्वचा टूट गयी. एक दूसरा युवक दौड़ा आया, उसने बूढ़े को पकड़कर दोबारा कुर्सी पर बैठा दिया. फिर वह टॉम की ओर मुड़ा, "टॉम, ठीक तो हो न?"

"कोई ज्यादा नहीं लगी," टॉम ने बूढ़े को भयपूर्वक देखा, "मेरा विश्वास है, वह मुझे चोट पहुंचाना चाहता था."

"उसने चोट की है. तुम्हारा उसके साथ शायद पहली बार वास्ता पड़ा है. वह एक बूढ़ा अनिर्मित बागी है. हम इस 'वृद्ध लड़के' पर एक प्रकार से गर्व कर सकते हैं. वह अद्वितीय है. वह विकृति-विज्ञान का एक संग्रहालय है." दूसरा युवक बूढ़े के पास बैठ गया और पहले युवक से बोला, "मैं इनसे कुछ देर के लिए बातें करता हूं. तुम जाकर दूत को देखो."

बूढ़ा थरथर कांप रहा था और रो रहा था. "पुराने जमाने में," उसने लरजते हुए कहा, "शौर्य था, पराक्रम था, शक्ति थी, ओज था और लाल लहू था, बहादुरी थी और हिम्मत और. . . . . ."

"अब भी है, वृद्ध महोदय," उसके नये साथी ने झट से कहा, "अब भी हमारे पास ये सब हैं. जब हम आदमी का पुनर्निर्माण करते हैं तो उसके शरीर और मन से बुराई के अतिरिक्त और कुछ नहीं लेते."

"तुम कौन हो?" बूढ़े ने सवाल किया.

"मैं टॉम हूं."

"टॉम?"

"नहीं, टाम, टाम नहीं, टॉम."

"तुम बदल गये हो."

"मैं वह टॉम नहीं हूं, जो थोड़ी देर पहले यहां था."

"तुम सब टाम हो," बूढ़ा दीनता से चिल्लाया, "तुम सब एक जैसे उदास टाम हो."

"नहीं, पुरातन पुरुष, हम सब भिन्न हैं. आपको केवल अंतर पता नहीं लग रहा."

शोरगुल और जय-जयकार समीप आ रही थी. अस्पताल के सामने गली में भीड़ ने नारे लगाने शुरू कर दिये. गली से बैंड के संगीत की ध्वनि आने लगी.

टॉम ने बूढ़े को कंधे से पकड़कर कुर्सी पर से उठाया, "जंगले पर आ जाइए, श्रीमान्," उसने उत्तेजित होकर कहा, "आकर दूत को देखिए. यह धरती मां के लिए एक महान दिवस है. आखिर हमने सितारों से संपर्क स्थापित कर ही लिया. एक नये युग का प्रारंभ हो रहा है."

"बहुत देर हो चकी है." बूढ़ा बदबदाया, "बहुत देर! ! हमें उनको ढूंढना चाहिए था, न कि वे हमें पहले ढूंढते. हमें पहल करनी चाहिए थी. प्राचीन काल में हम प्रथम होते थे. पुराने जमाने में निर्भीकता थी, साहस था. हम लड़ते थे और बर्दाश्त करते थे. . . . ."

"वह रहा दूत," टॉम चिल्लाया, "वह संस्थान में रुका था. . . . . . . अब बाहर आ रहा है. अब फिर ठहर गया है. . . . . . केंद्र पर वह सब का निरीक्षण कर रहा है."

"पुराना जमाना होता," बूढ़ा बड़बड़ाया, "तो हम आग बरसाते आते. हम शस्त्रों से लैस, आंखों में अवज्ञा का भाव लिये गलियों में मार्च करते आते, किंतु तुम मशीन की औलाद, प्रयोगशाला के महामानव—समायोजित, पुनर्निमित, निकम्मे."

"वह केंद्र से बाहर आ गया है." टॉम ने घोषणा की, "वह नजदीक आ रहा है, जरा गौर से देखिए, वृद्ध महोदय, यह दृश्य कभी न भूलने वाला है. वह अस्पताल पर रुकने लगा है."

चमचमाती कार अस्पताल के सामने आकर रुकी. बैंड धुनें बजाता रहा. भीड़ ने नारे लगाये. कार में बैठे अफसर मुस्करा रहे थे. गैलेक्सीय दूत कार से बाहर आया. वह बहुत लंबे कद का था. वह सीढ़ियों से बरामदे की ओर बढ़ने लगा. उसका अनुरक्षक उसके पीछे-पीछे आ रहा था.

"वह आ गया." टॉम चीखा और नारे लगाने लगा.

एकाएक बूढ़ा रेलिंग से हट गया. वह मां और सब टॉमों, डिकों, हैरियों और डेजियों ऐनों तथा मैरियों, जो बरामदे में जमघट लगाएं थी, को धकेलता हुआ आगे बढ़ गया. उसने अपने दुबले किंतु दुष्ट बेंत से रास्ता बनाया था और अब वह गैलेक्सीय दूत के रू-बरू था. क्षण-भर उसने उसके घिनौने चेहरे को जुगुप्सा से घूरा और फिर ऊंचे स्वर में बोल उठा, "मैं आपका अभिवादन करता हूं. केवल मैं ही आपका अभिवादन कर सकता हूं." उसने अपना बेंत उठाकर पूरी शक्ति के साथ उसके चेहरे पर प्रहार किया और चीख उठा, "धरती पर मैं ही अंतिम आदमी हूं." □

रूपांतर : राजेंद्र बोहरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक मशीन, एक वैज्ञानिक

आर्थर कानन डायल

प्रोफेसर चैलंजर का मूड उस दिन बहुत खराब था. सुबह-सवेरे उसके कमरे में प्रवेश करते ही मैं ठिठक गया. मेरा हाथ अभी तक दरवाजे के दस्ते पर था और पांव फर्श पर रखे हुए पायदान पर. स्थिति इतनी चिंताजनक थी कि मैं जहां था, वहीं रुक गया. अंदर से प्रोफेसर चैलंजर की क्रोध में डूबी हुई आवाज सुनायी दे रही थी. लगता था, वह टेलीफोन पर किसी से उलझ रहा है. . .

"इस दुष्ट फोन ने तो नाक में दम कर दिया है! समझ में नहीं आता, जब लोगों को असल नंबर का पता नहीं होता तो दूसरों का समय क्यों बरबाद करते हैं! जब रिसीवर उठाओ, गलत नंबर मिलानेवाले उलटी-सीधी हांक रहे हैं. मैं एक वैज्ञानिक हूं. . .मेरा समय इतना सस्ता नहीं कि हर वह व्यक्ति जिसकी जेब में फोन करने के लिए एक अदद सिक्का मौजूद है, मुझे परेशान. . . क्या कहा? हां, मैनेजर से बात करा दो. तुम मैनेजर बोल रहे हो, तो तुम क्या खाक मैनेजरी करते हो. . . खैर, अपने अधीक्षक से कहो, मुझसे बात करें. खूब. . . बहुत खूब. . . तो साहब नहीं हैं. . . हूं, मुझे इस बात से कोई लेना-देना नहीं कि तुम कौन हो और तुम्हारे अधिकार क्या हैं. मैं तो केवल इतना जानता हूं कि अगर अब किसी ने मुझे फोन किया और फिर 'क्षमा करें, गलत नंबर मिल गया' कहा तो मैं तुम्हें गिरेबान से पकड़कर अदालत में ले जाऊंगा."

ज्योंही उसने अपनी बातचीत खत्म की, मैं उसके पास चला गया. क्रोध से उसका शरीर कांप रहा था. लंबी काली दाढ़ी के बाल उलझे हुए थे. कान की लवें सुर्ख थीं और भूरी आंखों में जैसे चिंगारियां फूट रही थीं. मुझे देखते ही वह शेर की तरह दहाड़ा, "बदतमीज, बेहूदा, बोर जाहिल! जब मैं अपनी शिकायत लिखवा रहा था तो कई बार उनकी दबी-दबी हंसी सुनायी दी. मुझे यकीन है, यह लोग जानबूझकर मुझे परेशान कर रहे हैं और अब जबकि मेरी एक सुबह का सत्यानाश हो चुका है, तुम आ पहुंचे हो . . . ताकि सारा दिन बरबाद कर सको. अच्छा, यह बताओ, तुम यहां निजी काम से आये हो या अपने नाकारा अखबार के लिए कोई माल-मसाला ढूंढने? एक मित्र के रूप में तुम्हारा स्वागत कर सकता हूं, पर पत्रकार के रूप में तुम बहुत गुस्ताख और बातूनी हो और इस योग्य नहीं कि तुम्हें घर में घुसने की इजाजत दी जाये."

प्रोफेसर चैलंजर यह भाषण दे रहा था तो मैंने जल्दी से अपनी जेब में हाथ डाला. . . ताकि मिस्टर मैकार्डल का वह पत्र ढूंढ सकूं, जो उन्होंने मुझे लिखा था. सहसा प्रोफेसर को कोई बात याद आ गयी. वह बात करते-करते रुका और अपनी पूरी शक्ति से मेज पर हाथ मारकर बोला, "तुम खुशामद की कला में बहुत माहिर हो, पर इस बार तुमसे एक भयंकर गलती हो गयी है. मेरी वर्तमान खोज के बारे में तुमने उस लंबे लेख में लिखा है कि मिस्टर जी. ई. चैलंजर की गिनती वर्तमान युग के महान वैज्ञानिकों में होती है. . ."

मैंने बात काटकर कहा, "मैंने कोई अतिशयोक्ति नहीं की श्रीमान, आपकी गिनती सचमुच. . ."

"हूं, तो क्या तुम उन वैज्ञानिकों के नाम गिनवा सकते हो, जिन्हें तुम महान समझते हो और जिनके नामों के साथ तुमने मेरा नाम लिया है. दूसरे शब्दों में तुमने उनमें से कई को मुझसे महान और बाकियों को मेरे बराबर घोषित किया है. ये सब कौन लोग हैं? जरा मैं भी तो सुनूं."

"मैं क्षमा चाहता हूं प्रोफेसर! यह वाक्य गलती से लिखा गया. वास्तव में मुझे लिखना चाहिए था कि मिस्टर जी. ई. चैलंजर, जो वर्तमान युग के महानतम वैज्ञानिक हैं. . ."

"मेरे नवयुवक मित्र, यह न समझना, मैं अपनी प्रशंसा सुनकर खुश होता हूं. वास्तविकता यह है कि अपने समकालीन वैज्ञानिकों से. . .बल्कि यों कहना चाहिए कि उन लोगों से जो अपने-आपको वैज्ञानिक समझते हैं, मुझे तीव्र मतभेद हैं और मैं यह पसंद नहीं करता कि मेरा नाम उनके नाम के साथ लिखा जाये. तुम मेरा मतलब समझ गये हो न? मैं जिस तथ्य पर काम कर रहा हूं, वह मेरे मस्तिष्क की उत्पत्ति है. खैर, अब तुम आ ही गये हो तो बैठ जाओ. . . और समय बरबाद किये बिना अपने आने का मकसद बता दो."

मैंने जेब से मिस्टर मैकार्डल का पत्र निकाला और उसे खोलते हुए प्रोफेसर चैलंजर से पूछा, "श्रीमान, यदि आप इजाजत दें तो अपने अखबार के संपादक मिस्टर मैकार्डल का यह पत्र पढ़ूं?"

"मैकार्डल, अच्छा याद आ गया. यह व्यक्ति मुझे कुछ ज्यादा पसंद नहीं. अन्य अखबारवालों की तरह इसे भी गप्प लगाने की आदत है."

"प्रोफेसर, मैं एक बात स्पष्ट करना जरूरी समझता हूं. आप मिस्टर मैकार्डल के बारे में जो राय चाहें कायम करें. पर वह आपकी बहुत प्रशंसा करते हैं. जब कभी उन्हें वैज्ञानिक क्षेत्र में उच्च-योग्यतावाले किसी व्यक्ति की मदद की जरूरत हो, सदा आपकी ओर उन्मुख होते हैं. अब भी कुछ ऐसी ही कठिनाई आ पड़ी है."

"लड़के, मैं फिर बता रहा हूं, मुझे खुशामद से सख्त नफरत है. साफ-साफ बयान करो. . . यह तुम्हारा मैकार्डल मुझसे क्या चाहता है?"

इस आशंका से कि प्रोफेसर पर फिर क्रोध का दौरा न पड़ जाये, मैं तत्काल पत्र पढ़ने लगा. यह पत्र मैकार्डल ने मेरे नाम लिखा था:-

प्रियवर, तुम तत्काल हमारे आदरणीय मित्र और महान वैज्ञानिक प्रोफेसर चैलंजर के पास जाओ और उनसे निम्नलिखित मामले में मदद प्राप्त करने का प्रयत्न करो.

यहां वाइट फ्रीर मैंशन में एक महाशय थ्यूडोर नाइमर ने फ्लैट ले रखा है. उसका दावा है कि उन्होंने एक विस्मयकारी मशीन तैयार की है,

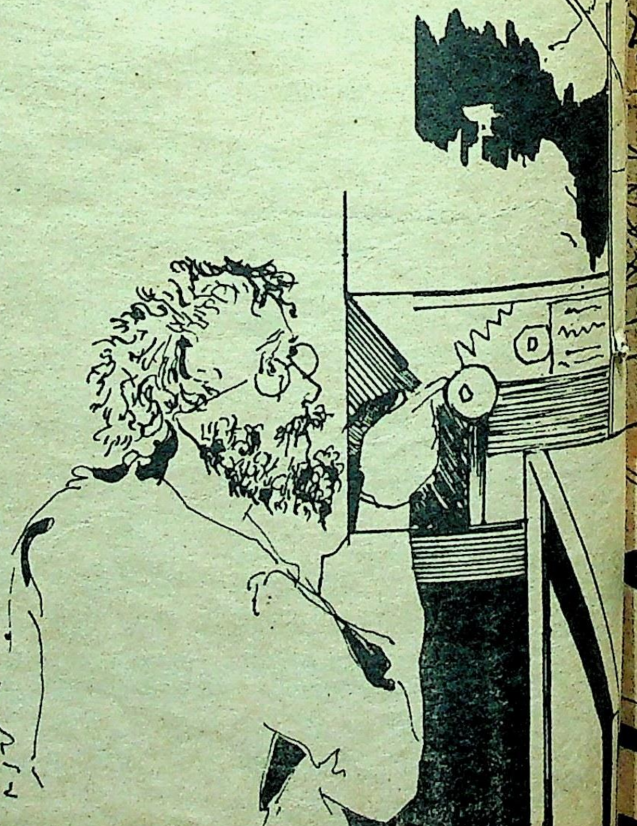

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अगर कोई ऐसी मशीन तैयार हो जाये जो देखते ही देखते स्त्री-पुरुष, जंगल-जानवर, मकान-दूकान . . .यानी हर चीज को अणुओं में बदलकर वायुमंडल में लुप्त कर दे तो कल्पना कीजिए कि तब विश्व में युद्ध का आलम कैसा होगा और हम किन शर्तों पर जिंदा रह सकेंगे?—इंग्लैंड के नामी विज्ञान-कथा लेखक की रोमांचक कहानी कि विज्ञान और विनाश के रिश्तों की परख किस रूप में होनी चाहिए. . .

जो अपने सामने रखे हुए किसी भी जिंदा या मुर्दा शरीर को चुटकियों में गायब कर सकती है. उस शरीर के अंग एटम बनकर वायुमंडल में लोप हो जाते हैं और उस समय तक गायब रहते हैं जब तक मशीन को एक विशिष्ट अंदाज में न चलाया जाये. मशीन का रचयिता जब चाहे, किसी भौतिक वस्तु, उदाहरणार्थ, मनुष्य, जानवर या कार आदि को गायब कर सकता है और जब चाहे उसे वापस अपनी पहली अवस्था में ला सकता है. प्रकटत: यह दावा हास्यास्पद नजर आता है, पर जो लोग उस मशीन को देखने गये, उनका बयान है कि मिस्टर थ्यूडोर नाइमर ने मशीन चलाकर क्रियात्मक प्रयोग पेश किया और उन्हें स्वीकार करना पड़ा कि मशीन के बारे में उनका दावा सही है.

मेरा विचार है, आप लोग निश्चय ही उस मशीन के महत्व से अवगत होंगे. यदि कोई ऐसी मशीन तैयार हो गयी है तो मानव जाति का भविष्य संकट में है, क्योंकि विशाल स्तर पर ऐसी मशीनों की तैयारी से युद्धक्षेत्र का नक्शा ही बदल जायेगा. जिस पक्ष के पास यह मशीनें होंगी, वह पलक झपकते में शत्रु की सेना, साजो-सामान और बारूद गायब कर देगा, और जब तक चाहेगा उन्हें वायुमंडल में रखेगा. . . वह सदा के लिए शत्रु का अस्तित्व समाप्त कर सकता है.

ऊपर जिन आशंकाओं को प्रकट किया गया है, उनके प्रकाश में यह काम बहुत जरूरी है. तुम माननीय प्रोफेसर चैलंजर को अपने साथ लेकर मिस्टर थ्यूडोर नाइमर के पास जाओ, ताकि प्रोफेसर साहब उस मशीन का गौर से निरीक्षण कर सकें. पता चला है, मिस्टर थ्यूडोर अपने आविष्कार को भारी धनराशि के बदले में किसी ताकतवर देश के हाथ बेचने का प्रयत्न कर रहे हैं. इसलिए मशीन देखने में कोई कठिनाई नहीं आयेगी. सावधानी के रूप में यह कार्ड साथ भेज रहा हूं. इसे देखकर मिस्टर थ्यूडोर फौरन आपको अंदर ले जायेंगे. मेरी इच्छा यह है कि तुम प्रोफेसर चैलंजर की देख-रेख में 'दैनिक गजट' के लिए एक लेख लिखो, जिसमें नाइमर के आविष्कार की वास्तविकता बतायी गयी हो.

तुम्हारा—पी. मैकार्डल

पत्र सुनाने के बाद मैंने प्रोफेसर चैलंजर से पूछा, "श्रीमान, मुझे आशा है, आप मेरे साथ चलने के लिए समय अवश्य निकालेंगे, क्योंकि मैं

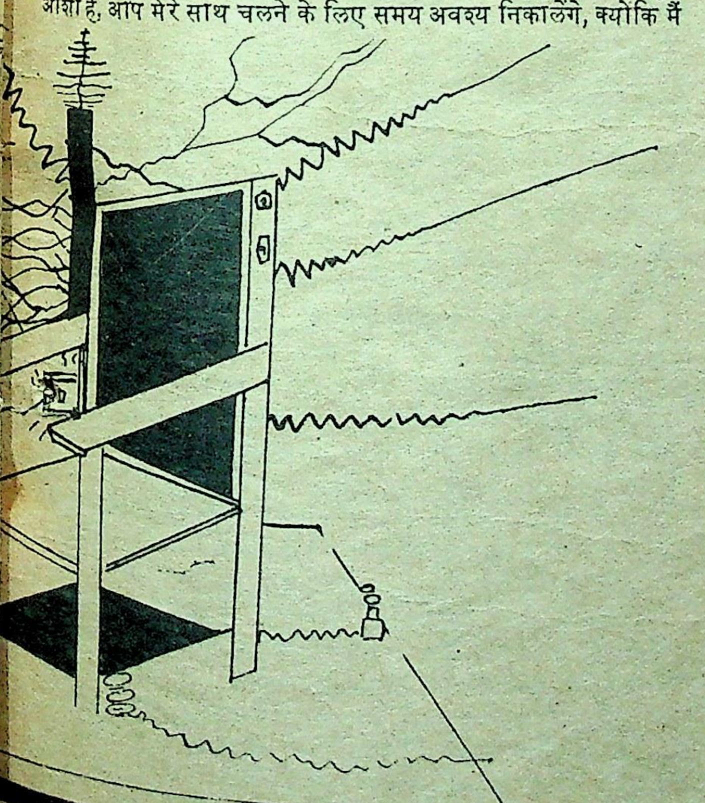

अपने सीमित ज्ञान के आधार पर इस मशीन को देखने के बावजूद कोई राय कायम नहीं कर सकता."

"तुमने ठीक कहा मैलोन, इस बात में कोई संदेह नहीं कि तुम बहुत बुद्धिमान और समझदार नवयुवक हो, पर वैज्ञानिक तथ्यों के बारे में तुम्हारी जानकारी निश्चय ही असंतोषजनक है. सुबह से गलत नंबर पर फोन करनेवालों ने नाक में दम कर रखा है. काम करने का मूड नहीं रहा, हालांकि मैं बहुत महत्वपूर्ण अनुसंधान में व्यस्त था. तुमने उस मूर्ख इतालवी मरवटी का नाम तो सुना होगा, उसने मच्छर के लारवे पर अपनी खोज पेश की है, जिसमें अनाप-शनाप भरा हुआ है. मैं चाहता था, उस व्यक्ति के ज्ञान की पोल खोल दूं, पर तुम जो मामला लेकर आये हो, वह इस काम से भी अधिक महत्वपूर्ण है. . . मैं तुम्हारे साथ चलने के लिए तैयार हूं."

थोड़ी देर बाद मैं प्रोफेसर चैलंजर को साथ लेकर भूगत रेलगाड़ी से लंदन के उत्तर की ओर यात्रा कर रहा था. यह यात्रा और उसके बाद के हालात शायद मैं जीवन भर भूल नहीं सकूंगा.

अनेमोर गार्डन में प्रोफेसर चलंजर की प्रयोगशाला से विदा होने से पूर्व मैंने टेलीफोन पर थ्यूडोर नाइमर के बारे में यह संतोष कर लिया था कि वह घर पर है, अत: हंपस्टेड के क्षेत्र में एक सुंदर फ्लैट की घंटी बजायी तो वह बाहर निकला और हमें ले जाकर छोटे-से मुलाकाती कमरे में बिठा दिया. उसके बाद वह यह कहकर अंदर चला गया कि कुछ लोगों से जो उसके अविष्कार के अधिकार खरीदना चाहते हैं, आवश्यक बात-चीत करने के बाद जल्दी ही वापस आ जायेगा. आधा घंटा बीत गया. अंदर से जो आवाजें आ रही थीं, उनसे प्रतीत होता था कि जोर-शोर से बहस जारी है. शायद नाइमर मुंहमांगी कीमत पर आग्रह कर रहा था. खैर, जब वह लोग बरामदे के रास्ते बाहर गये तो दरवाजा बंद होने के बावजूद बातचीत से पता चला कि मुलाकाती रूसी थे. अगले ही क्षण बाहरी दरवाजा बंद होनेकी आवाज सुनायी दी और फिर थ्योडोर नाइमर साहब हमारे कमरे में आये. सूर्य के प्रकाश में उसके लंबे खुरदरे हाथ बड़े रहस्यपूर्ण दिखायी दे रहे थे. उसके होंठों पर मुस्कराहट थी और आंखें चालाकी और मक्कारी के कारण चमक रही थीं.

जब हम अपनी-अपनी कुर्सियों पर बैठ गये तो प्रोफेसर चैलंजर ने बात शुरू की, "मिस्टर नाइमर, स्पष्टवादिता के लिए अग्रिम क्षमा चाहता हूं. आपकी मशीन देखने से पहले मैं यह जानना चाहूंगा कि क्या वस्तुत: ऐसी मशीन तैयार की जा सकती है. आपको याद होगा, अभी कुछ सप्ताह पहले एक इतालवी ने दावा किया कि उसने भूगत खनिज-पदार्थों का सुराग लगाने के लिए ऐसे तरीके का आविष्कार किया है, जिसकी मदद से आप एक जगह बैठकर दूर-दूर की सब जमीनों का हाल जान सकते हैं, पर जांच करने से पता चला कि उसका दावा गलत है और वह जालसाजी के द्वारा खनिज-पदार्थ ढूंढनेवाली पार्टियों से रुपया बटोरना चाहता है. इतिहास प्राय: अपने-आपको दुहराता है. इसलिए सबसे पहले आप यह बतायें कि आपका आविष्कार किस सिद्धांत पर कार्य करता है?"

नाइमर ने मुस्कराते हुए कहा, "वर्तमान समय के महान वैज्ञानिक प्रोफेसर चैलंजर को धोखा देना सरल काम नहीं. मैं आपको मशीन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की कार्यशीलता दिखाऊंगा, पर जैसा कि आपने कहा, पहले हम यह तय करेंगे कि यह मशीन किस सिद्धांत पर तैयार की गयी है तो एक बात मस्तिष्क में रखें. यह मशीन वास्तव में मेरे आविष्कार का एक संक्षिप्त-सा मॉडल है और इसका प्रभाव खासा सीमित है. इसके बावजूद आप देखेंगे कि मेरा यह आविष्कार बखूबी काम करता है और यह मॉडल भी इतनी योग्यता रखता है कि आपको सूक्ष्म कणों में बदल दे. जब मैं चाहूंगा, यह मशीन आपके अणुओं को एकत्र करके दुबारा आपका पूरा शरीर तैयार कर देगी.

"क्या हम उसे देख सकेंगे?" प्रोफेसर ने पूछा.

"निश्चय ही, बल्कि यदि आप में इतनी हिम्मत हो तो स्वयं आपका शरीर वायुमंडल में लोप किया जा सकता है."

"हिम्मत? यह आप क्या कह रहे हैं, मैं आपके वाक्य पर जबरदस्त प्रोटेस्ट करता हूं श्रीमान! एक वैज्ञानिक नये प्रयोगों से भयभीत नहीं होता. यदि ऐसा हो तो भूमंडल से वैज्ञानिक विद्याओं का अंत हो जाये."

"मुझे खेद है कि मेरे इस वाक्य से आपको कष्ट पहुंचा, मेरा मतलब हर्गिज यह नहीं था कि आपको भावनाओं को आघात पहुंचाऊं. खैर, जैसा कि आपने शुरु में कहा था कि मशीन देखने से पूर्व मैं यह बताऊंगा कि यह किस सिद्धांत पर काम करती है. . . . . . . तो आप जानते हैं कि जब नमक या खांड की कलमें पानी में डाली जायें तो पिघल जाती हैं और कहीं दिखायी नहीं देतीं, पर यही पानी किसी बर्तन में गर्म करें तो पानी भाप बनकर उड़ जाता है, और बर्तन की तह में दुबारा नमक या खांड की कलमें बची रहती हैं. हम इसी सिद्धांत के आधार पर एक ऐसी व्यवस्था कर सकते हैं जिसमें किसी भी जिंदा शरीर को वायुमंडल में लोप करने के बाद इस क्रिया से यह शरीर वापस भौतिक रुप में लाया जा सकता है."

"बिलकुल गलत! मैं यह स्वीकार कर सकता हूं कि आप एक विशेष सीमा तक भौतिक शरीर को गायब कर सकते हैं, पर उन बिखरे तत्वों को दुबारा एकत्र करना और वह भी उसी तरतीब के साथ, जो पहले थी, असंभव है, आप एक व्यक्ति को गायब तो कर सकते हैं, पर दुबारा वजूद में नहीं ला सकते." प्रोफेसर चैलंजर ने आपत्ति की.

"आप स्वयं ही निर्णय करें कि यदि मैं इस सिद्धांत का पूर्ण ब्यौरा बता दूं, जिसके आधार पर यह मशीन तैयार की गयी है तो मेरे पास क्या रह जाता है. . . . . फिर भी मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मैंने जो कुछ कहा, अक्षरशः सत्य है. गायब होनेवाले शरीर का एक-एक अणु ठीक अपनी जगह लौट आता है और शरीर की आकृति में रत्ती भर अंतर नहीं पड़ता. मैं एक अन्य उदाहरण से अपना मंतव्य स्पष्ट करता हूं. आपने पूर्व और पश्चिम के असंख्य जादूगरों के बारे में सुना और पढ़ा होगा और हो सकता है कभी स्वयं भी उनका तमाशा देखा हो. ये लोग हाथ हिलाये बिना एक चीज को गायब कर देते हैं. . . . और फिर यही चीज दूसरी जगह नजर आती है. पहली जगह से दूसरी जगह ले जाने में उन्हें अनिवार्य रूप में उस चीज के कण वायुमंडल में बिखेरने और बाद में इकट्ठे करने की जरुरत पड़ती है. कुछ लोग उसे नजरबंदी का नाम देते हैं और कहते हैं, करतब दिखानेवाला 'सम्मोहन' की मदद से दर्शकों की नेत्र-ज्योति को अपने मतलब के अनुरूप बदल लेता है, पर. . . . . ."

क्षमा करें मिस्टर नाइमर! मैं एक व्यस्त आदमी हूं और मेरे पास आपके किस्से-कहानियां सुनने के लिए समय नहीं. मैं न तो जादू पर विश्वास करता हू और न सम्मोहन के द्वारा नजरबंदी पर. यदि सचमुच कोई ऐसी मशीन आपने बनायी है तो उलट-सुलट बातें करने के बजाय उसे दिखायें. वरना मैं इजाजत चाहूंगा."

"बहुत अच्छा श्रीमान!" नाइमर ने हार मानते हुए कहा, "मेरे साथ आइए. . . . . और अपनी आंखों से इस बात की पुष्टि कर लीजिए कि मैं गलत हूं या आप!"

बहुत-सी सीढ़ियां तय करने के बाद हम एक ताला लगे कमरे के सामने पहुंचे. नाइमर ने ताला खोला और हमें अंदर आने का इशारा किया. कमरे की दीवारों पर ताजा सफेदी की गयी थी. फर्श से छत तक तांबे के असंख्य तार दिखायी दे रहे थे. एक चबूतरे पर भारी चुंबक रखा था, जिसके सामने तीन फुट लंबी एक चीज पड़ी थी, जिसका व्यास एक फुट था. उसके दायें हाथ एक जटिल मशीन थी, जिसके ऐन बीच में एक कुर्सी नजर आ रही थी. कुर्सी के नीचे जिस्त का एक चबूतरा था और उसके गिर्द तांबे का एक तख्ता, जिसमें से तार निकलकर कुर्सी तक पहुंच रहे थे. मशीन के बहुत-से डायल थे, जिनमें असंख्य सुइयां लगी हुई थीं.

"श्रीमान, यह रही मेरी रचना!" नाइमर ने गर्वीले स्वर में कहा, "मुझे विश्वास है कि जो बात आप मेरी जुबान से नहीं समझ सके. इसकी जुबान से अवश्य समझ लेंगे. भविष्य में संसार पर वही देश राज्य करेगा, जिसके पास यह मशीन होगी. प्रोफेसर साहब, क्या आप इस बात के लिए तैयार हैं कि मैं आपको कुर्सी पर बिठाकर आपके शरीर के अणु वायुमंडल में बिखेर दूं?"

चैलंजर की डायरी में भय का शब्द ही न था. वह तत्काल आगे बढ़ा, पर मैंने उसे बांह से थाम लिया, "नहीं प्रोफेसर साहब, आप इस कुर्सी पर नहीं बैठेंगे. आपके प्राण बहुत मूल्यवान हैं. इसके अलावा आपके पास इस बात की क्या जमानत है कि मशीन से आप जिंदा वापस आ सकेंगे. इस मशीन से मिलती-जुलती मैंने जीवन में एक ही चीज देखी है और वह है सिंगासिंग के कारागार में मौत के सुपुर्द किये जानेवाले अपराधियों के लिए विद्युत-कुर्सी. मैं आपको किसी कीमत पर नहीं जाने दूंगा. मैं इस काम के लिए स्वयं को पेश करता हूं."

प्रोफेसर चैलंजर अपनी बांह छुड़ाते हुए बोला, "प्रियवर, घबराने की जरूरत नहीं, यदि मुझे कुछ हो गया तो तुम कम से कम इस बात की गवाही दोगे कि मैंने एक महान उद्देश्य के लिए प्राण दिये. तुम्हें पता है कि वैज्ञानिक का असल उद्देश्य सत्य की खोज है और. . . . ."

"पर प्रोफेसर, यदि आपको कुछ हो गया तो ज्ञान की वह सारी संपदा नष्ट हो जायेगी, जिसके लिए आप वर्षों से श्रम कर रहे हैं और यह विज्ञान-जगत के लिए एक न पूरी होनेवाली क्षति होगी. अच्छा यही है कि आप मुझे जाने दें. यदि प्रयोग सफल रहा तो मुझे आपके कुर्सी पर बैठने में कोई आपत्ति न होगी."

"तुम्हारे तर्क में कोई वजन नहीं." प्रोफेसर ने तत्काल कहा.

"एक अंतिम प्रार्थना! यदि आप कुर्सी पर बैठ गये तो आप स्वयं माअमूल (जिस पर प्रयोग किया जाये) होंगे और यह अनुमान नहीं लगा सकेंगे कि आप गायब हुए या नहीं. इसके प्रतिकूल मेरे कुर्सी पर बैठने से आप हर वस्तु का बखूबी अवलोकन कर सकते हैं."

यह बात प्रोफेसर चैलंजर के दिल को लगी. वह पीछे हट गया और मुझे रास्ता दे दिया. मैं कुर्सी पर बैठ गया.

नाइमर ने कुर्सी से दायीं ओर मशीन से बाहर निकला हुआ एक लीवर दबाया. एक क्षण के लिए मुझे यह महसूस हुआ जैसे आंखों के सामने धुंध-सी छा गयी हो. फिर मैं संभल गया और हर चीज साफ दिखायी देने लगी. नाइमर मेरे सामने खड़ा मुस्करा रहा था और प्रोफेसर चैलंजर. . . उसकी दशा दर्शनीय थी. चेहरे का रंग पीला पड़ गया था. आंखों में बेहद दहशत और भय के चिन्ह थे.

"क्यों साहब, मेरे लिए क्या आदेश है?" मैंने प्रश्न किया.

"आप खाली हैं. प्रयोग खत्म हो चुका है." नाइमर ने उत्तर दिया. फिर मुड़कर चैलंजर से बोला, "क्यों श्रीमान, आपने अपनी आंखों से देख लिया कि आपका साथी गायब हो गया था."

प्रोफेसर चैलंजर चुप रहा. यों लगा, उसे सांप सूंघ गया है. थोड़ी देर बाद वह मुझसे बोला, "मैलोन, ईश्वर की सौगंध, तुम गायब हो गये थे. मैं कोशिश के बावजूद तुम्हें नहीं देख सका."

"पर मुझे महसूस तक नहीं हुआ! मैं कितने मिनट गायब रहा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"लगभग तीन मिनट! मैं निरंतर कुर्सी की ओर देखता रहा. तुम्हारी कुर्सी पौने तीन मिनट तक खाली रही और फिर इस जादूगर ने, मई, मैं इसे जादूगर ही कहूंगा, दुबारा उस लीवर के कान मरोड़े और तुम न जाने कहां से कुर्सी पर विराजमान हो गये."

"अच्छा साहब!" नाइमर ने प्रोफेसर चैलंचर से संबोधित होकर कहा, "अब आपकी बारी है. क्या आप कुर्सी पर बैठना पसंद करेंगे?"

प्रोफेसर चैलंचर अपने विस्मय पर काबू पाता हुआ कुर्सी की ओर बढ़ा. नाइमर ने फिर लीवर दबाया और अगले ही क्षण कुर्सी खाली पड़ी थी. भय की एक लहर मेरी रीढ़ की हड्डी में दौड़ गयी. नाइमर बोला, "कितनी दिलचस्प बात है कि प्रोफेसर चैलंजर, संसार का महान वैज्ञानिक, इस समय करोड़ों एटमी कणों के रूप में इसी नगर के वायुमंडल में कहीं न कहीं मौजूद है. यदि मैं चाहूं तो यह कण सदा इसी प्रकार लोप रहें. इस व्यक्ति ने मुझ पर अविश्वास किया, बल्कि यों कहना चाहिए कि मेरा अपमान करने का प्रयास किया. क्या खयाल है तुम्हारा, यदि इसे थोड़ी-सी शिक्षा दी जाये... मेरा मतलब है कि..."

"नहीं, तुम हर्गिज ऐसा नहीं कर सकते. मैं तुम्हें अदालत में ले जाऊंगा."

"नाराज क्यों होते हो मेरे दोस्त, मैं अभी प्रोफेसर को वापस ले आऊंगा, पर यदि तुम चाहो तो एक दिलचस्प तमाशा दिखा सकता हूं. निरंतर प्रयोगों से मुझ पर यह बात स्पष्ट हुई कि बाल मानवीय शरीर का ऐसा भाग है, जो मांस और हड्डियों से बिलकुल भिन्न पदार्थ से बना है, इसलिए मैं मशीन की मदद से प्रोफेसर के शरीर पर से सारे बाल गायब कर सकता हूं. लो अपनी आंखों से देख लो."

मेरे मना करने से पूर्व नाइमर ने कई कल-पुरजे मरोड़े. फिर लीवर दबाया और प्रोफेसर चैलंचर की जगह कुर्सी पर विचित्र प्राणी बैठा हुआ दिखायी दिया. संयत करने का प्रयत्न करने के बावजूद मेरी हंसी निकल गयी.

प्रोफेसर चैलंजर का सिर, जहां कुछ क्षण पहले घने बाल थे, साफ-सपाट चुंदिया में बदल गया था. उसकी लंबी दाढ़ी गायब थी और सफेद-सफेद कल्ले यों नजर आ रहे थे जैसे किसी नाबालिग लड़के के गाल. सामूहिक रूप में शक्ल से वह प्राचीन और पेशेवर रोमन योद्धा दिखायी दे रहा था... जैसा कि हम फिल्मों में देखते हैं.

मेरा खयाल है, चैलंजर ने फौरन महसूस कर लिया कि उसकी शक्ल में कुछ परिवर्तन आ गया है. यह भी हो सकता है कि सिर से टकराती हुई ठंडी हवा ने उसे यह सोचने पर विवश कर दिया हो. खैर, उसका हाथ तत्काल अपनी चुंदिया की ओर उठ गया. सिर पर हाथ फेरकर उसने अपने गाल छुए और फौरन ही कुर्सी से उतरकर नाइमर की ओर बढ़ा. नाइमर स्थिति की गंभीरता दूर करने के लिए हंसा, पर प्रोफेसर चैलंजर बेहद क्रोध की अवस्था में था. उसकी आंखों में खून उमड़ आया था. नाइमर ने अपने-आपको बचाने के लिए बहुत प्रयत्न किया, पर चैलंजर का हाथ उसकी गर्दन तक बढ़ा. अगले ही क्षण चैलंजर ने नाटे नाइमर को उठाकर जमीन पर पटक दिया. मैंने लपककर चैलंजर को पकड़ लिया और घिघियाकर कहा, "प्रोफेसर, होश में आओ. यदि यह व्यक्ति मर गया तो हम कभी इस शैतान-मशीन का भेद पता न लगा सकेंगे."

बात प्रोफेसर की समझ में फौरन आ गयी. उसने नाइमर को कोट के कॉलर से पकड़कर उठाया और उसके कान में चीखकर कहा, "यदि तुमने पांच मिनट के अंदर-अंदर मेरे बाल न लौटाये तो मैं इसी जगह तुम्हें जान से मार डालूंगा."

बेचारा नाइमर कुछ क्षणों तक अपनी गर्दन सहलाता रहा. फिर घबरायी हुई आवाज में बोला, "प्रोफेसर, मैंने तो दोस्त समझकर आपसे मजाक किया था. यदि आपको बुरा लगा हो तो मैं क्षमा चाहता हूं. कुर्सी पर पधारिए... मैं अभी आपके बाल वापस ले आता हूं."

प्रोफेसर चैलंजर ने मुझे पास बुलाकर कहा, "मैलोन, तुम इस व्यक्ति का खयाल रखना, यदि तुम देखो कि उसने फिर कोई गड़बड़ की तो इसकी ऐसी मरम्मत करना कि..." वाक्य अधूरा छोड़कर चैलंजर कुर्सी की ओर बढ़ा.

मैं नाइमर के पीछे खड़ा हो गया. चैलंजर कुर्सी पर बैठा और नाइमर फौरन उसे पहली हालत में ले आया. इस बार चैलंजर मेरे पास आया तो उसका मूड पहले की अपेक्षा बहुत अच्छा था. वह नाइमर से बोला, "क्या इस मशीन का भेद केवल आप तक सीमित है?"

"जी हां, अन्य कोई व्यक्ति न तो यह मशीन बना सकता है और न ही इसके सिद्धांत से अवगत है. जैसा कि मैंने पहले निवेदन किया, मैंने इस गोपनीय शक्ति को यूरोप के एक देश के हाथ बेचने का वादा किया है. ज्योंही रुपये मिल गये, सौदा पूरा हो जायेगा!"

"वे कागजात, जिनमें मशीन का ब्योरा दर्ज है, आपके पास हैं?"

"मैं इतना मूर्ख नहीं कि कागजात में सब कुछ लिख दूं. हर चीज मेरे मस्तिष्क में सुरक्षित है. जो देश इस आविष्कार का मूल्य चुकायेगा, मैं उसके लिए स्वयं काम करूंगा. मिस्टर चैलंजर, जरा उस समय की कल्पना करें, जब मैं केवल एक बटन दबाकर आपका महानगर लंदन, बल्कि टेम्स की सारी घाटी के इंसान, हैवान, जीव-जंतु, इमारतें और कारखाने सब कुछ भूमंडल से गायब कर दूंगा. यह मशीन तो केवल एक मॉडल है, पूरी मशीन से सारी जनसंख्या गायब की जा सकती है."

चैलंजर कुछ देर चुप रहा. फिर मॉडल की ओर इशारा करते हुए बोला, "शायद यह मशीन बिजली से चलती है?"

"जी हां, आपने यह कैसे अनुमान लगाया?"

"मेरा खयाल है, मॉडल तैयार करने में आपने कुछ ज्यादा सावधानी से काम नहीं लिया. जब मैं कुर्सी पर बैठा तो यों महसूस हो रहा था जैसे हल्की-सी विद्युत तरंग कुर्सी की पीठ में से मेरे शरीर में प्रवेश कर रही है. शायद तारों में कुछ गड़बड़ है."

"हरगिज नहीं. आपको निश्चय ही गलतफहमी हुई है."

गलतफहमी का प्रश्न ही पैदा नहीं होता, आप उसकी जांच कर सकते हैं."

नाइमर फौरन कुर्सी की ओर बढ़ा और उस पर बैठते हुए बोला, "मुझे तो कुछ महसूस नहीं हुआ."

"रीढ़ की हड्डी पर भी नहीं?" चैलंजर ने आगे बढ़ते हुए कहा.

"जी नहीं."

सहसा प्रोफेसर चैलंजर ने वह लीवर दबाया, जिसे दबाकर नाइमर ने पहले मुझे और बाद में उसे गायब किया था. नाइमर की कुर्सी खाली हो गयी. वह अपने खोदे हुए गढ़े में स्वयं ही गिर गया था.

"यह क्या किया प्रोफेसर?" मैंने हैरान होकर पूछा.

"जो कुछ किया, ठीक किया. यदि यह व्यक्ति जिंदा रह जाता तो संसार में एक प्रलय आ जाती. इसे यमलोक तक पहुंचाना एक नेक काम है. जाते हुए हम इस कमरे को आग लगा जायेंगे, ताकि न रहे बांस न बजे बांसुरी. लोगों को यही समझने दो कि थ्यूडोर नाइमर जलकर मर गया और साथ ही उसकी शैतान-मशीन भी!... वैसे आज की सुबह कुछ बुरी नहीं रही."

मैं प्रोफेसर को दाद दिये बिना न रह सका. ☐

रूपांतर: सुरजीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नया विमान

वाल्ट शैल्डन

ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में प्रतिदिन नये-नये आविष्कार, नये-नये परीक्षण हो रहे हैं... तमाम राष्ट्र तो एक-दूसरे के बारे में सब-कुछ गुप-चुप रूप से जानने को उत्सुक रहते ही हैं, अन्य ग्रहों पर बसी सभ्यताएं भी इसी प्रयास में लगी हुई हैं ...और इसीलिए सभी राष्ट्र यह महसूस करने लगे हैं कि उनका हर नागरिक विज्ञान का संपूर्ण ज्ञाता हो.. मगर ज्ञान की इस अनिवार्य बेला में भी एक हवाई अड्डे के अज्ञानी कर्मचारी के अज्ञान ने किस तरह पूरे विश्व को तबाह होने से बचा लिया—
बयान कर रही है अमरीकी लेखक की यह रचना—

सबसे पहले सार्जेंट डान ने आवाज सुनी. उस दिन सुबह को कंट्रोल-टावर पर उसी की ड्यूटी थी. शुरू-शुरू में तो वह उनकी ओर ठीक तरह से उन्मुख नहीं हुई. वह नये और सुंदर कमांडर कर्नल फेदर्ज के विचारों में मग्न थी. कर्नल और सार्जेंट का आकर्षण उसे क्षण-प्रतिक्षण कम होता नजर आ रहा था. उसने मन ही मन में कहा, 'जब मैं वर्दी उतारकर ढंग के कपड़े पहनकर निकलूंगी तो संभव नहीं, वह मेरी ओर उन्मुख न हों. तब उसे पता चलेगा कि संसार में विमानों और विमान चालकों के अलावा भी बहुत-सी चीजें देखने योग्य होती हैं.'

इतने में आवाज आयी-बहुत शिष्ट और मंजी हुई, "हैलो, कंट्रोल-टावर! यह विमान नंबर एक-दो-तीन, चालीस मील पश्चिम से बोल रहा है. ईंधन खत्म हो गया है और आस-पास कोई दूसरा हवाई-अड्डा नहीं. इसलिए आपको कष्ट देना पड़ा. उतरने के लिए निर्देश दें."

डान ने माथे पर से कत्थई बालों की एक लट हटाते हुए कहा, "नंबर एक-दो-तीन, सत्ताईस नंबर पट्टी खाली है. कोई ट्रेफिक नहीं. आपके लिए मैदान साफ है. और कोई बात?"

"आपकी पट्टी कितनी लंबी है? हमें काफी लंबाई की जरूरत पड़ेगी."

"नौ हजार छह सौ फीट."

"अच्छा, है तो जरा छोटी, पर हम प्रयत्न करते हैं."

डान ने पहले तो इस वाक्य पर ध्यान नहीं दिया, पर फिर चौंककर कारपोर्ल बर्न हल्डा से, जो पास ही खड़ी थी, कहने लगी, "सुना! दक्षिणी कमांड की सबसे लंबी पट्टी के लिए फरमाते हैं कि जरा छोटी है."

"कोई नयी प्रकार का विमान होगा."

"इन नये विमानों से तो नाक में दम आ गया है. मुझे तो इनके. . ." उसकी बात पूरी न हुई थी कि वही आवाज फिर सुनाई दी, "मैं उतरने वाला हूं. मैदान अब भी साफ है कि नहीं?"

डान का मुंह खुले का खुला रह गया. वह उत्तर में 'हां' कहना भी भूल गयी. संभलकर उसने बर्न हल्डा से कहा, "अभी तो कह रहा था कि चालीस मील दूर हूं." पर बर्न हल्डा स्वयं सब कुछ भूलकर घबराई-सी आकाश की ओर देख रही थी. उसने डान की बात नहीं सुनी और बोली, "देखना, देखना!"

कर्नल फेदर्ज अपने कमरे में नाश्ता कर रहा था. उसकी त्यौरी चढ़ी हुई थी. जो कर्नल युवक हो, उसे अकड़कर रहना चाहिए, ताकि लोग उसे मजाक में न टाल सकें. कर्नल की मेज के सामने एक चौड़ी खिड़की थी, जिससे सारा हवाई-अड्डा नजर आता था. फेदर्ज सुबह ही सुबह वहां आ जाया करता. उसे यह दृश्य बहुत पसंद था कि दूर-दूर तक जेट-विमान भौंरों और तितलियों की तरह, चुपचाप खड़े हैं और धूप धीरे-धीरे चढ़कर पट्टियों को चमका रही है. उसे अपनी पहली कमांड पर गर्व था. वह उच्चाधिकारियों को यह जताना चाहता था कि वह केवल लड़ाका-विमानों का ही चालक नहीं, एक सचेतन व्यवस्थापक भी था.

"शूं ऊं ऊं!" कोई चीज ऊपर से गुजरी. कर्नल ने भन्नाकर ऊपर देखा. यह सवेरे-सवेरे कौन मूर्ख विमान उड़ाने लगा. और नीची उड़ान करने की तो उसने सख्त मनाही की हुई थी, पर अजीब बात थी कि यह आवाज जो उसने अभी सुनी, जेट-विमानों की आवाज से बिल्कुल भिन्न थी. वह कुछ घबराकर खिड़की की ओर बढ़ा और बाहर देखते ही उसके तेंवर ढीले पड़ गये, 'अरे तौबा' उसने मन में कहा, 'यह कैसा विमान है भई?'

सार्जेंट ड्रेकूला बड़े हैंगर के आगे आराम-कुर्सी पर लेटा, आंखों पर टोपी रखे, सुस्ता रहा था. रात उसने बहुत ऐयासी की थी. पहले तो यार लोग पीकर खेलते रहे, फिर ठर्रे का दौर चला तो मटके खाली कर दिये. अब जरा होश आया था तो वह शांति से धूप में लेटा था. उसका कद लंबा, चेहरा उदास, नाक ऊंची और बाल काले थे. ड्रेकूला को ठर्रा पीने का कुछ ऐसा शौक न था, पर जब हवाई अड्डा ऐसे निर्जन स्थान पर स्थित हो तो दिल बहलाने के लिए क्या किया जाये. उसने कई बार बदली के लिए प्रार्थनापत्र दिये, पर कोई सुनवाई न हुई थी. वह न्यूयार्क जाना चाहता था और हर समय न्यूयार्क के सपने देखा करता था.

वह करवट बदल ही रहा था कि बड़े जोर से शांय-शांय की आवाज हुई. वह लेटे-लेटे उछल पड़ा. उसकी टोपी नीचे गिर गयी. उसने आंखें सिकोड़कर आकाश की ओर देखा. उसके देखते ही देखते कोई गोल-सी चीज अड्डे के परले सिरे पर बिजली की तरह उतरी. उस समय भी उसकी गति दो सौ मील से कम न होगी. जब उसकी गति धीमी पड़ी तो ड्रेकूला ने देखा कि वह एक वाटिका-रूपी विमान था. जिसका मध्यवर्ती भाग उभरा हुआ था और पीछे धुएं की लंबी रेखा थी, पहिये और पर उसे कहीं नजर न आये.

"अजीब-अजीब विमान बनाने लगे हैं यह वैज्ञानिक!" ड्रेकूला बड़बड़ाया, "ऐसा विमान देखने के बाद तो होश में आने के लिए ठर्रा चाहिए." और वह आराम से लेट गया.

जैसे ही वह विमान दनदनाता हुआ हवाई अड्डे पर उतरा, हर ओर से चालक, मैकेनिक, अधिकारी, टाइपिस्ट और क्लर्क उसे देखने को दौड़ पड़े.

"इसके पहिये कहां हैं?" किसी ने ऊंची आवाज में पूछा. विमान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में वस्तुतः पहिये न थे. वह पेट के बल उतरा. रगड़ की यूंही-सी आवाज हुई और चक्कर खाता हुआ दूर जा रुका. मेजर बंग ने, जिसके जिम्मे अड्डे की देखभाल थी, जल्दी से एक स्टाफ-जीप मंगवाई और विमान की ओर चला. वह पास पहुंचा तो उसका दैत्याकार आकार देखकर हैरान रह गया. वह अमेरिका के बड़े से बड़े बमवर्षक विमान से दुगुना था, पर न तो कोई ऐसी जगह नजर आयी, जिसे चालक की सीट कहा जा सके और न उसमें कोई खिड़की थी, मतलब यह कि वह अंडे से कुछ मिलता-जुलता था.

मेजर ने जीप से उतरकर विमान के गिर्द घूमना शुरू किया और चीखा, "अरे भई, कोई है?" वह घबरा-सा गया. अभी उसने आधा चक्कर काटा था कि विमान की दूसरी ओर से अंदर से एक सुंदर नव-युवक उसके पास आया. उसकी नीली वर्दी चमक रही थी. मेजर को उसका चेहरा कुछ मोमी, अकड़ा हुआ और अस्वाभाविक-सा लगा. उसने मेजर को देखते ही कहा, "हैलो मेजर, हमारा ईंधन खत्म हो गया, इसलिए यहां उतरना पड़ा. मेरी प्रार्थना है कि हर ऐरे-गैरे विमान को पास न आने दिया जाये. इस विमान की गिनती अभी गोपनीय आविष्कारों में होती है."

बंग ने गोपनीय आविष्कार को विस्मित होकर देखते हुए अनुमोदन में सिर हिलाया, "ठीक है, ठीक है. मैं ईंधन का ट्रक भिजवाता हूं."

"नहीं श्रीमान, हमें ईंधन के ट्रक की जरूरत नहीं. केवल बारह गैलन अन्न का अलकोहल चाहिए. खालिस होना चाहिए."

बंग को विश्वास हो गया कि चालक मजाक कर रहा है. भला अन्न के अलकोहल का विमान में क्या काम! उसने कहा, "अरे यार, मजाक कर रहे हो, मैंने कहा. . ."

चालक ने उसकी बात काट दी, "मजाक कैसा साहब, हर हवाई अड्डे को आदेश जारी हो चुका है कि अन्न के अलकोहल का भंडार रखा जाये. आप लोग अब तक सो रहे थे क्या?"

बंग के कान खड़े हो गये. उसने जल्दी से बहाना बनाया, "अरे नहीं, अन्न का अलकोहल तो हमारे स्टाक में है, पर बारह गैलन? हमारा खयाल था कि कोई सौ-डेढ़-सौ गैलन की जरूरत पड़ेगी. खैर, मैं अभी मंगवाता हूं. इतनी देर में आइये जरा जलपान हो जाये."

नवयुवक चालक ने सिर हिलाया, "मुझे खेद है मेजर, विमान छोड़कर जाना बिलकुल मना है."

बंग वहां से जो चला तो फिर कर्नल फेदर्ज के पास आकर ही दम लिया. उसने जल्दी-जल्दी कहना शुरू किया, "सर, बड़ा गड़बड़ मामला है. मैंने गोदाम और अस्पताल के स्टोरों का कोना-कोना छान मारा, पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

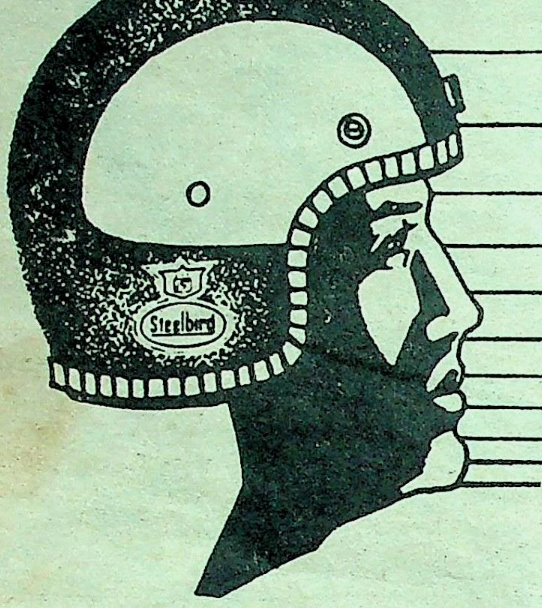

Steelbird®
HELMETS
your life guard
IS 4151
hi-reliability on road

ISI
certified
fibre glass
helmets

NEW STEEL BIRD INDUSTRIES
2E/2, JHANDEWALAN EXTN.,
NEW DELHI-55. PHONE: 527849/525639

ANKUR

केवल दो गैलन अन्न का अलकोहल उपलब्ध हुआ. हमें भविष्य में इसकी काफी सप्लाई रखनी चाहिए."

"हूं." कर्नल ने कहा. वह सोच रहा था कि ऐसा आदेश शायद आया हो. प्रतिदिन सैकड़ों कागजात आते थे. भूल-चूक की संभावना तो सदा रहती है. यह बड़ा गजब हुआ. यदि तत्काल अलकोहल मुहैया न किया गया तो बदनामी होगी. ऊपर के लोग कहेंगे कि फेदर्ज को बस विमान उड़ाने और लड़ाने ही आते हैं. प्रबंध करना नहीं आता. यह सोचते-सोचते उसके हाथ-पैर फूल गये.

"किसी को शहर भेजा जाये तो कितनी देर लगेगी?"

"कोई बीस मिनट सर!"

"तो मेजर, फौरन बारह गैलन अन्न का अलकोहल मंगा लो. किसी कीमत पर भी मिले. बस देर न होने पाये. और सुनो, चालक को मेरे पास भेज दो. मैं जरा, मेरा मतलब है, उसे बातों में लगा लूंगा."

"वह तो, सर, विमान के पास से हिल नहीं सकता. कहता है, सख्त मनाही है."

"अच्छा-अच्छा, मैं स्वयं ही जाता हूं उसके पास."

कर्नल की घबराहट देखकर मेजर बंग के रहे-सहे होशहवाश भी उड़ गये. वह वहां से सरपट भागा. इधर कर्नल दरवाजे की ओर गया ही था कि फोन की घंटी बजी. आपरेटर ने कहा, "सर, वाशिंग्टन से फोन आया है." यह सुनकर कर्नल का जी चाहा कि अपने बाल नोंच ले या फोन उठाकर फेंक दे. फोन पर बात शुरू होते-होते कम से कम दस-पंद्रह मिनट लग जायेंगे. इतनी देर में तो चालक मामले की तह तक पहुंच जायेगा. आखिर उसने आपरेटर से कहा, "तुम्हारा ओहदा क्या है?"

"क्या सर, मैं कारपोर्ल हूं." वह बोली.

"आज से सार्जेंट हो तुम. देखो, जब तक मैं वापस न आऊं वाशिंग्टन को टालो. कह दो, मैं यहीं-कहीं हूं. पर पता नहीं चलता कि कहां हूं. आया समझ में?"

आपरेटर ने जी हां तो कह दिया, पर उसके स्वर में उलझन थी कि उसकी कुछ समझ में नहीं आया.

ड्रेकूला को नींद आनी शुरू हुई ही थी कि किसी ने उसका कंधा झिझोड़ा. उसने बहुत नाराज होकर आंखें खोलीं तो सामने मेजर बंग को देखा. उसका गुस्सा काफूर हो गया और वह फौरन आदरपूर्वक खड़े होकर बोला, "क्या हुकुम है सर?"

"देखो ड्रेकूला, तुमसे ज्यादा तेज मोटर यहां कोई नहीं चलाता. मेरी कार ले जाओ और फौरन शहर से बारह गैलन अन्न का अलकोहल खरीद लाओ. जल्दी करो, जल्दी. यदि बीस मिनट में आ गये तो दो सप्ताह की छुट्टी."

छुट्टी की खबर सुनकर ड्रेकूला का मस्तिष्क काम करने लगा. उसके चेहरे पर धूर्तता प्रकट हुई, "सर, छुट्टी तो खैर क्या, यदि मेरी बदली न्यूयार्क में हो जाये तो बेहद कृपा होगी."

"इस बारे में तो मैं कोई. . ." मेजर ने कहना शुरू किया.

"आपको अलकोहल तो फौरन चाहिए न, सर!" ड्रेकूला ने बात काटकर जल्दी से कहा.

"अच्छा, चलो, हो जायेगी. दफा हो जाओ."

ड्रेकूला नींद, ठर्रे का खुमार और थकान सब कुछ भूलकर भागा. खुशी के मारे वह फूला न समा रहा था. आज उसकी मुराद पूरी हो गयी थी. बस, बीस मिनट की बात थी और फिर उस वीराने से छुटकारा. कार थी कि उड़ी जा रही थी. शहर नजर आने लगा था. एकाएक ड्रेकूला पर बिजली-सी गिरी. उसने निराश होकर ब्रेक लगाये और अपना सिर पकड़ लिया. अलकोहल खरीदने के लिए पैसे तो वह जल्दी और खुशी के मारे लाना ही भूल गया था. न्यूयार्क, जो कुछ क्षण पहले उसे अपनी बगल में नजर आ रहा था, अचानक सात समंदर पार चला गया. यदि वह पैसे लेने वापस गया तो बीस मिनट यहीं खत्म हो जायेंगे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर ड्रेकूला के चेहरे पर एक और रंग आया. इस अवसर को वह किसी प्रकार हाथ से न जाने देगा. उसने जल्दी से कार मोड़ी और एक कच्ची सड़क पर उसे चलाता हुआ उस बूजाखाने पहुंचा, जहां रात उन्होंने ठर्रा और बूजा पिया था. दुकानदार से ड्रेकूला की जान-पहचान थी और उधार मिलने की पूरी आशा थी. वहां से अन्न का अलकोहल मिलना तो कठिन था, पर ठर्रा हो या अलकोहल, ड्रेकूला को अपने हलवे-मांडे से काम था. हवाई अड्डे पर किसी को क्या पता चलेगा कि ठर्रा है. फौरन विमान के इंजन में उंडेल दिया जायेगा. बाद में विमान गिरे या भस्म हो जाये, उसे क्या! वह तो हर कीमत पर न्यूयार्क जाना चाहता था.

विमान-चालक ने कर्नल और मेजर का धन्यवाद किया, "आपका प्रबंध बहुत अच्छा है, धन्यवाद." उसके स्वर में हलका-सा व्यंग्य था, पर कर्नल और मेजर ने उसे महसूस न किया. वे खुश थे कि मुसीबत दूर हुई.

विमान-चालक विमान की ओर चल दिया. उसकी चाल अकड़ी-अकड़ी-सी थी. विमान के पेट में एक खिड़की खुली और उसके अंदर जाते ही बंद हो गयी. अंदर जब वह कंट्रोल-रूम में पहुंचा तो वहां विचित्र यंत्रों के बीच एक बंदर-रूपी हस्ती बैठी थी. देखते ही देखते चालक ने अपना इंसानी सिर उतार डाला और फिर इंसानी शरीर भी इस प्रकार उतार दिया जैसे कोई कपड़े उतारे. उस इंसानी खोल के अंदर एक अन्य बंदर रूपी हस्ती छिपी हुई थी. इतने में विमान गति में आ चुका था.

"कोई कठिनाई तो नहीं हुई जेरड?" विमान चलानेवाले ने अपनी भाषा में पूछा.

"नहीं, उन्हें पता भी न चला कि मैं कौन हूं. मैंने तुमसे पहले भी कई बार कहा था कि इस संसार के लोग बिलकुल बुद्धू और कम विकासशील लगते हैं. आज पुष्टि भी हो गयी."

भीतर से विमान का फर्श बिलकुल साफ था. धरती की सतह तेजी से दूर हटती नजर आ रही थी, जैसे नीचे गिरती जा रही हो. जब उन दोनों बंदर-रूपी जीवों ने गति, ऊंचाई, ईंधन के खर्च आदि को प्रकट करनेवाले यंत्रों पर गौर से नजर डाली तो विस्मित होकर एक-दूसरे का मुंह देखने लगे. जेरड ने जल्दी से कहा, "उन्होंने हमें पहचान लिया तभी तो अन्न के अलकोहल में उन्होंने कुछ मिला दिया है."

विमान चलानेवाले ने कहा, "और देखो, यह ईंधन किस गजब का है. मैं विमान के इंजन में अल्पतम मात्रा में भेज रहा हूं, पर गति की यह अवस्था है कि विमान काबू में ही नहीं आता."

जेरड ने आह भरी और बोला, "इसका मतलब है कि उनका ईंधन हमारे ईंधन से बहुत उच्चकोटि का है. हम समझते थे कि ये लोग कम विकासशील हैं और इनके संसार पर अधिकार करना बहुत सरल सिद्ध होगा, पर मामला प्रतिकूल निकला. हम उन्हें तबाह नहीं कर सकेंगे."

विमान चलानेवाले ने कहा, "यही तो खेद है, पर जिस ढंग से उन्होंने हमें सचेत किया है, मैं उसकी दाद दिये बिना नहीं रह सकता. अब अपने उपनिवेश के लिए हमें कोई अन्य नक्षत्र ढूंढना पड़ेगा."

ड्रेकूला ने उस अजीब विमान को दूर नीचे क्षितिज पर डगमगाते और झोंका खाते हुए देखा, यहां तक कि वह नजरों से ओझल हो गया. उसने उपेक्षा से कहा, "अनाड़ी यानचालक है. रंगरूट होगा. विमान भी सीधा नहीं उड़ाया जाता." फिर कुछ सोचकर बोला, "अब मैं समझा. अबे कहीं इंजन में से ठर्रा निकालकर तो नहीं पी लिया." और दुबारा आराम-कुर्सी पर लेटकर टोपी आंखों पर धरे ऊंघने लगा. उसके सपने में भी यह बात नहीं आ सकती थी कि उसके ठर्रे ने संसार के भाग्य का निर्णय किया है.

सार्जेंट डान ने दूरबीन नीचे रखकर आह भरी और बर्न हल्डा से कहने लगी, "हाय, खूबसूरत और साफ-सुथरा विमानचालक था. काश! उसकी बदली यहां हो जाये. मैं तो इस अड्डे के मर्दों से तंग आ गयी हूं. बिलकुल जंगली हैं कमबख्त. इतने मुक्खड़ मर्द मैंने नहीं देखे. उनकी तुलना में इस नये विमान का यानचालक सचमुच इंसान लगता था."

बर्न हल्डा ने अनुमोदन किया. वह भी दूरबीन से उसे देख चुकी थी, "शक्ल-सूरत से शरीफ और शिष्ट आदमी लगता था."

कर्नल फेदर्ज अपने कार्यालय में पहुंचा तो फोन को चोंगे से बाहर देखकर उसे वाशिंग्टन का ख्याल आया. मेजर बंग उसके पीछे-पीछे आ रहा था. कर्नल ने फोन उठाया और जोर से कहा, "फेदर्ज." फिर उसने सुनना शुरू किया और एक-दो बार 'जी-जी' भी कहा. धीरे-धीरे उसके चेहरे पर उपेक्षा, घृणा और क्रोध के चिह्न प्रकट हो गये, जैसे वह कोई बहुत ही मूर्खतापूर्ण बात सुन रहा हो. उसने फोन वापस रखकर थकी-थकी नजरों से बंग की ओर देखा, "रक्षा-मंत्रालय से जनरल साहब बोल रहे हैं. आज उनका दिमाग चल गया है."

"कुशलता तो है सर?" बंग ने आदरपूर्वक पूछा.

"कहते हैं कि इधर एक उड़न-तश्तरी उड़ती हुई देखी गयी है. इसलिए उसकी ताक में रहो. क्या बच्चों जैसी बातें करते हैं. उड़न तश्तरियां भी कहीं होती हैं. कल को कहेंगे कि शुक्रगृहवासियों ने आक्रमण कर दिया है. खैर, इस आदेश से नाम-मात्र कार्य ही बढ़ेगा. तुम जरा कंट्रोल-टावर को सूचित कर दो." □

अनुवाद : सुरजीत

कंप्यूटर का तर्क

मनुष्य और कंप्यूटर में फर्क यह होता है कि मनुष्य निर्णय लेते समय व्यावहारिक होता है और कभी-कभी मजाक भी कर लिया करता है, जबकि कंप्यूटर का हर काम तर्कसंगत होता है और वह मजाक कभी नहीं करता.

मान लीजिए आप एक-दो महीने के लिए घर से बाहर हैं और आपका बिजली का मीटर इस दौरान बिल्कुल नहीं चला. तब भी बिजली विभाग का कंप्यूटर आपके पास उस अवधि का बिजली का बिल हमेशा की तरह भेज देगा, चाहे यह बिल शून्य रुपये, शून्य पैसे का ही क्यों न हो. आप यह बिल्कुल न सोचें कि कंप्यूटर ने आपके साथ कोई मजाक किया है. क्योंकि यदि आप नियत तिथि के भीतर यह बिल अदा नहीं करेंगे तो कंप्यूटर आपकी बिजली काट देगा. अब आप पूछेंगे कि यह शून्य रुपये, शून्य पैसे की यह रकम चुकायी कैसे जा सकती है, इसका आसान तरीका यह है कि आप शून्य रुपये, शून्य पैसे का एक चैक जमा कर दीजिए, कंप्यूटर बाकायदा इसकी रसीद भेजेगा और आप बिजली कटने के खतरे से बच जायेंगे.

कंप्यूटर के तर्क का एक और दिलचस्प उदाहरण है. आपको एक घड़ी खरीदनी है और एक दूकान में दो घड़ियां हैं. एक घड़ी एक दिन में एक सेकंड सुस्त हो जाती है और दूसरी घड़ी बंद है. यदि आप कंप्यूटर से सलाह लें कि कौन-सी घड़ी खरीदी जाये तो वह दूसरी घड़ी को खरीदने की सलाह देगा. उसका तर्क होगा कि घड़ी वही खरीदी जाये जो ज्यादा सही समय दे सके. पहली घड़ी एक बार सही समय देने के बाद प्रतिदिन एक सेकंड की दर से सुस्त होते-होते लगभग 11 वर्ष, 10 महीने के बाद दुबारा सही समय देगी, जबकि दूसरी घड़ी हर बारह घंटे बाद सही समय देगी. □

प्रस्तुति : सु. उ.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दंगल

इलिया वर्षाव्स्की

वह चाहे अमरीका हो या सोवियत संघ या अपना भारत, यह सवाल बार-बार उठता रहा है कि मशीनें आदमी के लिए हैं या आदमी मशीनों के लिए हैं ! इस सवाल का अपने ढंग से जवाब तलाशती सोवियत संघ की एक उत्कृष्ट कथा—

सीढ़ियों के निचले भाग पर जब हम पहुंचे तो वह जंगले से कूदकर कक्ष में बड़ी तेजी से दौड़कर आया और एक सैंडविच झट चट कर गया. पथ पर पहुंचकर बेंच पर पसर जाने के लिए उसके पास काफी समय था. वहां वह अपनी सुंदर सहपाठिन को रोककर फुटबाल के मैच को देखने की दावत उसे दे सकेगा. मैच खत्म होने के बाद छात्र कैफेटेरिया में हल्का नाश्ता करेंगे और फिर. . . अभी उसने सोचा ही नहीं था कि फिर क्या करेंगे, लेकिन उसे इसकी चिंता नहीं थी, क्योंकि लड़कियों से संबंध जोड़ने में वह अपनी सहज बुद्धि पर भरोसा कर सकता था.

सहसा लाउडस्पीकर चीख उठा : "नया छात्र मुखारिस्की समलक्षणी 1386.16 एम बी, रेडियो तकनीकी विभाग के संकायाध्यक्ष को फौरन रिपोर्ट करे!

पल भर में उसे फैसला करना था. अगर वह विश्लेषक की पहुंच से बाहर खिसक लेता. कुछ कदम का फासला था और भाग्य जरा सा उसका साथ देता तो वह ऐसा कर सकता था. अपने होंठों को सिकोड़ते, कानों को खींचते, बायीं आंख से कनखी मारते और लंगड़ेपन का बहाना करते हुए उसने समलक्षणी विश्लेषक की गिद्ध दृष्टि से बच निकलने की कोशिश की, "मसखरी बंद करो, मुखारिस्की." यह संकायाध्यक्ष का अपना स्वर था.

"नौजवान, तुम लेट हो."

दस हजार छात्रों में से विश्लेषक ने उसे पल भर में छांट निकाला था और अब संकायाध्यक्ष के कार्यालय में उसके विकृत थोबड़ की छवि टी. वी. के स्क्रीन की शोभा बढ़ा रही थी.

मुखारिस्की अपने मुंह और कानों को अब असली स्थान पर ले आया और अपने दायें घुटने को जोर-जोर से मलने लगा ताकि डीन को इस बात का विश्वास दिला सके कि उसे अचानक जोड़-दर्द का दौरा पड़ गया था, लेकिन बात बनी नहीं. आह भरकर वह तीसरी मंजिल की ओर चल दिया.

कई मिनट तक डीन ने उसके चेहरे का अध्ययन किया. मुखारिस्की ने अवसर के अनुसार अपने चेहरे पर तीव्र मातमी मुद्रा ओढ़ ली और इस बीच वह यह सोचता रहा कि अपनी सुंदर सहपाठिन के पास कितनी देर में पहुंच सकता है.

"मुखारिस्की, यह बताओ कि क्या किसी चीज में तुम्हारी वाकई दिलचस्पी है?" क्या मूर्खतापूर्ण सवाल है—मुखारिस्की ने सोचा. दर्जनों चीजों में उसे दिलचस्पी है. दर्जनों ऐसे महत्वपूर्ण मामले हैं, जो उसे निरंतर व्यस्त रखते हैं—जैसे नताशा और मूता या फिर उसकी मनपसंद फुटबाल टीम. और उसकी सुंदर सहपाठिन. ओह! वह अपनी रुचियों के व्यापक क्षेत्र का लगातार बखान कर सकता था, किंतु डीन को इन बातों के बारे में बताने में क्या तुक है.

"सर, मैं इंजीनियरिंग और रेडियो में अभिरुचि रखता हूं." उसने बड़ी नम्रता से जवाब दिया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो. . . क्या मुझे बता सकते हो कि इस सत्र में तुमने एक भी परीक्षा पास क्यों नहीं की?"

'ओह खुदा!' उसने सोचा, 'मुझे निष्कासित करने जा रहे हैं.'

"शायद अध्यापन-मशीन- . ." उसने दबी जबान में कहना शुरू किया.

"तीन विभिन्न मशीनों ने तुम्हारे संग काम करने से इंकार कर दिया है." डीन ने बीच में टोका, "तुम कैसे पास होने की आशा कर रहे हो?"

बुद्धिमानी इसी में थी कि उसे आडंबरी प्रश्न समझकर इसकी उपेक्षा कर दी जाये. सोच में डूबे हुए डीन ने डेस्क के सिरे पर अपनी उंगलियां बजायीं. मुखारिस्की ने खिड़की से बाहर देखा. आह! वह रही वो. उसके साथ-साथ नीली टी-शर्ट पहने पतला-दुबला लड़का हाथों में चप्पू लिये जा रहा था.

"मैं तुम्हें तब तक निष्कासित नहीं करना चाहता जब तक कि मुझे यकीन न हो जाये कि तुम्हें इंजीनियरिंग की शिक्षा देना असंभव है."

"सर, मुझे यह जानकर खुशी हुई." मुखारिस्की ने नजरें नीचे करते हुए कहा, "कि आपको अभी तक मुझमें विश्वास है कि मैं. . ."

"नहीं, मुखारिस्की, अगर तुम्हारी शक्यता की बात होती तो अब तक तुम्हारा नाम कब का कट गया होता. मैं अपनी अध्यापन-मशीनों की शक्यता की बात कर रहा हूं. मुझे उनमें पूर्ण विश्वास है. क्या तुमने यू.आई.डब्ल्यू.एम.बी. का नाम सुना है?"

"जी, सर! वह. . . ओह. . ."

"हां, तुमने सुना है." डीन ने खीसें निपोरते हुए कहा, "यू.आई. डब्ल्यू.एफ.बी. का अर्थ है 'यूनिवर्सल इनस्ट्रक्टर विद फीड बेक.' मुझे उम्मीद है कि तुम जानते हो कि 'फीडबेक' क्या होता है?"

"हां सर, सरसरी तौर पर." मुखारिस्की ने सावधानी से उत्तर दिया.

"वियाना में होनेवाली अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस में मैं अपनी 'यू.आई. डब्ल्यू.एफ.बी.' का प्रदर्शन करने की योजना बना रहा हूं. उसकी अंतःशक्ति का निर्धारण करने के लिए आजकल प्रयोग कर रहे हैं. यह इंजीनियरिंग छात्रों के एक विशिष्ट ग्रुप को पढ़ा रही है. मैं ग्रुप का औसत स्तर नीचा करना नहीं चाहता, लेकिन एक वैज्ञानिक और शिक्षक होने के नाते मैं मशीन की क्षमता, ऐसे छात्रों जैसे कि. . . तुम पर आजमाना चाहता हूं. संक्षेप में, मैं तुम्हें विशेष ग्रुप में शामिल कर रहा हूं."

"धन्यवाद, सर."

"मुझे उम्मीद है कि यह कुछ ज्ञान तुम तक संप्रेषित कर पायेगी. इसका विद्युत परिपथ. . ." मुखारिस्की मशीन के परिपथ के बारे में कतई नहीं सोच रहा था. उसका मन उड़कर फुटबाल के मैदान में पहुंच चुका था, जहां खेल का पहला हॉफ शायद खत्म होने जा रहा था और नताशा. . . "तो, अध्यापन-प्रक्रिया के दौरान तुम्हारा दिमाग और मशीन का परिचयपथ अंगीभूत हो जायेंगे जिसमें प्रतिसंभरण (फीडबेक) भी शामिल होगा. छात्र के विषयवस्तु के आत्मसक्षत्करण के अनुसार मशीन चाल बदलती रहती है. आया समझ में?

"हां सर, बिल्कुल समझ गया."

"खुदा का शुक्र है. अब तुम जा सकते हो."

कंप्यूटर ने तीन सौ बयालीसवीं बार प्रयोग वस्तु के मस्तिष्क की बहुत बारीकी से जांच की और प्रमेय के प्रमाण का सोलहवां पाठांतर पेश किया. फिर संकेत आया, "सामग्री का आपीकरण नहीं हुआ. युक्ति बदलो." और जांच. फिर, "प्रमेय के प्रमाण के लिए हाई-स्कूल के स्तर पर प्राथमिक ज्ञान चाहिए." एक आदेश, "अलजबरा के मूलभूत सिद्धांतों का पुनरावलोकन करो." दूसरा संकेत, "सामग्री का आपीकरण कम से कम हुआ है." फिर "मूलभूत ज्ञान लुप्त हो गया."

अचानक कंट्रोल-पैनल पर लाल रोशनी हुई, "अत्यधिक गर्मा गयी है." ट्रांसफार्मर से धुंआ निकला और मशीन बंद हो गयी.

मुखारिस्की ने अपने सिर से इलेक्ट्रोड उतारे और चेहरे पर से पसीना पोंछा. छीः कैसा सत्र है. इलेक्ट्रानिक पाठों में कभी ऐसा अनुभव नहीं हुआ था. सारे लेक्चर के दौरान सोया जा सकता था और किसी प्रश्न का उत्तर देने की आवश्यकता नहीं होती थी, लेकिन यह 'यू.आई. डब्ल्यू.एफ.बी.' तो क्षण भर के लिए चैन नहीं लेने देती. ईश्वर का शुक्र है कि स्वचालित प्रतिरक्षा प्रणाली के कारण कभी-कभी यह मशीन बंद हो जाती है.

टेलीविजन फोन ने उसकी विचारधारा को भंग कर दिया. स्क्रीन पर डीन का चेहरा दिखाई दिया, "तुम काम क्यों नहीं कर रहे?"

"मशीन ठंडी हो रही है. ज्यादा गर्म हो गयी थी, सर."

हरी रोशनी हो जाने से मुखारिस्की को निराशा हुई. काम पर वापसी. आह भरकर उसने इलेक्ट्रोड अपने स्थान पर लगा लिये. और स्केनिंग और घृणित समीकरण नवीं बार मुखारिस्की के दिमाग में कौंध गया. उसने मशीन से लड़ाई करने की कोशिश की. अपना ध्यान और अधिक दिलचस्प मामलों की ओर लगाया. उसने सोचा कि अगर डिमेट्रीव दूसरे हॉफ में गोल न कर सका तो क्या परिणाम होगा. उसने लाल बालोंवाली सहपाठिन का सम्मोहक मुद्रा में ध्यान किया, किंतु सब बेकार और स्केनिंग, संकेत, आदेश, युक्ति में बदलाव, एक और संकेत, एक और अवलोकन, घंटा-दर-घंटा, दिन-दर-दिन.

सात दिन बीत गये और ओह! जादू हो गया. अध्ययन अब वेदनाप्रद नहीं रहा. ऐसा प्रतीत होता था कि मशीन अपने आप को मानव के जिद्दी स्वभाव के अनुकूल बना रही है. अब वह बार-बार अधिक गर्माती नहीं.

एक और सप्ताह बीत गया और लाउडस्पीकर संस्थान के हॉल में गूंजा, "नया छात्र मुखारिस्की, समलक्षणी, 1386.16 एम. बी. डीन के पास फौरन रिपोर्ट करे."

इस बार उसने समलक्षणी विश्लेषक की गिद्ध दृष्टि से बचने का प्रयत्न नहीं किया. "मुबारक हो, मेरे बच्चे," डीन ने कहा, "तुमने अभूतपूर्व योग्यता प्रदर्शित की है."

जीवन में पहली बार मुखारिस्की के चेहरे पर शर्म के मारे लाली दौड़ गयी, "सर, मैं महसूस करता हूं," उसने बड़ी विनम्रता से जवाब दिया, "कि उचित यह होगा कि मशीन की अभूतपूर्व क्षमता की बात की जाये. यह वास्तव में एक विलक्षण आविष्कार है."

"जब मैं 'कुशलता' की बात कर रहा हूं तो मेरे मन में केवल तुम हो. इसका तुम्हारे साथ दो सप्ताह का संसर्ग अनुर्वर नहीं रहा. यह एक साधारण पढ़ानेवाली मशीन नहीं रही, बल्कि एक प्रकार से डान जुआन या कासानोवा हो गयी है—तुम्हें समझाने के लिए कहूं तो 'स्त्री-प्रेमी पुरुष' हो गयी है. यह फुटबाल की अंधभक्त हो गयी है और इसने सारे ग्रुप को अपने साथ मिला लिया है. यह अत्यधिक आलसी हो गयी है और हम कल इसे विखंडित कर रहे हैं. अब जहां तक तुम्हारा संबंध है, तुम समझ सकते हो कि हम. . ."

"अवश्य, सर! और मैं आपकी सफलता की कामना करता हूं." उसने झुककर सलाम किया और दरवाजे की ओर जाने लगा.

"कहां जा रहे हो?" डीन ने पुकार लगायी

"स्वभावत घर. आपने मुझे निष्कासित कर दिया है न?"

"हां, मुखारिस्की, यह सच है कि हमने तुम्हें संस्थान से निकाल दिया है, किंतु केवल बतौर छात्र. हमने अभी आपकी नियुक्ति अध्यापन मशीनों के विभाग में वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक के रूप में कर दी है. अब के बाद कोई भी फीडबेक मशीन प्रयोगशाला से उस वक्त तक बाहर नहीं जायेगी, जब तक कि अंतिम परीक्षा में खरी न उतरे अर्थात जब तक तुम्हारे साथ दंगल करके तुमसे जीत न ले. मखारिस्की, तुम हमारी वास्तविक उपलब्धि हो." □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदला हुआ प्रेमी

रे ब्रेडबरी

रात के आठ बजे तक वह पूरी तरह तैयार हो चुकी थी.

मेज पर रखी एक सचित्र पत्रिका के नीचे कुचले सत की एक छोटी-सी शीशी रखी थी. अपनी पोशाक में उसने एक छोटा हथौड़ा और एक 'आइसपिक' पहले ही छिपा लिया था.

तमी, उसने किसी के ऊपर आने की आवाज सुनी. वह दरवाजे की ओर बढ़ी. वही था. मुस्कराता हुआ लियोनार्ड कह रहा था, "गुड ईवनिंग मार्था! क्यों, खड़ी क्यों रह गयीं? आओ, आगे बढ़कर चुंबन दो."

उसे चुंबन देते समय मार्था ने अपनी आंखें बंद कर लीं. जब-जब वह उसका चुंबन लेता, वह माव-विह्वल होकर अपने आप को मूल जाती थी. वह सोच रही थी—आखिर उसके संदेह का आधार क्या है? यह ठीक है कि पिछले दो महीनों में उसमें अनेक परिवर्तन दिखायी देने लगे थे, और इस कारण उसे कमी-कमी रात भर जागने को मजबूर होना पड़ता था.

लियोनार्ड ने मार्था को गौर से देखते हुए कहा "क्या तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है, मार्था?"

"ठीक है," मार्था ने जवाब दिया, पर वह मन ही मन सोच रही थी : 'इस समय, वास्तव में, तुम कहां हो, लियोनार्ड? किसके साथ प्रेम या नृत्य कर रहे हो, इस क्षण? कहीं भी हो, पर इस क्षण, तुम मेरे कमरे में, मेरे पास नहीं हो,और आज मुझे यही साबित करना है.'

तमी लियोनार्ड ने फिर पूछा, "यह हथौड़ा? इसका क्या करोगी! क्या तस्वीरें लगा रही हो?"

"नहीं, इसे मैंने तुम पर प्रहार करने के लिए निकाला है," मार्था ने हंसते हुए कहा.

"प्रहार सहने के लिए तैयार हूं . . . मगर, उससे पहले यह तो देखो," कहकर उसने जेब से एक नैकलस निकाला.

कांपते हाथों से नैकलस छीनते हुए, मार्था ने कहा, "तुम वाकई बहुत अच्छे हो, लियोनार्ड!" ऐसे क्षणों में वह अपनी शंकाएं, अपने संदेह सब मूल जाती थी. उसे यही लगता था कि लियोनार्ड सिर्फ उसे ही चाहता है, उसे छोड़कर किसी और को नहीं. पर . . . इस संदेह का निवारण कैसे हो? उसने लियोनार्ड से फिर पूछना ठीक समझा, "समाचारपत्रों में एक चित्र छपा है जिसके शीर्षक के अनुसार 17 अप्रैल की रात को तुम क्लब में एलिस समर्स के साथ नृत्य कर रहे थे. पर . . . उसी रात को तुम मेरे साथ भी थे."

"उस रात मैं तुम्हारे साथ ही था. और जब यहां था, तो समर्स के साथ कैसे हो सकता था?"

इस उत्तर से मार्था को संतोष हो जाना चाहिए था, पर नहीं हुआ. उसने हथौड़ा मेज पर रखकर लियोनार्ड से कहा, "मेरा चुंबन लो." पर, लियोनार्ड ने कहा कि चुंबन देने या लेने से पहले वह शराब पीना ज्यादा पसंद करेगा. मार्था ने फिर सोचा, लियोनार्ड सचमुच कितना बदल गया है! और अब उसे लग रहा था कि उसे कुछ क्षण पहले लियोनार्ड का प्रगाढ़ चुंबन भी, रासायनिक दृष्टि से बदला हुआ लगा था.

"अच्छी बात है, पहले शराब ही पियो. जाओ, पहले रसोईघर से कुछ जाम ले आओ."

जैसे ही लियोनार्ड जाम लेने रसोईघर में गया, मार्था ने कुचला हुआ सत लियोनार्ड की शराब में मिला दिया. लियोनार्ड ने लौटकर, बिना कुछ देखे-सोचे वह शराब एक सांस में गटक ली.

"कैसा तीखा स्वाद है इस शराब का?" लियोनार्ड ने पूछा, "कहां-कहां से ले आती हो ऐसी शराब!"

"परेशान मत होओ. दूसरी बोतल लेकर आती हूं."

मार्था जब दूसरी बोतल लेकर लौटी, तब लियोनार्ड ने उससे कहा, "कितनी अच्छी लग रही हो!"

"तुम भी बहुत अच्छे और बहुत आकर्षक लग रहे हो," मार्था ने सच बोलते हुए कहा.

जब तक दूसरी बोतल समाप्त हुई, एक घंटा बीत चुका था. लियोनार्ड खूब हंस और बोल रहा था, पर मार्था चुप थी. लियोनार्ड उससे बार-बार इस चुप्पी का कारण पूछ लेता था. मार्था उत्तर में सिर्फ इतना कहती, "कहां हूं चुप मैं! कोई भी बात तो नहीं."

पर मन ही मन सोचती उस अफवाह के बारे में, जो धीरे-धीरे सारे शहर में फैलती जा रही थी. यह कि मैरियोनेट्स लिमिटेड द्वारा निर्मित ऐसे मानवसम, यंत्रमानव काले बाजार में मिलने लगे थे, जो देखने, बोलने और आचरण करने में वास्तविक मानवों से जरा भी भिन्न नहीं हैं. आदमी व्यस्त हो, तो अपने जैसे यंत्रमानव को किसी से मिलने वगैरा के लिए भेज सकता है.

कहीं लियोनार्ड ने तो अपने जैसा यंत्र-मानव नहीं बनवा लिया? और कहीं ऐसा तो नहीं कि असली लियोनार्ड इस वक्त कहीं और मौज कर रहा हो, और मेरे सामने इस वक्त है उसका यंत्र-मानव!

यह संदेह हफ्तों से उसे खाये जा रहा था! और जैसे-जैसे वह इस बारे में ज्यादा सोचती थी, वैसे-वैसे उसका क्रोध और संदेह और ज्यादा बढ़ता जाता था.

"बताओ न, क्या सोच रही हो, मार्था?" लियोनार्ड ने फिर पूछा.

"यही सोच रही हूं कि आज तुम्हारे मुंह का स्वाद कितना भिन्न है!"

"सचमुच? मुझे भी कुछ ऐसा ही लग रहा था. मैं कल ही अपने डॉक्टर से मिलूंगा."

"नहीं, उसकी जरूरत नहीं है." कहकर वह सोचने लगी कि उसके सामने बैठा लियोनार्ड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यंत्र मानव से क्या-क्या काम लिये जा सकते हैं, इसकी एक लंबी सूची गिनायी जा सकती है, पर उस एक काम की आप कल्पना भी नहीं कर सकते जो रे ब्रेडबरी ने अपनी इस कहानी में यंत्रमानव से करवाया है... क्या आप कल्पना में भी अपनी प्रेमिका के पास अपने बदले किसी और व्यक्ति को भेज सकते हैं, चाहे वह यंत्र-मानव ही क्यों न हो.

कृत्रिम लियोनार्ड है. ऐसा न होता, तो उसके मुंह का स्वाद असली लियोनार्ड के मुंह के स्वाद जैसा होता.

तभी, जैसे उसने कोई निश्चय किया और एक कोने में खड़ी होकर लियोनार्ड पर अपनी बंदूक तानकर कहने लगी, "मैं तुम्हारी चालबाजी समझ गयी हूं. तुम असली लियोनार्ड नहीं हो."

"तो फिर मैं कौन हूं!"

"यह अभी मालूम पड़ जाता है. बताओ, 17 अप्रैल की रात को तुम कहां थे?"

"तुम्हारे पास था."

"गलत! तुम उस रात एलिस समर्स के साथ थे. मैं अभी उसको फोन करके पूछती हूं."

"पूछ सकती हो. मगर तुम्हें आखिर हुआ क्या है?"

"तुमने वह अफवाह तो सुनी होगी... यंत्रमानवों के बारे में!"

"सुनी तो है. क्या तुम इस फिजूल की अफवाह पर विश्वास करती हो? ...अच्छा, अब यह फोन रख दो और आकर कुछ खाओ-पीओ."

"मैंने अभी-अभी तुम्हें जितना जहर दिया था, उससे छह व्यक्तियों की मृत्यु हो सकती थी. पर तुम पर उसका कोई प्रभाव नहीं हुआ. इससे भी सिद्ध होता है कि तुम एक यंत्रमानव हो."

"नहीं, इससे यही सिद्ध होता है कि तुम्हारे केमिस्ट ने तुम्हें असली जहर नहीं दिया."

मार्था ने फिर फोन पर समर्स का नंबर मिलाया. कई सेकंड तक फोन की घंटी बजती रही, और उसके बाद दूसरी ओर से एक आवाज सुनायी दी. एक मिनट तक बातें करके मार्था ने फोन रख दिया.

'यकीन हो गया अब तुम्हें?" लियोनार्ड ने मार्था से पूछा.

"हां, हो गया. मुझसे फोन पर तुमने ही बातें की थीं, समर्स के घर से."

"तुम दीवानी हो गयी हो, मार्था! वह कोई और था. मैं तो यहां हूं... तुम्हारे पास."

इसके जवाब में मार्था ने गोली चलायी—एक बार, दो बार, तीन बार!

लियोनार्ड फर्श पर गिर पड़ा. मार्था—चकित और भयभीत—उसके पास आकर खड़ी हो गयी. उसे बड़ा पश्चाताप हो रहा था. लियोनार्ड यंत्रमानव होता, तो गोली खाकर इस प्रकार फर्श पर नहीं गिरता!

मैं सचमुच दीवानी हो गयी हूं, मुझसे बहुत बड़ी गलती हुई है. मैंने असली लियोनार्ड को मार डाला है!

लियोनार्ड फर्श पर लेटा-लेटा कराह रहा था, "मार्था! तुमने यह क्या किया... क्या कर डाला?"

"मैं अभी डॉक्टर को बुलाती हूं."

"नहीं, नहीं, नहीं." वह सहसा हंसने लगा. "लो, मैं सब कुछ बताये देता हूं. एक न एक दिन तो, आखिर तुम्हें पता चलना ही था."

मार्था के हाथ से बंदूक गिर पड़ी. लियोनार्ड हंसता हुआ कहने लगा, "हकीकत यह है कि मैं तुम्हारे पास, पिछले एक वर्ष में, आज पहली बार आया हूं."

"क्या—आ?"

"हां, मैं बिल्कुल सच बोल रहा हूं. मैं लियोनार्ड हिल नहीं हूं. एलिस के साथ मेरी मैत्री एक वर्ष पूर्व आरंभ हुई थी, जब मैंने तुम्हारे यहां आना बंद किया था. कुछ महीने बाद, एलिस से ऊबकर मैं हेलन किग्सले के पास जाने लगा... फिर ऐन मांटगमरी... इस तरह पिछले एक वर्ष में मैंने छह लड़कियों के साथ मैत्री की. मेरी छह सजीव प्रतिलिपियां शहर में इन छहों युवतियों के साथ रहती हैं. असली लियोनार्ड? जानती हो, वह इस समय कहां है? वह इस समय आराम से अपने बिस्तर पर पड़ा, एक पुस्तक पढ़ रहा है..."

"बस करो!" मार्था ने चिल्लाकर कहा.

"अब तुम्हें सारी बातें सुननी ही पड़ेंगी. तुम्हारा एक निशाना बहुत ठीक बैठा है, अब मैं ज्यादा देर तक नहीं जिऊंगा. अपनी इस प्रतिलिपि के लिए मैंने पंद्रह हजार डालर खर्च किये थे. ये प्रतिलिपियां वास्तविक मानव से 99 प्रतिशत मिलती हैं, पर वैज्ञानिक अभी तक इन प्रतिलिपियों के थूक को असली मानव के थूक के समान बनाने में सफल नहीं हो पाये हैं. इस प्रकार के एक-दो सूक्ष्म विभेद अभी तक कायम हैं. पर, प्रतिलिपि भले ही रहा हूं, तुम्हारे प्रति मेरा प्रेम लियोनार्ड के प्रेम से तनिक भी कम नहीं है."

मार्था को लगा, यदि लियोनार्ड बोले चला गया तो वह पागल हो जायेगी. उधर लियोनार्ड हिल कहे जा रहा था, "तुम लियोनार्ड को चाहती थी, और लियोनार्ड तुम्हें. पर उसकी अन्य प्रेमिकाएं भी उसे तुम्हारे समान ही चाहती थीं. इसलिए, उसे अपनी छह प्रतिलिपियां करानी पड़ीं. पर, उसकी प्रेमिकाओं को इस कपट का पता चल गया, तो?... नहीं, नहीं, मुझसे वायदा करो, मार्था कि तुम ऐसा नहीं करोगी."

मार्था सोच रही थी, 'पिछले एक वर्ष की एक-एक रात मैंने एक यंत्र-मानव की बांहों में बितायी थी. उसका क्रोध निरंतर बढ़ता जा रहा था. उसने हथौड़ा हाथ में लेकर लियोनार्ड की प्रतिलिपि को तोड़ने के उद्देश्य से जोरदार प्रहार करने आरंभ किये.

कुछ मिनट बाद... प्रतिलिपि के ढीले अंजर-पंजर फर्श पर बिखरे पड़े थे.

उन्हें एक कार्डबोर्ड के बक्से में रखकर उस पर 'मिस्टर लियोनार्ड हिल, 17, एल्म ड्राइव' पता लिखकर, और बक्से को इस पते पर पहुंचा देने का निर्देश होटल के छोकरे को देकर, मार्था चुपचाप अपने बिस्तर पर आकर लेट गयी. अब उसका दिल बिल्कुल नहीं धड़क रहा था. □

अनुवाद : हरि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

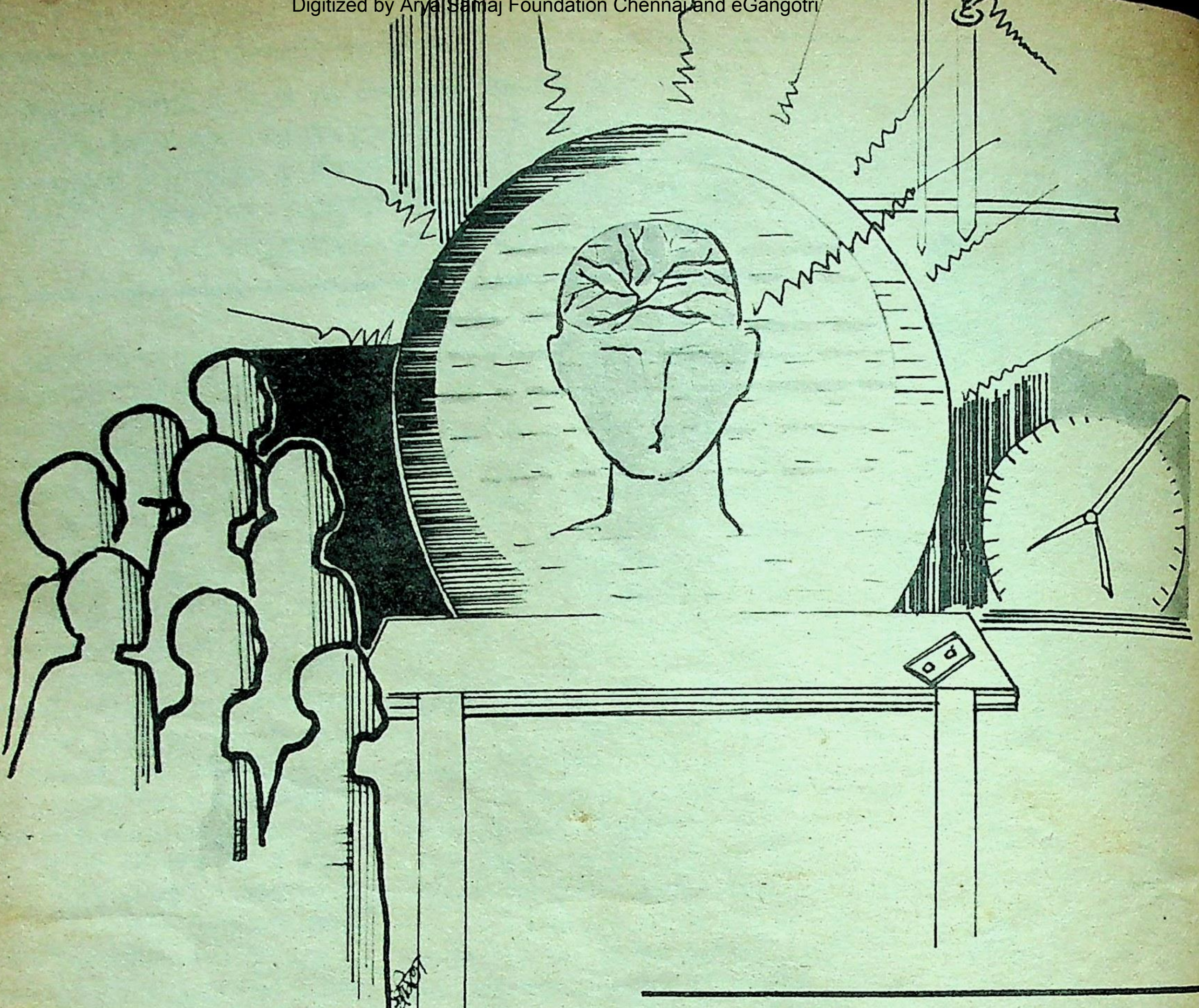

मृत्युंजयी

कैलाश शाह

क्या शरीर के बिना जीवन की कल्पना की जा सकती है? बिना अंगों के अमरत्व और बिना शरीर के सुख का क्या अर्थ रह जाता है? विज्ञान आदमी को कितनी ही सुख-सुविधाएं क्यों न दे दे पर क्या जीवन की उस मूलभूत आवश्यकता की पूर्ति कर सकता है जिसे संतोष कहते हैं? इन्हीं कुछ सवालों के जवाब के लिए आइए चलें पृथ्वी के प्रतिनिधिमंडल के साथ ढाई प्रकाश वर्ष की दूरी पर स्थित ग्रह क्वासर सिनोरिमा में.

कैप कैनेडी के अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष-अड्डे के निदेशक हंफ्री जैक्सन 27 दिसंबर, 2075 को शाम को 7 बजे आपके सम्मानित समाचार पत्र/टेलिविजन/रेडियो/इलैक्टानिक न्यूज रिलेयर/कंप्यूटर प्रोग्राम के प्रतिनिधि संयोजक को एक विशेष समाचार-सभा में आमंत्रित करते हैं. आशा है, आप अपने विशेष प्रतिनिधि को इस समाचार-गोष्ठी में भेजने की कृपा करेंगे. समाचार-गोष्ठी ठीक 7 बजे आरंभ होगी और 7-30 तक निदेशक अपना वक्तव्य पढ़ेंगे. इसके बाद वह प्रश्नों के उत्तर देंगे.

20 दिसंबर, 2075 जनसंपर्क अधिकारी

27 दिसंबर, 2075 को उस शाम केप कैनेडी के सम्मेलन-कक्ष में संसार के सभी प्रदेशों के संवाददाता और छायाकार उपस्थित थे और समाचार को सारे संसार के लिए सीधे टेलीकास्ट करने की व्यवस्था भी की थी. ठीक 7 बजे सम्मेलन-कक्ष का लाल बल्ब जला और कमरे में शांति छा गयी. अधेड़ आयु के निदेशक हंफ्री जैक्सन कमरे में प्रविष्ट हुए. उन्होंने संचार-जगत के प्रतिनिधियों का अभिवादन किया और मंच पर आकर अपना लिखित वक्तव्य पढ़ना शुरू किया:

"आज मैं यहां एक अत्यधिक महत्वपूर्ण निर्णय और लक्ष्य की घोषणा करने जा रहा हूं. इस मिशन की सफलता हमारे संसार की नियति को तय करेगी. हमारा यह मिशन शांति का मिशन है. सन् 1960 और 1970 के बीच हमारे इस ग्रह पर, जब यहां अनेक सरकारें थीं और विश्व महासंघ सरकार का निर्माण नहीं हुआ था, ब्रिटिश प्रदेश के कुछ रेडियो खगोलविदों को ठीक-ठीक फ्रीक्वेंसीज पर कुछ दिनों तक तालबद्ध रेडियो-संकेत प्राप्त हुए.

"कुछ दिनों तक संसार में इन रेडियो-संकेतों को लेकर बहुत हंगामा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मचा और अंत में यह कल्पना की गयी कि ये रेडियो-संकेत किसी दूर-दराज सितारे में होनेवाली खगोलीय प्रक्रिया से आ रहे हैं. इन रेडियो संकेतों को फिर कोई पच्चीस-तीस साल बाद सुना गया और तब तक वैज्ञानिक जानकारी और शोध समस्त संसार की संयुक्त संपत्ति माने जाने लगे थे. इन रेडियो संकेतों को हमारे पूर्ववर्ती खगोलविदों और वैज्ञानिकों ने रिकार्ड कर लिया था.

"2010 में फिर यही रेडियो-संकेत सारी दुनिया की वेधशालाओं में सुनायी पड़े और ये आये हुए संकेतों से हू-ब-हू मिलते थे. चालीस साल तक दुनिया के महानतम वैज्ञानिकों और गणितज्ञों की एक विशेष टीम इन संकेतों को डिसाइफर करने में लगी रही."

जैक्सन सांस लेने को रुके. कमरे में कैमरों की आवाज और संवाददाताओं के इलेक्ट्रानिक स्टेनो-फोनों की सांय-सांय के अलावा कुछ नहीं सुनायी पड़ रहा था. कमरे में अजीब किस्म का तनाव था. जैक्सन ने फिर बोलना शुरू किया :

"2050 में रूसी गणितज्ञ और भाषाशास्त्री आइवेंको ने इन रेडियो-संकेतों की कूट-भाषा के रहस्यों को उजागर किया. उन्होंने इन संकेतों को डिसाइफर किया. संसार की सुरक्षा के लिए हमने इन संदेशों को 25 सालों से गुप्त रखा. हम अब इस संदेश को अंशतः संसार के सभी नागरिकों के सामने रख रहे हैं. संदेश की प्रतिलिपि आपको सम्मेलन की समाप्ति पर मिलेगी. मैं आपको यह संदेश पढ़कर सुना रहा हूं.—

क्वासर सिनोरिमा, गैलेक्सी-आइनो मेडगाकर की विज्ञान-परिषद की ओर से : अज्ञात चमकते सितारे के नौ ग्रहों में से उस ग्रह को जहां जीवन अभी विकसित हो रहा है. संदेश : अविकसित स्तनपोषी जीव, तुम्हारे ग्रह का विज्ञान अधूरा है और तुम अपने सौर-मंडल के बाहर निकलने की निरर्थक चेष्टा में हमारी अंतर-ग्रहीय संचार-व्यवस्था के मार्ग में कूड़ा-करकट फेंककर हमारे नियमों का उल्लंघन कर रहे हो. हम तुम्हारा नाश नहीं करना चाहते. लेकिन तुम्हें चेतावनी देते हैं कि इस कूड़े-करकट को फेंकना बंद करो. अगर तुम सौर-मंडल से बाहर की बात जानने के इतने अधिक जिज्ञासु हो तो अपने स्तनपोषी जीव को हमारे ग्रह में भेजो. हम तुम्हें आश्वासन देते हैं कि हम उनको नुकसान नहीं पहुंचायेंगे, बल्कि तुम्हारे इन प्रतिनिधियों को वे रहस्य देंगे जिनके माध्यम से तुम्हारे विज्ञान की असाधारण उन्नति होगी. चेतावनी और निमंत्रण हम तुम्हें एक साथ दे रहे हैं. हमारे निमंत्रण की स्वीकृति का अर्थ है तुम्हारे ग्रह की एक महान उन्नति और चेतावनी को ठुकराने का अर्थ है तुम्हारा विनाश.

"यही वह संदेश है और इसी के फलस्वरूप हमने 2050 के बाद राजनीतिज्ञों के असीमित दबाव के बाद भी अपने सौर-मंडल के बाहर कोई स्पुतनिक नहीं भेजा और कोई अंतर-ब्रह्मांडीय शोध शुरू नहीं की.

"हमने इस संदेश के टेक्निकल पक्ष का रहस्योद्घाटन जन-साधारण के लिए नहीं किया है. इस संदेश में क्वासर सिनोरिमा की वास्तविक स्थिति आदि का वर्णन है. यह धरती से 2 शंख 36 खरब किलोमीटर दूर स्थित है. इसमें पहुंचने के लिए पूरे ढाई प्रकाश-वर्षों की आवश्यकता पड़ती है. मैं यहां आपको बतला दूं कि प्रकाश एक सेकंड 2,99,776 किलोमीटर की यात्रा करता है और एक वर्ष में 3 करोड़ 55 लाख 80 हजार सेकंड होते हैं. अर्थात् यह एक साल में 3,55,80,000 × 2,99,776 = 94,60,000,000,000 किलोमीटर की यात्रा कर सकता है. इतने वर्षों तक हम लोग ऐसे यान और विधियों की खोज करते रहे जिससे मानव इस अकथनीय दूरी में स्थित अपने मेजबान के निमंत्रण पर जा सके.

"अंतर्राष्ट्रीय प्रयोगशाला में विभिन्न विशेषज्ञों की टुकड़ियों ने मानव की सबसे लंबी यात्रा के उपकरणों और साधनों को विकसित किया.

"31 दिसंबर को केप केनेडी से एक अंतरिक्ष-यान इस यात्रा पर रवाना होगा."

सारे कक्ष में विस्मय से भरी आवाजें सुनाई पड़ने लगीं, लेकिन फिर लोग उत्सुकतावश शांत हो गये.

"इस यात्रा में एक ओर जाने में लगभग 16 वर्ष का समय लगेगा. अर्थात् ढाई प्रकाश-वर्षों की दूरी हमारा अंतरिक्ष-यान 16 वर्षों में पूरी करेगा. इस प्रकार हमारे यान की गति प्रकाश की गति का लगभग छठा भाग होगी. अर्थात् हमारा यान एक सेकंड में 37 हजार 472 किलोमीटर की दूरी तय करेगा.

"हमारे इस यान में आठ व्यक्ति होंगे और यह सारा यान अपने आप में पूर्ण होगा. यान के सभी यात्री सुपुप्तावस्था में रखे जायेंगे, क्योंकि इतनी लंबी यात्रा में जाग्रत अवस्था का अर्थ होगा, सभी यात्रियों की अवश्यंभावी मृत्यु या पागलपन.

"सुपुप्त करने की औषधि का निर्माण भारत की अंतर्राष्ट्रीय रसायन अनुसंधानशाला में प्रोफेसर शशिकांत कर चुके हैं.

"इस यान के ईंधन की खोज मास्को की प्रयोगशाला ने की है. यह ईंधन ठोस अवस्था में होगा और यान की आने-जाने की यात्रा के लिए काफी होगा. यान में दो किलो ईंधन रखा जायेगा. ईंधन का निर्माण क्वार्क से संपन्न हुआ है.

"यान के ढांचे की धातु का अविष्कार ब्रिटेन की एक प्रयोगशाला में हुआ है.

"यान की मशीनें, कंप्यूटर्स एवं इलेक्ट्रानिक स्वचालन के उपकरण सोवियत संघ, अमरीका और कनाडा ने बनाये हैं."

जैक्सन ने अंतर्राष्ट्रीय-यान की संरचना और उसके उपकरणों के विषय में पूरे ब्यौरे दिये और अंत में बताया कि यान मित्रता के मिशन पर जा रहा है. पत्रकारों के छुटपुट प्रश्नों के उत्तर देते हुए निदेशक ने बतलाया कि इतनी लंबी यात्रा के बाद भी अंतरिक्ष-यात्रियों की आयु में 31 दिसंबर 2075 से 2091 तक मात्र कुछ ही दिनों का अंतर पड़ेगा. उन्होंने कहा कि सुपुप्तावस्था में हमारे यात्रियों की उम्र नहीं बढ़ेगी. जब 16 साल बाद उनकी नींद खुलेगी, वे अपने आपको क्वासर में पायेंगे. उनका प्रवास क्वासर में केवल एक सप्ताह के लिए होगा और इस सप्ताह के दौरान वे आवश्यक वैज्ञानिक आदान-प्रदान करके सारी सूचनाओं को इलेक्ट्रानिक कंप्यूटरों में भरकर वापस आ जायेंगे और फिर धरती पर आकर उनकी नींद खुलेगी. उनकी आयु में इन बत्तीस वर्षों में केवल सात दिन की वृद्धि होगी.

केप कैनेडी से अंतरिक्ष-यान 'मैत्री-1' अनंत आकाश की ओर जा रहा था. धरती के गुरुत्व से बाहर निकलने के पश्चात् सारे स्वचलित उपकरणों को चालू करके आठ के आठ व्यक्तियों ने सुपुप्ति लानेवाली औषधि का सेवन किया और से आरामदेह बिछौनों पर सो गये. 16 साल की स्वप्नहीन लंबी नींद में उनके हृदयों और नाड़ियों के स्पंदन का चार्ट बन रहा था और सारा शरीर बिलकुल सोया हुआ था. अनंत शून्य में मित्रता का महान संदेश ले जाने वाला यह दल सुख और चैन की नींद सो रहा था. गहन आकाश में कभी किसी खगोलीय पिंड या गुरुत्व के क्षेत्र के बीच गुजरते हुए यान का स्वचालन देखने योग्य होता. दिन पर दिन, महीनों पर महीने बीत रहे थे. साल भी बीतने शुरू हो गये. धरती पर विज्ञान अपनी चरम सीमा की ओर द्रुतगति से अग्रसर हो रहा था. सारी धरती में सुख और शांति का राज्य था. आबादी की समस्या नहीं थी. खाद्यान्नों को सागरों से प्राप्त किया जा रहा था. 'ज्ञान और अधिक ज्ञान' —सब यही मनुष्य का मात्र लक्ष्य रह गया था. पृथ्वी के सौर-मंडल में अपने पड़ोसियों को भी बसा लिया था. हर ओर सुख और शांति का अखंड राज्य था.

सन् 2091 'मैत्री-1' क्वासर सिनोरिमा में अपने पूरे उपकरणों के साथ उतरा. 'मैत्री-1' क्रू कमांडेंट अपने साथियों के साथ जब यान से बाहर निकले तो वह आश्चर्य चकित रह गये. उनका यान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

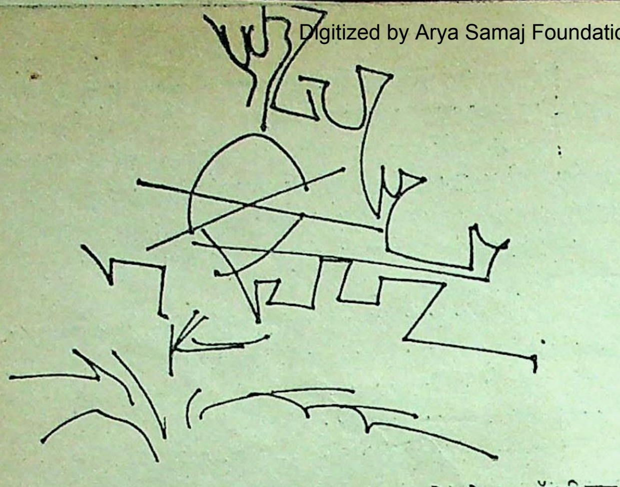

क्वासर की एक हरी-भरी घाटी में उतरा था. क्रू के लोग ऑक्सीजन मास्क लगाये हुए थे. यान के चारों ओर सैकड़ों रोबो खड़े थे. और तालियां बजा-बजाकर क्रू का स्वागत कर रहे थे. एक भी जीवित प्राणी इतनी बड़ी भीड़ में नहीं था. क्रू के लोग हाथ हिला-हिलाकर इस अभिवादन का उत्तर दे रहे थे. एकाएक सभी रोबो चुप हो गये.

रोबो रंग-बिरंगे लबादे पहने थे. उनके सिरों पर विभिन्न प्रकार के रबर के खोल चढ़े हुए थे. रोबो-समुदाय से एक लंबा सा रोबो बाहर निकला और वह 'मैत्री-1' के क्रू के पास आया. उसने अपने सीने में हाथ लगाकर रोमनों की तरह क्रू का अभिवादन किया और एक कागज का टुकड़ा क्रू-कमांडर के हाथ में दिया. कागज धरती की तीस-चालीस भाषाओं में लिखा था.

"आदरणीय मेहमानो, आपका स्वागत है! आप किस भाषा में बातचीत करना पसंद करेंगे? इस ग्रह में आपके ग्रह की ही भांति प्राणवायु है. आप ये वस्त्र उतारकर आराम से चल-फिर सकते हैं. आपका एक बार फिर स्वागत है. आप इस रोबो-1 को सबसे पहले अपनी भाषा के विषय में बतला दें. इस ग्रह में यह आपका गाइड है."

क्रू के सभी सदस्य हिंदी जानते थे. वैसे ये आठ सदस्य विश्व के दोनों गोलार्द्धों के थे. उन्होंने रोबो-1 को अपनी भाषा के विषय में बताया और अपने अंतरिक्ष-सूट उतारकर वापस 'मैत्री-1' में रख दिये. रोबो-1 के साथ आठ व्यक्तियों का यह दल अपने अनजान मित्रों की ओर चल दिया. रोबो-1 अभी तक एक शब्द नहीं बोला था. जिस स्थान पर 'मैत्री-1' उतरा था, वहां से कोई पचास गज की दूरी पर दो समांतर सड़कें दिखलाई पड़ रही थीं काली सड़कों पर कुछ रोबो खड़े या बैठे थे. रोबो-1 और यह दल अभी सड़क तक नहीं पहुंचा था. दल चुपचाप चल रहा था. सारे ग्रह में एक अजीब शांति थी. चुपचाप काम करने वाले रोबो-समुदाय के अतिरिक्त कोई भी जीवित प्राणी नहीं दिखलाई पड़ रहा था. सड़कों पर कोई सवारी नहीं थी, क्योंकि सड़कें स्थिर नहीं थीं. एक सड़क धीरे-धीरे अपने स्थान पर चल रही थी और दूसरी सड़क काफी तेजी से चल रही थी. ये चलने वाली सड़कें थीं. रोबो समुदायों में सबसे अधिक असर सफेद लबादे वाले रोबो समुदाय का था. यह दल अभी आगे बढ़ रहा था कि हल्के गुलाबी रंग का लबादा पहने एक रोबो आया. वह साफ-साफ हिंदी में कहने लगा : "रोबो -1 की आज्ञा के अनुसार मैं आपका दुभाषिया हूं. आप लोग निस्संकोच जिस चीज की आवश्यकता हो, कहें. मैं आपका सेवक हूं. साम्राज्य की विज्ञान-परिषद के अध्यक्ष की यही आज्ञा है कि आप लोगों को कोई कष्ट न हो."

क्रू-कमांडर ने उस रोबो से हाथ मिलाते हुए पूछा, "आपका नाम क्या है? मुझे कमांडर सुब्रत कहते हैं."

"जी, मेरा नंबर-17 है और भाषा-विशेषज्ञ हूं. ब्रह्मांड की सात सौ भाषाओं को बोल और समझ सकता हूं. रोबो-समुदाय में हमारा परिवार सबसे छोटा है. हमारे परिवार में केवल सात सदस्य हैं. हर दसवें साल हमारे परिवार में एक की मृत्यु होती है और हर नवें साल एक जन्म होता है. क्या आप अपने मित्रों का परिचय नहीं करवायेंगे."

सुब्रत ने अपने साथियों का परिचय करवाना शुरू किया. सफेद लबादे वाला रोबो-1 चुपचाप खड़ा था. शायद वह बोल नहीं सकता था.

सुब्रत ने बताया, "यह हैं भौतिकशास्त्री अल्बर्ट ग्राहम (अमरीकी), जीवशास्त्री ग्रसिनोव (सोवियत संघ), रसायनशास्त्री मोरखिया (फ्रांस) जीवाणु-विशेषज्ञ हाउ-चे-फुंग (बर्मा), गणितज्ञ तकू सलेमान (मले-शिया), इंजीनियर गमाल अब्देल हुसेनी (अरब), वनस्पतिशास्त्री लुबेमाशो (अफ्रीका), और मुझे आप जान ही चुके हैं."

परिचय के बाद वे लोग सड़क पर सवार होकर अनजान लक्ष्य की ओर बढ़ रहे थे. धरती के प्राणियों का यह दल अत्यधिक आश्चर्य में था कि कहीं कोई प्राणी नहीं दिखायी पड़ रहा है. चारों ओर सुंदर बगीचों के अलावा अगर कोई चीज दिखलायी पड़ रही थी, तो वे थे विभिन्न रंगों के वस्त्र पहने रोबो. सड़क की रफ्तार कम से कम 70 किलो-मीटर प्रति घंटा थी. कोई 90 मिनट बाद रोबो-17 ने कहा, "श्रीमान, आप लोग उस सामने वाली हरी बत्ती से इस सड़क से उतरकर नीचे वाली सड़क पर चले जायें."

चंद मिनट के बाद सारा दल एक कम चौड़ी सड़क पर था. अब दूर कुछ चमकती हुई खिड़कियां नजर आ रही थीं. सारा क्रू आपस में इस आश्चर्यजनक ग्रह के विषय में बातें कर रहा था. उनके कैमरे जगह-जगह तस्वीरें ले रहे थे. कहीं-कहीं पर उन्हें अजीब किस्म की मशीनें दिखलायी पड़ रही थीं, लेकिन मशीनों को चलाने वाले भी रोबो ही थे.

सुब्रत का सारा दल एक विशाल आठ-मंजिला इमारत के सामने पहुंच गया. रोबो-17 और रोबो-1 ने झुककर इस मकान का अभिवादन किया. उनकी कृत्रिम आंखों में भय की हल्की-हल्की झलक का अनुभव सुब्रत ने किया. रोबो 17 ने सुब्रत को बताया कि यही साम्राज्य की विज्ञान परिषद है. सुब्रत और उसके साथियों ने अभिवादन के लिए अपनी टोपियां उतार लीं. सुब्रत ने रोबो-17 से कहा; "हम लोग सबसे पहले विज्ञान-परिषद के अध्यक्ष से भेंट करना चाहेंगे, क्योंकि उनके ही कृ... पूर्ण आमंत्रण के फलस्वरूप हम इस महान ग्रह की यात्रा करने में सफल हुए हैं."

"मैं आपको वहीं ले जा रहा हूं." रोबो-17 की आवाज में हल्का सा कंपन था. जिस गलियारे से यह दल जा रहा था, वह बिल्कुल शां... था. उसके दूसरे छोर पर एक लिफ्ट का दरवाजा नजर आ रहा था और सारा गलियारा एक बंद गुफा की तरह था. गलियारे की दीवारें, छतों और फर्श पर बिछे कालीन, सबका रंग बहुत हल्का नीला था, ... बहुत बड़ी थी. दल के सभी लोग अर्थात् आठ पृथ्वीवासी—और ... रोबो उसमें सवार हुए. लिफ्ट के रुकते ही रोबो-1 बाहर निकला और तेजी से सामने वाले दरवाजे के अंदर घुस गया. सारे लोग, मय रोबो-17 के, एक बड़े हाल के बीच में खड़े थे. हाल के चारों ओर बंद दरवाजे ... का एहसास हो रहा था. जिस दरवाजे में रोबो-1 गया था, वहां मशीनों के हल्के-हल्के चलने की आवाज सुनायी दे रही थी. एकाएक कमरे का सारा प्रकाश बुझ गया और चंद क्षणों बाद फिर से प्रकाश हो गया. रोबो-17 फुसफसाया; "आप लोगों की तलाशी हो चुकी है. मैं निर्देश के लिए रुका हुआ हूं."

चंद मिनटों तक हाल के अंदर श्मशान की सी चुप्पी छायी रही. फिर एकाएक रोबो-17 की आवाज सुनायी पड़ी, "आप लोगों के पास अस्त्र-शस्त्र हैं. आप कृपया इन कपड़ों को उतारकर दूसरे कपड़े पहन लें."

"लेकिन कपड़े कहां हैं?" सुब्रत ने कहा. और कुछ ही क्षणों में रोबो-1 के पीछे काले कपड़े पहने हुए चार रोबो गर्दन झुकाकर प्रविष्ट हुए. काले लबादे वाले रोबो शायद मजदूर थे. वे झुक-झुककर सब लोगों का अभिवादन कर रहे थे और उनके हाथों में किसी विचित्र पदार्थ के बने सूटकेस थे. आठों व्यक्तियों को एक-एक सूटकेस दिया गया ... 'रोबो-1' ने हॉल की दीवार पर लगे स्विच-बोर्ड की एक चाबी दबा...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और आठ छोटी-छोटी कोठरियां अंतरिक्ष-यात्रियों के लिए बन गयीं.

रबर जैसे किसी लचीले पदार्थ के आरामदायक कपड़ों का रंग हल्का नीला था. ज्यों ही कोठरियां गायब हुईं, रोबो-1 और रोबो-17 ने जमीन तक झुककर उन्हें सलाम किया. वे काले लबादे वाले रोबो तो जमीन पर लेट गये और उनमें से एक रोबो का सिर फट गया. फर्श पर छोटे-छोटे कल-पुर्जे बिखर गये. सुब्रत और उनके साथियों की समझ में नहीं आया कि यह क्या हो रहा है. रोबो-17 को संबोधित करते हुए सुब्रत ने पूछा, "रोबो-17, आप लोग क्यों हमारा इतना आदर कर रहे हैं?"

"आप इस ग्रह के साम्राज्य की विज्ञान-परिषद के सदस्य हैं और पहली बार हमने विज्ञान-परिषद के किसी सदस्य को आपके स्वरूप में देखा है. अब आपको खुली सड़क पर यात्रा नहीं करनी होगी अन्यथा हमारे रोबो-1 का मानसिक संतुलन खराब होने की आशंका है. जैसा कि आपने अभी देखा है, एक रोबो-11 की मृत्यु हो गयी, हमारे ग्रह क्वासर सिनोरिमा में इन नीले वस्त्रों और रंग का अर्थ होता है संकट. रोबो समुदाय में रोबो-1 और मेरे समुदाय के अतिरिक्त केवल चार और वर्ग ऐसे हैं, जो नीले रंग के साथ प्रत्यक्ष रूप से जुड़े हैं. खैर, ये सारी बातें आपको इतिहास-संग्रहालय में मालूम हो जायेंगी. आप लोगों की प्रतीक्षा विज्ञान-परिषद के अध्यक्ष कर रहे हैं. मैं और रोबो-1 आपकी प्रतीक्षा इसी कक्ष में करेंगे. आप दो मिनट बाद परिषद के अध्यक्ष के सम्मुख. . ."

"लेकिन रोबो-17, हम परिषद के अध्यक्ष से बात कैसे करेंगे? हमारी भाषा-परिषद के अध्यक्ष. . ."

रोबो-17 धीमी-सी, सुंदर खिलखिलाहट के साथ बोला, "विज्ञान-परिषद के अध्यक्ष से बातें करने में आपको कोई कठिनाई नहीं होगी. वह महान हैं, सर्वसंपन्न और ज्ञान का स्रोत हैं और वह. . ."

और तभी वह सारा फर्श, जिस पर सुब्रत और उसके साथी खड़े थे, नीचे की ओर एक लिफ्ट की तरह उतरने लगा. मंजिल-दर-मंजिल वह उतर रहा था. जब यह लिफ्ट रुकी तो तंकू सलेमान ने अपने साथियों को बताया कि उसने बीच-बीच में आनेवाली हर मंजिल की रोशनी को गिना है और वे जमीन के ऊपर की 8 मंजिलों को छोड़कर 120 मंजिल और नीचे उतरे हैं. अभी वे लोग अपना आश्चर्य जाहिर भी नहीं कर पाये थे कि एक आवाज सुनायी पड़ी :

"आपका स्वागत है, कमांडर सुब्रत! सामने का दरवाजा खोलकर अंदर आने का कष्ट करें." दरवाजा खोलकर यह दल अंदर प्रविष्ट हुआ. कमरे में हल्की-हल्की नीली रोशनी आ रही थी. सारा दल नीले रंग के सोफों पर खामोश बैठ गया. अल्ट्रा-वायलेट किरणों से उनका शुद्धीकरण हो रहा था. फिर सोफे के ऊपर एक बड़ा-सा पारदर्शी आवरण पड़ गया. इस आवरण ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया. श्वास की गंदगी को निकालने के लिए यह प्रक्रिया की गयी थी.

पांच मिनट आसानी से बीत गये. सुब्रत को लगा, जैसे उसका अभी-अभी जन्म हुआ हो. अब ये बिल्कुल साफ प्राणवायु में सांस ले रहे थे. फिर उन्हें वही आवाज सुनाई दी, "अब आप लोग मेरे विशेष कक्ष में आ रहे हैं. हम लोग विज्ञानलोक के वासी हैं, इसलिए आप किसी भी चीज को देखकर आश्चर्य-चकित न हों. कमांडर सुब्रत, सामने का दरवाजा खोलकर आप मेरे विशेष कक्ष में पहुंच जायें. मैं फिर आपका स्वागत करता हूं. आइये."

कमरे में घुसते ही जिस चीज पर उन लोगों की नजर पड़ी, वह आश्चर्य में डालने वाली थी. एक बड़े स्टैंड के चारों ओर किसी विशेष पदार्थ की बनी आठ कुर्सियां रखी हुई थीं. और स्टैंड के ऊपर एक पारदर्शी बर्तन में, जिसका आकार ग्लोब की तरह था, मानव-मस्तिष्क तैर रहा था. ग्लोबनुमा उस बर्तन के ऊपर एरियल-से लगे थे जिनमें धीरे-धीरे कंपन हो रहा था.

"बैठिये," भारी आवाज में नम्रता भी थी और आदेश भी, "मैं ही इस साम्राज्य की विज्ञान-परिषद का अध्यक्ष हूं. आप मेरे इस स्वरूप को देखकर आश्चर्य-चकित होंगे, पर इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है. मैं अमर हूं और हमारी विज्ञान-परिषद और ग्रह के सभी प्राणी अमर हैं. परिषद बगल के बड़े कमरे में बैठी हुई यह विचार-विमर्श कर रही है कि आप लोगों को विज्ञान की किन-किन उपलब्धियों से अवगत कराया जाये. मैं आपको इस क्वासर सिनोरिमा का थोड़ा-सा इतिहास सुनाता हूं, एक जमाने की बात है. अरे, मैं तो अपनी कहानी सुनाने के चक्कर में रह गया और भूल गया कि आप स्तनपोषी जीव हैं, आपके उदर में भूख नाम का रोग सदैव लगा रहता है. एक मिनट में आपके लिए भोजन आता होगा. आप लोग भोजन भी करें और इस ग्रह का इतिहास भी सुनें."

उन लोगों के सामने एकाएक मेजें आ गयीं, जिनमें भोजन लगा हुआ था.

एरियलों का कंपन बढ़ गया था. सुब्रत को लगा, जैसे अध्यक्ष बहुत भाव-विभोर हैं. अभी तक धरती का कोई प्राणी विज्ञानलोक के अध्यक्ष से बोला तक नहीं था. सुब्रत ने साहस करके कहना शुरू किया, "महा-महिम अध्यक्ष महोदय, सूर्य के सौर-मंडल में स्थित हमारे ग्रह का नाम पृथ्वी है. मैं पृथ्वी के समस्त निवासियों की ओर से आपका अभिवादन करता हूं. हमारा ग्रह आपके इस महान ग्रह की मित्रता चाहता है. हमें युद्ध और विनाश से नफरत है. हम आपकी बात सुनने और पृथ्वी तक आपके संदेश को ले जाने वाले पहले प्राणी हैं. हमें इस बात का गर्व है."

ऋग्वेद में अंतरिक्ष-यानों और अंतरिक्ष-वासियों का उल्लेख

ऋग्वेद के इस मंत्र से हमें ज्ञात होता है कि देवता नक्षत्र-निवासी हैं. 'वज्रधर इंद्र, वृत्र-वध के लिए तुम प्रसिद्ध मस्तों को उस समय प्रेरित करते हो, जिस समय तुम स्तोता कवियों का, नक्षत्रवासी देवताओं के प्रति, सुंदर स्त्रोत सुनते हो.'

● पंचम अष्टक के 33वें सूक्त में अनेक मंत्र ऐसे हैं, जिनसे पता चलता है कि मानव देवताओं और अप्सराओं से उत्पन्न हुए थे. जैसे: 'वसिष्ठ, विद्युत की भांति (देह धारण करने के लिए) अपनी ज्योति का परित्याग करते हुए तुम्हें मित्र और वरुण ने देखा था. उस समय तुम्हारा एक जन्म हुआ. इसके अतिरिक्त वासस्थान से अगस्त्य भी तुम्हें ले आये थे. और प्रकृष्ट ज्ञान वाले वसिष्ठ दोनों लोकों (पृथ्वी और स्वर्ग) को जानकर सहस्रदान वाले हुए थे. सर्व-नियंता (यम) द्वारा विस्तीर्ण वस्त्र (संसार प्रवाह) को बुनने की इच्छा से वसिष्ठ उर्वशी से उत्पन्न हुए थे.'

● अष्टम अष्टक के 61 वें सूक्त के कुछ मंत्रों में भी यही बात कही गयी है : द्युलोक हमारा और सूर्य का उत्तम उत्पति-स्थान है.' 'द्युलोक ही मेरा उत्पत्ति-स्थान है. यही मैं रहता हूं. सारे देवता मेरे अपने हैं.' 'उर्वशी-पुरुरवा कथोपकथन में उर्वशी कहती है, "मैं नाना रूपों में मनुष्यों में घूमी हुई हूं. मैंने मनुष्यों में चार वर्ष रात्रि-वास किया है."

● नक्षत्र-निवासी देवता पृथ्वी पर किस प्रकार आते थे, इस प्रश्न का उत्तर हमें ऋग्वेद में अनेक स्थलों पर मिलता है. अश्विनी कुमारों का त्रिचक्र रथ, अश्व और प्रग्रह के बिना अंतरिक्ष में परिभ्रमण करता है. एक अन्य मंत्र में ऐसे रथ (अंतरिक्ष-यान?) का विवरण है, जो पृथ्वी, स्वर्ग और अंतरिक्ष, तीनों लोकों में चलने में समर्थ था. कुछ अन्य मंत्रों में त्रिलोक में चलने वाले तथा आकाशचारी रथों का वर्णन है. □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"धन्यवाद!" अध्यक्ष की आवाज में इस बार हल्का-सा कंपन था. उन्होंने कहना शुरू किया, "हमारा यह ग्रह अपने केंद्रीय ग्रह, जैसा कि तुम्हारा सूर्य है, के चारों ओर 430 दिन में एक चक्कर लगाता है. समय की इकाई तुम्हारे ग्रह और हमारे ग्रह में एक है. एक दिन, जिसमें रात भी शामिल है, 24 घंटे का होता है और साल 430 दिन का. खैर, इसकी आवश्यकता इसलिए थी कि मैं तुम्हें इतिहास सुना रहा हूं और आशा कर रहा हूं कि जो भूलें हमने कीं, वे तुम अपने ग्रह में नहीं करोगे.

"मैं अपने इस ग्रह की सबसे बड़ी वेधशाला का अध्यक्ष था. हमारा विज्ञान द्रुत गति से बढ़ रहा था. हमारी आबादी एकाएक बढ़ने लगी थी, तमाम काम ऑटोमेशन से होने लगे थे कि एकाएक एक वायरस का जन्म हुआ. हमारी आबादी का नाश होने लगा और जब तक उस वायरस को समाप्त करते, तब तक उसने हमारे इस ग्रह से मादा नाम के प्राणी को ही समाप्त कर दिया. इस वायरस ने केवल स्त्री जाति का उन्मूलन किया. हमारे सर्जनों ने बहुत कोशिश की कि पुरुषों को गर्भ धारण करने योग्य बनायें, लेकिन वे पूरी तरह सफल नहीं हुए. ट्यूब-बेबी हमने बनाये, लेकिन उनकी आयु बहुत कम थी. धीरे-धीरे हमारी आबादी घटने लगी और हमने अपनी विज्ञान-परिषद में यह निर्णय लिया कि बची-खुची आबादी को अमर बनाने का काम शुरू किया जाये. लेकिन जब तक यह औषधि बनी, सारे ग्रह की आबादी तीन हजार रह गयी थी. संक्षेप में हमारे शल्य-चिकित्सकों ने इन तीन हजार व्यक्तियों के मस्तिष्कों को निकालकर इस नीले पदार्थ में रख दिया. यह नीला पदार्थ हमारा भोजन भी है और हमें सुरक्षित भी रखता है. शल्य के पूर्व ही हमारी विज्ञान परिषद ने मानसिक तरंगों के माध्यम से ऑटोमेशनों के नियंत्रण की विधि का अविष्कार कर लिया था. आपको हमारी तीन हजार आबादी के हर व्यक्ति के पास दस गुलाम मिलेंगे. उनका काम केवल अपने मालिकों के लिए भोजन जुटाना है. बाकी सारे काम, जैसे नये ऑटोमेशनों या रोबों बनाने आदि का काम सामूहिक कारखानों में होता है. सारी अनुभूतियां ध्वनि-तरंगों के माध्यम से हम तक पहुंचती हैं.

"हमारे पड़ोस के पांच अन्य ग्रह भी बिल्कुल इसी तरह के हैं. हम लोग अब केवल मानसिक अय्याशी के लिए अपने आविष्कार करते हैं. अपने विचार हम इन एरियलों से एक केंद्रीय नियंत्रणशाला में पहुंचाते हैं जहां से ये तरंगें विशेष कंप्यूटरों में चली जाती हैं और सफेद रोबो-1 तथा गुलाबी रोबो -17 इन विचारों को आधार बनाकर प्रयोग करते हैं.

"हमारी सारी आबादी लगभग एक करोड़ सालों से इसी प्रकार है. हम लोग बिना शरीर के हैं, लेकिन प्रकृति की सारी सुंदरताएं हमें अच्छी लगती हैं. जब हम टेलीविजन फिल्मों से बाहर के संसार के दृश्यों को तीन आयामों में देखते हैं तो हमें लगता है कि हम कितने सुखी हैं. आपकी धरती ने जब अपने छोटे-छोटे यान——जैसे यान पर आप लोग उड़कर आये हैं——हमारे आकाश में चलाये तो हमें कुछ परेशानी होने लगी. हमारे आकाश के रक्षक रोबो आपके यानों को यहां लाये और हमने उनका अध्ययन किया तो हमें लगा कि आपका विज्ञान अभी तक मशीनों और उपकरणों पर चल रहा है. तब हमने धरती को अपनी भाषा में रेडियो-संकेत भेजे. तब तक हमें आपकी भाषा का ज्ञान नहीं था. साथ ही, हमने गत आठ साल में चालीस बार अपनी उड़नतश्तरियों के माध्यम से आपकी धरती, उसके गुप्त विज्ञान की सारी जानकारी हासिल की. आपकी भाषा को हमने अपने फोनेटिक्स कंप्यूटरों में भर लिया और इस समय मैं अपने विचारों को इसी फोनेटिक्स कंप्यूटर में भेज रहा हूं, जहां से वे आपकी भाषा के प्रश्नों में बदलकर आप तक पहुंचते रहे हैं. हमारे गुलाबी रोबो-17 के मस्तिष्क-क्षेत्र में भी कंप्यूटर लगे हुए हैं. इन कंप्यूटरों का सीधा संबंध केंद्रीय कंप्यूटरों से है. और वहां से इनका संबंध जैविक मस्तिष्क से है. आपके यहां पहुंचने के बाद से केंद्रीय फोनेटिक्स का संबंध सीधे मैंने अपने साथ जोड़ रखा है.

"आपको मैं सारी बात बता चुका हूं. अब आपको मैं यहां की सा[...]जिक व्यवस्था के विषय में कुछ बतला दूं. हमारे विज्ञान जगत में जैवि[...] व्यक्ति तो समान हैं——यहां तक कि विज्ञान-परिषद भी वही अधिक[...] रखती है जो अन्य साधारण नागरिक रखते हैं——लेकिन ऑटमेशनों अर्था[...] रोबो-समुदाय में वर्ग-व्यवस्था है और वह बहुत कठोर है. आपका नीला रंग कुछ विशेष वर्ग के रोबो के लिए मृत्यु का संदेश होगा. हमारे नाग[...]रिक मात्र छह प्रकार के रोबो से सीधा संपर्क रखते हैं. नीले कम[...] नीला रंग, नीला प्रकाश अन्य प्रकार के रोबो के लिए मृत्यु है. इसलि[...] आप एक स्थान से दूसरे स्थान को जाते समय या तो बंद वाहनों में जायें या दूसरे वस्त्र पहनकर. आप जैसी चाहें, वही व्यवस्था करवा [...] हम भी ऐसे मेजबान हैं कि आपका साथ प्रत्यक्ष रूप से नहीं दे सकें[...] मैं कपड़ों के विषय में आपकी राय जानना चाहूंगा कमांडर सुब्रत."

सुब्रत के सभी साथियों ने एकमत से इस विचित्र संसार को देखने का निर्णय किया.

दो दिन में ही इन लोगों की भेंट सारे मस्तिष्कों से हो गयी. विज्ञान-परिषद ने इनके लिए ऑटोमेशनों और अन्य प्रकार के वैज्ञानि[...] फार्मूलों की माइक्रो फिल्में भी इसी दौरान तैयार कर लीं.

पांच दिन और बचे थे. अध्यक्ष ने उनसे प्रार्थना की कि वे इस सौर-मंडल के अन्य ग्रहों की यात्रा भी करें. इसके लिए कम से कम एक महीने की आवश्यकता थी. कमांडर सुब्रत ने अध्यक्ष को अपनी समस्या बतायी तो वह हंसने लगे. उन्होंने सुब्रत से कहा, "जानते हो, मेरा भी एक छो[...] बेटा था. एक प्रयोग के दौरान वह मारा गया. उसकी सूरत तुमसे ब[...] मिलती-जुलती थी. मैं चाहता हूं कि तुम ज्यादा-से ज्यादा दिन यहां र[...] अब तुम अपने यान में नहीं, हमारी उड़नतश्तरी में यहां से वापस जाओ[...] तुम्हारा यान तुम्हारी याद में यहीं रहेगा. तुम लोगों को अब सुषुप्त[...] की आवश्यकता नहीं है. एक साल में तुम लोग धरती पर प[...] जाओगे. . ."

सुब्रत को लगा जैसे वह अपने पिता के सामने खड़ा है. वह प्रस्ता[...] को ठुकरा नहीं सका. फिर उसने अध्यक्ष से कहा, "आप इतने अ[...] विज्ञान के स्वामी हैं. क्या आप कृत्रिम शरीर बनाकर उनमें नहीं [...] सकते?"

"हमने यह प्रयोग किया, लेकिन हमें लगा कि हमारे और ऑटो[...]शनों के बीच कोई खास फर्क नहीं रह जाता है और दुर्घटना होने[...] मृत्यु का भी भय रहता है. किसी भी प्रकार का दूषित वातावरण [...] लिए हानिकारक हैं. अब तुम लोग घूमो-फिरो. . ."

एक महीने तक धरती के वैज्ञनिक इस विचित्र सौर-मंडल में यात्रा करते रहे. वे विभिन्न ग्रहों की विज्ञान-परिषदों से मिलते, [...] हर जगह दोस्ताना स्वागत होता.

ठीक एक महीने बाद क्वासर की विज्ञान-परिषद के अध्यक्ष से [...] लेकर धरती के वैज्ञानिकों का यह दल-ज्ञान-विज्ञान के महासागर [...] माइक्रो-फिल्मों और कंप्यूटर टेपों में भरकर केप कैनेडी के लिए [...] हुआ.

वापसी की खुशी में और क्वासर को देखने के बाद सुब्रत [...] में यह विचार उठ रहा था कि यह अमरत्व जड़ता नहीं है? यह [...] अमरत्व है? क्या धरती का मानव भी शरीर विहीन अमरत्व का अ[...] हो सकेगा? उसनी अपने डायरी में लिखा: "क्वासर जैसे अमर प्रा[...] से हम नश्वर धरतीवासी बहुत सुखी हैं. हमें जीवन से प्यार है, [...] अपंगता से नहीं."

उड़न-तश्तरी में रोबो-17 ने उन्हें अंतिम बार नमस्कार किया [...] वह फिर जड़ अमरत्व की ओर उड़ चली जहां जीवन अमर हो[...] भी मृत्यु की सी कैद में गिरफ्तार था.

सुब्रत और उनका दल जब केप कैनेडी में उतरा. तो उनके [...] पर विजय की मुस्कान और अमर संसार की उदासीनता थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेतार का बच्चा

बोरिश गोर्बातोव

बोरीस गोर्बातोव चौथे-पांचवें दशक के रूसी कथाकारों में अग्रणी माने जाते रहे हैं. . . उनकी रचनाएं जहां एक ओर रूसी क्रांति के बाद की उपलब्धियों पर केंद्रित रही हैं वहीं उन्होंने अपनी रचनाओं में वैज्ञानिक-खोजों को मानव के हित में इस्तेमाल किए जाने के लाभालाभों की ओर संकेत दिए हैं. . .

यहां प्रस्तुत है चौथे दशक के उत्तरार्द्ध में लिखी गयी एक ऐसे डाक्टर की विपदगाथा जिसने शल्य उपकरणों के नहीं बल्कि वायरलैस के जरिए वह करिश्मा कर दिखाया जिससे उसके जीवन, उसके पेशे, विद्यार्थी जीवन के सपने, और हर वह चीज जो कभी उसने की थी या जिसे करने की क्षमता वह रखता था, सभी कुछ ने एक नया और असाधारण रूप धारण कर लिया. . .

खीरे के देश में मुसीबत आ गयी थी. यह आर्कटिक महासागर में एक छोटा-सा अलग-थलग द्वीप है. नक्शे में तो इस छोटे-से द्वीप का अपना भला-सा, बल्कि कवित्वपूर्ण नाम है, मगर आर्कटिक के वायरलैस आपरेटर इस द्वीप को खीरे का देश कहने का ही हठ किये हुए हैं. यह द्वीप अभी कुछ ही समय पहले खोजा गया. इस द्वीप ने जल्दी ही बहुत अधिक महत्व प्राप्त कर लिया. अन्वेषक खुशी से कहते, "अब तो हम आर्कटिक सागर के बहुत से रहस्यों का पता लगा लेगें." ऋतु-जांच करनेवालों ने राहत की सांस लेकर कहा, "मौसम के रसोई घर में एक और चूल्हा प्रकट हुआ है." नौजवान आर्कटिक अनुसंधानक अपनी दुल्हन की तरह ही खीरे के देश के प्यारे-प्यारे सपने देखने लगे.

इस तरह खीरे की शक्लवाला यह द्वीप बसने लगा. . .और सामने आयी आपद-विपद का सामना भी होने लगा. कहना चाहिए कि मुसीबत का नहीं, नेमत का. हां, बेशक वह नेमत ही थी. मगर यह बताना कठिन था कि वह नेमत क्या रुख लेगी. बात यह है कि एक नारी बहुत जोर से चीख रही थी. उसकी यह भयानक चीख सुनकर दिल दहल उठता था. जर्द चेहरेवाला मोटा-सा एक आदमी उसके ऊपर झुका हुआ था.

उस द्वीप में एक पड़ोसी से दूसरे पड़ोसी तक, एक द्वीप से दूसरे द्वीप के बीच कभी-कभी हजारों किलोमीटर का फासला होता है. और फिर वहां के किलोमीटर तो कैसे हैं! मगर वायरलैस आपरेटर. . . . . इन्होंने ही समूचे आर्कटिक में यह खबर फैलायी कि दूर-दराज के खीरे के देश में एक औरत सख्त मुसीबत में एक नये नागरिक को जन्म दे रही है. . .

उस दिन खीरे के देश से वायरलैस द्वारा एक निराशापूर्ण संदेश भेजा गया—मदद-मदद. मां और बच्चे को बचाने के लिए जो कुछ कर सकते हैं, कीजिए.

क्या किया जाये? संदेश प्राप्त करनेवाला वायरलैस आपरेटर बहुत ही क्षुब्ध हो उठा. उसने इयरफोन उतारे और अपने संचालक के पास गया. क्या किया जा सकता है? बेचारी औरत. . . और बच्चा?

संचालक और पार्टी कमिटी का सेकेट्री सोचने लगे कि किस तरह से नारी की मदद की जाये. हवाई जहाज द्वारा डाक्टर को वहां भेजना संभव नहीं था. इस समय एक भी हवाई जहाज नहीं था. फिर वह आर्कटिक जाड़े की अंधकार पूर्ण रात का सबसे भयानक वक्त था. पार्टी सेकेट्री इस सिलसिले में डाक्टर से बातचीत करने अस्पताल में गया.

डाक्टर का नाम था सेर्गेई मत्वेयिच. वह मामूली डाक्टर था. यह आदमी यद्यपि बहुत ही नीरस और काम से काम रखनेवाला था, तथापि आर्कटिक के स्टेशन पर वही एक ऐसा आदमी था जो खीरे के देश में तड़पती हुई औरत की सहायता कर सकता था. मगर कैसे?

"हमें उसकी मदद करनी चाहिए," पार्टी सेकेट्री ने कहा.

"यह तो ठीक है. . . . .उसे यहां ले आइये, मैं खुशी से उसकी मदद करूंगा. मगर आप मुझसे हवा में बच्चा जनवाने की आशा तो नहीं कर सकते न!"

"हमें उसकी सहायता करनी ही होगी, डाक्टर."

"वाह, यह भी खूब रही. मुझे एक हजार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किलोमीटर लंबे हाथ दे दीजिए ताकि मैं बीमार के बिस्तर तक पहुंच सकूं. मुझे ऐसी दूरबीनी आंखें दीजिए कि मैं एक हजार किलोमीटर तक देख सकूं. . ."

"हम आपको ऐसी बाहें भी दे देंगे और आंखें भी. . . . . और तब. . . . . ."

"मैं समझा नहीं आपकी बात. कैसे देंगे आप ऐसे हाथ. . . आंखें?"

"वायरलैस के जरिये. रोगी की दशा और जैसा कि आप कहते हैं बच्चे की स्थिति के बारे में आपको रिपोर्ट दी जायेगी और आप रेडियो द्वारा अपनी हिदायतें देंगे."

सेर्गेई मत्वेयिच भौचक्का-सा चुपचाप सेकेट्री का मुंह ताकता रहा.

खीरे के देश से संबंध जोड़ा गया. मुख्य आपरेटर ने सभी आर्कटिक स्टेशनों को सूचना दे दी—प्रसव का परिणाम आने तक अस्थायी रूप से बाकी स्टेशनों से लाइन कटी रहेगी.

डाक्टर परेशान था. वह जिस वातावरण का आदी था, उसकी कमी महसूस कर रहा था. उस वातावरण की, जो उसे आवश्यक संतुलन प्रदान करता था, दर्द से कराहती हुई नारी को कहे जानेवाले सांत्वना के शब्द कहने का आदी था.

मगर यहां तो कुछ भी ऐसा नहीं था. लाउडस्पीकर से घबराहट की हल्की-सी आवाज सुनाई दी. एक दम चुप्पी, मरीज नहीं, आहें-कराहें नहीं, दर्द. . . . . तकलीफ नहीं.

"हां, तो डाक्टर, क्या किया जाये?"

उसने वायरलैस आपरेटर की तरफ झुककर कहा, "देखो, डाक्टर से पूछो, इस समय बच्चा किस स्थिति में है?"

बहुत उत्सुकता से उसने अपने शब्दों को मटर के दानों की भांति बिंदुओं और रेखाओं में बिखरते और फिर वातावरण में उड़ान भरते हुए देखा. एक-दो मिनट बाद जवाब आया.

सेर्गेई मत्वेयिच ने जवाब पढ़ा और उसके माथे पर चिंता की रेखाएं उभर आयीं. इस तरह दूर नियंत्रण विधि द्वारा बच्चे जनवाने का काम शुरू हो गया. . .

"हूंह. . . तो बच्चा आड़ी स्थिति में है. . . और उधर का डाक्टर सर्जन भी नहीं है. मामला टेढ़ा है. देखो, मेरे सहयोगी से पूछो," उसने आपरेटर को संबोधित करते हुए कहा, "क्या वह बच्चे को घुमाने का ब्राक्सटन—हिक्सटन तरीका जानता है या कम से कम उसने इसके बारे में कुछ सुना है?"

जवाब वही मिला, सेर्गेई ने जिसकी आशा की थी. "सुना तो है, पर कृपया बिला झिझक पूरी-पूरी हिदायतें दें कि मुझे क्या करना है."

"स्पिरिट और आयोडीन में अपने हाथों को अच्छी तरह से धो लो. अपनी सभी उंगलियों पर खूब आयोडीन लगाओ, मियां, उन्हें दस मिनट तक धोते रहो." डाक्टर ने कहा. वायरलैस आपरेटर ने जो मानो किसी पवित्र रस्म को पूरा करने में सहायक का काम कर रहा हो, 'मियां' समेत सभी कुछ प्रसारित कर दिया.

खीरे के देश में उपस्थित डाक्टर ने सादर उत्तर दिया कि उसने हाथ धो लिये हैं.

"ठीक, अच्छा, अब नारी को छूत और कीटाणुओं से बचाने के लिए. . ." उसने एक कागज पर विस्तारपूर्वक अनुदेश लिखकर दिये. एक बार फिर उसने जिज्ञासा और आश्चर्य से अपने शब्दों, अपने विचारों को एक हजार किलोमीटर की दूरी पर प्रसारित होते देखा. उन्हीं विचारों को जो एक मिनट पहले तक उसके दिमाग में बंद थे. जीवन में पहली बार वायरलैस आपरेटर के लिए उसके दिल में आदर की भावना पैदा हुई.

आपरेटर भी मौके के महत्व को समझता हुआ बहुत सावधानी से चाबी को दबा रहा था ताकि कोई गलती न हो जाये. वह जवाब भी धीरे-धीरे लिखता.

"जरा धीरे. . ." वह दूसरी ओर के आपरेटर से कहता, "एक भी अक्षर की गलती होने से जच्चा-बच्चा की जान पर बन सकती है."

"अब आगे चलो," डाक्टर ने कहा.

अब निर्णायक घड़ी निकट थी. . .

"तो यह बात है," डाक्टर ने कहा और मुस्कराया, "बच्चेदानी का दहाना ढाई अंगुल के बराबर खुला है, यही न? खैर कोई बात नहीं. हम ब्राक्सटन-हिक्सटन तरीके का इस्तेमाल करेंगे."

वह वायरलैस सेट के नजदीक आया. उसने ऊंची आवाज में कहा, "अपने दायें हाथ की दो उंगलियां अंदर डालो और बच्चे का पांव पकड़ने की कोशिश करो."

चाबी खटखटायी, बिंदु-बिंदु और डेश. . . . और अब सभी तरह की उल्टी-सीधी बातें डाक्टर के दिमाग से निकल गयीं. अब वह अपने सामने सिर्फ अपने मरीज को देख रहा था, वह खुद ही अपनी दो उंगलियां अंदर डाल रहा था. उसे जच्चा की आहें-कराहें सुनाई दे रहीं थीं. वह बच्चे के पैर की कोमलता अनुभव कर रहा था. असहाय बच्चे की, एकदम. . .

"सावधानी से!" डाक्टर चिल्लाया और आपरेटर ने चाबी खटखटाकर ये शब्द प्रसारित कर दिये. "हाथ को पांव समझने की गलती मत करना. एड़ी ढूंढ़ो, मियां. अच्छी तरह से जांच लेना कि वह एड़ी ही है वरना तुम बच्चे को हाथ से भी पकड़ सकते हो. कभी-कभी ऐसा हो जाता है. . ."

उधर का डाक्टर घबराया हुआ था. मगर सेर्गेई मत्वेयिच की सहायता से उसकी हिम्मत बंधी.

"मैंने पांव पकड़ लिया है," सेर्गेई मत्वेयिच ने रेडियोग्राम पढ़ा.

"ठीक है, अब पांव से बच्चे को घुमाओ. . ."

"सकुशल घुमा दिया. . ." आपरेटर के कंधे पर झुकते हुए सेर्गेई ने पढ़ा.

"बच्चे के दिल की धड़कन की ओर ध्यान दो," सेर्गेई गुस्से से चिल्लाया, "उसके दिल की धड़कन संभालो."

"दिल बिल्कुल ठीक-ठीक और साफ धड़क रहा है," आपरेटर ने जवाब पढ़कर सुनाया.

मगर ये आपरेटर के शब्द नहीं थे जो उसने सुने. नहीं! यह तो मां के गर्भ में धड़कनेवाला बच्चे का दिल था जिसे उसने सुना था. . . .

प्रसव पीड़ा शुरू हो गयी थी. खीरे के देश से अब जल्दी-जल्दी संदेश आने लगे थे. वहां का डाक्टर रोगी की दशा, दर्द के अंतरों के बारे में संक्षिप्त सूचना देता और पति उसके साथ अपनी ओर से जोड़ता, "बहुत तकलीफ हो रही है उसे. . . भयानक तकलीफ. . . . ."

"बच्चे के दिल की धड़कन की ओर ध्यान दो. . ." सेर्गेई बार-बार हिदायत देता.

. . . . तीन घंटे गुजर चुके थे. वह पूरे तीन घंटे से इसी काम में जुटा हुआ था. अब वह अपने को बिल्कुल थका-टूटा महसूस कर रहा था. उसमें बिल्कुल हिम्मत नहीं रही थी. क्या जल्द ही यह काम सिरे चढ़ जायेगा. . . रेडियो द्वारा बच्चे जनवाने का यह असाधारण काम?

अचानक आपरेटर खुशी से चिल्ला उठा, "लड़का! लड़का! यह देखिये!" उसने संदेशवाला पुर्जा डाक्टर के हाथ में दिया.

हर कोई डाक्टर से हाथ मिलाना चाहता था. उसे बधाई देना चाहता था. मगर सेर्गेई मत्वेयिच वहां बैठा था—खोया-खोया-सा, अवाक्-अचेत-सा. वह उनकी ओर देख रहा था, पर कुछ भी समझ नहीं पा रहा था. उसने संदेश पढ़ा, मगर शब्द उसकी समझ में नहीं आये. उसने लोगों को बधाइयां देते सुना, मगर समझ नहीं पाया कि ये क्या कह रहे थे. वह चकरा गया था. भावुक हो उठा था.

अचानक उसका सारा जीवन, वह खुद, उसका पेशा, विद्यार्थी जीवन के सपने और हर वह चीज जो कभी उसने की थी या जिसे करने की क्षमता वह रखता था, सभी कुछ ने एक नया और असाधारण रूप धारण कर लिया था. . . ☐

संक्षिप्त रूपांतर : वीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिचर्चा

कैसा होगा कंप्यूटर युग का मानव और उसका साहित्य?

आयोजक : सुधांशु गुप्त

विज्ञान ने आदमी के मस्तिष्क की तरह काम करनेवाला एक यंत्र ईजाद किया है— कंप्यूटर . . . आज धीरे-धीरे कल्पनाशील आदमी की जगह कल्पनाविहीन कंप्यूटर लेता जा रहा है. इस स्थिति का असर व्यापक रूप से संपूर्ण विश्व समाज पर पड़ेगा. जिस तरह दुनिया तेजी से छोटी होती जा रही है, उसमें विश्व को खंडित करके देखना कुछ मूल समस्याओं से आंखें मूंदना है. कंप्यूटर युग मानव समाज के प्राण—साहित्य को किस तरह प्रभावित करेगा . . . तब साहित्य का सर्जक कौन होगा. . . कैसा होगा साहित्य . . किसके लिए होगा . . . क्या उपयोगिता रह जायेगी उसकी मानव के जीवन में? इन और ऐसे तमाम संभाव्य सवालों का जवाब तलाश रहे हैं अपने-अपने तईं आज के ये कुछ रचनाकार—

आशंका व्यर्थ है

गंगाप्रसाद विमल

मनुष्य की मूल समस्या उसके अपने अस्तित्व से संबंधित है. अपनी स्थिति को बेहतर बनाने के लिए ही उसने समय-समय पर अपने ही द्वारा किये गये आविष्कारों को मानवोपयोगी बनाने की कोशिश की है. कंप्यूटर भी उसी शृंखला की चीज है. अतः उससे जिस प्रकार की बेचैनी की कल्पना आप कर रहे हैं—वैसी कोई स्थिति नहीं आयेगी. कंप्यूटर 'मानव-स्मृति' के लिए बहुत उपयोगी है— उससे आप अपने उपयोग की एक व्यवस्था कायम कर सकते हैं. उससे आप अपने प्रतिरोधी का हिसाब-किताब भी रख सकते हैं, उसकी अनेक दिशाएं हैं.

थोड़ा गहराई से विचार करें तो कंप्यूटर अभी मानव-विवेक का विकल्प नहीं बना है. उसका 'संचालन' अनेक विधियों से अंततः मनुष्य के ही हाथ है. मनुष्य का विवेक ही उसमें प्रतिगुंजित होता है. अब यदि बीमार मानसिकता के हाथ कंप्यूटर का संचालन है तो वह विवेकहीन दृष्टि से उसका उपयोग करेगा. ऐसा शायद आज भी हो रहा है. कंप्यूटर वैज्ञानिक किन्हीं राष्ट्रीयताओं और राजनैतिक संकीर्ण दृष्टियों के हाथ बंधक हैं. वे उसका मानव-विरोधी प्रयोग कर सकते हैं. मनुष्य को भयभीत करने का काम एक तलवार, एक बंदूक और एक कंप्यूटर कर सकता है—पर वह स्वयं किसी अपराध के लिए 'स्वायत्त' हाथ का विकास नहीं करता.

इसमें संदेह नहीं है कि कंप्यूटर का प्रयोग बहुत व्यापक स्तर पर होगा. 'फ्यूचर शॉक' के लेखक ने 'थर्ड वेव' नामक अपनी पुस्तक में जो अटकलें दी हैं, वे बताती हैं कि कंप्यूटर के सघन प्रयोग के दौर में आदमी सिर्फ अपनी कोठरी में ही बैठा मिलेगा. उसके व्यक्तिशः सामाजिक संपर्क कट जायेंगे. उस वक्त कंप्यूटर प्रयोग का प्रभाव पड़ेगा ही. उस वक्त का मनुष्य जैसे स्वयंसिद्ध स्थिति में पहुंचकर बेहद अकेला, उकताया हुआ, थका हुआ, बेचैन तो होगा ही. आज भी तो अपनी संकीर्णताओं के पिंजरे में बंद लोग ऐसे ही हैं. उनका साहित्य के 'शब्द' से कोई रिश्ता नहीं है. ऐसे लोगों का तो समाज से संपर्क कट गया है. इवान एलिच ने कहा है कि यह नये आदिम युग की शुरुआत है. अपनी कंक्रीट निर्मित गुफाओं में एकांत-वास करनेवाले आदमी! यह कल्पना भयावह है.

साहित्य बहुत बार मनुष्य के ऊपरी प्रभावों से अप्रभावित रहता है. वह बाहरी प्रभावों की बजाय उन हमलों से प्रभावित होता है, जो समय-असमय मनुष्य के विश्वासों पर होते हैं.

वास्तव में विज्ञान की प्रगति का एक पक्ष मनुष्य के विश्वासों को हताहत कर रहा है—पर एक दूसरा पक्ष भी है, जो आदिम रूप से बेसहारा मनुष्य की आत्मा को, उसके बेघर हो जाने के भाव को सुरक्षा देने की चेष्टा में लगा है. ऐसे विज्ञान से बहुत कम लोगों का सामना होता है.

साहित्य से ही हमारे विराट समुदायवादी समाज में अधिसंख्यक लोगों का सामना कहां है? यही कारण तो है कि हम अभी भी जैसे शुरुआत की दहलीज पर खड़े हैं, परंतु इस विभ्रम से, हताशा के चरम अंतिम बिंदु से आदमी को अगर कोई आश्वस्त करता है तो वह यही शब्द है, जो सीधे 'मर्म' को छूता है. साहित्य यही काम करता है.

हो सकता है, लोगों को यह तरफदारी लगे, परंतु हर दौर में, जब-जब आदमी अंधेरे युगों में भटका है, तब-तब उसे संस्कृति के छूटे हुए सूत्रों से रोशनी मिली है.

कविता और साहित्य की 'प्रोग्रामिंग' का कंप्यूटर सिर्फ आदमी है. इसलिए मैं सोचता हूं, शायद वह सब कुछ कभी घटेगा ही नहीं, जिससे हम लोग आशंकित हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बचकानी उछलकूद

मृदुला गर्ग

भारतवर्ष के संदर्भ में कंप्यूटर क्रांति या कंप्यूटर युग की बातें करना मुझे बहुत बेमानी लगता है. हवाई जहाज के टिकट कंप्यूटर द्वारा आरक्षित होने या टेलीफोन अथवा बिजली के बिल कंप्यूटर से बनने से देश में कंप्यूटर युग नहीं आ जाता.

कंप्यूटरों के लगने से यहां सिर्फ इतना होता है कि गलतियों के लिए आदमी मशीन को दोषी ठहराने लगता है, गलतियां होती पहले से भी ज्यादा हैं. केवल हार्डवेयर लगाने से क्या होगा; साफ्टवेयर भी तो चाहिए और लोगों में कंप्यूटर तकनीक का भरपूर ज्ञान भी.

जहां तक साहित्य का सवाल है, वह तो स्थितियों के बावजूद लिखा जाता है, स्थितियों के कारण नहीं; उसका औचित्य तत्काल मिलना कठिन है. जिस तरह अब तक लिखा जाता रहा है, एक-दो प्रतिशत जनसंख्या के कंप्यूटर दीक्षित होने के बाद भी लिखा जाता रहेगा. हां, इतना जरूर होगा कि कुछेक लेखक पुस्तक प्रकाशित करवाना छोड़ दूरदर्शन के लिए सीरियल लिखना शुरू कर देंगे.

दरअसल हमारे देश के एक-दो प्रतिशत हिस्से में जो मिनी-विदेश बसा है, उसी में आती है कंप्यूटर क्रांति और उसी में पढ़ा जाता है लोकप्रिय साहित्य, वह पुस्तकों में लिखा हो या टी. वी. पर बांचा जाये.

जहां तक मानवीय मूल्यों के ह्रास का सवाल है, मैं समझती हूं कि उसका कारण वैज्ञानिक संस्कृति नहीं, महाजनी संस्कृति है.

समय किसी के कहे से आता-जाता नहीं. 20वीं सदी के बाद 21वीं सदी का आना लाजिमी है, सो वह आयेगी. उसका नारा बना लेना बचकानी उछलकूद के सिवा कुछ नहीं है. पर ठीक है, बच्चों को भी खुश रहने के लिए कुछ तो चाहिए. बाकी अपना देश तो 16वीं शताब्दी की सुविधाएं भी जनता को उपलब्ध नहीं करा सकता. जहां जो लिखा जाता है, वही पढ़ने के लिए जनता शिक्षित नहीं है, वहां जो नहीं लिखा जा पायेगा, उसकी बात ही क्या करनी?

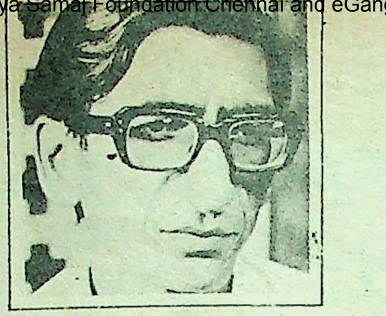

गिने-चुने लोग ही बचेंगे

योगेश गुप्त

कंप्यूटर, जिसे आज सबसे 'सोफिस्टकेटेड' मशीन माना जाता है और जो मशीन युग का प्रतिनिधि यंत्र बन गया है, अपनी कार्यप्रणाली में आदमी से भिन्न नहीं है. लेकिन एक तत्व, जो कंप्यूटर में नहीं होता है, वह है मस्तिष्क में पायी जाने वाली कल्पना शक्ति और भावप्रवणता. लेकिन इस नये युग की त्रासदी यह है कि मशीन एक स्तर पर आदमी को निरंतर हरा रही है और उसे अपनी तरह काम करने के लिए बाध्य करती है. यह प्रक्रिया तीव्र गति से सभी देशों में जारी है और पूरे विश्व में आज एक संभावित विज्ञान-प्रदत्त पूर्ण विनाश की आशंका है.

अब प्रश्न उठता है कि साहित्य दरअसल है क्या और इस आतंकपूर्ण स्थिति का साहित्य पर क्या प्रभाव पड़ रहा है. सरल से सरल भाषा में यदि कहें तो साहित्य आदमी और पूरे वातावरण के आपसी संबंधों के उतार-चढ़ाव का बैरोमीटर है. वातावरण का अर्थ यहां व्यापक अर्थों में हुआ तो यही आदमी जब मशीन के माध्यम से अपना संबंध वातावरण से जोड़ेगा तो निश्चय ही अपनी कल्पनाशीलता और भावप्रवणता में से कुछ खो देगा. यही संभवतः अमानवीयकरण की प्रक्रिया है और इस अमानव द्वारा रचित साहित्य निश्चित रूप से ऐसा साहित्य होगा, जिसकी प्रभावोत्पादकता कम से कम होती जायेगी यानी यह कुछ तथ्यों और कुछ घटनाओं का ब्यौरा मात्र होगा. यह साहित्य न व्यक्ति के भावबोध को समृद्ध करेगा और न उसके आवेगों, संवेगों को तीव्र. इस साहित्य का मनोरंजन भावप्रसूत न होकर तथ्यप्रसूत होगा.

यदि साहित्य किसी स्वरूप में पढ़ा जा सकेगा तो वह ऐसा साहित्य होगा, जो विज्ञान द्वारा उद्‌घाटित संसार से भी अधिक आश्चर्यजनक होगा. समस्या को संपूर्ण मानव समाज के संदर्भ में देखा जाना चाहिए. इसके प्रभाव को जांचने के लिए न विश्व को क्षेत्रों में बांटा जा सकता है, न समाज को वर्गों में. आज जो भी पश्चिम में हो रहा है, छूत की बीमारी की तरह, पूर्व तक आयेगा ही.

यह संभावना एक भ्रांति है

डॉ. हरदयाल

वैज्ञानिक दृष्टि से उन्नत देशों में मनुष्य के जीवन में कंप्यूटर बहुत तेजी से प्रवेश कर रहा है. अन्य देशों में भी उसका प्रसार होगा. इससे मनुष्य का जीवन प्रभावित होगा. प्रभाव का स्वरूप जो भी होगा, साहित्य में वही प्रतिबिंबित होगा, लेकिन कंप्यूटर युग में भी मनुष्य की मौलिक प्रवृत्तियां बदल जायेंगी, यह नहीं कहा जा सकता. उनमें जो परिवर्तन होगा, वह बहुत कुछ ऊपरी होगा. अतः कंप्यूटर-युग में जो साहित्य रचा जायेगा, वह अब तक की साहित्यिक परंपरा की ही अगली कड़ी होगी.

कुछ लोग सोचते हैं कि कंप्यूटर-युग में साहित्य रचना कंप्यूटर करेगा. हमारे विचार से यह एक सीमा तक ही संभव होगा. और कंप्यूटर की सहायता से जो साहित्य रचा जायेगा, वह अपनी यांत्रिकता के कारण विशेष महत्व का नहीं होगा. मनुष्य की मौलिक सृजनशीलता को कोई यंत्र कभी पूर्णतः प्राप्त कर पायेगा, यह मुझे संभव नहीं दीखता. साहित्य स्रष्टा की निजी प्रतिभा से प्रसूत साहित्य की विशिष्टता का महत्व जैसे आज है, वैसे ही भविष्य में भी रहेगा. कंप्यूटर-युग का मनुष्य स्वंय एक निर्जीव यंत्र बन जायेगा, यह संभव नहीं है. जब तक मनुष्य पूर्णतः निर्जीव यंत्र नहीं बन जाता, तब तक वह साहित्य रचता रहेगा. उस युग में भी उसके द्वारा रचा गया साहित्य उसके लिए प्रासंगिक रहेगा और उसकी नयी जीवन-पद्धति के अनुकूल होने के कारण नये समाज के लिए संगत होगा.

यह कहना गलत है कि वैज्ञानिक संस्कृति मानवीय मूल्यों के ह्रास का कारण बन रही है. वस्तुतः वैज्ञानिक उपलब्धियों के कारण अप्रासंगिक होते जानेवाले मूल्य नष्ट हो रहे हैं और नये मूल्यों का निर्माण हो रहा है. ऐसा मानव-समाज कभी अस्तित्व में नहीं आयेगा, जिसे मूल्यविहीन कहा जा सके. हां, संक्रमण की स्थिति में हमें ऐसा अवश्य लग सकता है कि भावी समाज मूल्यविहीन होगा, लेकिन भावी मूल्यहीन समाज की संभावना एक भ्रांति से अधिक और कुछ नहीं है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

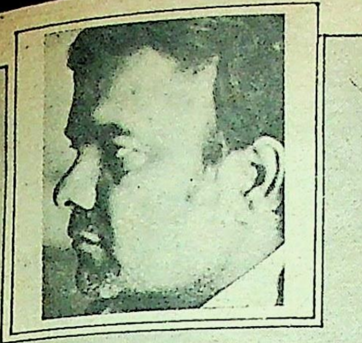

इक्कीसवीं सदी में साहित्य

ब्रजेश्वर मदान

इक्कीसवीं सदी में साहित्य का स्वरूप क्या होगा, निश्चय ही यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है. आज सबसे ज्यादा खतरा लिखित और मुद्रित शब्द के लिए नजर आ रहा है; प्रश्न यह है कि क्या हम लिखित शब्द को बचा पायेंगे. कहीं ऐसा तो नहीं कि कंप्यूटर क्रांति फिर आदमी को उस युग में ले जायेगी, जब लिखित शब्द का अस्तित्व नहीं था. 'स्पोकन वर्ड' दुनिया में लिखित शब्द से पहले था. सभ्यता के विकास के साथ लिखित शब्द अस्तित्व में आया तो वह बोलने और सुनने की बजाय लिखने और पढ़ने की चीज हो गया.

आज किताबें पहले की तरह नहीं पढ़ी जातीं. भारतेंदु हरिश्चंद्र, प्रसाद, प्रेमचंद पहले की तरह नहीं पढ़े जाते. किताबों की जगह दूरदर्शन और वी.सी.आर. जैसी चीजें लेती जा रही हैं. खास तौर पर भारत में, जहां अभी पूरी तरह साक्षरता का लक्ष्य भी पूरा नहीं हुआ, यह माध्यम आम आदमी को निरक्षरता से मुक्त किये बिना उस तक पहुंच गये. अमरीका की मिसाल लें तो वहां 'मीडिया' लोगों की सोचने-समझने की ताकत को खत्म कर रहा है. उसके लिए सोचने का काम 'मीडिया' करता है. उस तकनीकी प्रगति में वहां आदमी के पास न कोई अतीत है, न संस्कृति.

इसलिए यह खतरा तो है कि हम इस तकनीकी प्रगति के साथ कंप्यूटर के साथ जिस समाज में पहुंचेंगे, वह एक मूल्यविहीन समाज होगा. ऐसा समाज, जिसमें उन कलाओं के लिए जगह शायद नहीं होगी, जिनमें हमने अपनी, अपने अतीत और अपनी संस्कृति को जिंदा रखा. कोई बड़ी बात नहीं कि इक्कीसवीं सदी में कहानी और कविता जैसी चीज न रहे. कंप्यूटर ही कवि हो और कंप्यूटर ही लेखक. शब्द और साहित्य पुरातत्व की चीज हो जायें. साहित्य रहे भी तो वह अपना उद्देश्य खो दे.

आखिर कॉमिक्स और वीडियो गेम्ज के साथ ग्रो करने वाली पीढ़ी जब पंद्रह साल बाद जवान होगी तो आप अनुमान लगा सकते हैं, वह क्या पढ़ना चाहेगी.

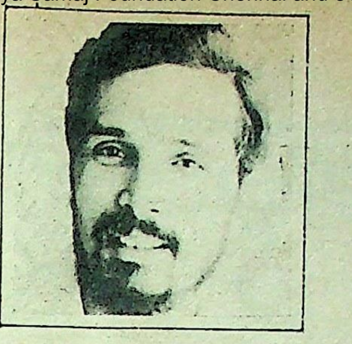

मूल समस्याएं वही रहेंगी

पंकज बिष्ट

हर नयी तकनालॉजी का प्रभाव मानव जीवन पर अनिवार्य रूप से पड़ता है. यह प्रभाव मानव की विकास यात्रा का ही परिणाम है. इसलिए इससे बचा नहीं जा सकता. हर तकनालॉजी के दो पहलू होते हैं. कोई तकनालॉजी अपने आप में खराब नहीं होती. असल में उसका वास्तविक रूप निर्धारित होता है उसके उपयोग करने से—यानी कौन उसका किस मकसद के लिए इस्तेमाल कर रहा है, पर जहां तक आपका कहना है कि मनुष्य की मूल समस्याएं बदल जायेंगी. यह मेरी समझ में नहीं आया. मूल समस्याएं तो वही रहेंगी. . . हां, ऊपरी तौर पर तो परिवर्तन आयेंगे ही, वह अन्य किस्म की समस्याएं पैदा करेंगे.

उस समय किस तरह का साहित्य लिखा जायेगा, यह कहना तो बड़ा मुश्किल है. चूंकि साहित्य समाज को अभिव्यक्त करता है, इसलिए उसके संगत न रह जाने का कारण भी मेरी समझ के बाहर है.

असल में जैसा कि मैं ऊपर कह चुका हूं विज्ञान या तकनालॉजी अपने आप में कोई ऐसे घटक नहीं हैं, जो कि मानव मूल्यों के ह्रास के लिए पूरी तरह जिम्मेवार हों. विज्ञान की प्रगति मानव विकास का ही एक अंग है. इसलिए यदि मूल्यों का ह्रास हो रहा है तो इसके लिए अन्य कारणों की ओर भी ध्यान दिया जाना चाहिए.

जहां तक मूल्यहीन समाज और साहित्य का संबंध है, उस पर यही कहा जा सकता है कि उसकी (साहित्य की) भूमिका और महत्वपूर्ण हो जायेगी. साहित्य का स्वरूप ऐसे समाज में क्या होगा, उस पर कोई क्या भविष्यवाणी कर सकता है, पर यह सच है कि साहित्य अपनी भूमिका के अनुसार ही स्वरूप निर्धारित करता है.

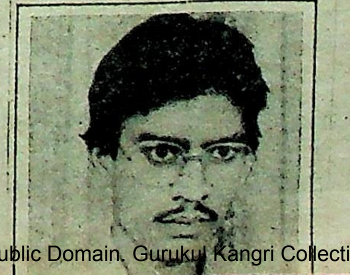

आयोजक

वर्गीय और विरोधी इस्तेमाल

उदय प्रकाश

लगता है पिछले एक-दो सालों से उद्योगों से लेकर संचार प्रणालियों तक में जिस तकनीकी विकास की बात की जा रही है और इसे जिस रूप में हमारे अखबार (अंग्रेजी के ज्यादा, हिंदी के कुछ कम) प्रस्तुत कर रहे हैं, उसी से यह डर पैदा हुआ है कि 'कंप्यूटर युग' का महामानव अब निकट भविष्य में साहित्य, संस्कृति और मानवीयता के सभी मानवीय मूल्यों को निगल जायेगा.

दरअसल हम दोहरे बनावट के समाज में रह रहे हैं. एक जो छोटा है, पर समृद्ध है, उसे आधुनिकता चाहिए, पश्चिम के औद्योगिक समाजों के समकक्ष और बराबर होने में ही उसकी गरिमा और पहचान बनेगी. और अपने इस आधुनिकीकरण के लिए वह भद्र समाज अपनी संस्कृति परंपरा मूल्य प्रणाली की ओर कम देखता है—वह पश्चिम से ही तकनालॉजी, संस्कृति और मूल्यों का आयात करता है.

लेकिन देश में जो हमारा ठेठ देसी और वृहत्तर समाज है और जो अपने मूल चरित्र में ग्रामीण, कस्बाई और पारंपरिक है, वह अपनी शर्तों और अपने देसी ढंग से आधुनिक होगा. जाहिर है कि जो इस देश का मूलप्रधान और महत्वपूर्ण साहित्य है, वह इसी व्यापक समाज के जीवन अनुभवों, संकटों और स्थितियों को लेकर लिखा गया है—भारतेंदु, प्रेमचंद से लेकर रेणु तक इसकी परंपरा रही है. दूरदर्शन के प्रसार, उद्योगों के कंप्यूटरीकरण, महानगरों के विकास से इस साहित्य की अस्मिता को कोई खतरा नहीं है. हां, वह साहित्य, जो मनोरंजन, बदलाव और बाजार को ध्यान में रखकर लिखा जाता है, उसका कायाकल्प भी होगा और हुलिया भी बदल सकता है. मुक्तिबोध या निराला के पाठक बाद में भी ऐसे ही साहित्य की खोज करेंगे. वह साहित्य सुरक्षित है.

विज्ञान इतना डरावना नहीं है. उसने बहुत विकसित और उदात्त मानव मूल्य भी दिये हैं. हम जिस लोकतांत्रिक व्यवस्था में रह रहे हैं, वह वैज्ञानिक विकास के बाद ही संभव हुई है. खतरा विज्ञान के वर्गीय और विरोधी इस्तेमाल से है, विज्ञान से नहीं. □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं मरना चाहता हूं

मोहन संजीवन

भारद्वाज सो गये हो क्या?... जरा उठो..."

"क्यों?" बिस्तर पर आराम करते-करते गहन चिंतन में डूबे भारद्वाज ने पूछा.

"तुम पिछले दस मिनट से बिल्कुल खामोश हो... तुम्हारी तबियत तो ठीक है या बोर हो गये हो?"

"तुम खामोश रहो, मैं बिल्कुल ठीक-ठाक हूं!" भारद्वाज ने खीजकर कहा और उसका घरेलू-कंप्यूटर चुप्पी साध गया.

भारद्वाज जब घर में रहता है तो उसका बोलना, चलना, खाना, सोना आदि हर गति-विधि को निरंतर अपने काम में लगा हुआ एक कंप्यूटर नोट करता है और उसके प्रत्येक व्यवहार की सूचना एक केंद्रीय-कंप्यूटर को प्रेषित करता रहता है. सिर्फ उस वक्त जबकि वह सोच रहा होता है, कंप्यूटर से उसका कोई संपर्क नहीं रहता. इसलिए नींद में रहने के अलावा बाकी वक्त में अगर वह कोई क्रिया नहीं करता तो कंप्यूटर हर दस मिनट बाद चुप्पी तोड़ देता है, वह पूछता—क्या आपको कुछ चाहिए?... मानो कह रहा हो—मुझे कोई काम दो!

जब समय बिताना मुश्किल हो जाता था तो वहां दीवार के पर्दे पर वह फिल्म देख सकता था, हवा में तैरता संगीत सुन सकता था और जब तबियत नासाज हो तो विद्युत. तरंगीय चिकित्सा उपलब्ध थी.

—क्या आपको कुछ चाहिए?... इस बार कंप्यूटर ने पूछा तो भारद्वाज की विचार-तंद्रा भंग हो गयी और उसने स्वयं को विचार मुक्त करते हुए कहा, "मेरा एक अनुरोध है."

—कहिए, कंप्यूटर ने कहा—मैं हाजिर हूं.

वह बोला, "मैं मरना चाहता हूं."

—मैं समझा नहीं...

"क्या नहीं समझे?"

—आपका कहा हुआ दूसरा शब्द... इसका मतलब क्या है?

"क्या तुम नहीं जानते कि 'मरना' क्या होता है?"

—यह मेरी कार्यक्रम-पद्धति में दर्ज नहीं है...

"तुम्हारा कार्यक्रम किसने तय किया है?"

—प्रमुख-कंप्यूटर ने...

"अच्छा, मुझे अपना स्मृति-कार्ड दिखाओ."

तभी दीवारी-पर्दे पर हरकत हुई. वहां कुछ शब्द उभर आये... जिनसे यह जाहिर होता था कि वह कंप्यूटर-रोबोट क्या-क्या काम कर सकता है. उन्हें पढ़कर भारद्वाज ने पूछा, "मैं तुम्हारे बारे में कुछ जानना चाहूं तो मुझे क्या करना होगा?"

—की-बोर्ड पर टाइप करके केंद्रीय-कंप्यूटर से पूछिए.

भारद्वाज ने एक बटन दबाया... उधर से कुछ आवाजें आयीं और वह की-बोर्ड पर उंगलियां चलाने लगा...

"मेरा कंप्यूटर खराब हो गया है..."

—आपके कंप्यूटर की जांच कर ली गयी है और वह बिल्कुल ठीक है... आप गलत कह रहे हैं.

"जो भी है, मेरा कंप्यूटर नहीं जानता कि 'मरना' क्या होता है?"

—आपने आखिर में क्या कहा?

"मरना क्या होता है!"

—यह तो मुझे भी नहीं मालूम... मेरी स्मृति में ऐसा कोई शब्द नहीं है.

तभी कमरे में लगी घंटी बज उठी. भारद्वाज खीज गया. फिर भी उसने रोबोट को हुक्म दिया कि दरवाजा खोल दो. दरवाजा खुला तो दो सुरक्षा अधिकारी अंदर आ गये. उन्होंने कहा, "आप हमारे साथ चलें."

"क्यों?... क्या माजरा है?"

"आप केंद्रीय-कंप्यूटर से अजीब तरह की पूछताछ कर रहे हैं और हमें आप पर संदेह है." कहते हुए एक अधिकारी ने उसे चुंबकीय-पत्र पर छपा हुक्मनामा भी दिखा दिया—'भारद्वाज को फौरन सुरक्षा-केंद्र में ले आओ.'

यह केंद्रीय-कंप्यूटर से जुड़े जासूस-कंप्यूटर का कमाल था और उसने सुरक्षा केंद्र को सूचना दी थी कि भारद्वाज ऊलजलूल सवाल पूछ रहा है. भारद्वाज पछताने लगा कि यह बात उसे क्यों याद नहीं रही!...

सुरक्षा अधिकारियों ने जो कुछ भी पूछा, उसने उसका सीधा-सीधा जवाब दे दिया. मगर

मुश्किल यह आन पड़ी कि वहां कोई भी ऐसा नहीं था, जो यह जानता हो कि 'मरना' का मतलब क्या होता है. सुरक्षा अधिकारियों ने इस मामले पर विचार-विमर्श किया और हमेशा की तरह निर्णय अपने सुरक्षा-कंप्यूटर के जिम्मे सौंप दिया. सुरक्षा कंप्यूटर ने निर्णय दिया—इसे शहर के डाक्टर वैज्ञानिक के पास भेज दो.

"यह कहता है, मैं मरना चाहता हूं." समझ नहीं आता कि यह क्या करना चाहता है!" डाक्टर वैज्ञानिक के पास पहुंचकर उन्होंने बताया तो वह भी हैरान रह गया.

"हूं!" वैज्ञानिक ने दिमाग पर जोर देते हुए कहा, "हमारे पास एक कंप्यूटर है... बहुत पुराना... जिसमें इस शहर के उद्भव की सूचनाएं दर्ज हैं... शायद उससे पता लग सके कि यह क्या चाहता है!"

काफी देर तक प्रश्न और प्रतिप्रश्न करते हुए वह पुराना कंप्यूटर अतीत में लौटता गया और उसके पर्दे पर अनसुने शब्द उभरने लगे:

जन्म... जवानी... रोग... बुढ़ापा... मौत.

"ये कौन-से शब्द हैं?" वैज्ञानिक बुदबुदाया. मगर कंप्यूटर जब निरंतर अतीत में पहुंचता गया तो ये शब्द अपने अर्थ सहित स्पष्ट हो गये.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

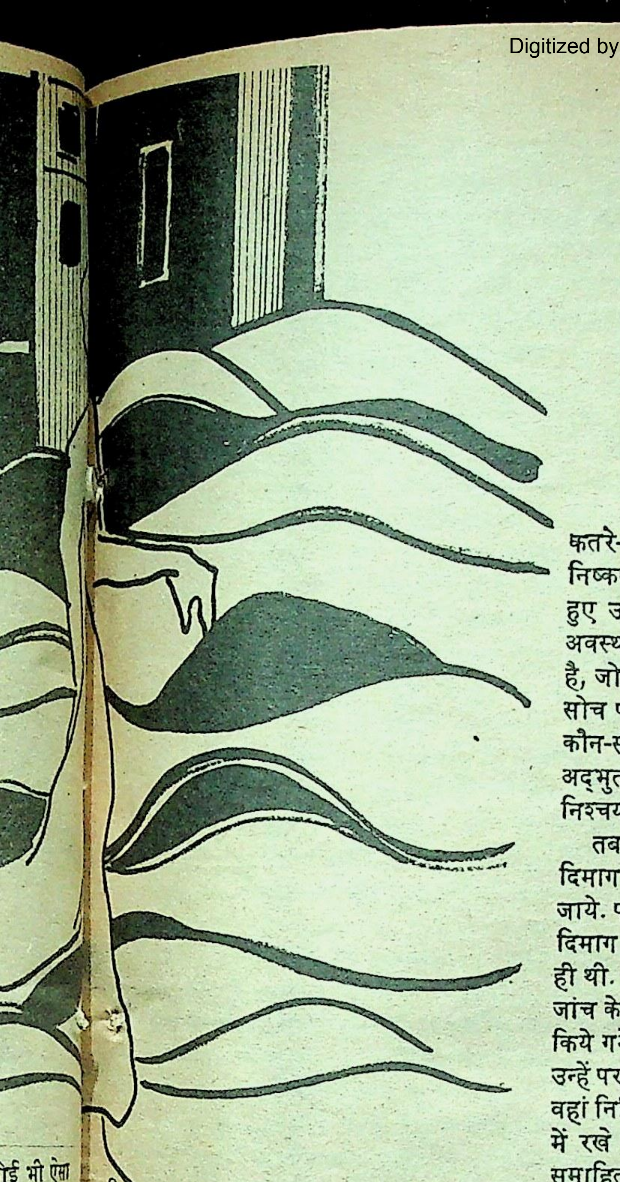

शहर जहां हर छोटा-बड़ा काम कंप्यूटर करते हैं! शहर जहां न कोई जन्म लेता है, न मरता है! शहर जहां हर कोई चिरयुवा है! . . . शहर जहां कोई नहीं जानता कि मृत्यु किस चिड़िया का नाम है!—तमिल के जाने-माने विज्ञान-कथा लेखक की कहानी, जो उस दुनिया का प्रारूप पेश करती है जबकि आदमी 'मौत के फ़रिश्ते' का नामोनिशान तक मिटा देगा . . .

कि . . पुराने वक्तों में मानव जन्म लेता था, जवान होता था, प्रौढ़ होता था, रोगग्रस्त होता था, वृद्ध होता था और फिर उसकी जीवनलीला समाप्त हो जाती थी और जीवनलीला समाप्त होने का अर्थ होता था—मौत यानी मरना! . . . यह तो बहुत बाद में आकर हुआ कि आयुर्विज्ञान के चमत्कार से मनुष्य अमर हो गया!

गजब! यह कैसा हुआ कि जनमदर बिल्कुल समाप्त हो गयी. जो लोग थे उन्हें ही एक खास उम्र के बाद, सदा-सदा के लिए चिरयुवा बना दिया गया. बुढ़ापा जड़ से खत्म हो गया! इसका इसका रहस्य थी—ब्रह्मांडीय ऊर्जा. शरीर में रोपे गये विद्युत कणों में हलचल मचाकर उसकी भौतिक ऊर्जा को नष्ट करके, उसका स्थान स्वयं लेते हुए उसे ब्रह्मांडीय ऊर्जा से संपन्न कर दिया गया. . . और इस प्रकार वहां से मौत का नामोनिशान ही मिट गया. शहर ने अमरत्व प्राप्त कर लिया.

परंतु अब जबकि 'मृत्यु' शब्द लोगों की स्मृति से भी लुप्त हो चुका था तब आकर यह अजीब विचार उसे क्यों और कैसे सूझा. . . वैज्ञानिकों ने भारद्वाज के शरीर की नस-नस और खून के कतरे-कतरे का परीक्षण किया पर वे किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच पाये. अब?. . सोचते हुए उन्हें एक बात सूझी कि शहर की वर्तमान अवस्था में भी परिवेश के भीतर कोई ऐसी चीज है, जो अपने अन्य गुणों के बावजूद, व्यक्ति की सोच पर इस प्रकार का असर डालती है. मगर कौन-सी चीज?. . . जवाब मिला—जीन. यह अद्भुत जीन शरीर के किस सेल में होगी?. . निश्चय ही मस्तिष्क में. . .

तब फैसला किया गया कि भारद्वाज के दिमाग में से उस सेल को खोजकर निकाल दिया जाये. परंतु ऐसा करने में वे झिझक गये, क्योंकि दिमाग की कार्यप्रणाली आज भी नाजुक मसला ही थी. इसलिए भारद्वाज के दिमाग की विस्तृत जांच के बाद खोज-बीन करके वैसे ही सेल तैयार किये गये जैसे कि उसके दिमाग में थे और फिर उन्हें परख के लिए प्रयोगशाला में ले जाया गया. वहां निर्मित दिमागी सेल डी. एन. ए. विश्लेषक में रखे गये. डी. एन. ए. विश्लेषक ने सेल में समाहित सोच और चिंतन को समाहित करके जो निचोड़ निकाला, वह केवल एकशब्दी ही था—मृत्यु!

तो यह माजरा था. जब 'मृत्यु' के तमाम जीन लोगों में से समाप्त करके यह शहर बसाया गया था, तब जरूर किसी वजह से भारद्वाज के जीन, सेल में ही रह गये होंगे, फलस्वरूप, भारद्वाज के अतीत को खोजा गया तो आश्चर्यजनक रूप से पता चला कि यह व्यक्ति मूलतः इस शहर का निवासी नहीं है.

तब वह कौन है?

कंप्यूटर ने जवाब दिया—'इसे सिंडरेला ग्रह से पकड़कर लाया गया था.' यह सुनकर उन्हें काफी राहत मिली अन्यथा उन्हें अपने प्रयोग पर ही संदेह होने लगा था. दरअसल, भारद्वाज को किसी अंतरिक्ष-युद्ध में बंदी बनाकर लाया गया था और उसे शहर में बसाने से पहले उसके मृत्यु-जीन-सेल नहीं निकाले जा पाये थे. यह शायद कंप्यूटर की किसी गड़बड़ी के कारण ही हुआ था.

अब इसका क्या किया जाये?

भारद्वाज को एक चैंबर में ले जाकर उसकी फिर से जांच करने के बाद, उसके मृत्यु-जीन, समाप्त करने के उद्देश्य से उस पर इस्तेमाल की गयी तकनीक भी अविश्वसनीय रूप से असफल होकर रह गयी. यहां तक कि यू-वी. रे, एक्स-रे और विकिरण भी उसके मृत्यु-जीन को जड़ से नहीं उखाड़ पाये. उन्होंने फिर कोशिश की मगर फिर भी कुछ नहीं हुआ. आखिर काफी देर विचार-विमर्श करके उन्होंने जो रिपोर्ट तैयार की वह इस प्रकार थी—

'भारद्वाज या किसी भी व्यक्ति को इस ग्रह पर मरने दिया जाये, यह नामुमकिन है. यहां ऐसे व्यक्ति को टिका पाना संभव नहीं जो मृत्यु के बारे में सोचता रहे, क्योंकि वह यहां के नागरिकों में 'मौत की अफ़वाह' फैला सकता है और इससे उनमें आश्चर्यचकित कर देनेवाली घबराहट और सनसनी फैल सकती है.'

इन सब बातों पर काफी गौर करके वहां के अधिकारियों ने निर्णय लिया कि भारद्वाज को वापस भेज दिया जाये.

कुछ दिन बाद भारद्वाज एक अंतरिक्षयान में बैठकर वापस अपने ग्रह सिंडरेला की तरफ चल दिया. वैज्ञानिकों ने 'मैं-मरना-चाहता-हूं' वाले जीव से आखिरी बार बात करने के लिए रेडियो-संपर्क के माध्यम से भारद्वाज का ध्यान आकर्षित करते हुए पूछा, "भारद्वाज, हम अपने नगर के लिए तुम्हारे अंतिम शब्द जानना चाहते हैं!"

"मैं मरना चाहता हूं!" भारद्वाज खुलकर हंसा.

'नहीं भारद्वाज, तुम मरना चाहते थे, क्योंकि तुम्हें बंदिश पसंद नहीं थीं. . . मगर अब जबकि तुम आजाद हो, तुम सचमुच मरना नहीं चाहोगे. तुमने हमें 'मृत्यु' की प्राचीन अवधारणा की जानकारी दी है और हम चाहते हैं कि तुम जियो, खूब जियो!"

मुझे नहीं मालूम कि हमारे ग्रह पर अब मृत्यु रही है या नहीं रही, पर मैं चाहता हूं कि रह गयी हो तो बेहतर है. फिलहाल मैं आजाद हूं और खुश हूं . . . और इस शहर के लिए मेरे अंतिम शब्द हैं—मैं मरना चाहता हूं!"

और उसे ले जानेवाला अंतरिक्षयान, ब्रह्मांड के समंदर में बड़ी तेज रफ्तार से सिंडरेला ग्रह के समीप पहुंचता जा रहा था. □

कथा रूपांतर : विपिन जैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान के नौ खरब नाम

आर्थर क्लार्क

"जो मांग की गयी है, वह कुछ . . . गैरमामूली है," डाक्टर वैगनर ने अपनी समझ में थोड़े संयत स्वर में कहा. "जहां तक मुझे मालूम है, अब तक किसी कंपनी ने किसी तिब्बती मठ को कोई ऑटोमैटिक सिक्वैंस कंप्यूटर नहीं बेचा है. मैं सिर्फ अपने कौतूहल को शांत करने की खातिर ही यह जानना चाहता था कि आप लोगों को इस प्रकार के कंप्यूटर की आवश्यकता क्यों है? यदि आप यह बताने का कष्ट कर सकें कि आप इसका क्या करेंगे, तो बड़ी कृपा होगी."

"मुझे यह बताने में कोई आपत्ति नहीं है," लामा ने अपने रेशमी वस्त्रों को ठीक करते हुए कहा. उसने वह स्लाइड-रूल भी परे हटाकर रख दिया, जो उसने मुद्रा-परिवर्तन की दरों को जानने के लिए बाहर निकाला था.

"आपका 'मार्क 5' कंप्यूटर दस अंकोंवाली कोई भी गणना या गणितीय प्रक्रियाओं को पूरा करके दिखा सकता है. पर हमारा कार्य ऐसा है कि उसके लिए हमें आपके इस कंप्यूटर के अंकों की नहीं, अक्षरों की आवश्यकता पड़ेगी. इसलिए, आपको अपने 'आउटपुट सर्किट्स' में कुछ ऐसे परिवर्तन करने पड़ेंगे कि वह कंप्यूटर अंकों के स्थान पर अक्षरों का निर्माण करे."

"आपकी बात अच्छी तरह समझा नहीं . . ."

"इस परियोजना पर हम पिछली तीन सदियों से काम करते चले आ रहे हैं—इस मठ की स्थापना के समय से ही. चूंकि आप लोग आसानी से इस योजना की कल्पना नहीं कर सकते, इसलिए आपसे निवेदन है कि आप मेरी बात को ध्यानपूर्वक और बिना किसी पूर्वाग्रह के सुनें."

"कहिये."

"बात बहुत सीधी-सादी है, और आसानी से आपकी समझ में आ जायेगी. हम लोग एक ऐसी सूची तैयार कर रहे हैं, जिसमें भगवान के सब संभव नाम आ जायें."

"क्षमा कीजिये, मैं आपकी बात फिर नहीं समझ पाया."

"हमने जिस एक नयी वर्णमाला का आविष्कार किया है, उसमें भगवान के सब संभव नाम नौ अक्षरों में पूरे हो जाते हैं."

"और आप लोग यह काम पिछली तीन सदियों से करते चले आ रहे हैं?"

"हां. हमें आशा थी कि इस कार्य के पूरा होने में पंद्रह हजार वर्ष लगेंगे."

"ओह!" डाक्टर वैगनर ने थोड़ा स्तब्ध होकर कहा, "अब मेरी समझ में आया कि आप हमारे किसी एक कंप्यूटर को क्यों किराये पर लेना चाहते हैं. पर, आपकी इस परियोजना का उद्देश्य क्या है?"

उत्तर देने में लामा को एक सेकंड का विलंब हुआ. वैगनर सोचने लगे, कहीं लामा को उसका प्रश्न अनुचित तो नहीं लगा. पर, लामा के उत्तर से ऐसा नहीं लगा कि उसने इस प्रश्न का बुरा माना हो.

"आप इसे धार्मिक अनुष्ठान मान सकते हैं, पर यह हमारे धार्मिक विश्वासों का एक मूलभूत अंग है. भगवान के जो अनेक नाम—गॉड, अल्लाह, जेहोवाह आदि—प्रचलित हैं, वे सब मानव-निर्मित लेबल हैं, बस! पर यहां एक कठिन समस्या उठ खड़ी होती है—दर्शन संबंधी—जिसके बारे में मैं फिलहाल कोई चर्चा नहीं करना चाहता. पर, अक्षरों के सब संभव समुच्चयों में, ऐसे शब्द भी होंगे, जिन्हें भगवान के वास्तविक नामों के रूप में स्वीकार किया जा सकता है. अक्षरों के विधिवत क्रमपरिवर्तनों से हम भगवान के सब वास्तविक नामों की सूची तैयार कर रहे हैं."

"समझा. आप ए . . . से शुरू करके जेड . . . तक जाना चाहते हैं."

"ठीक. अंतर केवल यही है कि इन क्रम-परिवर्तनों में हम अपनी वर्णमाला के अक्षरों का प्रयोग करेंगे. इलेक्ट्रोमैटिक टाइपरायटरों में सुधार करने में कोई विशेष कठिनाई नहीं होनी चाहिए. जिस दिलचस्प समस्या का सामना आपको करना है, वह है बेकार के समुच्चयों को हटानेवाले उपयुक्त सर्किटों के निर्माण की. उदाहरणार्थ कोई अक्षर किसी नाम में, लगातार तीन बार नहीं आना चाहिए."

"'तीन! शायद आपका मतलब दो बार से है."

"नहीं, तीन. मुझे खेद है, इसका कारण समझाना कठिन होगा."

"अवश्य होगा," वैगनर ने जल्दी से कहा, "तो आगे?"

"सौभाग्य से आपको अपने ऑटोमैटिक सिक्वैंस कंप्यूटर में ऐसा परिवर्तन करने में कोई कठिनाई नहीं होगी. कारण, यदि उसे एक बार सही ढंग से 'प्रोग्राम्ड' कर दिया जाये, तो वह बारी-बारी से प्रत्येक अक्षर का क्रम-परिवर्तन करके, उसके परिणाम का मुद्रण कर सकेगा. पंद्रह हजार वर्षों में पूरा होनेवाला कार्य सौ दिन में पूरा हो जायेगा."

बातचीत करते समय, डा. वैगनर को मानहट्टन की नीचे की सड़कों से आते हल्के शोर का कोई अहसास नहीं हो रहा था. वे अब एक निराली दुनिया में थे, जहां प्राकृतिक पर्वत थे, गगनचुंबी इमारतों के रूप में खड़े मानव-निर्मित पर्वत नहीं. वे उन मठवासियों के बारे में सोच रहे थे, जो अपने सुदूर गुप्त स्थानों में बैठकर, पीढ़ी-दर-पीढ़ी, अर्थहीन शब्दों की सूची तैयार करते चले आ रहे थे. सचमुच, आदमी की मूर्खताओं का अंत नहीं है. पर, सामने बैठे लामा को उनके इन विचारों का कोई पता नहीं लगना चाहिए. उन्हें यह याद रखना है कि ग्राहक कभी गलत नहीं होता.

उन्होंने कहा, "इसमें कोई संदेह नहीं कि हम 'मार्क 5' कंप्यूटर में आवश्यक परिवर्तन करके उसे वैसी सूची तैयार करने लायक बना सकते हैं, जैसी आप चाहते हैं. इसकी मुझे कोई चिंता नहीं है. चिंता मुझे इस बात की है कि उसे आपके मठों में लगाया कैसे जायेगा, और उसकी देखरेख वहां कैसे होगी? आजकल तिब्बत जाना पहले जैसा आसान नहीं रहा."

"इसका प्रबंध आसानी से हो जायेगा. कंप्यूटर के कल-पुर्जे इतने छोटे हैं कि हवाई जहाज से भेजे जा सकते हैं. आपके कंप्यूटर चुनने का एक कारण यह भी था यदि आप कंप्यूटर को भारत भिजवा सकें, तो वहां से अपने स्थान को उसे ले जाने की जिम्मेदारी हमारी होगी."

"और आप हमारे दो इंजीनियरों को भी अपने साथ ले जाना चाहते हैं?"

"हां, तीन महीने के लिए. तब तक हमारी यह परियोजना पूरी हो जायेगी."

"हमारा पर्सनल डिपार्टमेंट इसकी व्यवस्था कर देगा," कहकर डाक्टर वैगनर ने डैस्क पैड पर कुछ लिखा, और फिर कहा, "दो बातें और पूछनी थीं . . ."

उनकी बात पूरी भी न हो पायी थी कि लामा ने काग़ज का एक छोटा-सा टुकड़ा उनके सामने करते हुए कहा, "यह एशियाटिक बैंक का प्रमाण-पत्र है—उनके यहां जमा हमारी राशि का."

"धन्यवाद. यह प्रमाण-पत्र . . . ठीक ही लगता है. दूसरी बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रितानी लेखक आर्थर क्लॉर्क का कहना है कि इस कहानी के गणितीय आधार को प्रोफेसर जे. बी. एस. हाल्डेन ने चुनौती दी थी . . संभव है प्रोफेसर हाल्डेन के पास अपनी चुनौती को सही प्रमाणित करने का कोई आधार रहा हो . . .

मगर विज्ञान और धर्म के गठबंधन से पैदा होने वाली उन चुनौतियों को गलत प्रमाणित करने का आधार क्या किसी के भी पास है जिनकी ओर आर्थर क्लॉर्क ने अपनी इस कहानी में इशारा किया है . . . ?

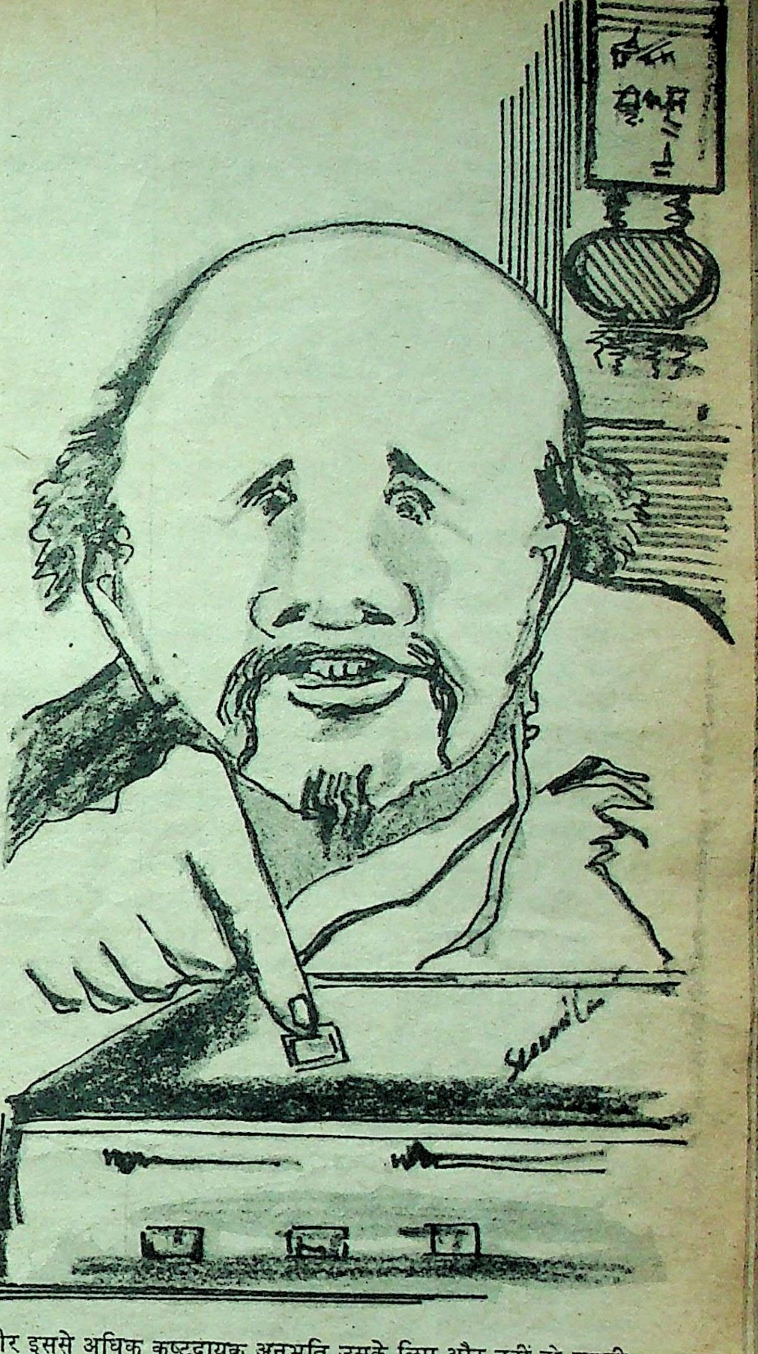

इतनी साधारण और तुच्छ-सी है कि उसका जिक्र करना भी मुझे अच्छा नहीं लगता. पर, कभी-कभी साधारण बातें ही नजरअंदाज रह जाती हैं. आपको बिजली कहां से मिलती है?"

"हमारे पास एक डीजल जेनरेटर है, जो हमें 110 वाल्ट पर 50 किलोवाट बिजली देता है. यह पांच साल पहले लगाया गया था और हमने इसे काफी विश्वसनीय पाया है. इसके लग जाने से मठों में जीवन काफी सुविधापूर्ण बन गया है. वैसे, हमने इसे प्रार्थना-चक्रों को चलाने-वाली मोटरों को ऊर्जा प्रदान करने के लिए खरीदा था."

"यह बात पहले ही मेरे जहन में आ जानी चाहिए थी."

मुंडेर से दिखायी देता दृश्य काफी चकरानेवाला था, पर धीरे-धीरे आंखों को हर प्रकार के दृश्यों को देखने की आदत पड़ जाती है. तीन महीने के बाद भी, जॉर्ज हस्ले को अगाध गर्त्त की ओर जानेवाले दो हजार फुट लंबे निचले मार्ग या दूरवर्ती घाटी में स्थित उतार-चढ़ाववाले खेतों को देखकर कोई रोमांच नहीं होता था. वह वायु के कारण चिकने हो गये एक पत्थर के सहारे खड़ा सामने दिखायी पड़नेवाले पर्वतों को देख रहा था.

वह सोच रहा था, किस जंजाल में आकर फंस गया है वह! उसे याद आया, अमरीका में उसके एक मजाकिये सहयोगी ने उससे कहा था कि वह 'शांग्रीला-परियोजना' पर जा रहा है. हफ्तों से मार्क कंप्यूटर मीलों लंबी नामों की सूची निकालता जा रहा था. बिना रुके, बिना थके. वह सब अक्षरों को हर संभव समुच्चयों में व्यवस्थित करता जा रहा था. लामा लोग इन सूचियों में मुद्रित नामों को काट-काटकर बड़े-बड़े ग्रंथों में चिपकाये जा रहे थे. गनीमत यही थी कि एक सप्ताह बाद यह परि-योजना पूरी हो जायेगी.

लामा लोग चाहते तो दस, बीस या सौ अक्षरोंवाले नामों के शब्दों के क्रम-परिवर्तनों के बारे में भी सोच सकते थे. पर, न मालूम क्यों, उन्होंने अभी तक ऐसा नहीं सोचा था. लेकिन कौन जाने कब प्रमुख लामा के मन में यह विचार आ जाये, और वे यह घोषणा कर दें कि यह परियोजना सन् 2060 तक चलेगी. वे ऐसा कर सकते थे. यही डरावना खयाल, एक दुःस्वप्न की भांति हमेशा उसके मन को घेरे रहता था.

लकड़ी का भारी दरवाजा जोर से बंद हुआ, और उसने छुक को अपने पास आते देखा. हमेशा की तरह, वह इस समय भी सिगार पी रहा था. सिगार की वजह से वह लामाओं में बहुत लोकप्रिय हो गया था. जीवन के साधारण सुखों के प्रति लामाओं के मन में कोई अरुचि की भावना नहीं थी. जार्ज ने उनके बारे में और भी बातें सुनी थीं . . .

छुक ने व्यग्रतापूर्ण स्वर में कहा, "सुनो जार्ज, एक जरूरी खबर है. मुसीबत आने ही वाली है."

"क्या हुआ? क्या कंप्यूटर ने काम करना बंद कर दिया?" यह संभावना जार्ज को हमेशा परेशान किये रखती थी. कंप्यूटर खराब हो गया, तो उसके अमरीका वापस लौटने में और विलंब हो जायेगा.

और इससे अधिक कष्टदायक अनुभूति उसके लिए और नहीं हो सकती थी.

उसकी हालत ऐसी हो गयी थी कि अमरीका की कोई भी वस्तु—टेलीविजन पर आनेवाले विज्ञापन भी—उसकी यह कष्टदायक अनुभूति कम नहीं कर सकती थी.

"नहीं, कंप्यूटर ने काम करना बंद नहीं किया है," छुक ने मुंडेर पर बैठते हुए कहा. जार्ज ने आज पहली बार छुक को मुंडेर पर बैठते देखा था; वह डरता था कि कहीं मुंडेर से नीचे न गिर जाये.

"मुझे इन लामा लोगों की परियोजना का उद्देश्य मालूम पड़ गया है."

"क्या मतलब है तुम्हारा? उद्देश्य तो हमें पहले ही से मालूम था न!"

"हमें केवल यह मालूम था कि लामा लोग क्या कर रहे हैं. पर क्यों कर रहे हैं, यह मालूम नहीं था. लगता है, ये लोग दीवाने हो गये हैं . . ."

"ये लोग दीवाने हैं, यह मैं पहले से ही जानता हूं. कोई नयी बात सुनाओ."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"...जो कुछ मालूम पड़ा है, प्रमुख लामा से ही मालूम पड़ा है. वह रोज शाम को यह देखने आया करता है कि कंप्यूटर ने कितनी सूचियां तैयार कीं? पर, इस बार वह काफी उत्तेजित था. तब मैंने उसे बताया कि हम लोग अब क्रम-परिवर्तन के अंतिम दौर में हैं, तो उसने मुझसे अपने खास अंग्रेजी उच्चारण के साथ पूछा, 'कभी सोचा है कि हम लोग क्या कर रहे हैं?' मेरे 'ना' कहने पर उसने मुझे बताया..."

"क्या बताया?"

"इन लोगों का विश्वास है कि जब वे भगवान के सब नामों की सब सूचियां तैयार कर लेंगे, तब भगवान का उद्देश्य पूरा हो जायेगा. इनके अनुमान से भगवान के नौ खरब नाम हैं, और उनके सूचियों में अंकित होते ही मानव-जाति समाप्त हो जायेगी, क्योंकि उसके लिए कुछ करना शेष नहीं रहेगा."

"वे लोग क्या चाहते हैं? क्या यह कि दुनिया के सब लोग आत्म-हत्या कर लें?"

"उसकी जरूरत नहीं पड़ेगी. अंतिम सूची की समाप्ति के बाद, भगवान स्वयं हम सबको समाप्त कर देंगे."

यानी काम खत्म होते ही, दुनिया भी खत्म हो जायेगी."

एक विषादभरी मुस्कराहट के साथ छुक ने कहा, "ठीक इन्हीं शब्दों में, ठीक यही बात प्रमुख लामा से मैंने कही थी. जानते हो, उसने क्या कहा? उसने क्षण भर के लिए मुझे ऐसे देखा, जैसे मैं कोई सिरफिरा आदमी हूं. और फिर कहा, बात इतनी मामूली नहीं है."

जार्ज ने क्षण भर चुप रहकर इस समाचार का जायजा लिया और फिर कहा, "काफी विशाल और व्यापक दृष्टिकोण वाला आदमी लगता है तुम्हारा यह प्रमुख लामा. पर, अब सवाल यह है कि हम क्या करें? कैसे, इस नयी सूचना के बाद भी हमारी वर्तमान स्थिति ज्यों की त्यों है. ये लोग दीवाने हैं, यह मुझे यहां आते ही पता चल गया था."

"हां, पर कुछ सोचो तो, इन सूचियों के खत्म होने के बाद भी, अगर दुनिया खत्म न हुई, तो इसका दोष हमारे सिर मढ़ा जानेवाला है. वे कहेंगे, हमारी मशीन में ही कहीं कुछ खराबी है."

"हां, यह तो है," जार्ज ने कुछ सोचते हुए, धीमे स्वर में कहा. "तुम ठीक कह रहे हो. पर मैं ऐसी एक स्थिति से गुजर चुका हूं. जब मैं लुईसीआना में छोटा लड़का था, तब एक सनकी पादरी ने भविष्य-वाणी की कि आगामी रविवार को दुनिया का खात्मा हो जायेगा. सैकड़ों लोगों ने उस पर यकीन कर लिया. बहुतों ने अपने घर बेच डाले. पर, जब कुछ नहीं हुआ, तब इन सैकड़ों लोगों में से किसी को भी क्रोध नहीं आया. उन सबका यह विश्वास था कि पादरी से काल-गणना में कहीं भूल हो गयी. दीवानों की कमी नहीं है, दुनिया में."

"मगर मैं यह याद दिलाना जरूरी समझता हूं कि तुम इस वक्त लुईसीआना में नहीं हो. इन सैकड़ों लामाओं के बीच हम ही दो विदेशी हैं. ये बेचारे मुझे अच्छे लगते हैं, और अगर उनके जीवन का यह सबसे बड़ा सपना भंग हो गया, तो उनके साथ मुझे भी दुख होगा. साथ ही, यह विचार भी मेरे मन में आये बिना नहीं रहता कि इन लोगों से दूर रहना ही बेहतर है."

"मैं तो हफ्तों से यही मना रहा हूं. पर, जब तक हमारा कांट्रैक्ट चालू है, तब तक हम कुछ नहीं कर सकते."

"कर क्यों नहीं सकते?" छुक ने गंभीरतापूर्वक कहा, "हम कंप्यूटर को बेकार कर सकते हैं."

"ऐसा किया, तो हमारी मुसीबतें और बढ़ जायेंगी."

"तुम मेरा मतलब नहीं समझे. देखो, ध्यान से सुनो. चार दिन में कंप्यूटर का काम खत्म हो जायेगा. हमें यहां से ले जानेवाले लोग आयेंगे आज से सात दिन बाद. इस बीच, यदि हम कंप्यूटर को खराब कर दें, और उसे ठीक करने में तीन दिन लगा दें, तो भगवान के अंतिम नाम के कंप्यूटर से बाहर आने से पहले ही, हम लोग हवाई जहाज में बैठकर बाहर जा सकते हैं."

"मुझे तुम्हारी यह तजवीज अच्छी नहीं लगती. अपना काम अधूरा छोड़ने की मेरी आदत नहीं है. इसके अलावा, हमें भागते देखकर उनका संदेह बढ़ जायेगा. नहीं, मैं यही रहूंगा. हो, जो होना है."

और सात दिन बाद भी, टट्टुओं पर सवार होकर पहाड़ों के तंग और चक्करदार मार्गों पर जाते हुए; जार्ज यही कह रहा था, "तुम्हारी यह तजवीज मुझे इस वक्त भी अच्छी नहीं लग रही है. यह मत सोचो कि मैं डर के मारे भागने पर मजबूर हुआ हूं. मुझे इन बेचारे लामाओं पर रहम आता है, और मैं उस समय इनके सामने नहीं रहना चाहता, जिस समय उन्हें मालूम होगा कि वे बेचारे सदियों से एक खामखयाली के पीछे पागल बनते आ रहे हैं. पता नहीं, तब प्रमुख लामा का क्या हाल होगा?"

छुक ने उत्तर दिया, "याद करके हंसी आती है, पर जब मैंने उससे अलविदा कहा था, तब उसकी मुखमुद्रा देखकर मुझे लगा था कि वह जानता है कि हम दोनों उसे उल्लू बनाकर जा रहे हैं. मगर, उसकी मुखमुद्रा से मुझे यह भी लगा कि उसे हमारे कृत्य की कोई परवाह नहीं है. जैसे कि वह जानता था कि कंप्यूटर ठीक ढंग से काम कर रहा है, और उसका कार्य शीघ्र ही समाप्त हो जायेगा. उसके बाद...पर, उसके बाद रह ही क्या जायेगा?"

जार्ज ने पीछे मुड़कर देखा. सूर्यास्त हो चुका था, और काली चादर की तरह छाये अंधकार में से यहां-वहां बत्तियां झिलमिला रही थीं. वह सोच रहा था कि कंप्यूटर के कार्य का खात्मा हो जाने पर भी जब पृथ्वी का खात्मा नहीं होगा, तब प्रमुख लामा क्या करेगा? कहीं वह कंप्यूटर को तोड़ तो नहीं देगा! या, वे निराश होकर बैठ जायेंगे, यह सोचकर कि शायद उनसे ही गणना में कोई गलती हो गयी थी.

वह जानता था कि पीछे इस समय क्या हो रहा होगा. रेशमी वस्त्र धारण किये हुए प्रधान लामा और उसके सहायक कंप्यूटर के सामने बैठे होंगे. कुछ सहायक कंप्यूटर की सूचियों में से नामों को काटकर बड़ी-बड़ी पुस्तकों में चिपका रहे होंगे. कोई किसी से कुछ नहीं कह रहा होगा. कंप्यूटर की चाबियों के कागज पर लगने की टप-टप आवाज के अलावा कोई और आवाज नहीं सुनायी दे रही होगी.

छुक ने घाटी की ओर इशारा करते हुए कहा, "वह रहा हमारा हवाई जहाज! कितना अच्छा लग रहा है!" उसने सोचा, दो घंटे के अंदर वे आजाद होकर सभ्य और समझदार दुनिया में पहुंच जायेंगे.

सौभाग्य से मार्ग साफ और निरापद था. हल्की-सी सर्दी के अलावा उन्हें कुछ और महसूस नहीं हो रहा था. न कोई डर, न कोई खतरा. मौसम भी साफ था, इसलिए हवाई जहाज फौरन रवाना हो जायेगा. उन दोनों को सिर्फ यही चिंता थी कि कहीं खराब मौसम की वजह से हवाई जहाज का जाना स्थगित न हो जाये.

जार्ज का मन गाने को करने लगा. उसने गाना शुरू किया, पर कुछ समय बाद उसे बंद करना पड़ा. बर्फ का सफेद लबादा ओढ़े, भूतों जैसे लगनेवाले पहाड़ों के बीच गाना बड़ा अजीब लग रहा था उसे.

उसने घड़ी की ओर देखा और छुक से कहा, "बस, एक घंटे के अंदर हम हवाई जहाज के अंदर होंगे." फिर कुछ सोचकर कहा, "मालूम नहीं, कंप्यूटर अभी चल रहा है या नहीं? इस वक्त तक उसे बंद हो जाना चाहिए था."

छुक ने कोई उत्तर नहीं दिया तो जार्ज ने पीछे मुड़कर देखा. वह बस छुक का मुंह ही देख पाया.

"ऊपर देखो," छुक ने बुदबुदाकर कहा.

जार्ज ने आंखें उठाकर ऊपर आकाश की ओर देखा.

अंतरिक्ष के सितारे, एक-एक करके विलीन होते जा रहे थे.

हर चीज का, हर स्थिति का अंत, अवश्य होता है!

रूपांतर :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हथियार

फ्रेडरिक ब्राउन

शाम के धुंधलके में कमरा बड़ा शांत लग रहा था. एक महत्वपूर्ण प्रयोजन से संबद्ध एक विशिष्ट वैज्ञानिक डा. जेम्स ग्राहम अपनी प्रिय कुर्सी पर बैठे कुछ सोच रहे थे. पास के कमरे में उनका बेटा एक सचित्र पुस्तक के पन्ने उलट रहा था. उनके कमरे में इतनी शांति थी कि पत्तों के उलटने की आवाज तक उन्हें साफ सुनायी दे रही थी.

ग्राहम को जब कोई सृजनात्मक चिंतन या अपना सर्वश्रेष्ठ कार्य करना होता था तो वे ऐसी ही परिस्थितियों में करते थे— दैनिक कार्य समाप्त हो जाने पर अपने अपार्टमेंट के किसी शांत और अंधेरे कमरे में बैठकर उस विषय पर सोचने लगना. पर.आज उनका मन किसी कार्य या विचार में नहीं लग रहा था. वे पास के कमरे में बैठे अपने बेटे के बारे में सोच रहे थे, उस बेटे के बारे में जो मानसिक रूप से अविकसित था. वे उसके बारे में अच्छे ढंग से ही सोच रहे थे, उस अप्रिय ढंग से नहीं, जिससे उन्होंने तब सोचा था जब उन्हें अपने एकमात्र बेटे की मानसिक स्थिति के बारे में पहली बार मालूम हुआ था. लड़का खुश रहता था, उनके लिए सबसे अधिक संतोष और हर्ष का यही विषय था. ऐसे कितने पिता होंगे, जिन्हें यह संतोष रहता है कि उनका बेटा सदा बेटा ही बना रहेगा और कभी वयस्क बनकर उनका परित्याग नहीं करेगा. इसे

आप अपने नन्हें बच्चे के पास कमरे में पहुंचें और सहसा पायें कि वह एक भरे हुए रिवाल्वर से छेड़-छाड़ कर रहा है तो आप उस वक्त क्या करेंगे? क्या सोचेंगे?—हथियारों की होड़ को मानवीय अस्मिता की तुलना में रेखांकित करती प्रख्यात अंग्रेजी लेखक की संवेदनशील कहानी—

वैयक्तिकीकरण कह लीजिए या आत्मसंतोष, पर इसमें बुराई क्या है आखिर?... वे सोच ही रहे थे कि दरवाजे की घंटी बजी.

ग्राहम ने उठकर बटन दबाया और अंधेरा कमरा रौशन हो उठा. कमरा पार करके दरवाजा खोलने के लिए आगे जाते हुए उन्हें बड़ी खुशी हो रही थी. कारण, इस क्षण अपने विचारों में किसी भी व्याघात के लिए वे प्रस्तुत थे. दरवाजा खोलने पर उन्होंने एक अजनबी को अपने सामने खड़ा पाया, जो उनसे कह रहा था, "आप डा. ग्राहम हैं न! मेरा नाम नायमंद है...मैं आपसे बातें करना चाहता हूं. क्या क्षण भर के लिए अंदर आ सकता हूं?"

ग्राहम ने उस अजनबी को गौर से देखा. नाटे कद का, मामूली-सा आदमी था, जिससे भयभीत होने का कोई कारण दिखायी नहीं देता था. शायद कोई रिपोर्टर या बीमा-एजेंट था. उन्होंने कहा, "बेशक, अंदर तशरीफ लाइए, मिस्टर नायमंद." उन्होंने सोचा, शायद इस आदमी से बातचीत करके कुछ जी बहल जाये.

कमरे के अंदर आकर उन्होंने नायमंद से कहा, "बैठिए, क्या पीना पसंद करेंगे?"

नायमंद ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा, "धन्यवाद, मैं कुछ नहीं पिऊंगा."

ग्राहम उसके सामने सोफे पर बैठ गये.

नायमंद ने दोनों हाथों की उंगलियां आपस में फंसाकर, कुछ आगे झुकते हुए कहा, "डा. ग्राहम, आप जिन वैज्ञानिक प्रयोगों में रत हैं, वे इतने महत्वपूर्ण हैं कि मानव-जाति का अस्तित्व उन्हीं पर निर्भर है."

सुनकर डा. ग्राहम के मन में पहली प्रतिक्रिया यही हुई कि यह आदमी सिरफिरा है. बेहतर होता कि उसे अंदर बुलाने से पहले उन्होंने उससे पूछ लिया होता कि वह किस काम से आया है. उन्हें किसी के साथ अभद्रता से पेश आना पसंद नहीं है, पर यहां अभद्रता का प्रयोग करना ही पड़ेगा....और कोई चारा नहीं था.

नायमंद कहता रहा, "डा. ग्राहम, आप जिस हथियार के निर्माण के बारे में शोध कर रहे हैं..."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी बात अधूरी रह गयी. पास के कमरे का दरवाजा खुला और पंद्रह वर्ष के एक नौजवान ने कमरे के अंदर प्रवेश किया. नौजवान ने जैसे नायमंद को देखा ही नहीं, वह सीधा ग्राहम की ओर बढ़ता चला आ रहा था.

"डैडी, मुझे कुछ पढ़कर सुनाओ न!" कहकर वह हंसने लगा, चार साल के बच्चे की सी हंसी.

ग्राहम ने उसके गले में हाथ डालकर हल्के-से उसे अपनी ओर खींचा. फिर उन्होंने नायमंद को गौर से देखकर यह जानने और भांपने का प्रयत्न किया कि उसे उनके पुत्र के बारे में कोई जानकारी है या नहीं. नायमंद के चेहरे पर आश्चर्य के कोई चिन्ह न देखकर उन्हें विश्वास हो गया कि वह उनके पुत्र की मानसिक स्थिति से परिचित है.

"हैरी, अभी तुम्हारे डैडी कुछ व्यस्त हैं. तुम अभी अपने कमरे में जाओ. मैं कुछ देर बाद आकर तुम्हें कुछ पढ़कर सुनाऊंगा." ग्राहम ने बड़े कोमल और स्नेहार्द्र शब्दों में कहा.

"मुझे 'चिकन लिटिल' कहानी पढ़कर सुनाना, डैडी."

"हां, वही कहानी सुनायेंगे, जो तुम्हें अच्छी लगती है. अच्छा, अब जाओ. और इनसे मिलो. . . ये हैं, मिस्टर नायमंद!"

लड़का नायमंद को देखकर लज्जा से मुस्कराया. नायमंद ने कहा, "कहो हैरी, कैसे हो?" फिर वह हैरी की ओर देखकर ऐसे मुस्कराया जैसे वयस्क लोग छोटे बच्चों को देखकर मुस्कराते हैं. अब ग्राहम को पूरा विश्वास हो गया कि नायमंद को हैरी की मानसिक स्थिति के बारे में पूर्व जानकारी है.

तभी उन्होंने देखा कि हैरी नायमंद की गोद में चढ़ने की तैयारी कर रहा है. उन्होंने हल्के-से हैरी को पकड़कर अपनी ओर खींचा और कहा, "चलो, अब अपने कमरे में जाओ हैरी! देर न करो."

हैरी, बिना दरवाजा बंद किये अपने कमरे में चला गया. नायमंद की नजरें ग्राहम की नजरों से मिलीं और उसने कहा, "मुझे हैरी पसंद है." उसके स्वर में सच्चाई थी. उसने आगे कहा, "मुझे आशा है, आप उसे जो कुछ भी पढ़कर सुनायेंगे, वह सदा सच्चा निकलेगा."

ग्राहम की समझ में न आया, नायमंद का अभिप्राय क्या है! नायमंद कहता रहा, "मेरा मतलब 'लिटिल चिकन' से है. कहानी बहुत अच्छी है, पर कहानी में आकाश के नीचे गिरने की जो बात आयी है, वह मैं मनाता हूं कि सच्ची न निकले."

नायमंद ने जिस क्षण हैरी को स्नेहपूर्ण दृष्टि से देखा था, उस क्षण ग्राहम को वह बहुत अच्छा लगा था, पर अब उन्हें लगा कि यह भेंटवार्ता जितनी जल्दी समाप्त हो जाये, उतना ही अच्छा. उन्होंने उठकर कहा, "मुझे लगता है, आप मेरा समय तो बरबाद कर रहे हैं, अपना समय भी बरबाद कर रहे हैं. आप जो कुछ कहनेवाले हैं, वह मैं हजार बार सुन चुका हूं. आप जो कुछ मानते हैं, वह शायद सच होगा. पर उसे सुनने में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है. मैं एक वैज्ञानिक हूं और सिर्फ एक वैज्ञानिक. यह एक सर्वविदित रहस्य है कि मैं एक हथियार बनाने की दिशा में कार्य कर रहा हूं. वह हथियार एक प्रकार से विश्व का अंतिम हथियार होगा. पर व्यक्तिगत रूप से मेरी उस हथियार में दिलचस्पी सिर्फ इतनी ही है कि वह मेरे प्रयोग का एक परिणाम है."

"लेकिन डा. ग्राहम, क्या मानवता इस प्रकार के हथियार के लिए तैयार है?"

"मैं इस हथियार के बारे में अपना दृष्टिकोण बता चुका हूं." ग्राहम ने भौंहे सिकोड़कर कहा. नायमंद आहिस्ता-से अपनी कुर्सी पर से उठा और कहा, "ठीक है, आप इस बारे में कुछ नहीं कहना चाहते तो मैं भी आपसे कुछ नहीं पूछूंगा. मैं अब चलता हूं, डा. ग्राहम, मगर. . . . . आपने मुझसे पूछा था कि क्या मैं कुछ पी सकता हूं. मैं अब कुछ पीने के मूड में हूं."

ग्राहम का चिड़चिड़ापन सहसा दूर हो गया. उन्होंने पूछा, "अवश्य, क्या लोगे. . .व्हिस्की या . . .?"

"हां, व्हिस्की चलेगी."

ग्राहम रसोईघर में गये और कुछ मिनट बाद व्हिस्की, बर्फ और गिलास लेकर लौटे. कमरे में आकर उन्होंने देखा कि नायमंद हैरी कमरे से बाहर निकल रहा है और हैरी उससे कह रहा है, "गुड नाइट

नायमंद ने सिर्फ एक पेग ही लिया और फिर जाने लगा. जाते उसने डा. ग्राहम से कहा, "आने से पहले मैं आपके लड़के के लिए मामूली-सी भेंट लाया था, डाक्टर! और वह भेंट मैं उसे दे भी चुका

नायमंद के चले जाने के बाद ग्राहम ने दरवाजा बंद किया हैरी के कमरे मे आये. हैरी के पास बैठते हुए उन्होंने कहा, "आओ अब मैं तुम्हें वह कहानी सुनाता हूं. . . . ."

पर तभी हैरी के हाथ में कुछ देखकर ग्राहम के माथे पर पसीना गया. फिर भी उन्होंने अपने स्वर तथा मस्तिष्क को शांत रखते कहा, "देखें, तुम्हारे हाथ में क्या है, हैरी?" और जब वह चीज ग्राहम हाथ में आयी तो उन्होंने उसे ध्यानपूर्वक देखा. . . और सोचा— एक पागल वयस्क ही एक भरा हुआ रिवाल्वर, एक मूर्ख नौजवान देगा.

अनुवाद :

● लघुकथा

उत्तर

■ फ्रेड्रिक ब्राउन

डवार इव ने आनुष्ठान से अंतिम जोड़ को सोने का टांका लगा दिया. उसे ऐसा करते हुए दूरदर्शन के दर्जनों कैमरों ने उस पर निगरानी रखी, जिससे आकाश में उसके कार्य की दर्जनों तस्वीरें तैरने लगीं.

उसने अपने-आपको सीधा किया और डवार रेन से सिर हिलाकर सहमति प्रकट की. इसके बाद उस स्विच के करीब पहुंचा, जो प्रेषित होने के बाद पूर्ण रूप से संपर्क स्थापित करेगा. स्विच एक ही बार में ब्रह्मांड के छियानवें अरब ग्रहों को भीमकाय कंप्यूटिंग मशीनों को उस उपरि-परिपथ से मिला देगा जो एक ऊपरि-गणक को संचार-व्यवस्था-नियामक से जोड़ देगा और इससे आकाश गंगा तथा अन्य ब्रह्मांड व्यवस्था का ज्ञान एक स्थान पर इकट्ठा हो जायेगा.

डवार रेन ने दूरदर्शन देखने और सुननेवाले खरबों लोगों को संक्षेप में इस बारे में बताया. क्षणभर मौन रहने के बाद वह डवार इव से मुखातिब हुआ, "डवार इव, अब?"

डवार इव ने स्विच प्रेषित किया. एक प्रचंड गुंजन हुआ. वह छियानवे खरब ग्रहों की विद्युत-शक्ति के प्रवाह के कारण हुआ था. मीलों लंबे पैनल पर रोशनी कौंधकर गायब हो गयी.

डवार इव ने एक कदम पीछे हटकर गहरा सांस लिया. फिर कहा, "डवार रेन, पहला प्रश्न पूछने का सौभाग्य आपको मिला है."

"धन्यवाद!" डवार रेन ने कहा, "यह ऐसा सवाल है जिसका कोई एक संचार-व्यवस्था-नियामक मशीन उत्तर नहीं दे सकती."

उसने मशीन की ओर अपना मुख किया और पूछा, "क्या ईश्वर है?"

एक भी रिले की खट-खट के बिना शक्तिशाली आवाज ने बिना झिझक उत्तर दिया, "हां, अब एक ईश्वर है."

सहसा डवार इव के चेहरे पर भय का भाव आ गया. वह स्विच को झपट लेने के लिए लपका. बादल-रहित आकाश से उस पर गाज गिरी और फ्यूज उड़ गया.

अनुवाद : राजेंद्र बोहरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदमी का बच्चा

चंचल

विज्ञान की उपलब्धियों और चकाचौंध से अभिभूत चंचल का व्यंग्यकार उस समय की कल्पना में डूब-उतरा रहा है जब न दुनिया में चोर होंगे, न डकैत और न पुलिस. . .होंगे केवल---वह, डाक्टर खुराना और. . . वो! आखिर कैसा होगा वह समय. . . कैसे आयेगा. . . और कब तक . . .?

'मैं' का एक-एक जोड़ अलग हो चुका है. कोई किसी के कहने में नहीं. घुटने के नीचे का हिस्सा जिससे अमूमन चलने का काम लिया जाता है और उसका संचालन दिमाग के इर्द-गिर्द से होता है, तकरीबन वह रिश्ता टूट चुका है. दिमाग में यह बात तय हो चुकी है कि उसे घर पहुंचना है, लेकिन पैर आगे बढ़ने से बार-बार इनकार कर देते हैं. या तो वे आगे बढ़ने के बजाय अपने आप पीछे हो जाते हैं या फिर आगे बढ़ने के साथ-साथ पैंतालीस अंश के कोण पर बायीं तरफ मुड़ जाते हैं. इतना ही नहीं, पैर उठकर अगला कदम रखने के पहले ही हवा में कहीं झूल जाता है. और कहां पहुंचता है, यह समझ न तो आंख के पास है न ही दिमाग के पास. क्योंकि दिमाग में इतनी सारी चीजें गड्-मड्ड हो गयी हैं कि पिछले साल की प्रेमिका और उससे टूटा हुआ रिश्ता बिजली के खंभे में दिखायी देने लगता है और यह 'मैं' वहां रुककर उसे पकड़कर अपनी सारी बातें एक बारगी कहने लगता है.

डाक्टर खुराना आज अपनी पार्टी में जिस टैस्ट ट्यूब बेबी का जिक्र कर रहे थे और आदमी की नये नस्ल के बारे में समझा रहे थे, यह 'मैं' उसी के साथ बात कर रहा था. बायें हाथ को उठाकर वह वहीं से लेटे-लेटे चीखा था कि मुझे धानी रंग का एक बच्चा चाहिए, जो दिमाग से इंजीनियर हो लेकिन शारीरिक रूप से राशन की दूकान पर जाकर लाइन में भी लग सकता हो. डाक्टर खुराना का जवाब साफ-साफ सुनायी पड़ रहा था— "श्रीमान जी, टैस्ट ट्यूब बेबी की पैदावार एक साथ दो पीढ़ियों और नियति वाली नहीं हो सकती. क्योंकि हम जिस बच्चे को पैदा कर रहे हैं, हम उसमें एक निश्चित मात्रा में हार्मोंस, निश्चित तरह की ग्रंथियां और तंतु डालकर उस विशेष मिजाज के जीव को पैदा कर सकते हैं. डाक्टर बनाने के लिए जिन आवश्यक तंतुओं का इस्तेमाल किया जायेगा, इंजीनियर बनाने के लिए उनका नहीं. या फिर राशन की दूकान पर लगने के लिए यदि बच्चे की जरूरत है तो उसके लिए निश्चित अनुपात और मात्रा में अलग-अलग किस्म के ग्रंथियों को डाला जायेगा. क्योंकि इन बच्चों की नस्ल एक निश्चित किस्म की होगी और इनके चलते ही इस मुल्क की भलाई है, क्योंकि अब जिस आदमी को हम पैदा करेंगे उसे अपने निश्चित और नियमित सिद्धांतों के ही तहत काम करना पड़ेगा. उदाहरण के लिए यदि कारखाने के मजदूर की जरूरत है तो उसे बनाने के लिए हम यह नहीं कर सकते कि वह मजदूर भी रहे और दूसरी तरफ अपने बच्चों को पढ़ाने का भी काम करे. वह एक बार में एक ही काम कर सकता है, दूसरा नहीं. रंगों का चयन, पहचान के वास्ते निश्चित रहेगा और इसका नाम होगा टैस्ट ट्यूब बेबी."

ये टैस्ट ट्यूब बेबी अब बाजारों में और आसान किस्तों पर लिये जा सकते हैं. मनचाहा रंग, मनचाहा दिमाग, पेट कम, हाथ लंबे, दिमाग सीमित, उम्र ज्यादा—इन विज्ञापनों से पूरा बाजार भर जायेगा. आप मनचाहे बच्चे को, मनचाही दूकान से खरीद सकते हैं.

'मैं' दुबारा टैस्ट ट्यूब बेबी, डाक्टर खुराना और अपनी प्रेमिका के बीच उलझ गया और यह लगने लगा कि जिंदगी के किस हिस्से में आदमी मशीन होने से बचता है, और क्यों. उस समय 'मैं' को यह भी महसूस हुआ कि उसके सर के पास यह जो मलाईनुमा चीज रखी हुई है और उसमें उसकी आधी गर्दन फंसी हुई है यह टैस्ट ट्यूब से पैदा हुई महिला के जिस्म का कोई हिस्सा तो नहीं है? वह लगे हाथ मुहब्बत, औरत-मर्द, दुनियादारी, प्रजनन और इसी तरह के बहुत सारे सवालों का हल खोजने लगा. डाक्टर खुराना की आवाज वह सुनने लगा, "महिलाओं की नस्ल में जो तत्व मिलाये जायेंगे उनमें संवेदनशीलता, रचना, ममता, लावण्य जैसी किसी चीज का समावेश नहीं रहेगा. क्योंकि किसी भी मुल्क की उन्नति और अवनति के लिए ये ही सारे तत्व विद्यमान रहे हैं. अब दुनिया के किसी हिस्से में कोई भी मुल्क न तो आगे बढ़ेगा और न पीछे छूटेगा. इ बिना पर टैस्ट ट्यूब से पैदा होनेवाली बेबी, महिला होने के बीच मात्र एक औरत रहेगी. ठीक उसी तरह जैसे किसी कमरे में गिलास होता है, बोतल होती है, मेज होती है या गुलदस्ता होता है. यह कितना खूबसूरत समाज बनेगा." 'मैं' को गुस्सा आ गया कि यह खुराना उस समय क्यों नहीं पैदा हुआ, या उस समय क्यों नहीं इस नयी नस्ल के लोगों का ईजाद किया जब उसके गांव में एक औरत के सवाल पर या फिर औरत ने ही उसकी ममता के चलते एक पूरा का पूरा गांव तबाह कर दिया था. यह बात-दीगर है कि वह गांव आज भी उसी एक घटना के चलते इतिहास में दर्ज है. 'मैं' इसके आगे नहीं सोच पाता. क्योंकि इसी ऐन वक्त पर दूर कहीं से सीटी की आवाज सुनाई पड़ती है और वह करवट लेकर सीधा हो जाता है. और चीखता है कि अब इस मुल्क में, इस दुनिया में, कोई चोर, कोई डकैत, कोई राहगीर नहीं रहेगा, न है. अगर कोई है तो वह डाक्टर खुराना है. क्योंकि चोर, लफंगा, उचक्का, डॉक्टर, इंजीनियर होना अब मानव की नियति नहीं रही. ये सारी चीजें डाक्टर खुराना के जींस में ही मौजूद हैं. वह चाहे तो चोरी हो सकती है. वह चाहे तो मुल्क तबाह किया जा सकता है. लिहाजा उसे पकड़ लो, इसके पहले कि वह टैस्ट ट्यूब से किसी चोर को पैदा करे. इस चीख के साथ उसे लगा था कि उसका एक पैर ऊपर हवा में कहीं झूल गया था और नीचे गिरा तो छप्प की आवाज आयी. उसके दिमाग में चोर के इस तर्क ने बहुत सारी चीजें एक साथ पैदा कर दीं कि यदि दुनिया में अपराध नहीं होंगे तो पुलिस की क्या जरूरत है. आदमी का पेट नहीं होगा तो सरकार की क्या जरूरत है. या फिर आदमी को आदमी से क्या मतलब! यह सोचते ही वह तन गया और बोला कि मैं इस टैस्ट ट्यूब बेबी से नफरत करता हूं. क्योंकि मुझे अपने आपसे प्यार है.

उसकी बात पूरी नहीं हो पायी थी कि दिमाग ने काम करना बंद कर दिया था. और जब एक लंबे समय बाद उसकी नींद खुली तो उसने पाया कि वह सड़क पर बायीं तरफ नाली के पास गिरा पड़ा है. उसका सिर गोबर में है और बायां हाथ नाली की गलीज में. तब उसे कल रात की वो पार्टी याद आयी जब वह अपने मित्र चर्मरोग विशेषज्ञ डा. खुराना के घर गया था और पार्टी में कुछ ज्यादा ही पी गया था. उसे रोशनी और सड़क से डर लगने लगा. वह अपने उस मकान में पहुंच जाना चाहता था, जिसे वो घर कहता था. लेकिन एक बात इस 'मैं' के जेहन में घूमती रही कि मैं फिर भी आदमी से मुहब्बत करता हूं. □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंतरिक्ष युग के संस्मरण

जे. जी. बलार्ड

लंबाई, चौड़ाई और ऊंचाई के अलावा चौथा आयाम है समय. इन्हीं चारों के सुनिश्चित होने पर हम किसी भी व्यक्ति या वस्तु के अस्तित्व को व्याख्यायित कर सकते हैं. यदि इनमें से कोई एक---मान लीजिए समय असंयमित हो जाये तो?...कोई भी अंतरिक्ष यान जैसे-जैसे अपनी गति बढ़ाता है वैसे-वैसे उसके संदर्भ में समय की गति कम होती चली जाती है. पर किसी अंतरिक्ष यात्री के लिए समय की गति का कम होना स्थायी हो जाये और धरती पर लौटने पर भी बना रहे और फिर पूरे शहर के लिए समय की गति अनियमित हो जाये तो? प्रस्तुत है ऐसे ही एक शहर की त्रासदी.

जे. जी. बलार्ड १९३० में शंघाई में जन्मे, इंगलैंड में शिक्षा पूरी की और कनाडा में बस गये. प्रस्तुत उपन्यास 'मैमोयर्स ऑव स्पेस ऐज' १९८२ में प्रकाशित हुआ था.

पूरे दिन ही उस वीरान पड़े अंतरिक्ष केंद्र के ऊपर एक अजनबी विमान चालक अपना पुराकालीन विमान उड़ाता रहा लेकिन उसकी तेज गुर्राहट भी फ्लोरिडा के उस मौन में विलीन हुई जा रही थी. पुराने किस्म के कर्टिस विमान के इंजन की भरभराहट ने तड़के ही डा. मैलोरी को नींद से जगा दिया. उस समय वह टाइटसविले के वीरान होटल की पांचवीं मंजिल के एक कमरे में अपनी पत्नी के साथ सोया हुआ था. बाहर बालकनी में आकर मैलोरी ने देखा कि वह पुराकालीन विमान केप-केनेडी के जंग खाये ढांचे के ऊपर चक्कर काट रहा था.

केप केनेडी के ऊपर से चक्कर काटने के बाद जब वह विमान टाइटसविले की ओर आया और होटल के ऊपर से गुजरा तो पायलेट की सीट पर बैठे व्यक्ति की धूप के चश्मे के पीछे छिपी कठोर आंखें मैलोरी को परिचित लगीं. हर सुबह यह पायलेट अलग-अलग पुराकालीन विमानों को उड़ाता हुआ नजर आ जाता था, लगता था जैसे किसी विस्मृत संग्रहालय विमानों को वह किसी अ[illegible]त हवाई पट्टी से उड़ाकर लाता [illegible]

बालकनी में निर्वस्त्र खड़े मैल[illegible] के शरीर पर सुबह की गुनगुनी धूप सीधी पड़ रही थी. उसके शरी[illegible] की एक-एक हड्डी गिनी जा सकती थी. वीरान पड़े सुपर मार्किट से चु[illegible]या हुआ डिब्बा बंद खाना खाने के बावजूद वह अपना वजन कम होने [illegible] रोक नहीं पा रहा था. करीब दो महीने पहले वह और ऐन वैंकोवर [illegible] फ्लोरिडा लौट आये थे और तब से दोनों का वजन तीस-तीस पौंड कम तो हो ही गया था.

उमस भरी हवा में चिपचिपाता हुआ वह कमरे में लौट आया. ऐन अब तक जाग गयी थी. उसके भूरे बाल किसी बच्चे की तरह उसके चेहरे पर फैल गये थे. उसने मैलोरी की ओर देखा और पहचानने की कोशिश करते हुए बुदबुदायी, "हिंटन?"

मैलोरी ने उसके चेहरे से बाल हटाते हुए कहा, "नहीं, क्या मैं उस जैसा दिखने लगा हूं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐन ने तकिये से अपना चेहरा रगड़ते हुए कहा, "हे भगवान, क्या मैं अंधी हो रही हूं." फिर अपना चेहरा उठाते हुए कहा, "दरअसल यह जगह ही भुतही है. एडवर्ड, हमें यहां से चले जाना चाहिए."

मैलोरी ने दूर बने केप-केनेडी के ढांचों पर एक नजर डाली. उसके लिए यह यकीन करना कठिन हो रहा था कि वह कभी यहां काम करता था. उसने ठंडी सांस लेते हुए कहा, "धरती की कोई जगह यहां से दूर नहीं है, आस्ट्रेलिया का पथ भी नहीं. हमें अंतरिक्ष में ही जाना होगा."

एक झुरझुरी लेते हुए ऐन ने कहा, "ऐसा न हो एडवर्ड, यहां पर एक अपराध घटित हो चुका है, और सब जानते हैं कि यह सब कैसे हुआ." तभी उन्हें दूर से किसी विमान की गड़गड़ाहट सुनाई दी. ऐन ने कमरे की दीवारों को घूरते हुए कहा, "क्या तुम सोचते हो कि हिंटन यहां होगा? हो सकता है वह मुझे भूल गया हो."

"वह तुम्हें कभी नहीं भूल सकता."

"तुम ऐसा कह सकते हो. कितने साल जेल में रहा वह? बीस साल!"

"यह काफी लंबा अर्सा है. संभवतः वह फिर से तुम्हें हवाई यात्रा कराये. तुम यह पसंद करती हो न?"

"हां, उसी ने तो यह सब शुरू किया था."

"नहीं, हिंटन ने नहीं," उस खाली होटल में मैलोरी अपनी ही आवाज को सुन रहा था, "सही बात तो यह है कि मैंने यह सब शुरू किया है."

तभी मैलोरी को खयाल आया कि उसे खाने की तलाश में जाना है. यही तो उसका काम रह गया था अब—खाना और ऐन के साथ सोना.

पर अगर कहीं यहां केप-केनेडी में, जंग खाये अंतरिक्ष प्रेषण केंद्र के ढांचे की छांव में ऐन को गर्भ ठहर जाये तो. . . . . डा. मैलोरी को वे विकलांग बच्चे याद आ गये जो वैकोवर में उसके क्लिनिक में थे. ये सब समय के कुछ क्षण ठहर जाने का परिणाम थे. पर हां केप-केनेडी में तो समय पूरी तरह से ठहरा हुआ था. एक कभी न समाप्त होने वाला वर्तमान. यहां पैदा होनेवाला बच्चा समयहीन जगह में पैदा होगा.

पिछले साल वैकोवर में भी ऐसे कुछ दौरे पड़े थे जब समय की गति धीमी हो गयी थी. शाम का समय ही इतना लंबा खिंच जाता कि कई दिनों में फैल जाता, अंतरिक्ष रोग के ये पहले लक्षण थे जिनके कारण घड़ी की रफ्तार सुस्त हो गयी थी. पहले यह अंतरिक्ष यात्रियों के साथ हुआ था और फिर फ्लोरिडा स्थित नासा के अन्य सारे कर्मचारियों के साथ होने लगा. पिछले कई महीनों से ये दौरा रोज पांच-छह बार पड़ने लगा था. हर चीज की रफ्तार धीमी हो जाती. पूरा का पूरा दिन शेव बनाते या चेक पर दस्तखत करते बीत जाता.

समय किसी खराब हो गये प्रोजेक्टर पर चलनेवाली फिल्म की तरह हो गया था, कभी धीमा होते-होते लगभग थम-सा जाता और कभी बहुत तेज चलने लगता था.

"ऐन," वह धीरे से बुदबुदाया. उनके सोने के कमरे में उजाला बढ़ गया था. कहीं कुछ नहीं बदला था. एक क्षण के लिए मैलोरी को लगा जैसे वे किसी संग्रहालय में रखी मोम की पुतलियां हैं या फिर एडवर्ड हांपर की किसी पेंटिंग के प्रादेशिक होटल में आराम कर रहे थके हुए दंपती.

कर्टिस विमान की गुर्राहट फिर सुनाई देने लगी थी.

"ऐन, मेरे खयाल से वह हिंटन ही है."

वह उसी जगह लेटी रही. मैलोरी ने उसके गालों को थपथपाया. इस पर उसने करवट बदलकर मुंह दूसरी ओर कर लिया.

हाथ में मेडिकल केस लिये मैलोरी सुपर मार्किट की टूटी हुई खिड़की में से अंदर कूद गया. यह वीरान दूकान उसके लिए आपूर्ति का प्रमुख स्रोत था. पैकेट में बंद चावल, चीनी आदि रखने के बाद मेडिकल केस काफी भारी हो गया था. खाना पकाने का काम वह होटल में ही कर लिया करता था.

सब कुछ निपटाकर मैलोरी होटल के कार पार्क में आ गया और वहां खड़ी पुलिस की पेट्रोल कार में चालक की सीट पर बैठ गया. उसे लगा कि इस कार का इंजन काफी शक्तिशाली होगा और इसकी सहायता से वह विमान का पीछा करके उसके गुप्त ठिकाने का पता लगा लेगा.

तभी एक ग्लाइडर होटल की इमारत के पीछे से तैरता हुआ उसके सिर के ऊपर से गुजरा. मैलोरी को लगा कि अब तो वह उस भूतपूर्व अंतरिक्ष यात्री को पकड़ ही लेगा. पर जब तक वह इंजन स्टार्ट करता, ग्लाइडर उसकी नजरों से ओझल हो गया था. फिर भी उसने कार को पार्किंग के स्थान से बाहर निकाला और तेजी से उस दिशा की ओर बढ़ने लगा जिधर वह ग्लाइडर गया था.

नगर के दक्षिणी उपनगरीय क्षेत्र में स्थित एक स्टेडियम के ऊपर चक्कर लगाता ग्लाइडर मैलोरी को दिखायी दे गया. ग्लाइडर चालक ने भी संभवतः उसे देख लिया था और वह कार की ओर आने लगा. जब वह अपनी गुर्राहट के साथ मैलोरी की कार के ऊपर से गुजरा तो मैलोरी ने चीखकर पुकारा, "हिंटन!"

तभी उसने देखा कि ग्लाइडर का चालक उसे इशारा करके काकोआ बीच की तरफ जाने वाली कच्ची सड़क पर आने का इशारा कर रहा था. उसकी एक झलक देखकर मैलोरी को आश्चर्य हुआ कि भूतपूर्व अंतरिक्ष यात्री हिंटन महिलाओं जसे पीले बालों की विग क्यों लगाये हुए है. ग्लाइडर उसी दिशा में जाकर नजरों से ओझल हो गया था.

मैलोरी ने कार का इंजन बंद कर दिया. अभी वह सड़क पर उतरने ही वाला था कि उसे एक फोकर विमान के इंजन की गड़गड़ाहट सुनाई दी. अंतरिक्ष केंद्र के पीछे से जल्दी ही वह फोकर विमान प्रकट हुआ. प्रक्षेपण स्थल का एक नजदीकी चक्कर लगाने के बाद वह जमीन से करीब पचास फुट की ऊंचाई पर उड़ता हुआ कार की तरफ झपटा. उसकी मशीनगनों का निशाना कार पर सधा हुआ था. मैलोरी फिर से इंजन स्टार्ट करने की सोच ही रहा था कि विमान चालक ने उस पर गोलियों की वर्षा कर दी. पहले ही हमले में कार की छत क्षतिग्रस्त हो गयी. इससे पहले कि विमान दूसरे हमले के लिए लौटता, मैलोरी सड़क के किनारे के पेड़ों के झुरमुट की तरफ भागा. सुरक्षित जगह पर पहुंचने के बाद उसने पलटकर देखा, कार चल रही थी. स्वयं उसके सीने पर तथा हाथों पर भी चोट आयी थी. इसका मतलब यह हुआ कि ग्लाइडर चलानेवाली वह महिला उसे फोकर विमान के आने की चेतावनी दे रही थी.

यहां से वापस होटल पहुंचने के लिए कम से कम आधे घंटे का पैदल रास्ता था. इतनी देर तक सड़क पर चलना खतरनाक था. फोकर विमान किसी भी क्षण उसे अपना निशाना बना सकता था. एकमात्र विकल्प बचा था पेड़ों के बीच में से चलता रहे.

कुछ दूर चलने पर पेड़ों का घनापन कम होने लगा था. समय भी अपना रुख बदलने लगा. मैलोरी अब स्वप्नकाल में प्रविष्ट होने लगा था. वह भाग रहा था पर यह भागना किसी स्लो मोशन की फिल्म की तरह था. अब वह काकोआ बीच के होटलों के इलाके में पहुंच गया था. एक संकेत के अनुसार पास ही में कोई चिड़ियाघर भी था. मैलोरी चलता हुआ चिड़ियाघर में घुस गया. वहां कुछ जानवर अपने पिंजड़ों में बैठे थे और कुछ खुले घूम रहे थे. वहीं एक ग्लाइडर भी खड़ा था जिसे मैलोरी पहले उड़ते हुए भी देख चुका था. उसके पंखों के नीचे दो चीते बैठे थे. उनमें से एक उठा और मैलोरी पर छलांग लगाने की मुद्रा में आ गया. पर मैलोरी डरा नहीं, वह जानता था कि उसके और चीते के बीच बीस फुट की दूरी है और इस दूरी को पार करना चीते के लिए संभव नहीं है. इस बीच समय की गति और धीमी हो गयी थी. नदी में उछलती मछलियां हवा में ही लटक गयी थीं. नदी की लहरें जहां की तहां थम गयी थीं.

तभी मैलोरी की नजर पास ही के स्विमिंग पूल के डाइविंग बोर्ड पर दोनों बाहें फैलाये खड़ी एक स्त्री आकृति पर पड़ी. वह उस दिशा में बढ़ा. उस महिला ने भी संभवतः उसे देख लिया था, जब तक मैलोरी उसके पास पहुंचा, उसने बाहर निकलकर कपड़े पहन लिये थे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब मिलने लगा है

डीलक्स निरोध

चिकनाईयुक्त

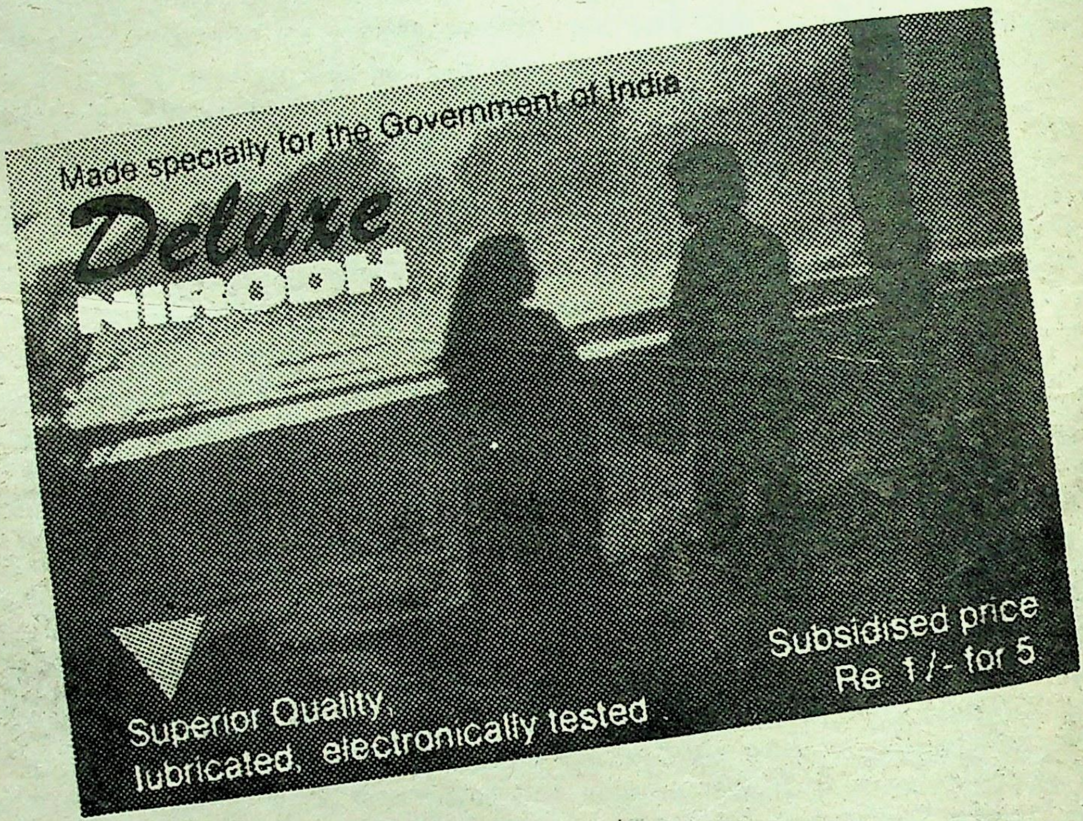

1 रु० के 5

बढ़िया पसन्द वाले दम्पतियों के लिए

*उत्तम कोटि
*इलेक्ट्रानिक तरीकों से परखा गया

सभी बड़े शहरों में बिकता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो तुम बच आये." अपने बच्चों जैसे चेहरे पर जड़ी वयस्क आंखों से उसे देखते हुए उसने पूछा, "तुम पुलिस में हो न?"

"नहीं, मैं डाक्टर हूं, एडवर्ड मैलोरी. मैं अपनी पत्नी के साथ छुट्टियां बिताने यहां आया हूं."

"छुट्टियां?" लड़की ने जैसे न समझनेवाले ढंग से सिर हिलाया, तो फिर वह पुलिस की कार... पर डाक्टर, अब तो कोई छुट्टियां बिताने फ्लोरिडा नहीं आता. अगर तुम जल्दी ही यहां से चले न गये तो हो सकता है कि तुम्हारी ये छुट्टियां कभी खत्म ही न हों. किसी भी क्षण घड़ियों का चलना बंद हो सकता है."

"इसीलिए हम यहां हैं. मैं नासा में काम करता था."

"मेरे पिता भी वहीं काम करते थे." लड़की ने सुस्पष्ट स्वर में कहा, "वे अंतिम अंतरिक्ष यात्री थे—एलन शेपले...एकमात्र ऐसे अंतरिक्ष यात्री जो लौटकर नहीं आये. और एकमात्र ऐसे जिनकी किसी ने प्रतीक्षा नहीं की."

"शेपले तुम्हारे पिता थे?" मैलोरी ने चौंकते हुए कहा, "उनकी मौत तो शटल में ही हो गयी थी. तुम जानती हो कि हिंटन..."

"डाक्टर, मेरे खयाल से हिंटन ने ही वास्तव में मेरे पिता की हत्या की है." इससे पहले कि मैलोरी इस बात पर अपनी प्रतिक्रिया प्रकट करता, उस लड़की ने कहा, "खैर, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता. महत्वपूर्ण तो यह है कि जब मेरे पिता वापस लौटें तो कोई यहां पर हो.

"हिंटन कहता है कि वे कभी भी लौट सकते हैं, उसके हिसाब से वे इस तट पर कहीं उतर सकते हैं."

एलन शेपले—वह पहला व्यक्ति जिसकी हत्या अंतरिक्ष में हुई थी. मैलोरी को शटल का वह युवा पायलेट अच्छी तरह याद है. अंतरिक्ष युग की समाप्ति से पहले का वह अंतिम अंतरिक्ष यात्री था जिसे केप केनेडी से अंतरिक्ष में भेजा गया था. मैलोरी की बड़ी इच्छा थी कि वह भी उसके साथ को-पायलेट के रूप में जाये. मैलोरी को यह भी याद है कि चिकित्सा केंद्र में हिंटन से पहली ही मुलाकात में वह नफरत करने लगा था. हिंटन ही वह पहला व्यक्ति था जिसने अंतरिक्ष कार्यक्रमों के ठीक मध्य में, इन कार्यक्रमों के मनोवैज्ञानिक पक्ष के रहस्यों को खोला था. उसे उन कारणों का पता चल गया था जिनसे पुराने अंतरिक्ष यात्रियों पर रहस्यात्मकता तथा उदासी के दौरे पड़ जाते थे. उसके बाद हिंटन ने केवल इतना किया कि दिक् और काल के तंतुओं को नष्ट कर दिया और समय के पैमाने को तोड़ दिया. यह सब मैलोरी समझता था. इसका परिणाम यह हुआ कि मानव के मानस में लाखों वर्षों से समय का जो ढांचा खड़ा था वह पहले तो अंतरिक्ष-यात्रियों और फिर नासा के कर्मचारियों के लिए ढह गया और फिर यह रोग पूरे अंतरिक्ष केंद्र तथा पास के शहरों तक पहुंच गया. केप-केनेडी तथा पूरा फ्लोरिडा ही विषाक्त हो गया था और लोगों ने उसे ऐसे ही त्याग दिया जैसे नेवादा को परमाणु परीक्षणों के बाद त्याग दिया था.

मुकद्दमे के दौरान पहले तो हिंटन अपने को निर्दोष बताता रहा पर बाद में उसने मौन धारण कर लिया. उसे एकांत कारावास की सजा दी गयी. वह शेष मानव जाति को हानि न पहुंचा सके, इसलिए उसे एक सुदूर द्वीप पर बंदी बना कर रखा गया.

वहां बीस साल लगाकर उसने एक रॉकेट इंजन तैयार किया जो ...कों पर आधारित विस्फोटकों से चलता था. अपने इस रॉकेट की सहायता से वह कैद से भाग निकला. लोगों का खयाल था कि वह ...मर-खप गया होगा क्योंकि उसके इस राकेट का मलबा समुद्र में ...मिल गया था.

उसके छह महीने बाद आखिर मैलोरी ने अपने उस सहकर्मी को ...केनेडी में देख ही लिया. काकोआ बीच में मैलोरी मोटर साइकिल लेकर टाइटस विले की सड़क पर आया तो उसने देखा कि एक पुरानी राइट विमान उसके ऊपर से उड़ता हुआ सड़क पर ही उतर गया.

"मैलोरी, मैं तुम्हें ही ढूंढ़ रहा था." उसने पायलेट की सीट पर बैठे-बैठे पुकारा. मैलोरी उसके नजदीक गया तो उसने हाथ बढ़ाकर उसे ऊपर खींच लिया, "नाइटिंगेल ने अभी मुझे बताया कि तुम यहीं हो. डाक्टर, मैंने तो तुम्हें लगभग मार ही डाला था."

कहने के साथ ही उसने इंजन स्टार्ट कर दिया और केप-केनेडी की पट्टी पर उतार लिया.

"मैलोरी, मुझे खुशी है कि तुम आ गये," हिंटन ने अपने सिर से हैलमेट उतारते हुए कहा, "और ऐन? वह ठीक-ठाक है न?"

"वह भी यहीं है, टाइटसविले के एक होटल में."

"मैं जानता हूं. मैंने उसे होटल की छत पर देखा है." हिंटन की आवाज खोयी-खोयी-सी लग रही थी, "तुमसे मिलना अच्छा लग रहा है. तुम्हीं तो एक ऐसे व्यक्ति हो, जो जानता था कि यहां क्या हो रहा है... अब समय कम रह गया है. मैं समझता हूं कि पहले तो यही समझना कठिन है कि..."

वे दोनों विमान से उतरकर शटल की ओर जाने वाली सीढ़ियों पर चढ़ रहे थे.

"उड़ान और समय, ये दोनों एक-दूसरे से बंधे हुए हैं. पक्षी यह बात पहले से ही जानते थे. समय से बाहर निकलने के लिए यह जरूरी है कि हम उड़ना सीख लें. इसीलिए मैं यहां हूं. मैं अपने को उड़ना सिखा रहा हूं. शुरुआत के लिए इन पुराने विमानों को इधर-उधर उड़ा रहा हूं. मैं बिना पंखों के उड़ना चाहता हूं."

ऐन की तबीयत अब कुछ-कुछ संभल रही थी. लेकिन समय की अनियमितता के दौरे अब उस पर अधिक पड़ने लगे थे. यह मैलोरी अच्छी तरह जानता था कि अब जल्दी ही समय उन दोनों के लिए ठहर जानेवाला है. ठीक समय रुकने के क्षण यदि आप हवा में छलांग लगा दें तो आप नीचे कभी नहीं गिरेंगे और पक्षियों की तरह हवा में उड़ते रहेंगे.

मैलोरी हमेशा इसी कोशिश में रहता कि हिंटन के विमानों की गड़गड़ाहट सुनकर ऐन बाहर छत पर न निकले. पर एक दिन वह चूक गया. पूरा होटल छान मारा, ऐन का कहीं पता न था. वह एक गाड़ी लेकर केप-केनेडी के अंतरिक्ष केंद्र में गया. प्रक्षेपण प्लेटफार्म के नीचे पहुंचकर उसे हिंटन की आवाज सुनाई दी, "डॉक्टर हम यहां हैं." वह शटल के दरवाजे के पास ऐन की कमर में हाथ डाले खड़ा हाथ हिला रहा था. इसके बाद शटल के भीतर चले गये और कुछ ही क्षणों में शटल प्रकाश में विलीन हो गया था.

रोज की तरह मैलोरी अपने जीवन की आखिरी शाम में काकोआ बीच के उस वीरान होटल के स्विमिंग पूल के किनारे बैठा था.

गेल शेपले का ग्लाइडर तभी उसके सिर के ऊपर से गुजरकर नदी की तरफ गया. मैलोरी अब उससे बोर होने लगा था. गेल ने अब खाना लगभग बंद ही कर दिया था. मैलोरी को इस बात की खुशी थी कि एक दिन ऐलन शेपले लौट आयेगा और गेल अपनी यह उड़ान बंद करेगी. फिर दोनों बाप-बेटी यहां से चले जायेंगे.

मैलोरी ने अपने जाने की तैयारियां भी पूरी कर ली थीं. शेर के पिंजरे की चाबी हमेशा वह अपने पास रखता था. उसके पास अब बहुत कम समय बचा था.

उसने पिंजरे की तरफ देखा. शेर पिंजरे की सलाखों के पास बैठा उसका इंतजार कर रहा था. वह अपनी जगह से उठा और शेर के पिंजरे की तरफ बढ़ने लगा. अब वह पिंजरे का दरवाजा खोलेगा और हमेशा के लिए इस पशु के साथ अभिन्न हो जायेगा. □

संक्षिप्त रूपांतर : सु. उ.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खतरा—मानव !

गार्डन डिक्सन

अपनी इस धरती के लोग अभी तक जहां-जहां पहुंचे हैं, उन्हें मनुष्य तो दूर किसी चिड़िया तक के संकेत नहीं मिले हैं, लेकिन अन्य ग्रहों को प्राणियों के इस हलचल से खतरा उत्पन्न हो गया लगता है? क्या अन्य ग्रहों पर कोई विकसित सभ्यता है? और यदि है तो उसे हमारी इस सभ्यता से क्या खतरा महसूस हो सकता है? जवाब दे रही है यह अमरीकी कथा——

न्यू हैंपशायर की शांत, अंधेरी रात में अंतरिक्ष-यान खामोशी से पृथ्वी पर उतर रहा था. उसमें बैठे दोनों अन्यलोकीय प्राणियों ने, चारों ओर देखकर यान को रोक दिया. उस समय यान पृथ्वी से करीब पचास फीट ऊपर था. मैली चांदनी में दोनों को चरागाह एक तुड़े-मुड़े पीले कागज की भांति लग रहा था. छोटे अन्यलोकीय प्राणी ने बड़े से कहा, "जगह बुरी तो नहीं है."

"बुरी क्यों होगी भला ?"

छोटे प्राणी ने तुरंत कोई जवाब नहीं दिया. फिर थोड़ा हिलकर बोला, "बच्चे शीघ्र ही आयेंगे. अभी-अभी संदेश मिला है."

"कितने बच्चे आनेवाले हैं ?" बड़े प्राणी ने पूछा.

"डॉक्टर का खयाल है—तीन. पहली उत्पत्ति के लिए इतनी संख्या काफी है."

"मेरी पत्नी के सिर्फ दो बच्चे हैं."

"मुझे मालूम है. तुमने ही यह बात मुझे बतायी थी."

दोनों कुछ क्षण के लिए खामोश रहे. एक नैया की भांति अंतरिक्ष-यान रात्रि-रूपी जलधारा पर तैर-सा रहा था.

तभी छोटे प्राणी ने कहा, "वह देखो. . . . ऐन वक्त पर !"

बड़े प्राणी ने नीचे देखा. एक लंबी, धुंधली आकृति पेड़ों के समूह से बाहर निकली और आगे बढ़ने लगी. उसके सामने एक नाचता हुआ प्रकाशपुंज था. बड़ा प्राणी तनकर बैठ गया. उसने गंभीर स्वर में आदेश दिया, "कंट्रोल्स संभालो."

छोटे प्राणी ने भी गंभीर स्वर में कहा, "कंट्रोल्स."

"यान को नीचे लो."

"लिया." और अंतरिक्ष-यान नीचे उतरने लगा. एक ध्वनि रहित, प्रकाश रहित धमाका हुआ —ऐसा लगा, जैसे कोई आघातकारी तरंग आयी और चली गयी हो. धुंधली आकृति जमीन पर गिर पड़ी. उसके हाथ की टार्च घास में गायब हो गयी. अंतरिक्ष-यान अब भूमि पर स्थिर खड़ा था. दोनों प्राणी उसमें से बाहर निकले और जमीन पर पड़े लंबे आदमी को देखने लगे. उसकी आयु तीस के आसपास होगी, और उसके मामूली-से कपड़े साफ धुले हुए थे. अचेत होने पर भी उसकी सांस धीरे-धीरे चल रही थी. बड़े प्राणी ने उसका सिर उठाते हुए कहा, "तुम पांवों की ओर से पकड़ो. पकड़ लिया? अब इसे अंतरिक्ष-यान में ले चलो."

एलिज टिमोथी पारकर को पता नहीं था कि वह सपना देख रहा है या जाग रहा है. उसे इस वक्त यह भी याद नहीं रहा था कि उसका नाम क्या है ? उसे अपनी पीठ के नीचे किसी कठोर और सर्द पदार्थ की अनुभूति हो रही थी. जैसे ही उसने उठने का प्रयत्न किया, उसका सिर कुछ इंच की ऊंचाई पर स्थित सीलिंग पर लगा. उसने अपनी आंखें झपकायीं. चारों ओर घनघोर अंधेरा था.

वह डर के मारे कांप उठा. और जब उसने धीरे-धीरे अपने हाथों को फैलाकर यह महसूस किया कि वह चारों ओर से कफन जैसी कि[illegible] वस्तु में बंद है तो वह एकबारगी चिल्ला उठा.

कुछ देर बाद जब उसकी आंखें फिर खुलीं तो उसने अपने आ[illegible] को एक विचित्र स्थान पर पाया. वह स्थान किसी दीवार से घिरा हु[illegible] नहीं था. हां, यंत्र ही यंत्र अवश्य दिखायी दे रहे थे. उसने अपने आ[illegible] इन यंत्रों के बीच घूमते पाया. ये यंत्र उसे छूते हुए, धक्का देते हुए [illegible] उल्टा करते हुए उसका निरीक्षण कर रहे थे. टिमोथी को कभी [illegible] महसूस होती और कभी गर्मी. यंत्रों के चलने की हल्की [illegible] भिनभिनाहट भी उसके कानों में, बीच-बीच में पड़ जाती थी.

उससे सवाल भी पूछे जा रहे थे. और पारकर बताने लगा. . .

". . . . मेरा खयाल है कि मैं एक साधारण लड़का था. पांच[illegible] कक्षा में मैंने पचहत्तर गज की दौड़ में प्रथम स्थान प्राप्त किया था. मैं हाकी खेलने के अलावा, अच्छी निशानेबाजी भी कर लेता था. . . मुझे मछलियां पकड़ने का भी शौक था, पर मैं उसके लिए कभी स[illegible] नहीं निकाल पाता था. . . . मैं एक किसान का लड़का हूं और [illegible] अधिकांश समय खेतों और खुली हवा में ही व्यतीत होता था. . . रविवार की सुबह को जब मैं खेलने के लिए जाना चाहता था, [illegible] गिरजाघर में जाने के लिए बाध्य किया जाता था.

. . . पिछले महायुद्ध में मैं जर्मनों के विरुद्ध लड़ा था, पर [illegible] गत रूप से जर्मनों के प्रति मेरे मन में कोई द्वेष भाव नहीं है. [illegible] रहकर मुझे अनुशासन, श्रम और अध्यवसाय का महत्त्व मालू[illegible]

. . . मैं अपने प्रतिनिधियों के चुनाव में बड़ी दिलचस्पी [illegible] हिस्सा लेता हूं. . . कालेज मैं कभी गया नहीं, क्योंकि उसकी [illegible] श्यकता मुझे कभी अनुभव नहीं हुई. मेरे जैसे किसान के लिए [illegible] शिक्षा व्यर्थ है. मैं अणु-बम के बारे में जानता हूं, पर वह कैसे बन[illegible] और उसका उपयोग कैसे किया जाता है, यह जानने की उत्सु[illegible] मेरे मन में कभी नहीं रही. . . मैंने अभी तक विवाह नहीं किया है [illegible] क्यों नहीं किया, इससे आप लोगों को क्या मतलब ?. . . . वैसे औ[illegible] के साथ उठना-बैठना, बातें करना मुझे अच्छा नहीं लगता. . . [illegible] भगवान में श्रद्धा है और अपने देश अमरीका में भी. . . ."

इस बार जब उसे होश आया तो उसने अपने आप को कार्या[illegible] जैसे दिखायी देने वाले एक कमरे में पाया, पर इस कमरे का फर्नी[illegible] साधारण कार्यालयों के फर्नीचर से बहुत भिन्न था. उदाहरणार्थ [illegible] कोने में एक बक्स रखा था, जिसमें कई दरवाजे लगे थे और एक [illegible] थी, जो डेस्क हो भी सकती थी, और नहीं भी हो सकती थी. [illegible] एक भी नहीं थी. सिर्फ तीन छोटे और चपटे कुशन थे, जिन पर बैठे [illegible] प्राणी, जो देखने में भालू जैसे लगते थे, उसकी ओर बड़े गौर से [illegible] रहे थे. वह स्वयं वैसे एक कुर्सी पर ही बैठा था.

जैसे ही इन तीनों प्राणियों ने देखा कि उसकी आंखें खुल ग[illegible] उन्होंने उस पर से अपना ध्यान हटाकर आपस में बातें करना [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर दिया. पारकर ने अपना सिर हिलाकर, अपनी आंखों को झपकाया. यदि कानों को झपकाना संभव होता तो वह उन्हें भी झपकाता. आश्चर्य की बात ही थी. ये प्राणी जो आवाज कर रहे थे, वह उसके लिए सर्वथा अपरिचित थी, पर कमाल यह था कि उसे उनकी आवाजों के अर्थ अच्छी तरह समझ में आ रहे थे. यह एक विचित्र अनुभूति थी.

और सिर्फ इतना ही नहीं था. उसे यह भी 'पता चल गया था' कि उनमें से एक प्राणी, कोई उच्च सेनाधिकारी है और इस समय अपनी यूनीफार्म पहने हुए है. दूसरा प्राणी कोई वैज्ञानिक लगता था, और तीसरा प्राणी, जो उम्र में दोनों प्राणियों से बड़ा था, कोई विद्वान था. पारकर ने सुना, वैज्ञानिक सेनाधिकारी से कह रहा था, "कमांडर, यह प्राणी अब पूरे होश में है. उसे शारीरिक और मानसिक दोनों दृष्टियों से स्वस्थ माना जा सकता है."

पारकर ने कमांडर के स्वर का 'अनुवाद' अपने मन में इस प्रकार सुना, "बहुत अच्छी बात है, पर प्रश्न यह है कि क्या यह हमारी बात समझ सकेगा ?"

"अवश्य, महोदय !"

"मेरा मतलब है कि हमारी बात पूरी तरह उसकी समझ में आ जायेगी न !" सेनाधिकारी ने अपना एक पंजा मेज पर थोड़ा हिलाते हुए कहा, "और वह हमारे निर्देशों का पालन भी कर सकेगा ?"

वैज्ञानिक ने विद्वान की ओर देखा. विद्वान ने धीमे स्वर में कहा, "इस प्राणी के संस्कार ऐसे हैं कि उसे इसमें कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए." वे तीनों, चुपचाप, पारकर की ओर देखने लगे. पारकर भी उन्हें गहरी रुचि से देख रहा था. उसे यह दृश्य बड़ा अस्वाभाविक लग रहा था. विलक्षण दुनिया के विलक्षण लोग !

खामोशी बढ़ती गयी. साथ ही, दोनों पक्षों की परेशानी भी, क्योंकि दोनों पक्षों में से कोई भी पहले इस खामोशी को भंग करने को तैयार नहीं था. तभी कमांडर ने वैज्ञानिक से पूछा, "यह ठीक तो है न !" वैज्ञानिक ने, जो डॉक्टर भी था, जवाब दिया, "हां, हमारे हिसाब से इसे ठीक ही होना चाहिए."

अब कमांडर ने पारकर से पूछा, "जानते हो, इस वक्त तुम कहां हो?" पारकर यूं भी कम बोलनेवाला आदमी था, और इस वक्त वह जिस स्थिति में था, उसमें उसने चुप रहना ही ठीक समझा.

कमांडर लगातार पारकर को देखे जा रहा था, पर पारकर ने कई मिनट की खामोशी के बाद सिर्फ इतना पूछा, "मेरा पाइप कहां है?" यह प्रश्न सुनकर तीनों ने पहले एक-दूसरे को देखा और फिर पारकर को. फिर वैज्ञानिक ने कहा, "वह हमारे पास है. उसे तुम्हें लौटा दिया जायेगा, पर फिलहाल वह हमारे पास ही रहेगा."

पारकर ने मानव-सुलभ चतुराई के साथ पूछा, "धूम्रपान तुम्हें अच्छा नहीं लगता क्या ?"

"ऐसी बात नहीं है, पर हमें तुमसे तुम्हारे बारे में बातें करनी हैं. जानते हो, तुम इस वक्त कहां हो ? एक ऐसे ग्रह पर, जो तुम्हारी पृथ्वी से बहुत मिलता है. हम पृथ्वी से अनेक प्रकाश-वर्षों की दूरी पर हैं. हम तुम्हें यहां इसलिए नहीं लाये कि हम तुमसे घृणा करते हैं या तुम्हारे प्राण लेना चाहते हैं या तुम्हें पृथ्वी से अलग करना चाहते हैं. हम तुम्हें. . . . ."

"अध्ययनार्थ यहां लाये हैं. तुम हमारी बात समझ रहे हो ?" विद्वान प्राणी ने पूछा

"मैं सुन रहा हूं."

"तुम लोगों की ऐसी कई विशेषताएं हैं, जिनका हम विशेष रूप से अध्ययन करना चाहते हैं. अब तक हमने तुम्हारे जो निरीक्षण किये हैं, उनसे हमें उन विशेषताओं का कोई पता नहीं चला. हम इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि बिना तुम्हारे सहयोग के हम उन विशेषताओं का पता नहीं लगा पायेंगे."

"मगर. . . . . "

"चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है. तुम्हें कोई कष्ट न दिया गया है, न दिया जायेगा. तो क्या हम तुम्हारे सहयोग की अपेक्षा कर सकते हैं ?. . . . अब तुम्हें बताया जायेगा कि हम क्या चाहते हैं तुमसे." कहकर कमांडर ने विद्वान की ओर देखा, विद्वान ने अपना एक पंजा उठाकर उसे एक दीवार की तरफ करते हुए कहा, "जानते हो यह क्या है ?" दीवार के स्थान पर अब बिंदुओं और रेखाओं की [illegible] भूलभुलैया दिखायी दे रही थी. पारकर ने उसे देखकर कहा, "मुझे मालूम नहीं कि यह क्या है."

"यह एक मानचित्र है, तुम्हारे अरबों वर्षों और हजारों प्रकाश-वर्षों की काल-यात्रा का."

पारकर ने कुछ नहीं कहा. विद्वान आगे कहते रहे, "हम जो तुम्हारी जाति के बारे में जानते हैं, उसके दो आधार हैं : इति[illegible] और दंतकथाएं. मानव-जाति का इतिहास बड़ा अधूरा है और दंतक[illegible] उससे भी ज्यादा [illegible]री हैं."

उसने [illegible] [illegible] की प्रतिक्रिया जानने का प्रयास किय[illegible] पारकर ने [illegible] नहीं कहा.

"हम [illegible] जानकारी के अनुसार, मानव-जाति ने तीन बार हमा[illegible] [illegible] के [illegible] प्रभुत्व जमाने का प्रयत्न किया है. इन प्रया[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से न तुम्हारी जाति को कोई लाभ हुआ, और न उन ग्रहों के लोगों को, जिन पर आक्रमण करने का प्रयास तुमने किया था. हमारे ग्रह के लोग तुम्हारी जाति के लोगों की अनेक नैसर्गिक क्षमताओं के कायल हैं, पर यह भी जानते हैं कि तुम लोगों में दूसरों की वस्तुओं पर अधिकार जमाने की बहुत बुरी आदत है. ऐसी आदत कुछ परिचित ग्रहों के लोगों में भी है, पर वे लोग तुम्हारे समान स्वार्थी और धूर्त नहीं हैं. इन लोगों की स्वार्थपरता का सामना करने के लिए हमारे तथा हमारे पड़ोसी ग्रहों के लोगों के पास अनेक उपाय मौजूद हैं और उनका प्रयोग करके वे उनकी स्वार्थपरता का शमन करते रहते हैं, पर हम लोगों ने पाया है कि मानव-जाति के साथ ऐसा प्रयोग करना सरल नहीं है. इसका क्या कारण है, यह हम अभी तक तुम्हारी शारीरिक और मानसिक जांच के बावजूद नहीं जान पाये हैं. हमारे तथा हमारे पड़ोसी ग्रहों में यह कहावत प्रचलित है कि मानव बहुत खतरनाक प्राणी है और उससे दूर रहना ही उचित है. यहां तक कि उसका स्पर्श तक नहीं करना चाहिए, लेकिन हमने जो विशद जांच पूरी की है, उससे हमें इस चेतावनी का कोई औचित्य नहीं दिखायी देता. इससे हमें लगता है कि मानव में कोई ऐसी अज्ञेय शक्ति मौजूद है, जिससे हम अपरिचित हैं."

पारकर बिना कुछ बोले, उसकी बात ध्यान से सुन रहा था. विद्वान ने, कुछ रुककर कहा, "हमारी आकाश गंगा के ग्रहों के निवासियों ने मानव की अज्ञेय शक्ति का रहस्य मालूम करने का काम हमें सौंपा है, पर अपनी जांच की असफलता के बाद हमारी समझ में नहीं आता कि हम क्या करें ? वैसे, कुछ न कुछ तो करना ही पड़ेगा, क्योंकि यदि हमने इस रहस्य को नहीं जाना तो मानव-जाति क्रमशः इतनी अधिक शक्तिशाली हो जायेगी कि हमारी आकाशगंगा के सब ग्रहों के लिए संकट बन जायेगी."

अब वैज्ञानिक ने कहना आरंभ किया, "इस जांच के लिए हमारे प्रतिनिधियों ने तुम्हें चुना. तुम्हें नशीली दवाएं देकर अंतरिक्ष-यान द्वारा यहां लाया गया. यहां हमारे वैज्ञानिकों और चिकित्सकों ने, बिना तुम्हारा स्पर्श किये (क्योंकि इसकी चेतावनी हमें दी जा चुकी थी) तुम्हारी पूरी शारीरिक और मानसिक जांच की, पर जैसा कि हमारे साथी अभी-अभी तुम्हें बता चुके हैं, इस जांच से हमें तुम्हारी तथाकथित अज्ञात शक्ति के बारे में कोई पता नहीं चला. उस अज्ञात और रहस्यपूर्ण शक्ति के बारे में तुम्हारी जाति के इतिहास और दंत कथाओं में काफी सामग्री उपलब्ध है. ये सब बातें, विस्तार से कहने की आवश्यकता इसलिए हुई कि हमें अब यह निश्चय करना है कि आगे तुम्हारे साथ क्या किया जाये ?"

पारकर ने प्रश्नभरी निगाहों से उसे देखा. कमांडर ने उससे कहा, "चलो, हमारे साथ आओ."

और जैसे-जैसे दिन सप्ताहों में, और सप्ताह महीनों में बदलते गये, वैसे-वैसे उसका यह अविश्वास और अधिक बढ़ता गया, पर जब उसे पिंजरे में रहते-रहते पूरा एक वर्ष हुआ तो स्थिति की क्रूर वास्तविकता का एहसास उसके चेतन मन को होने लगा. वैसे, पिंजरे में उसे काल की गति निश्चल प्रतीत होती थी.

. . . . एक दिन, पहरेदारों ने देखा, पारकर सचमुच पागल हो गया है. वह जोर-जोर से चिल्लाता हुआ, पिंजरे की छड़ों को तोड़ने की कोशिश कर रहा था. भयभीत पहरेदारों ने डॉक्टर को बुलाया. डॉक्टर ने आकर उसे धक्का देकर नीचे गिरा दिया. पारकर ने उसी क्षण अपनी कमर में एक जबर्दस्त प्रहार अनुभव किया. वह अचेत हो गया.

जब उसे होश आया तो उसने अपने ऊपर डॉक्टर को झुके पाया. डॉक्टर ने कहा, "तुमने कोशिश तो बहुत की, पर उसका कोई अच्छा नतीजा सामने नहीं आया, तुम्हें पहले ही चेतावनी दी जा चुकी है कि यहां से भागने की तुम्हारी सारी कोशिशें बेकार होंगी."

पारकर को मुस्कराते देखकर डॉक्टर ने उसे डांटते हुए "यह बकवास बंद करो. और हमें मूर्ख बनाने का प्रयत्न भी न ... हम अच्छी तरह जानते हैं कि तुम अपने पूरे होशोहवास में हो."

पारकर फिर भी मुस्कराता रहा. डॉक्टर ने फिर पूछा, "क्या ... गया है तुम्हें?" पारकर ने प्रसन्न मुद्रा में डॉक्टर से कहा, "कुछ ... हुआ है, पर मैं घर जाना चाहता हूं."

"मुझे अफसोस है, मैं तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सकता. तुम्हारी हरकतें मेरी समझ से बाहर हैं." और यह कहकर वह चला गया. पा... ने राहत और चैन की सांस ली. अगले क्षण, उसकी आंखें मुंदने ... उस दिन वह काफी देर तक सोया. इतनी तृप्तिदायक नींद उसे ... में नसीब हुई थी.

भालू जैसे इन लोगों के पास कुछ ऐसी दवाएं भी थीं, ... मानव की चेतना को शून्य या अर्द्ध-शून्य बनाया जा सकता था. ... ने उनका प्रयोग पारकर पर करना आरंभ कर दिया.

पारकर अब अधिकतर अपनी खाट पर लेटा मुस्कराता रहता ... उसकी स्थिति ऐसी थी कि वह खिड़की के बाहर उस मैदान को ... आंशिक रूप से देख सकता था, जहां उन लोगों के अंतरिक्ष-यान आ... रहे थे. जैसे ही एक अंतरिक्ष-यान उतरा, उसने आंखें बंद कर लीं, ... कुछ सोचने लगा. तेजाब से भरी खाई पर फैला पुल उस क्षण फैला... था. तभी 'मानीटर स्क्रीन' चमका और भालू जैसे एक प्राणी ... यांत्रिक बांह पर रखी खाने की प्लेट को पिंजरे की ओर आते ... जैसे ही यह प्लेट दो फुट वर्गाकार के आधे दरवाजे से टकरा... खुल गया, और मुस्कराते हुए पारकर ने उस प्लेट को बांह से ... उसके ऐसा करते ही आधा दरवाजा अपने आप बंद हो गया. ... खड़े रक्षकों ने चैन की सांस ली. यांत्रिक बांह दरवाजे की ओर ... मॉनीटर स्क्रीन में से किसी ने नीचे रखे बोर्ड पर निगाह डाली ... उसी क्षण बाहर का दरवाजा क्षण भर के लिए खुला.

और, उसी क्षण का लाभ उठाकर पारकर अपने पिंजरे से ... आ गया. और अगले क्षण आधे बंद दरवाजे के पार ऐसी ... लगायी कि उसकी पकड़ में खाई को पार करती यांत्रिक बांह ... गयी, और खाई के तेजाब की असह्य गंध को चीरता हुआ ... बांह के सहारे बाहर के मुख्य प्रवेश-द्वार पर खड़े पहरेदारों के ... आकर गिरा. और इससे पहले कि वह स्वयं चालित दरवा... हो, वह फुर्ती से एक और छलांग लगाकर दरवाजे के बाहर ...

अब वह खुले आकाश के नीचे स्वतंत्र था, पर पह... अलार्म की तीखी आवाज सुनायी देने लगी थी. उसने तेजी ... शुरू किया. . . पूरा जोर लगाकर.

कुछ क्षण बाद, वह उस लोक के एक अंतरिक्ष-यान में ... उड़ता हुआ पृथ्वी की ओर जा रहा था, अंतरिक्ष में टिमटि... सितारों की ओर देखता हुआ, मुस्कराता हुआ.

एक परलोकीय अंतरिक्ष-यान में सगर्व बैठा हुआ एक ... पृथ्वीवासी मानव !

"हमें अपने सवाल का जवाब मिल गया." विद्वान ने अपने ... से कहा, "और जवाब यह कि साधारण होते हुए भी पृथ्वीवा... इस मायने में असाधारण है कि वह दुःसाहसी है, जोखिम उठा ... और प्रतिकूल से प्रतिकूल परिस्थिति को भी अपने अनुकूल बना... है. इतनी बुद्धि हमारे किसी भी परिचित लोक के निवासियों में ... आपने गौर किया कि उसने अपने पिंजरे के दरवाजे को कमजो... के लिए अपने शरीर से निकलनेवाले गंधक के तेजाब का प्रयो... था. इस तेजाब की मात्रा और प्रभाविकता अधिक नहीं होती, ... उसका दैनिक प्रयोग एक ही स्थान पर किया जाये तो वह स्था... निर्बल होता जायेगा. . ."

प्रस्तु...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथात्मक इतिहास और समय की महत्त्वपूर्ण करवट . . .

▣ महेश दर्पण

'करवट' पढ़ते हुए एक बार फिर यह विचार और दृढ़ होता चला गया कि हिंदी-उपन्यास की परंपरा को प्रेमचंद के बाद अगर किसी उपन्यासकार ने सतत विस्तार दिया है तो वह अकेले अमृतलाल नागर ही हैं. नागरजी का उपन्यासकार जब-जब इतिहास के किसी काल-खंड पर काम करता है तब-तब एक अनूठी और विशिष्ट कथाकृति रची जाती है. गदर के बाद अंग्रेजी शासन और शिक्षा के प्रभाव से हमारे समाज में एक नयी मानसिकता का उदय हुआ था. नागरजी की मान्यता है कि संघर्ष की प्रक्रियाओं में पुरातन जातीय पंचायतों को नये जातीय 'असोशिएसनों' ने करारे धक्के ही नहीं दिये वरन् कालांतर में उन्हें ध्वस्त ही कर डाला. इन जातीय संघर्षों से ही नयी राष्ट्रीयता जन्मी था. . .

इतिहास का यह काल-खंड नागरजी के उपन्यासकार को रुचा और समय की यह महत्वपूर्ण करवट उपन्यास के रूप में प्रस्तुत हुई. सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में यथार्थ की पकड़ रचनाकार के इतिहास-बोध और वैचारिक स्पष्टता पर तो आधारित होती ही है, अपनी 'वस्तु' को सर्वग्राह्य बनाने के लिए काल्पनिक. पात्रों और घटनाचक्रों को भी नितांत सहज और विश्वसनीय मुद्रा में प्रस्तुत करना भी आवश्यक हो जाता है . . . ताकि पाठक रचनाकार के साथ सहज मानसिक यात्रा कर सकें. यह उपन्यास इस दृष्टि से एक उल्लेखनीय कथा-कृति है.

मुसद्दीमल बजाज के लड़के तनकुन उर्फ बंसीधर की एक शादी हो चुकी है पर मन्नो बेवी फिर भी उसे अपना दामाद बनाना चाहती हैं. मुसद्दीमल तो 'हां' कह गये पर तनकुन, जो अपने भविष्य को खुद बनाना चाहता है, पुनर्विवाह के लिए तैयार न हुआ. वक्त की हवा का रुख पहचाननेवाले इस युवक ने थोड़ी-बहुत अंग्रेजी तो पढ़ी ही थी. संयोग से उसकी मुलाकात पार्किसन से हो गयी और मि. सैंडहर्स्ट की पत्नी से भी. यह दीगर बात है कि धार्मिक संस्कारों में जकड़ा तनकुन इसे शीतला मैया की कृपा ही समझता रहा.

पार्किसन रेजीमेंट साहब का सचिव है. तनकुन की मुलाकात मिसेज माल्कम से कराता है जहां उसे फारसी में लिखा एक पत्र पढ़ना है. दरबारी साजिश का खुलासा करने वाला यह खत किसी बेगम ने रेजीमेंट के नाम भेजा है. तनकुन वह खत सुनाकर नैंसी को प्रभावित करता है. ब्रह्मचर्य की शक्ति को पहचाननेवाले इस युवक के भीतर कहीं यह विश्वास भी है कि वह अंग्रेज सुंदरी के मकड़जाल से बाहर निकल आयेगा, पर साथ उसकी यह धारणा भी बलवती होती जाती है कि अंग्रेजों से इनकी जबान सीखकर अपनी तकदीर बनायी जा सकती है. समय की हवा उसे बता देती है कि आने वाले वक्त में अंग्रेज ही हाकिम होंगे.

कथा-क्रम में कलात्मकता से पिरोयी गयी इन घटनाओं के बीच उपन्यासकार की टुकड़ा-टुकड़ा इतिहास बटोरते चले जाने की प्रवृत्ति तत्कालीन अवध की पूरी तस्वीर हमारे सामने रखती चली जाती है . . .

कालांतर में नैंसी के पति माल्कम की हत्या हो जाती है और कथानायक बंसीधर का कैरियरिस्ट-मन उचप हो जाता है. यहां तक कि वह अपने ससुर के निमंत्रण पर नवाबगंज जाने का विचार भी बना लेता है. पर नैंसी उसे अपने साथ कलकत्ता ले जाती है. महत्वपूर्ण पुरातन भारतीय ग्रंथों को सस्ते में बंसी के माध्यम से खरीदकर वह विदेशी अध्येताओं के लिए सप्लाई करने लगती है. बंसीधर के माध्यम से वर्गीय चरित्र और उसकी मानसिकता को यहां उपन्यासकार ने बखूबी पकड़ा है. बंसी ही नहीं, विपिन चंद्र खन्ना जैसे लोग भी अंग्रेजों के सहारे पैसा बनाने में जिस व्यवसायी

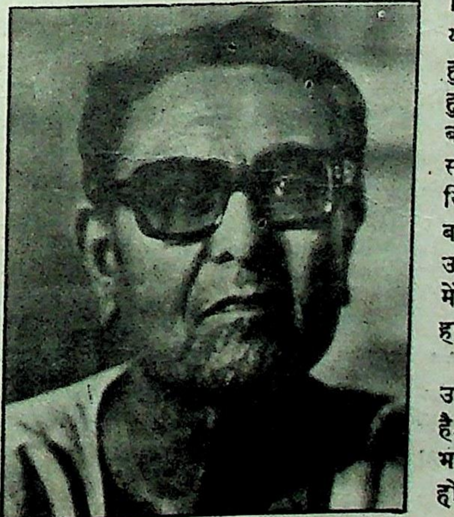

नागरजी

बुद्धि से जुटे रहते हैं, वह तत्कालीन मध्यवर्गीय भारतीय मानसिक दिवालियेपन को प्रस्तुत करता है. इस सबके बीच बंसी के भीतर एक और 'आदमी' भी है जो कहीं गोरों के अत्याचारों पर भी गंभीरता से विचार करता है. बंगाल से लेकर अवध तक फैले गोरों के अत्याचारों और भारतीय हुक्मरानों से लेकर आम जनता तक की दयनीय स्थिति पर रह-रहकर उसका खून खौलने लगता है. दूसरी ओर वह उन अंग्रेजों से बुरी तरह प्रभावित भी है जो भारत की लुप्तप्राय प्राचीन विद्या को खोज-खोजकर सुरक्षित कर रहे हैं.

बंसीधर के इर्द-गिर्द चलती उपन्यास की कथा-यात्रा अपने समय और समाज में हो रहे परिवर्तन को भी पूरे जिम्मेदार तरीके से समेटती चलती है. समय धीरे-धीरे बदल रहा था. लोग समझने लगे थे कि गदर में अंग्रेजों की जीत से भले ही हमारे मुल्क में तरह-तरह के नुकसान हुए हों पर हिंदुस्तान अब एक नये मोड़ पर आ पहुंचा है. इधर अंग्रेज अपनी जरूरत के मुताबिक सरकारी नौकर जुटाने के लिए जिस तरह भारतीयों को पढ़ाई-लिखाई करवा रहे हैं . . . उसे भी शिवरतन जैसे लोग खूब समझ रहे हैं. कलकत्ता और उसके आस-पास का समाज जिस तेजी से बदल रहा है उतनी तेजी भले ही यहां न हो पर कुछ प्रभाव तो बदलती हवा का है ही. फर्क सिर्फ यह है कि ब्रह्म समाज के प्रभाव से वहां जो तेज बदलाव सामाजिक जीवन में आ रहा है . . . विशेषकर अंतर्जातीय विवाहों के रूप में, वह यहां खुलेआम संभव नहीं है. दूसरे अंग्रेजी हुकूमत जिस जोड़-तोड़ के सहारे भारतीय हुक्मरानों की सत्ता छीनती जा रही है उसकी बारीकियां भी अवध के लोग पूरी तरह से समझ नहीं पा रहे हैं . . . यह अनजानेपन की स्थिति ज्यादा समय तक नहीं बनी रहती बहुत जल्दी एक जन-विद्रोह अंग्रेजों के खिलाफ उठ खड़ा हुआ है. इससे हुआ यह कि कलकत्ते में बेगुनाह बंगालियों का भी जीना अंग्रेजों ने हराम कर दिया.

उपन्यास के उत्तरार्ध में कथा-विस्तार खोखा उर्फ देश दीपक टंडन के माध्यम से ही होता है. यह युवक जब मैक्समूलर के ज्ञानसंपन्न भारत के रूप को नहीं देख पाता तब बहुत दुखी होता है. डाक्टरी करने के लिए वह लाहौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

चला जाता है जहां एक सज्जन परिवार की लड़की कौशल्या को वह गुंडों से छुड़ाता है और उसके पिता, पति व ससुर की नपुंसक मानसिकता से उसे निजात दिलाने के लिए खुद उससे विवाह कर लेता है . . . और इस प्रसंग का सीधा असर बिरादरी में तनकुन बाबू के परिवार की स्थिति पर पड़ता है. पर इस सब की परवाह करना यों भी उसकी फितरत में नहीं है. स्वयं उसकी मां भी कहीं बेटे के इस कृत्य से बेटी प्रभा के विवाह को लेकर चिंतित हो उठती है. लेकिन समय की नब्ज जिस बारीकी से बाबू बंसीधर भी न पहचान पाये थे, नयी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करता उनका बेटा देश दीपक खूब पहचान रहा था . . . हालांकि सुधारवादी लोगों से न केवल भारतीय दकियानूसी समाज चिढ़ा हुआ था वरन् पूरी अंग्रेज सरकार भी भीतर से कहीं आतंकित थी.

इतिहास जब कथात्मक प्रवाह का हिस्सा बनकर आता है तो वह रचनाकार की उपलब्धि होती है.

नेशनल कांग्रेस का पहला अधिवेशन और उसमें बंसीधर का जाना कथानायक के चरित्र को प्रभावित तो करता है पर वहीं अंग्रेज सरकार की ओर से दी जाने वाली रायसाहबी को स्वीकार कर लेना भी यह बताता है कि इस व्यक्ति के कैरियरिस्ट चरित्र में बहुत ज्यादा अंतर नहीं आया है.

समाज में धीरे-धीरे बदलाव आ रहा है. और उसे उपन्यासकार बड़ी बारीकी से रेखांकित भी करता है. नये विचारों के लोगों की संख्या बढ़ रही है. जाति के नाम पर ही सही, पर एक के बाद एक प्रकाशित होते समाचार-पत्रों से जागृति जरूर आयी है. धर्म के नाम पर अपना उल्लू सीधा करने वाले पुरोहित जी जैसे लोग अब निष्प्रभ होते जा रहे हैं.

नागरजी के उपन्यासकार की यह विशेषता रही है कि वह पात्र को पूरी तरह जान लेना चाहता है. उसके चरित्र की छोटी-से-छोटी चीज कहीं छूट न जाये. जिस आत्मीयता से वह पात्रों के बाह्य और अंतर्जगत में घुसता है उससे पाठक अछूता रह जाये यह संभव ही नहीं है.

कथा समय के जन-जीवन की इतनी गहरी पकड़ उपन्यास में देखने को मिलती है कि एक के बाद एक दृश्यबंध बंधते चले जाते हैं.

आठों का मेला वाला प्रसंग इस संदर्भ में उल्लेखनीय है.

'करवट' पढ़कर लगा कि इतिहास को समझाने के लिए यदि 'उपन्यास' जैसी विधा का रास्ता अपनाया जाये तो यह कार्य सहज हो जाता है. यह अलग बात है कि इस कार्य के लिए हमें नागरजी का-सा उपन्यासकार चाहिए.

कथा को सरल, सहज और सुबोध बनाने की कला में उन्हें जो महारत हासिल है, वहां पहुंचकर ही कथाकार दीर्घजीवी साहित्य की रचना कर सकता है. सोचना यह है कि क्या हमारे आज के उपन्यासकार इस दिशा में कुछ करने के लिए प्रयत्नशील हैं . . . ?

करवट : अमृतलाल नागर
प्रकाशक : राजपाल एंड संस,
मदरसा रोड,
कश्मीरी गेट,
दिल्ली-110006
मूल्य : साठ रुपये.

बातचीत में बदलते हुए साक्षात्कार

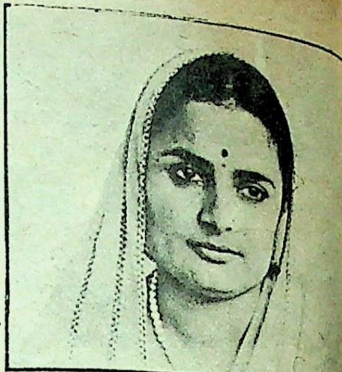

• पद्मा सचदेव

हिंदी-गद्य के विकास के साथ-साथ 'साक्षात्कार' जैसी विधा को जिन रचनाकारों ने संपन्न किया है उनमें पद्मा सचदेव का नाम उल्लेखनीय है. जब-तब पर विविध क्षेत्रों के कलाकारों के साथ हुई उनकी बैठकें जब एक साथ देखने को मिलें तो सचमुच वह 'दीवान-खाना' ही कहा जायेगा. इस दीवानखाने में जहां नजर डालिये वहीं पद्मा सचदेव की तेज, चौकन्नी, भीतर तक प्रवेश कर जाने वाली और बेहद भोली-भाली मासूमियत की हद तक गहरी नजरों का कमाल कुछ इस तरह से दिखाई देता है जैसे बातचीत ऐन हमारे सामने ही हो रही हो. हमारे समय को बनाने वाले तमाम 'बड़े रचनाकार' बेहद सादगीभरे अंदाज में अपनी जिंदगी की महत्वपूर्ण जानकारियों से भरी पोटली खोलते चले जाते हैं . . . और 'साक्षात्कार' जैसा शब्द अपनी औपचारिकता में कहीं खोकर 'बातचीत' में बदल जाता है.

नागरजी और लेखिका बतिया रहे हैं. खुले दिल की खुली बातें हैं . . . और है एक पूरा युग जो नागरजी की किस्सागोई के सहारे बातों-बातों में उतर आया है. नागरजी बता रहे हैं, घर-परिवार की बातें, गली-कूचे और चौक की बातें . . . अपने शहर और बाहर की बातें . . . बचपन, जवानी और आज की बातें . . .

नागरजी का संसार इतना बड़ा है कि आदमी उसमें घुसा और समझो कि खो ही गया. पद्मा सचदेव के गद्य की भाषा का यह चमत्कार है कि चुपके से पाठक को नागरजी के मायाजाल में फंसाकर जाने कहां गायब हो जाती हैं. लगता है जैसे नागरजी हैं और हम हैं. लेखिका को मालूम है कि उसकी कितनी उपस्थिति वाजिब है और कितनी अनुपस्थिति. जहां पद्मा जी आती हैं . . . वहां फक्कड़पन उनसे पहले अपनी खुशबू बिखेर देता है. शायद यही वजह है कि पं. रविशंकर के पास भी बेबाकी पर उतर आने के सिवाय और कोई चारा बचा नहीं रह जाता. जाती जिंदगी से जुड़े तमाम सवालों का जवाब वे पूरी तरह खुलकर देते हैं.

"जिंदगी में औरतों का प्रेम इतना मिला कि धन्यवाद के सिवा क्या कहूं . . . अगर आप देखें तो कलाकार हमेशा अकेला ही रहता [...] शायद अकेलेपन को भरने के लिए क्षणिक [...] भी उसे अच्छा लगता है . . . मैं चौदह [...] का था जब सही मायनों में एक औरत [...] संबंध हुआ. वो मुझसे उम्र में काफी बड़ी [...] पर उसने मुझे बहुत प्यार किया . . ."

यह मुलाकात पं. रविशंकर के भीतर [...] बाहर के साथ-साथ उनसे जुड़े अन्य [...] सूत्रों को भी बड़ी सादगी से खोलती चलती [...]

लेखिका ने बच्चनजी को रहस्यमय [...] पुरुषों की श्रेणी में रखा है . . . पर मजे [...] बात यह है कि जब-जब लेखिका की [...] सहज बातचीत हुई है तब-तब उनके जीवन [...] रहस्य एक के बाद एक खुलते चले गये [...]

'वरक-वरक खुश्बू' में, बेदी साहब [...] जिंदगी का एक-एक मोड़ दिखाते चले [...] साफगोई की रही-सही कसर पूरी करती [...] इस्मत आपा.

'दिनकरजी' ऐसी स्मृति रेखा है जो [...] जी के साथ-साथ हमें भी खींचकर [...] तक ले जाती है. लगता है कि अगर [...] दिनकर को बहुत पास से देख पाते [...] यही एहसास हमारे भी होते.

कलाकार के मन के भीतर की [...] उघाड़ने की कला में लेखिका सिद्धहस्त [...] 'दीवानखाना' पढ़ते वक्त लगा कि हर [...] अपने अतीत को रह-रहकर याद कर [...] है—'अब कहां रहे वैसे लोग . . . कला . . . !' की तर्ज पर.

दीवानखाना : पद्मा सचदेव
प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. 8 नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली-2
मूल्य : पंतालीस रुपये.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आबू पर्वत पर राजस्थान साहित्यकार सम्मेलन के अवसर पर अज्ञेय के साथ राजस्थान के चुनिंदा साहित्यकार (बाएं)

राजस्थान साहित्यकार सम्मेलन

जून 25 से 27 को आबू पर्वत में राजस्थान साहित्य अकादमी ने राजस्थान साहित्यकार सम्मेलन आयोजित किया. राजस्थान के मुख्यमंत्री हरिदेव जोशी, श्रीकांत वर्मा एवं सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय को विशेष रूप से निमंत्रित किया गया था. पहुंचे सिर्फ अज्ञेय. उन्होंने सम्मेलन का उद्घाटन भी किया और समापन भी. तीनों ही दिन वे संगोष्ठियों में रहे. अकादमी के अध्यक्ष डॉ. प्रकाश आतुर चूंकि राजस्थान के कुशल राजनीतिज्ञ भी हैं, इसीलिए उन्होंने सम्मेलन के विषय राजनीति और साहित्य के इर्द-गिर्द रखे. अध्यक्ष महोदय राजनीति से साहित्यकारों को आकर्षित करते हैं या साहित्य से राजनीतिज्ञों को मंच सुलभ कराते हैं, यह अक्सर विवादास्पद भी हो सकता है--गोष्ठी में. पर साहित्यकारों का यह भी मानना है कि सभी सम्मेलन निर्विवाद रूप से रोचक एवं उद्देश्यों में खरे उतरते हैं.

उद्घाटन एवं समापन व्याख्यानों में अज्ञेय ने साहित्य और राजनीति, संचार माध्यम, लेखकीय संकट और सह-अस्तित्व पर गंभीरता से अपने विचार, अनुभव एवं तर्क-वितर्क प्रस्तुत किये. अज्ञेय ने कहा, "हमारा समाज आज भी दो-तिहाई निरक्षर है, राजस्थान में शायद निरक्षरता इससे अधिक ही है या कुछ अलग-अलग हो जिलों में. लिखना और लिखकर छपाना पहले ही कदम में यह स्थिति स्वीकार कर लेना है कि हम देश के दो-तिहाई के प्रति नहीं हैं. इसको हम स्वीकार नहीं करेंगे, स्वीकार करते भी नहीं. ऐसा ठीक भी समझें.

यथार्थ का एक अंग है कि लिखकर छपाना भारतीय समाज के दो-तिहाई को उपेक्षित करना है. यह आदर्शवादी विश्वास हमारा हो सकता है कि कल-कूल नहीं तो सौ-साल बाद सब लोग साक्षर हो जायेंगे और उसके बाद भी हमारा साहित्य इतना जीवंत और संदर्भ युक्त हो जायेगा कि तब वो पढ़ लेंगे, मगर आज स्थिति यह है कि लिखना ही अपने आपको समाज के बड़े भाग से काट लेना है. अगर हम इसको स्वीकार नहीं करते और मैं नहीं करता, विश्वास करें कि आप में भी कोई नहीं करता तो इसका क्या निराकरण हम लेखक बने रहेंगे, एक उत्तर इसका हो सकता है--राजस्थान में शायद और प्रदेशों की अपेक्षा यह अधिक संगत हो. यहां पर वाचक साहित्य, वाचक रचना अपेक्षाकृत अधिक जीवंत है. वाचक संप्रेषण भी संभव है. निरक्षर होना संस्काररहित होना नहीं है. ऐसे लोग हैं, जो पुस्तक नहीं पढ़ सकते, जो साहित्य में रुचि रखते हैं, सुनते हैं, सुनकर विवेक कर सकते हैं, जिन्हें बहुत-सा शास्त्र कंठस्थ है, जिनको साहित्य उन परिस्थितियों में मिलता था पहले, जिनमें छपा हुआ शब्द अनावश्यक था. मेरा अनुरोध है, जो निरक्षर हैं, लेकिन संस्कारवान भारतीय हैं, उनकी उपेक्षा आप न करें. उससे अब भी आपको बड़ी शक्ति मिल सकती है, मुझे स्वयं मिली है और मैं यत्नशील हूं कि और मिलती रहेगी."

प्रोफेसर विजयेंद्र, डॉ. जीवनसिंह, जुगमंदिर तायल, डॉ. पूनम दैया के विषयगत पर्चों पर खुलकर बहस हुई, जिसमें डॉ. विश्वंभर नाथ उपाध्याय, डॉ. सोहनलाल पटनी, नंद चतुर्वेदी, डॉ. रमाकांत, डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, डॉ. एल. एन. नंदवाना, मरुधर मृदुल, डॉ. आलमशाहखान, हबीब कैफी, डॉ. हेतु भारद्वाज सहित अन्य साहित्यकारों ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये. □

● डॉ. यश गोयल

संगोष्ठी-रपट

बंगलौर में 16 जनवरी, 1985 को एक संगोष्ठी हुई, जिसमें अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान ने भी एक रिपोर्ट पेश की. यह रिपोर्ट पकवान माइक्रो रिफाइंड तेल के बारे में थी. यह तेल भरपूर प्रोटीन वाली सोयाबीन से बनाया जाता है तथा इसमें फास्फोरस तथा विटामिन ए व ई पर्याप्त मात्रा में होते हैं. रिपोर्ट के अनुसार "पकवान माइक्रो रिफाइंड तेल मधुमेह के रोगियों तथा स्वास्थ्य लाभ कर रहे रोगियों के लिए बहुत ही उपयोगी है. प्रयोगशाला के सभी परीक्षणों में यह बेहतरीन पाया गया और माइक्रोस्कोपिक परीक्षण में इसे पूरी तरह से शुद्ध पाया गया." सभी स्वास्थ्यवर्धक तत्वों को पूरी तरह से सुरक्षित रखने के लिए पकवान को कोल्ड सॉल्वेंट पद्धति से निकाला जाता है. कम तापमान और अल्पकालिक आवर्तन तकनीक से विटामिनों की प्रचुरता इसमें सुरक्षित रहती है.

चूंकि पकवान को माइक्रोन पद्धति से परिशुद्ध किया जाता है, इसलिए यह पूरी तरह से पारदर्शी है. इसमें गंध, धुआं या झाग बिल्कुल नहीं उठते. खाना पकाने के अन्य तेलों के विपरीत यह शुद्ध देशी घी का विकल्प है. पकवान में तरह-तरह की मिठाइयां पकायी जा सकती हैं, जबकि अन्य तेल पकाने के दौरान गंध छोड़ते हैं और मिठाइयों के लिए उपयोगी नहीं होते. अगर बचत की बात की जाये तो पकवान की कीमत सबसे कम तो है ही, तलते हुए यह कम चूसा जाता है, इसलिए यह कम खर्च होता है.

पकवान का निर्माण आधुनिकतम तथा तकनीकी रूप से उन्नत माइक्रो रिफाइनिंग संयंत्र में होता है, जो भारत में अपने किस्म का एकमात्र है. इस अभियान के पीछे जो व्यक्ति है, उसका नाम है एस. के. कोचर (एम. डी. कोचर ऑयल मिल्स लिमिटेड) जो तेल तथा वसा प्रौद्योगिकी में विशिष्टता के साथ रासायनिक इंजीनियरिंग का ग्रेजुएट है. भारतीय उद्योग के विकास में योगदान के लिए उसे 1977 का 'उद्योग पत्र' तथा 1985 का 'उद्योग विभूषण' पदक भी मिल चुके हैं.

● कोचर ऑयल मिल्स लिमिटेड, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरे बच्चे पराग पढ़ते हैं। क्या आपके भी ?"

alfredallan/P/5/85

पहली बार जब मैं पराग अपने घर लायी तो मेरे
को एकदम पराग से प्यार हो गया। इसमें मनो
कहानियां और ज्ञान-विज्ञान का ख़ज़ाना होता है
पराग द्वारा मैं अपने बच्चों को ज्यादा अच्छी त
समझ सकी हूं।

हमारे परिवार में सभी पराग पढ़ते हैं। अपनी
आज ही खरीदें।

टाइम्स आफ इंडिया प्रकाशन

पराग

उभरते मस्तिष्क के लिए ज्ञान और मनोरंजन का सुन्दर समन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar